बी० वी० रमन शृखंला
जातक निर्णय
कुण्डली पर विचार करने की विधि
खण्ड १
बी० वी० रमन
अनुवादक
जेड० अन्सारी

जातक निर्णय

कुण्डली पर विचार करने की विधि

खण्ड १

[१ से ६ भाव]

मूल लेखक

डॉ० बी० वी० रमन

सम्पादक, ज्योतिष पत्रिका

अनुवादक

जेड० अन्सारी

बी० ए० बी० एड०, ज्योतिष विद

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली वाराणसी पटना बंगलौर मद्रास कलकत्ता

प्रथम संस्करण : वाराणसी, १९९३
पुनर्मुद्रण : दिल्ली, १९९५, १९९६

अन्य प्राप्ति स्थान:
मोतीलाल बनारसीदास
बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली ११० ००७
१२० रॉयपेट्टा हाई रोड, मैलापुर, मद्रास ६०० ००४
१६ सेन्ट मार्क्स रोड, बंगलौर ५६० ००१
८ केमेक स्ट्रीट, कलकत्ता ७०० ०१७
अशोक राजपथ, पटना ८०० ००४
चौक, वाराणसी २२१ ००१

मूल्य : रु० १२५ (सजिल्द)
रु० ७५ (अजिल्द)

नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड,
दिल्ली ११० ००७ द्वारा प्रकाशित तथा जैनेन्द्रप्रकाश जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस,
ए-४५ नारायणा, फेज-१, नई दिल्ली ११० ०२८ द्वारा मुद्रित

विषय वस्तु

प्रस्तावना—सातवाँ संस्करण

कुण्डली पर विचार करने की विधि नामक यह पुस्तक ज्योतिष के व्यावहारिक और अनुप्रयुक्ति पर है। इस पुस्तक को जनसाधारण द्वारा पसन्द किया गया है। लगभग पाँच वर्षों बाद इसमें पूरा संशोधन करके सातवाँ संस्करण छापा गया है। VII से XII वें भावों के सम्बन्ध में इस पुस्तक का दूसरा खण्ड १९८० में छप जाएगी।

मैं इस पुस्तक में रुचि रखने तथा इसे संरक्षण प्रदान करने के लिए जनसाधारण का आभारी हूँ। इस संस्करण में किसी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं पाठकों से क्षमा प्रार्थी हूँ।

मैं अपनी पुत्री गायत्री देवी रमन का आभारी हूँ जिन्होंने इस संस्करण का पूर्णतः संशोधन करने में हमारी सहायता की। मैं अपने पुत्र निरञ्जन बाबू और बी० सच्चिदानन्द बाबू का सावधानीपूर्वक प्रूफ में संशोधन करने के लिए और इस नए संस्करण को आकर्षक ढंग से मुद्रित करने के लिए, आई० बी० एच० प्रकाशन के श्री पी० एन० कामत और जी० के० अनन्तराम का भी आभारी हूँ।

बंगलोर

बी० वी० रमन

प्रस्तावना--प्रथम संस्करण

ज्योतिष सम्बन्धी मेरी सभी पुस्तकें—फलित और गणित सम्बन्धी जनता और प्रेस दोनों ही द्वारा उस सीमा तक ग्रहण की गई हैं जितनी मेरी आशा नहीं थी। इससे ज्योतिष के नए पहलुओं पर नई पुस्तकें छापने का प्रोत्साहन मिला है। जो नई पुस्तक मैं अभी प्रस्तुत कर रहा हूँ, ज्योतिष की पारम्परिक पद्धति से अलग है। इसमें हमने प्रत्येक भाव पर विस्तारपूर्वक और उदाहरण सहित विवेचन किया है। अतः इस नई पुस्तक के महत्त्व के बारे में कोई प्रश्न नहीं किया जा सकता है।

हमारे वर्तमान ज्ञान में कुछ भी कठिन नहीं है सिवाए यह बताने के कि किस घटना और परिस्थिति में कोई योग क्या फल देगा। उदाहरणस्वरूप लग्न में शनि और सूर्य के उदय होने पर जो योग बनता है उससे पतन, रोग, प्रास्थिति और धन की हानि होती है; इससे मनोदशा विकृत हो सकती है, प्रतिभा में अवरोध आ सकता है या इसका प्रभाव अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ सकता है। निम्नलिखित पृष्ठों में यह प्रयास किया गया है कि प्रत्येक भाव के सन्दर्भ में विभिन्न प्रभावों के संकेतों को सुनिश्चित किया जाए।

किसी कुंडली पर विचार करते समय एक ज्योतिषी को अनेक संकटों से गुजरना पड़ता है। प्रत्येक भाव भिन्न-भिन्न महत्त्व रखते हैं और किसी विशेष भाव में पाए जाने वाले योग उस भाव से सम्बन्धित कार्यों पर विभिन्न प्रकार से भिन्न-भिन्न प्रभाव डाल सकते हैं। इसे और स्पष्ट करने के लिए चौथा भाव लेते हैं। यह भाव माँ, शिक्षा, भूमि, भवन सम्पत्ति के लिए होता है। एक अशिक्षित व्यक्ति के पास अनेक मकान हो सकते हैं जबकि एक शिक्षित व्यक्ति के पास कोई सम्पत्ति नहीं भी हो सकती है। यह योग किस प्रकार से एक भाव के विभिन्न संकेतों के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न ढंग से प्रभावित करता है। महत्त्वपूर्ण तथ्य अर्थात् कारक को शामिल करके इस प्रत्यक्ष असंगति का कुछ सीमा तक समाधान किया गया है। इस पुस्तक में दिए गए उदाहणों के सावधानीपूर्वक अध्ययन से यह तथ्य स्पष्ट हो जाएगा। इस पुस्तक में मेरा यह प्रयास रहा है कि पाठक ज्योतिष के व्यावहारिक पहलू का ज्ञान प्राप्त करें और अल्पविकसित सिद्धान्तों तथा नियमों को छोड़ दिया गया है।

किसी ज्ञान के अध्ययन में सिद्धान्त और उसका प्रयोग दोनों साथ साथ

चलता है। सिद्धान्त हमेशा सिद्धान्त ही रहता है और इससे मनुष्य को व्यावहारिक ज्ञान नहीं होता। भौतिक, रसायन, जीव और भूविज्ञान को लेते हैं। किसी व्यक्ति ने इस विषय पर उपलब्ध सारी पुस्तकें पढ़ ली हों परन्तु जब उसे लागू करने का प्रश्न उठता है तो वह मूर्ख की तरह मुह खोल देता है। एक साधारण मेकेनिक, औषध वैज्ञानिक या कम्पाउन्डर अपने विषय में इसलिए निपुण होता है कि उसे व्यावहारिक अनुभव होता है। व्यावहारिक सक्षमता के साथ सैद्धान्तिक ज्ञान का सुव्यवस्थित मिश्रण हमेशा वांछित होता है।

ज्योतिष के क्षेत्र में भी इस विषय की सत्यता समझने के लिए व्यावहारिक कुण्डलियों का अध्ययन और इसके तकनीक को उचित रूप से समझना अत्यन्त आवश्यक है। इस पुस्तक को लिखते समय इस लक्ष्य को ध्यान में रखा गया है। विशिष्ट उदाहरण और महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों के उदाहरण वास्तविक जीवन से चुने गए हैं। इन उदाहरणों के सावधानीपूर्वक अध्ययन से निश्चित ही ज्योतिष का ठोस और व्यावहारिक ज्ञान होगा। हमने भावों के विश्लेषण में विभिन्न योगों को हिसाब में नहीं लिया है क्योंकि हमने उनके बारे में अपनी 'तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग' नामक पुस्तक में विस्तारपूर्वक विचार किया है।

हिन्दू ज्योतिष की प्राचीन पुस्तकों में दिए गए अधिकतर नियमों की आसानी से जाँच हो सकती है। यदि हम पर्याप्त आँकड़े एकत्र कर सकें। उन्हें अप्रयुक्त बताकर अविचारित ही अस्वीकार कर देना हमारी अज्ञानता होगी।

भारत में अपनी यात्रा के दौरान हमने अनेक प्रख्यात वैज्ञानिकों और विद्वानों से बातचीत की उनमें से अधिकतर इस बात से आश्वस्त हैं कि ज्योतिष का आधार तर्क संगत है किन्तु वे सार्वजनिक रूप से ऐसी घोषणा करने में आनाकानी करते हैं क्योंकि दकियानूसी वैज्ञानिकों ने अभी ज्योतिष को स्वीकार नहीं किया है।

इस पुस्तक में मैं ज्योतिष के लिए कोई मामला तैयार करने नहीं जा रहा हूं। 'नौसिखियों के लिए ज्योतिष' और 'ज्योतिष और आधुनिक विचार' नामक पुस्तकों में दी गई मेरी प्रस्तावना से यह महान संशय समाप्त हो जाना चाहिए कि ज्योतिष एक विज्ञान है न कि अन्धविश्वास। यह एक नक्षत्र या ब्रह्माण्ड सम्बन्धी विज्ञान है जो ब्रह्माण्ड के ऊर्जा के खेल से सम्बन्धित है। यदि आधुनिक विज्ञान अपने सीमित साधनों से यह पता नहीं लगा सका कि अस्तित्व के तीन क्षेत्रों अर्थात् शारीरिक, मानसिक और नैतिक, पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है तो निश्चित ही यह ज्योतिष का दोष नहीं है।

प्राचीन काल के महर्षि जिन्होंने ज्योतिष के नियम प्रतिपादित किए, उनकी आत्मा काफी विकसित थी और उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से पार्थिव और खगोलीय

प्रतिभासों की जाँच की जो ऋषि अपने समय काल में इतनी महान ख्याति छोड़ गए उनके प्रति औसत विचार रखने में हमारा कोई औचित्य नहीं है। उन्होंने बहुत से प्रतिभासों को देखा जो आजकल के वैज्ञानिक अपने उपकरणों से देखने की आशा भी नहीं कर सकते। हमारा मस्तिष्क औसत है और वह सांसारिक सुख का अध्ययन और उसे प्राप्त करने में लगा रहता है। यद्यपि योग के अन्तिम चरण पर वे इस प्रकार के ज्ञान का सांसारिक सुख के लिए उपयोग करते हैं और वे इसका प्रयोग एकमात्र मानव सुख के लिए करते हैं।

क्या ज्योतिष जैसा विज्ञान कभी असत्य हो सकता है? वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड के समस्त स्वरूप का अपरिमार्जित रूप से एक भौतिकवादी रूप लेते हैं। उन्हें इसी बात में संतोष होता है कि वे ज्योतिष को जांच के लिए एक उपयुक्त विषय मानते हैं बशर्ते कि नियति के तथ्य इससे नियन्त्रित होते हों। यह मात्र बेतुका है। ज्योतिष में नियति के समान और कुछ नहीं है। प्रयोग में आने वाला उचित शब्द है 'अदृष्ट'। ज्योतिष केवल संकेत देता है और स्वशक्ति के विकास के लिए काफी गुंजाइश छोड़ जाता है जिससे कोई व्यक्ति बुरे संकेतों का प्रतिकार करता है या अनुकूल प्रभावों में वृद्धि करता है।

मैं यह निश्चित रूप से अनुभव करता हूँ कि मैंने इस पुस्तक में परिचय देकर काफी समय से अनुभव किए जाने वाले अभाव को पूरा कर दिया है ताकि शिक्षित जनता इससे लाभ उठा सके।

बंगलौर

बी० वी रमन

दो शब्द

ज्योतिषशास्त्र के विद्वान श्री बी. वी रमन द्वारा लिखित 'हाउ टू जज ए होरस्कोप' ज्योतिष पर एक अति उत्तम पुस्तक है। यह पुस्तक मूल रूप में अंग्रेजी में होने के कारण ऐसा समझा गया कि हमारे अनेक पाठक अंग्रेजी का समुचित ज्ञान न होने के कारण इसमें छिपे हुए रहस्यों से वंचित रह जाते हैं। अतः इस पुस्तक को हिन्दी भाषा में तैयार करने का प्रयास किया गया। अब यह पुस्तक हिन्दी में आपके हाथ में है। आशा है कि पाठक इससे पूरा पूरा लाभ उठा सकेंगे।

इस पुस्तक में जन्म कुंडली के अलग-अलग बारह भावों का विश्लेषण अति वैज्ञानिक ढंग से किया गया है जिसे पढ़कर आप बड़ी सरलता से अलग अलग भावों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस पुस्तक को बारह भावों के अनुसार बारह भागों में बाँटा गया है। इस भाग में प्रथम छः भावों के बारे में विस्तृत विवेचन किया गया है और शेष भावों का विवेचन खण्ड ७ में किया जाएगा।

इस पुस्तक में भाषा की सरलता और सुबोधगम्यता का पूरा पूरा ध्यान रखा गया है ताकि भाषा का साधारण ज्ञान रखने वाले को भी विषय को समझने में कठिनाई न हो। कुछ बातों पर अधिक बल दिया गया है और कुछ बातों को एक नवीन ढंग से प्रस्तुत किया गया है। हमारा विचार है कि इसके प्रयोग से पाठकों को बहुत लाभ होगा। नवीन ढंग का प्रयोग नवांश, चन्द्र कुंडली आदि अनेक वर्गों का प्रयोग करके किया गया है। हमारा विचार है कि बहुत थोड़े ज्योतिषी विभिन्न वर्गों के प्रयोग से परिचित हैं। किस प्रकार से किसी विशेष भाव से संबंधित घटनाएँ सुसंगत वर्गों में अपना रूप बदल देती हैं, इस विशेष नियम का प्रयोग भी बहुत विद्यार्थी नहीं कर पाते हैं। बहुत सी गुत्थियाँ वर्गों पर विचार करने से सुलझ जाती हैं। कुछ ऐसे दोष जो अन्यथा छिपे रह जाते हैं, वर्गों के अध्ययन से सामने आकर अनिष्ट की निवृत्ति में सहायक होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में विभिन्न वर्गों का प्रयोग करके उदाहरण द्वारा घटनाओं का अति वैज्ञानिक ढंग से विवेचन किया गया है। आशा है पाठक इससे काफी लाभान्वित होंगे।

अन्त में विद्वान जनों से यह प्रार्थना है कि दृष्टिदोष अथवा प्रमाद जनित असावधानी से कुछ त्रुटियाँ रह भी गई हों तो उसे सुधारने की कृपा करें।

नई दिल्ली
१-४-१९८८

आपका कृपाभिलाषी
जेड० अन्सारी

प्रस्तावना

डॉ० बी० वी० रमन की इस पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद होना इसलिए परम आवश्यक था कि ऐसी पुस्तक की एक विशेष आवश्यकता हिन्दी भाषी ज्योतिषियों के लिए इस समय अत्यधिक है। इसका कारण यह है कि हिन्दी में ज्योतिष की पुस्तकों की बाढ़ सी लगी है दूसरी ओर ज्योतिष के उपयुक्त सिद्धान्तों को जन्म कुंडली पर लागू करने का अभाव है। आवश्यकता है प्रत्यक्ष उदाहरणों द्वारा जन्म कुडली पर सिद्धांतों कों लागू करने की, जैसे किसी विशेष भाव का विवेचन करते समय उस भाव, भावेश और चन्द्रमा तथा उस भाव के स्थिर कारक से विचार करके प्राप्त न्यूनाधिक फलों का समन्वय यदि न किया जाए तो भविष्यवाणी सही उतर ही नहीं सकती। उदाहरणार्थ यदि सन्तान भाव का विश्लेषण करना हो तो यदि लग्न से पंचम भाव, पचमेश, कारक वृहस्पति से पंचम भाव और पंचमेश और इसी प्रकार चन्द्रमा से पञ्चम भाव और पञ्चमेश का विवेचन न किया जाए तो सन्तान भाव का विश्लेषण ठीक ठीक हो ही नहीं सकता। इस प्रकार का विश्लेषण करने के पश्चात ही स्त्री की कुंडली से क्षेत्र स्फुट और पुरुष की कुंडली में बीज स्फुट लगाकर फलादेश करना चाहिए।

ज्योतिष विद्या एक महासागर है। इसीलिए यदि क्रमिक रूप से संतुलित विचार न किया जाए तो फलित ज्योतिष में बहुत उलट फेर हो जाता है। उदाहरण स्वरूप छठे भाव में रिपु, ऋण और रोग का भी विचार किया जा सकता है तो दूसरी ओर इस भाव से दासता (नौकरी), मामा और पालतू जानवर के बारे में भी भविष्यवाणी की जा सकती है। अगर मामा के बारे में विचार करना हो तो बुध पर भी विचार करना होगा। एक मात्र डॉ० बी० वी० रमन ने अपनी इस पुस्तक में इस प्रकार के अनेक सिद्धांतों का सरल ढंग से समन्वय प्रत्यक्ष उदाहरण देते हुए किया है।

दिल्ली में मेरे मित्रों में से श्री एस० एन० कपूर और श्री महेन्द्र नाथ केदार जी अनेक दिनों से कह रहे थे कि यदि डॉ० रमन की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद हो जाए तो हिन्दी भाषी प्रान्तों में फलित ज्योतिष का स्तर काफी अच्छा हो जाएगा। हम लोगों के सामने यह प्रश्न था कि इसका अनुवाद वही व्यक्ति कर सकता है जिसमें तीन गुण विद्यमान हों—पहला यह कि उन्हें न केवल फलित ज्योतिष का ज्ञान हो बल्कि उनकी अधिकांश भविष्य वाणियाँ सही उतरी हों, दूसरा

ज्योतिष पर अंग्रेजी में लिखी गई पुस्तकों को अच्छी तरह समझने की क्षमता हो और तीसरा यह कि अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद ठीक ठीक और सुरुचिपूर्ण भाव से करते हों।

श्री जैनुद्दीन अन्सारी, भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के कार्यालय में एक ऐसे पद पर हैं जहां अंग्रेजी से हिन्दी और हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करने का कार्यभार इन्हीं के ऊपर है जिस कारण इनका इन दोनों भाषाओं पर समान प्रभुत्व है। दूसरी बात यह है कि ये बीस वर्षों से भी अधिक समय से ज्योतिष में भविष्य वाणियां कर रहे हैं और तीसरी बात यह है कि निःशुल्क ज्योतिष की सेवा करके इन्होंने ज्योतिष को अपने जीवन का और धर्म का एक अविभाज्य अंग बना लिया है जो किसी व्यक्ति में विरले ही पाया जाता है। ज्योतिष में परोपकारी होना चाहिए यह आदर्श आज के समाज में बहुत कम हो गया है।

हम लोगों ने डॉ० रमन की अनुमति ली और श्री अन्सारी जी से निवेदन किया कि इस पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद करें। इस पुस्तक को हिन्दी भाषी राज्यों में प्रस्तुत करने में हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है क्योंकि ज्योतिष के सही सिद्धांतों के आधार पर जन्म कुंडली का विश्लेषण करने पर ही फलादेश का स्तर ऊपर उठेगा किन्तु फलादेश के स्तर का ऊपर उठना एक बात है और सही सही फलादेश करना दूसरी बात।

सफल ज्योतिषी का जीवन सात्विक होता है, वह स्वयं मेधावी होता है और देश काल पात्र के अनुसार बदलती हुई परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए फलादेश करता है। तात्पर्य यह है कि हम इस अनुवाद के माध्यम से ज्योतिष प्रेमियों के हाथ में एक सफलता की कुंजी पकड़ा रहे हैं। बुद्धिमान ज्योतिषी इस कुंजी को पाकर अधिक सफल भविष्यवाणी कर पाएं तो हम लोगों की इच्छा और श्री अन्सारी जी का परिश्रम सफल माना जाएगा। इस शुभ आकांक्षा के साथ यह पुस्तक आपको समर्पित है।

नई दिल्ली
चैत्र पूर्णिमा संवत २०४५
दिनांक २.४.१९८८

(के० एन० राव)

अध्याय १

सामान्य परिचय

जन्म कुण्डली के अध्ययन में कुण्डली पर उचित विचार की तुलना में और कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण कठिन या बोझिल नहीं है। बारह भाव उस व्यक्ति के समस्त इतिहास के द्योतक होते हैं। किसी जातक की जन्म कुण्डली के सही-सही और पूरे विश्लेषण के लिये प्रत्येक भाव की सावधानीपूर्वक संवीक्षा करनी चाहिये। कभी-कभी ऐसा होता है कि उत्तम पुस्तकों में भी दिये गये ज्योतिष के अधिकतर सिद्धान्त वास्तविक चार्ट में सही नहीं आते। ऐसी परिस्थितियों में यह निर्णय नहीं लेना चाहिये कि ज्योतिष के सिद्धान्त असंगत हैं। दूसरी ओर ग्रहों के सम्बन्धों-आपसी सम्बन्धों का और विश्लेषण करना चाहिये।

ज्योतिष सभी विज्ञानों में एक कठिन विज्ञान है। भौतिकी अथवा रसायन के अर्थ में यह न तो भौतिक विज्ञान है और न ही यह तत्त्वमीमांसा है। गणित की सूक्ष्मता को एक दार्शनिक की अन्तःप्रज्ञात्मक क्षमता के साथ सुसंगत रूप से जोड़ना चाहिये। परिणामस्वरूप व्यापक सिद्धान्तों के अतिरिक्त मार्ग निर्देशन के लिये कोई दृढ़ नियम निर्धारित नहीं किया जा सकता है। जन्म कुण्डली की जाँच के लिये काफी विवेक की आवश्यकता है।

इस पुस्तक में बारह भावों पर विचार करने के सुविस्तृत ढंग दिये गये हैं और पाठकों को ज्योतिष के उन सिद्धान्तों से परिचय कराया गया है जिनकी शायद उन्हें जानकारी नहीं होगी। कोई भी व्यक्ति दृढ़तापूर्वक यह नहीं कह सकता कि मानव जीवन की कोई विशेष घटना जन्म कुण्डली के किसी विशेष भाव के कारण क्यों होती है। उदाहरणस्वरूप प्रथम भाव शरीर का द्योतक है जब कि चौथा भाव माँ के लिए होता है। इस बंटवारे का मूलाधार अब भी एक रहस्य है। मानव जीवन की सभी घटनाओं को बारह भावों में बाँटने के लिए प्राचीन महर्षियों का अवश्य ही कोई वैज्ञानिक आधार रहा होगा।

इस पर अवश्य ही ध्यान देना चाहिए कि पलना से लेकर कब्र तक की जीव (आत्मा) की यात्रा के साथ बारह भावों का सांसारिक सम्बन्ध है। एक विवेचन के अनुसार प्राचीन हिन्दू दिवस को बारह भागों में बांटा गया था, प्रत्येक भाग पांच घटी का होता था और प्रत्येक भाग को जीवन के प्रतिदिन के

कार्यक्रम के कुछ निश्चित कार्य अर्पित किये गये थे। दिन का आरम्भ सूर्योदय से लगभग या कुछ घटी (५ घटी) पूर्व होता था। इस समय से सूर्योदय तक के क्रियाकलाप मुख्यत: निजी होते थे। अत: प्रथम भाव निजी भाव बन गया। इस मेधावी विवेचन से चिन्तक-मस्तिष्क की उत्सुकता निश्चित ही तृप्त नहीं होती है। चूंकि जन्म से सभी घटनाओं की उत्पत्ति होती है और हमारे पार्थिव जीवन में परिणामों का अनुभव होता है अत: लग्न जो उसका अधिपति है, पृथ्वी पर जीवन की शर्तों को बताता है। दिन का दूसरा अर्द्ध भाग (प्राचीन हिन्दुओं के बीच) पाँच घटी के सातवें काल में (संध्या के बाद) आरम्भ होता था। यह काल हमेशा ही मनोरंजन और आराम का—सहचरों से मिलने तथा उनके सम्पर्क से आनन्द उठाने का होता था। अत: सातवां भाव पत्नी या सहचरों के साथ सम्बन्ध का हो गया।

लग्न से विपरीत भाव वही होगा जो पति-पत्नी का निर्माण करेगा। अत: सातवाँ भाव पत्नी/पति का होता है। राशि मण्डल में मेष प्रथम भाव है। तीसरा भाव मिथुन है। यह हाथ का द्योतक है। चूंकि हाथ हमारे शरीर की रक्षा करता है अत: भाई पार्थिव जीवन में हमारे सहयोगी होते हैं। अत: तीसरा भाव सामान्यत: भाइयों का द्योतक होता है। चौथा भाव वक्षस्थल को नियन्त्रित करता है। यह वक्षस्थल ही है जहाँ से बच्चा पोषाहार प्राप्त करता है जब कि खुशी और आनन्द की उत्पत्ति मस्तिष्क से होती है। हमारा प्रयोजन यह नहीं है कि हम बारह भावों के मूलाधार के कारणों का विवेचन करें। दूसरी ओर हम ऊपर यह सुझाव दे चुके हैं कि सामान्य ज्ञान से विचार करने पर यह निश्चित हो सकता है कि यह मूलधार क्या है। एक जन्म कुण्डली लें जिसमें अननुकूल युक्ति और दृष्टि से पांचवा भाव पीड़ित है। उस जातक को कोई बच्चा नहीं होगा या उसके सभी या अधिकतर बच्चों की मृत्यु हो जायेगी। क्या यह प्रमाणित करने के लिए यह पर्याप्त नहीं है कि पांचवाँ भाव बच्चों से सम्बन्धित है। प्राचीन काल के महर्षियों ने अपनी दिव्य दृष्टि या अन्तर्ज्ञान की सहायता से महान और गौरवपूर्ण सत्य का पता लगाया।

व्यावहारिक जन्म कुण्डलियों से सम्बन्धित ज्योतिष की पुस्तकों में दिये गये नियमों को लागू करने में आपको निश्चित रूप से इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वे मात्र आपके पथ-प्रदर्शन के लिये हैं।

ज्योतिष के ज्ञान के अतिरिक्त आप अपने विवेक तथा सामान्य ज्ञान का भी प्रयोग करें जिसमें अन्तर्ज्ञान का भी पूरा सहयोग है। ग्रहों की विभिन्न गरिमाओं और क्षीणताओं को महत्त्व दिया गया है जिसके सभी पहलुओं पर

अवश्य विचार करना चाहिए। अटकलपच्चू भविष्यवाणी नहीं करनी चाहिये। यदि पाँचवाँ भाव उत्तम स्थिति में है और इसका अधिपति अनुकूल स्थिति में है तो जातक को बच्चों के सम्बन्ध में सुख प्राप्त होगा। मान लें कि मीन लग्न है और बृहस्पति पांचवें भाव कर्क में है या मान लें कि कन्या लग्न है और बृहस्पति मकर में है। क्या दोनों ही मामलों में परिणाम एक जैसा होगा ? पहले उदाहरण में लग्न का अधिपति बृहस्पति पांचवें भाव में उच्च स्थिति में है। दूसरे मामले में चौथे भाव का अधिपति बृहस्पति नीच स्थिति में है। सामान्य ज्ञान से हमें पता लगता है कि परिणाम अवश्य ही भिन्न-भिन्न होगा। ज्योतिष के विद्यार्थी को इन सभी भिन्नताओं को ध्यान में रखकर भविष्यवाणी करनी चाहिये।

प्रथम भाव को तनु भाव कहते हैं। यह आरम्भिक जीवन, बचपन, स्वास्थ्य, पर्यावरण, व्यक्तित्व, शरीर और आचरण का द्योतक होता है। द्वितीय भाव परिवार, चेहरा, दाईं आँख खाद्य, धन, साहित्यिक क्षमता और मृत्यु का तरीका और स्रोत तथा स्वअधिग्रहण और आशावाद का द्योतक होता है। तृतीय भाव भाइयों और बहनों, सतर्कता, चचेरे भाइयों और बहनों तथा अन्य नजदीकी सम्बन्धियों से सम्बन्धित होता है। चतुर्थ भाव से शान्त मस्तिष्क, पारिवारिक जीवन, माँ, सवारी, गृह सम्पत्ति, भूमि और पैत्रिक सम्पत्ति, शिक्षा, गला और कन्धों का संकेत मिलता है। पंचम भाव बच्चों, दादा, सतर्कता, भावना और प्रसिद्धि का द्योतक है। छठा भाव ऋण, रोग, शत्रु, चिन्ता, दुःख, बीमारी और निष्फलता के लिये होता है। सप्तम भाव पत्नी, पति, विवाह, मूत्राशय, वैवाहिक आनन्द, लिंग सम्बन्धी रोग, कारोबार में भागीदार, राजनयिक सूझ बूझ, प्रतिभा, शक्ति और साधारण खुशी का द्योतक होता है। अष्टम भाव से दीर्घ आयु, पैत्रिक सम्पत्ति और उपहार तथा अनर्जित धन, मृत्यु के कारण, अवनति और मृत्यु से सम्बन्धित विवरण का संकेत मिलता है। नवम भाव पिता, न्यायपूर्णता, गुरु, पोते-पोती, अन्तर्ज्ञान, धर्म, सहानुभूति, प्रसिद्धि, दानशीलता, नेतृत्व, यात्रा और आत्मा के साथ बातचीत के लिए होता है। दशम भाव रोजगार, व्यवसाय, सांसारिक मान, विदेश यात्रा, आत्म सम्मान, ज्ञान और प्रतिष्ठा तथा जीवन यापन के साधन का संकेत देता है। एकादश भाव धन प्राप्ति के साधन, बड़े भाई और चिन्ता से आजादी का द्योतक है। द्वादश भाव हानि, व्यय, नुकसान, अपव्यय, सहानुभूति, दैवी ज्ञान, मोक्ष और मृत्यु के बाद की स्थिति का द्योतक है।

अध्याय २

भाव पर विचार करने की विधि

किसी भाव की जाँच करते समय न केवल राशि को महत्त्व देना चाहिये बल्कि नवांश और अन्य समुचित वर्गों पर भी विचार करना चाहिये। किसी भाव का विश्लेषण करने में निम्नलिखित तथ्यों पर सावधानी पूर्वक विचार करना चाहिये—

१. उस भाव के अधिपति के दल, दृष्टि, युक्ति और स्थिति।

२. उस भाव का बल।

३. उस भाव, उसके अधिपति और उसमें स्थित ग्रहों या उस पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों के प्राकृतिक गुण।

४. क्या किसी विशेष भाव में बनने वाले योग से प्रभाव में कोई परिवर्तन हुआ है।

५. उस भाव के स्वामी ग्रह की उच्च और नीच स्थिति का भी समान रूप से महत्त्व है।

६. उस भाव के स्वामी या उस विशेष भाव का स्वामी जिस भाव में है उसके स्वामी की नवांश में अनुकूल या प्रतिकूल स्थिति।

७. जातक की आयु, स्थिति, पद और सेक्स।

८. प्रत्येक राशि के लिये कुछ ग्रह उत्तम और कुछ ग्रह निकृष्ट होते हैं। उदाहरण के लिये मेष राशि में उत्पन्न व्यक्ति के लिये सूर्य उत्तम है। भाव के अधिपति (मंगल) और सूर्य के बीच सम्बन्ध अति महत्त्वपूर्ण है और इस पर उचित विचार करना चाहिये।

किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व इन सब पर समुचित विचार कर लेना चाहिये।

यदि भाव का स्वामी पूर्ण रूप से बली है तो साधारणतः उस भाव का उत्तम प्रभाव होगा। किसी एक भाव में समावेशित अनेक घटनाओं में से उन घटनाओं को चुन लें जिनसे ग्रहों का कोई सम्बन्ध नहीं है। राशि स्वामी या भाव पर दृष्टि के अच्छे या बुरे स्वरूप का जन्म कुण्डली पर विचार करने में

मध्यवर्ती हाथ नहीं होता है। ग्रहों के सौम्य और क्रूर गुणों पर विचार करना चाहिये। परिणाम निकालने में ग्रहों की स्थिति और अवस्था का बहुत बड़ा हाथ होता है और यदि वहाँ पर उत्तम ग्रह अच्छी स्थिति में हैं तो वे अच्छा काम करते हैं। भाव का अधिपति उस भाव पर नियन्त्रण रखने के लिये काफी जिम्मेदार होता है परन्तु किसी विशेष मामले में स्वामी की स्थिति ठीक नहीं हो और उस भाव में उत्तम युक्ति या दृष्टि हो तो बुरे परिणाम की भविष्यवाणी नहीं करनी चाहिये। जब किसी भाव के स्वामी की दशा या भुक्ति आती है तो प्रश्नाधीन भावों के परिणामों का पता लगता है। उदाहरणस्वरूप लग्न का स्वामी कमजोर है और सप्तम भाव में स्थित है तथा उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि है तो इन योगों से एक से अधिक पत्नी का संकेत मिलता है। उस स्वामी की दशा और भुक्ति के दौरान पत्नी की मृत्यु की भविष्यवाणी की जा सकती है।

प्रत्येक भाव के लिए सैंकड़ों योग दिये गये हैं और पाठक इन विभिन्न संस्थितियों के गुण-दोषों का प्रयोग करें। ज्योतिष सम्बन्धी भविष्यवाणियों में इन कठिनाइयों को आसानी से दूर नहीं किया जा सकता है। यदि एक बार इसे दूर कर दिया जाये तो इसमें सन्देह नहीं है कि विद्यार्थी सही निष्कर्ष निकालने में संतुष्ट हो जायेंगे।

ज्योतिष एक बहुत ही कठिन और साथ ही एक लाभप्रद विज्ञान है और आसानी से इस विषय को सीखने की आशा नहीं की जा सकती। एक सही भविष्यवक्ता बनने के लिये काफी प्रयास, एकाग्रता और अन्तर्ज्ञान की आवश्यकता होती है।

प्रत्येक लग्न के लिये कुछ ग्रह अनुकूल, कुछ ग्रह प्रतिकूल और कुछ ग्रह तटस्थ होते हैं जिनका संक्षिप्त विवरण हम नीचे दे रहे हैं। मेरी 'हिन्दू फलित ज्योतिष' नाम की पुस्तक भी पढ़ें। इससे लाभ होगा। दशा के परिणामों की भविष्यवाणी करने में यह विवरण लाभप्रद साबित होगा।

प्रत्येक लग्न के लिये सौम्य और क्रूर ग्रह

यदि लग्न मेष हो—वृहस्पति, सूर्य और मंगल सौम्य हैं। वृहस्पति बहुत अधिक सौम्य है। उसके बाद मंगल सौम्य है। शनि, बुध और शुक्र क्रूर हैं। बुध सबसे अधिक क्रूर है क्योंकि वह तीसरे और चौथे भाव का स्वामी है।

वृषभ—शनि सबसे अधिक सौम्य है क्योंकि वह नवम और दशम भाव का स्वामी है। बुध, मंगल और सूर्य भी सौम्य हैं। शुक्र और चन्द्रमा दुष्ट ग्रह हैं परन्तु शुक्र को तटस्थ कहा जा सकता है क्योंकि वह लग्न का स्वामी है।

मिथुन—इस लग्न के लिये एक मात्र शुक्र ही अत्यधिक सौम्य ग्रह है। मंगल सबसे अधिक क्रूर है क्योंकि वह छठें और एकादश भाव का स्वामी है। बृहस्पति और सूर्य भी दुष्ट हैं। चन्द्र और बुध को तटस्थ कहा जा सकता है।

कर्क—बृहस्पति और मंगल सौम्य हैं, इनमें मंगल बेहतर है क्योंकि वह पंचम और दशम भाव का स्वामी है। शुक्र और बुध दुष्ट हैं तथा शनि, सूर्य और चन्द्र तटस्थ हैं।

सिंह—मंगल और सूर्य सौम्य हैं, इनमें से मंगल अधिक शुभ है। बुध और शुक्र क्रूर हैं। बृहस्पति, चन्द्र और शनि तटस्थ हैं।

कन्या—एक मात्र शुक्र ही सौम्य है। चन्द्र, मंगल और बृहस्पति दुष्ट तथा क्रूर हैं। शनि; सूर्य तथा बुध तटस्थ हैं।

तुला—शनि, बुध और शुक्र सौम्य हैं, इनमें शनि सबसे अच्छा है। सूर्य, बृहस्पति और चन्द्र क्रूर हैं। मंगल को क्षीण सौम्य कहा जा सकता है।

बृश्चिक—चन्द्रमा सबसे अधिक सौम्य है, बृहस्पति और सूर्य भी सौम्य हैं। बुध और शुक्र दुष्ट हैं। मंगल और शनि तटस्थ हैं।

धनु—मंगल और सूर्य सौम्य हैं। शुक्र, शनि और बुध दुष्ट हैं तथा बृहस्पति और चन्द्र तटस्थ हैं।

मकर—शुक्र अत्यधिक शक्ति शाली सौम्य ग्रह है। बुध और शनि भी सौम्य हैं। मंगल, बृहस्पति और चन्द्र दुष्ट हैं, इनमें मंगल सबसे खराब है। यद्यपि सूर्य अष्टम भाव का स्वामी है, फिर भी वह तटस्थ है।

कुम्भ—शुक्र सौम्य है। सूर्य और मंगल भी सौम्य हैं। बृहस्पति और चन्द्र क्रूर तथा बुध तटस्थ है।

मीन—चन्द्रमा और मंगल सौम्य हैं। शनि, सूर्य, शुक्र और बुध क्रूर हैं। बृहस्पति तटस्थ है।

आसानी से समझने के लिए इन सिद्धान्तों को और स्पष्ट करते हैं।

प्रत्येक कुण्डली में सौम्य स्वामी, क्रूर स्वामी और तटस्थ स्वामी होते हैं। सौम्य और क्रूर के रूप में ग्रहों के नैसर्गिक वर्गीकरण में इनका कोई हाथ नहीं होता।

किसी भी कुण्डली में सौम्य या सौम्य स्वामी होते हैं :—(१) प्रथम भाव का स्वामी चन्द्रमा को छोड़कर, (२) पंचम और नवम का स्वामी (त्रिकोणाधिपति) और (३) चतुर्थ, सप्तम और दशम के स्वामी यदि वे स्वभाव से सौम्य नहीं हैं।

नवम भाव का स्वामी पंचम भाव के स्वामी से अधिक सौम्य होता है, इसी प्रकार दशम का स्वामी सप्तम के स्वामी से अधिक सौम्य है जब कि चतुर्थ भाव का स्वामी कम सौम्य होता है।

किसी कुण्डली में क्रूर और क्रूर स्वामी निम्न लिखित होते हैं :—

(१) तृतीय, षष्ठ और एकादश भाव के स्वामी (२) चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव के स्वामी यदि वे तटस्थ सौम्य हैं। पुनः क्रूर में एकादश भाव का स्वामी सबसे खराब होता है, षष्ठ भाव का स्वामी क्रूर होता है जबकि तृतीय भाव का स्वामी कम क्रूर होता है।

कुण्डली में तटस्थ ग्रह :—

(१) चन्द्रमा यदि वह लग्न का स्वामी हो (२) सूर्य या चन्द्रमा अष्टम भाव के स्वामी के रूप में (३) सूर्य और चन्द्रमा द्वितीय और द्वादश भाव के स्वामी के रूप में।

इस प्रकार कुण्डली में बली, निर्बल और अन्य विशेषताओं को सहसम्बद्ध करने में अति सावधान रहना चाहिये।

उपरोक्त वर्णन से यह देखने में आयेगा कि नैसर्गिक सौम्य उदाहरण के लिए वृहस्पति भी क्रूर हो सकता है यदि वह त्रिकोण का स्वामी हो। नैसर्गिक क्रूर जैसे मंगल और शनि आदि अस्थायी सौम्य हो सकते हैं यदि वे त्रिकोण (केन्द्र) के स्वामी हों। इसी प्रकार नैसर्गिक सौम्य क्रूर बन जाते हैं यदि वे चतुष्कोण भाव के स्वामी हों, यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि चतुष्कोण का अधिपति होने के कारण जब नैसर्गिक सौम्य ग्रह क्रूर हो जाता है तो यदि वह केन्द्र का स्वामी होकर केन्द्र में हो तो वह क्रूर के रूप में काम नहीं करता। अतः कर्क लग्न में यदि शुक्र तुला राशि में हो तो वह क्रूर नहीं रह जाता क्योंकि वह तुला राशि का स्वामी होता है। इसी प्रकार नैसर्गिक क्रूर अर्थात् मंगल चतुष्कोण का स्वामी होने के कारण सौम्य हो जाता है, यदि वह कोणीय भाव में हो जिसका वह स्वामी है तो सौम्य नहीं रह जाता।

योगकारक

वे ग्रह योगकारक होते हैं जो प्रसिद्धि, मान, सम्मान, वित्तीय समृद्धि, राजनैतिक सफलता और ख्याति प्रदान करते हैं। कोई भी ग्रह योगकारक बन सकता है यदि वह दो भावों का मिला जुला स्वामी हो। वह किस सीमा तक योगकारक बन सकता है यह सादबल ('ग्रह और भावबल' नाम की मेरी पुस्तक देखें), युक्ति, दृष्टि और स्थिति पर निर्भर करता है।

१. केन्द्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी ग्रह योगकारक होता है। यह केवल मंगल, शनि और शुक्र के मामले में संभव है। कर्क और सिंह लग्न के

मामले में मंगल योगकारक हो सकता है क्योंकि वह कर्क लग्न में पंचम और दशम भाव का स्वामी होता है और सिंह लग्न में चतुर्थ और नवम भाव का स्वामी होता है। जब तुला राशि लग्न में होती है तो शनि चतुर्थ और पंचम भाव, क्रमशः केन्द्र और मूल त्रिकोण का स्वामी होता है और वह योगकारक बन जाता है। और जब लग्न वृषभ हो तो शनि नवम और दशम भाव का स्वामी होता है अतः यह योगकारक है। जब मकर या कुम्भ लग्न होता है तो शुक्र योगकारक होता है, मकर लग्न में शुक्र पंचम और दशम भाव का स्वामी होता है और कुम्भ लग्न में चतुर्थ और नवम भाव का स्वामी होता है।

२. जब केन्द्राधिपति और त्रिकोणाधिपति की युक्ति होवी है तो राजयोग बनता है। इन दोनों स्वामियों की युक्ति के बीच जो किसी अन्य भाव (३, ६, आदि) का स्वामी न हो अथवा ३, ६, ८ के स्वामी के साथ युक्त न हो, वह काम चलाऊ योगकारक बन जाता है। यह सावधानी पूर्वक याद रखना चाहिये कि नवम और दशम भाव के अधिपति की युक्ति से प्रबल राज योग बनता है। चतुर्थ और पंचम, सप्तम और पंचम, दशम और पंचम, चतुर्थ और नवम, सप्तम और नवम तथा दशम और नवम के स्वामियों की युक्ति इतनी प्रबल होती है कि अन्य क्रूर स्वामित्व के कारक हल्की क्रूरता पर काफी हद तक काबू पा लेता है।

४. जब नवम और दशम अधिपति का स्थान परिवर्तन होता है तो दोनों ही राजयोग कारक बन जाते हैं, जब नवम भाव का स्वामी दशम भाव में हो या दशम भाव का स्वामी नवम में हो तो राजयोग बनता है।

५. उपरोक्त राज योग के अतिरिक्त कुछ ग्रहों की कुछ विशेष स्थिति के कारण भी कतिपय योग बनते हैं। वृहस्पति और चन्द्रमा के परस्पर दृष्टि परिवर्तन या स्थान परिवर्तन से भी प्रसिद्धि और मान सम्मान मिलेगा। संस्कृत की पुस्तकों में अनेक योगों का उल्लेल किया गया है जिसकी विवरणात्मक सूची बी० सूर्य नारायण राव की 'सत्य योग मंजरी' तथा मेरी 'हिन्दू फलित ज्योतिष' में पाई जायेगी। मैंने अपनी 'तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग' नाम की पुस्तक में कुछ विशिष्ट योगों का वर्णन किया है। सभी मामलों में जहाँ राज योग ध्यान में आता है वहां इसके फल की सीमा इस बात पर निर्भर करती है कि जो दो ग्रह यह योग बना रहे हैं वे स्वामित्व, युक्ति, स्थिति और दृष्टि से कितना बल प्राप्त कर रहे हैं। यह योग बनाने वाले ग्रह यदि आपस में १२° के भीतर हैं, तो इस योग का वास्तव में पर्याप्त प्रभाव हो सकता है। योगों तथा कुण्डली के सामान्य स्वरूप की जांच करने में लग्न यां चन्द्रमा जो भी बली हो वहां से आरम्भ करना चाहिये।

कुण्डली सं० १

जन्म तिथि १२–२–१८५६ समय १२–२१ दोपहर (स्था० स०)

अक्षांस १८° उत्तर, देशा० ८४° पूर्व

राशि

नवांश
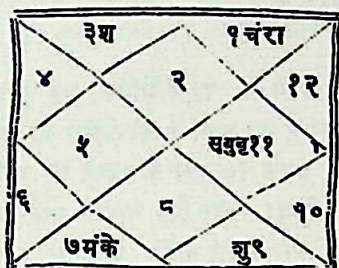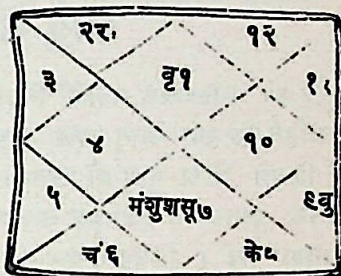
जन्म समय शुक्र की दशा शेष—१२ वर्ष ३ मास ९ दिन

(क) सूर्य और बुध (चतुर्थ और पंचम अधिपति) की दशम भाव में युक्ति से राज योग बनाता है। यह इतना प्रबल नहीं है जितना कि अगला, क्योंकि अष्टम और एकादश भाव के स्वामी बृहस्पति के साथ युक्ति से यह कलंकित हो गया है। (ख) इसमें शनि योगकारक है क्योंकि वह छठे और दशम भाव का स्वामी होकर दूसरे भाव में है।

कुण्डली संख्या २

जन्म तिथि ३१–७–१८९५ समय ८–११ प्रातः (स्थान सं०)

अक्षांस १२°२०′ उत्तर, देशा० ७६°३८ पूर्व

राशि

६ | ४सूके | ७ | ५चंबुवृमं | शु३ | ८श | २ | ९ | ११ | १ | रा१० | १२
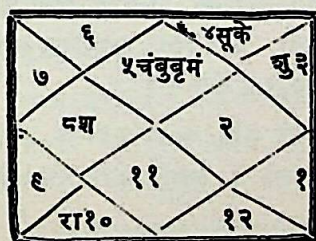
नवांश
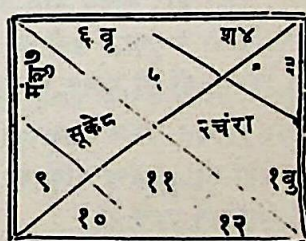
जन्म समय केतु की दशा शेष—५ वर्ष १० मास २५ दिन

(क) लग्न में बृहस्पति और मंगल की युक्ति से राज योग बनता है (ख) मंगल स्वयं ही योगकारक है क्योंकि वह चतुर्थ और नवम भाव का स्वामी है।

ज्योतिषी को चाहिये कि विभिन्न युक्तियों का विश्लेषण करने में अपनी बुद्धि का प्रयोग करे और उचित ढंग से साक्ष्य का परिवर्तन करे। योगों के विवेचन से सम्बन्धित कार्य प्रणाली के मूल्यांकन के लिये मेरी 'तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग' नामक पुस्तक देखें।

अध्याय ३

आयु का निर्धारण

मृत्यु की वास्तविक अवधि निर्धारित करने से पहले आपको यह पता कर लेना चाहिये कि क्या आयु काल दीर्घ, मध्यम या अल्प है और क्या बालारिष्ट योग है जिससे शीघ्र मृत्यु हो सकती है। इसके विवरण के बारे में ज्योतिष की मानक पुस्तकों में पूर्ण रूप से वर्णन किया गया है। पाठक इसे अपनी सुविधानुसार पढ़ें। फिलहाल हम उन ग्रहों का वर्णन करेंगे जो कल्पित योगों और युक्तियों के परिणामस्वरूप मृत्यु का कारण (मारक) बन सकते हैं। सुविधा के लिये हम उन ग्रहों का निम्न प्रकार से वर्गीकरण करेंगे जो मृत्यु के कारण हैं।

(क) मृत्यु के मूल निर्धारक,

(ख) मृत्यु के द्वितीय निर्धारक, और

(ग) मृत्यु के तृतीय निर्धारक

(क) मृत्यु के मूल निर्धारक—तीसरा और आठवां भाव जीवन का है और दूसरा तथा सातवां भाव मृत्यु का है।

(i) दूसरे और सातवें भाव का अधिपति मृत्यु का निर्धारक होता है, (ii) इन दोनों भावों में (क्रूर) ग्रहों का स्थित होना, और (iii) उपरोक्त स्वामियों के साथ (क्रूर) ग्रहों की युक्ति भी मृत्यु के निर्धारक होते हैं।

ऊपर लिखित अनेक निर्धारकों में से दूसरे और सातवें भाव के स्वामियों के साथ ग्रहों का सम्बन्ध मृत्यु का कारण बनने में अधिक प्रबल होता है यदि स्वामी स्वयं कम प्रबल हों।

(ख) मृत्यु के द्वितीय निर्धारक—ऊपर हमने दूसरे और सातवें भाव के स्वामियों के साथ क्रूर ग्रहों की युक्ति और वहां पर क्रूर ग्रहों के स्थित होने के बारे में बताया है। (i) दूसरे और सातवें भाव के स्वामियों के साथ सौम्य ग्रहों की युक्ति (ii) तीसरे और आठवें भावों के अधिपति (iii) तीसरे और आठवें भावों के स्वामियों की दूसरे और सातवें भाव के स्वामियों के साथ युक्ति।

(ग) मृत्यु के तृतीय निर्धारक—(i) ऊपर लिखित मारक (मृत्यु के निर्धारक) के साथ शनि का सम्बन्ध, युक्ति या दृष्टि (ii) क्या छठे आठवें भाव

के अधिपति मारक ग्रह के साथ युक्त हैं और (iii) कुण्डली में सबसे कम बली ग्रह। कुछ पुस्तकों में यह सुझाव दिया गया है कि निम्नलिखित ग्रह मृत्यु के कारण नहीं बनेंगे (i) सूर्य और चन्द्रमा (ii) नवम भाव का स्वामी। तथापि वास्तव में यह सही नहीं पाया जाता है। विभिन्न लग्नों के संदर्भ में मारक ग्रहों की सूची नीचे दी जाती है—

राशि	मारक
मेष	बुध, शनि
वृषभ	वृहस्पति, मंगल
मिथुन	मंगल, वृहस्पति
कर्क	शुक्र, बुध
सिंह	बुध, शुक्र
कन्या	मंगल, वृहस्पति
तुला	वृहस्पति
वृश्चिक	बुध, शुक्र, शनि
धनु	शुक्र, शनि
मकर	मंगल, वृहस्पति
कुम्भ	मंगल
मीन	बुध, शुक्र, शनि

यह साबित करने के लिये उदाहरण नीचे दिये जाते हैं कि ऊपर बताये गये मारक ग्रह सर्वदा सत्य हैं—

कुण्डली सं० ३

जन्म तारीख २८-७-१८९७ समय ६-४७ संध्या (स्था० स०)

अक्षांस १२° २०′ उत्तर, देशा० ७६-३८ पूर्व

राशि

नवांश

जन्म समय मंगल की दशा [illegible] ष—४ वर्ष ७ मास २७ दिन
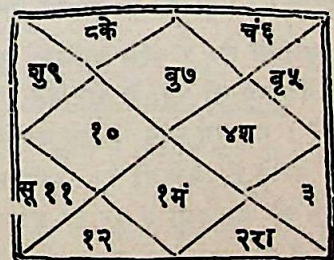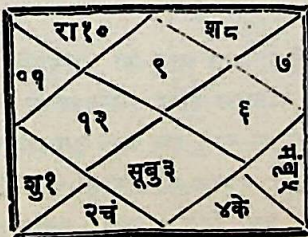
चूँकि लग्न धनु है अतः शुक्र और शनि मारक हैं। जन्म समय मंगल की दशा ४ वर्ष ७ मास २७ दिन थी। जातक की मृत्यु शनि की दशा में शनि की भुक्ति में हुई। शनि दूसरे और तीसरे भाव का स्वामी है और १२वें भाव में स्थित है तथा जन्म चन्द्र से सातवें भाव में स्थित है।

कुण्डली संख्या ४

जन्म तारीख ११-४-१८८० जन्म समय १०-३० प्रातः (स्था० स०)
अक्षांस १८° ५′ उत्तर, देशान्तर ८३-२८ पूर्व

राशि नवांश
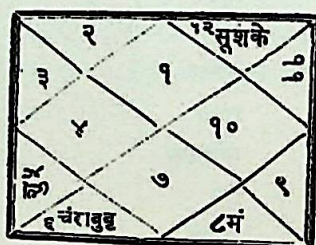
जन्म समय शुक्र की दशा शेष—१३ वर्ष ३ मास २० दिन

कुण्डली सं० ४ का लग्न मिथुन है। अतः बृहस्पति और मंगल मारक हुए।

(क) बृहस्पति सातवें भाव का स्वामी है अतः वह मृत्यु का मूल निर्धारक है।

(ख) राहु मारक है क्यों कि वह ७वें भाव में स्थित है।

(ग) बुध सातवें भाव के स्वामी के साथ है और जन्मचन्द्र से तीसरे और छठे भाव का स्वामी है। जातक की मृत्यु १-७-१९४१ को हुई जब कि बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही थी।

कुण्डली सं० ५ एक मार्जित कुण्डली है। लग्न भाव का अधिपति पंचम भाव में उच्च का पड़ा है और इस पर कोई प्रतिकूल दृष्टि सम्बन्ध या युक्ति नहीं है। यह पूर्ण आयु प्रदान करता है। मारक माने गये ग्रह उस जातक को नहीं मारते हैं; कुण्डली का आधार प्रबल है। जातक की मृत्यु ७-८-१९८० को गुरु की महादशा में गुरु की भुक्ति में १२ बजे दिन में हुई। नवांश में गुरु मारक है और लग्न पर मंगल की दृष्टि है।

कुण्डली सं० ५

जन्म तारीख ७/६–५–१८६१ जन्म समय ४–०५ प्रातः (स्था० स०)
अक्षांस २२° ४०′ उत्तर, देशा० ८८° ३०′ पूर्व

राशि

शुसूबु१ ११ मं२ चं१२ १० के३ रा९ गु४ ६ ८ श५ ७

नवांश
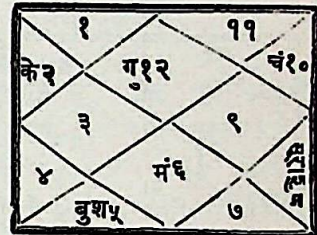
जन्म समय बुध की दशा शेष—१०वर्ष २ मास १२ दिन

विद्यार्थियों को चाहिये कि मृत व्यक्तियों की कुण्डली एकत्र करें और इस अध्याय में दिये गये सिद्धांतों को लागू करें। कुण्डली संख्या ५ जटिल है और इसमें औसत ज्योतिषी की बुद्धि काम नहीं कर सकती।

कुण्डली सं० ६ का लग्न मिथुन है और मारक ग्रह मंगल और बृहस्पति हैं। किन्तु शनि (आठवें भाव के स्वामी) की दशा के अन्त में जातक की मृत्यु हुई। शनि लग्न से छठे भाव में तथा चन्द्रमा से सातवें भाव में है।

कुण्डली संख्या ६

जन्म तारीख १८–३–१८६९ जन्म समय १–१५ अप० (ग्रीनविच समय)
अक्षांस ५१° उत्तर, देशान्तर ०° ५′ पश्चिम

राशि

नवांश
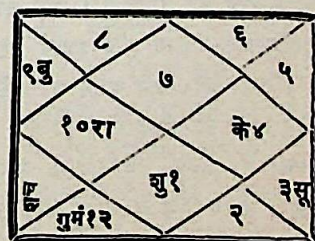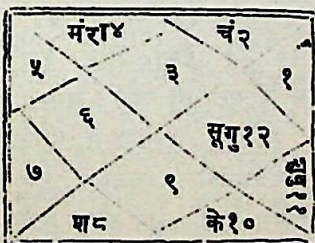
लग्न वृश्चिक है। मारक ग्रह बुध, शुक्र और शनि हैं। शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में मृत्यु हुई। शनि तीसरे भाव का स्वामी है और आठवें भाव में स्थित है। इस पर ८वें और ग्यारहवें भाव के स्वामी बुध की दृष्टि है।

कुण्डली सं० ७

जन्म तारीख २–१२–१८८५ जन्म समय ६–१३ प्रातः (स्था० स०)
अक्षांस ९° ४३′ उत्तर, देशान्तर ७६° १३′ पूर्व

राशि

नवांश
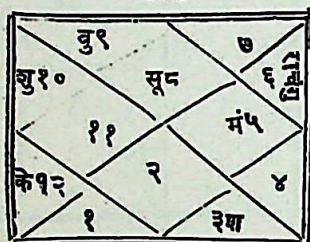
जन्म समय मंगल की दशा शेष—६ वर्ष ० मास २४ दिन

सावधानी पूर्वक जांच करने पर यह पता लगता है कि प्रत्यक्ष रूप से स्वस्थ बच्चे जिनके पक्ष में सारी परिस्थितियाँ होती हैं शीघ्र मर जाते हैं, जब कि अनेक कमजोर और बीमार बच्चे सावधानी पूर्वक लालन-पालन और उपचार से जिन्दा रहते हैं। हमारे पास अनेक कमजोर और बीमार बच्चों की कुण्डलियाँ हैं जिनकी डाक्टरों के सर्वोत्तम रोग निदान के अनुसार पहले ही मृत्यु हो जानी चाहिये किन्तु ज्योतिष के अनुसार उन्हें जिन्दा रहना नियत किया गया। ज्योतिष के नियमों की जांच करने के लिये हमारे पास पर्याप्त आँकड़े हैं जिन पर विवाद नहीं किया जा सकता। एक बच्चे का जन्म डबलिन में २०–११–१८८७ को ३–४० अपराह्न को हुआ। वह बच्चा २० घण्टे तक जीवित रहा। लग्न वृषभ है। चन्द्रमा उसी राशि में स्थित है और उस पर वृश्चिक के सूर्य की दृष्टि है। एक अन्य बच्चे का जन्म ६–८–१९१२ को ४२–५ घटी सूर्योदय के बाद (५ घण्टा १० मि० २०′ पूर्व देशा० और १३° उत्तर अक्षांस) हुआ और उस बच्चे की चौदहवें मास में मृत्यु हो गयी। लग्न (मेष) राहु और शनि के बीच में पड़ा है। चन्द्रमा शनि के सम्बन्ध से पीड़ित है। एक बच्ची का जन्म डबलिन के पास १–२–१८७४ को ३ बजकर २० मिनट पर हुआ। लग्न कर्क है और चन्द्रमा उसी राशि में है। सूर्य और शनि मकर राशि में हैं और इस योग पर दृष्टि डाल रहे हैं। बच्ची की मृत्यु १९–२–१८७४ को जन्मजात बीमारी से हो गयी। साधारणतया यदि लग्न, सूर्य और चन्द्रमा पीड़ित हों तो बच्चे की मृत्यु शीघ्र हो जाती है।

मृत्यु के साधन, स्वरूप, समय और स्थान के निर्धारण के प्रश्न पर इस पुस्तक के दूसरे भाग, जो शीघ्र छपने वाली है, में विस्तार से चर्चा की गयी है।

अध्याय ४

प्रथम भाव के सम्बन्ध में

किसी भाव के निरूपण में भाव महत्त्वपूर्ण है न कि राशि। राशि और भाव के बीच अन्तर के बारे में गणित ज्योतिष[1] पर मेरी पुस्तकों में विवेचन किया गया है। नवांश का भी समान रूप से महत्त्व है। जिस नवांश में किसी व्यक्ति का जन्म होता है, उस व्यक्ति के जीवन काल में सभी क्रियाकलापों पर उसका प्रभाव पड़ता है। इसमें नवांश के सन्दर्भ में विभिन्न स्थानों पर स्थित ग्रहों की दृष्टि के अनुसार संशोधन किया जाता है। यह एक धुरी है जिस पर कुण्डली परिक्रमा करती है।

परिणामतः हिन्दू ज्योतिष में नवांश चक्र का सबसे अधिक महत्त्व है। उल्लिखित प्रत्येक योग को राशि, भाव और नवांश चक्र पर लागू करना चाहिये। उसके बाद ही कोई निष्कर्ष निकालना चाहिये। निर्णय करने के लिये आवश्यक बातों का मेरी अन्य पुस्तकों में वर्णन किया गया है और यदि उन्हें यहाँ पर दोहराया जाये तो समय और स्थान का गलत प्रयोग होगा।

निर्णय किसी कुण्डली में ग्रहों के प्रभाव का सारांश है। किसी कुण्डली पर निर्णय करने के लिये अनेक तत्त्वों की आवश्यकता होती है अर्थात् (क) भाव (ख) इसका स्वामी (ग) उस भाव में स्थित ग्रह (घ) इसके कारक। यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये कि अधिपति का कार्य उसके स्वामित्व वाले भाव या भावों का होता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक अधिपति का अपना कारक या जन्मजात कार्य होता है। उदाहरण स्वरूप यदि हम किसी कुंडली में ७ वां भाव लेते हैं जिसमें कुंभ लग्न है तो ७ वें भाव के स्वामी अर्थात् सूर्य का कार्य दोहरा हो जाता है : उस राशि का स्वामी होने के कारण उस भाव का कार्य और पिता का कारक होने के कारण कारक का कार्य। अतः निर्णय निम्नलिखित पर आधारित होना चाहिए (क) भाव स्वामी की स्थिति (ख। भाव स्वामी पर दृष्टि और युक्ति (ग) भाव स्वामी द्वारा निर्मित योग आदि और अन्य संशोधन। यह नवांश चक्र पर भी लागू होता है।

प्रसिद्ध सत्याचार्य का मत है कि किसी जातक का वर्ण, जाति, रूप,

---

१. (क) हिन्दू ज्योतिष की पुस्तिका (ख) ग्रह और भाव बल

मानसिक विशेषता, जन्म का स्वरूप, प्रसिद्धि और निन्दा, सफलता आदि बल या अन्यथा लग्न तथा कारक के आधार पर होना चाहिये।

प्रथम भाव के स्वामी का विभिन्न भावों में फल

प्रथम भाव में—जातक अपने प्रयास पर जिन्दा रहता है, उसकी स्वतन्त्र विचारधारा होती है, उसकी दो पत्नी होगी या एक विवाहित और दूसरी गैर कानूनी।

यदि लग्नाधिपति लग्न में अच्छी स्थिति में हो तो वह व्यक्ति अपने समुदाय या देश में प्रसिद्ध होता है।

पाठक को यह ध्यान रखना चाहिये कि योग एक साधारण प्रयुक्ति है। भावस्वामी के बल, क्षीणता और अन्य तथ्यों को ध्यान में रखकर फल के सही स्वरूप का वर्णन करना चाहिये। यदि लग्नाधिपति लग्न में है और उस पर अनिष्ट ग्रहों की दृष्टि हो तो सौम्य ग्रहों की दृष्टि से जो परिणाम निकलता उससे बिल्कुल भिन्न परिणाम होगा। यही नियम सभी भावों पर लागू है जिसे सभी पाठकों को ध्यान में रखना चाहिये।

द्वितीय भाव—अधिक लाभ होगा, शत्रुओं से परेशानी तथा, चिन्ता, उत्तम आचरण, सम्मानित तथा उदार दिल वाला।

यदि वह ग्रह उत्तम स्थिति में हो तो वह अपने संबंधियों के प्रति अपना कर्तव्य आनन्द पूर्वक निभायेगा और महत्त्वाकांक्षी होगा। उसकी आंखें सुन्दर होंगी और उसे पूर्वानुमान का आर्शीर्वाद होगा।

तृतीय भाव—इसमें जातक साहसी, भाग्यशाली, सम्मानित, दो पत्नियों वाला तीव्र बुद्धि वाला तथा हमेशा खुश रहने वाला होता है।

यदि लग्नाधिपति उत्तम स्थिति में हो तो जातक अपने भाइयों की मदद से जीवन में उत्थान करता है। वह गायक या गणितज्ञ के रूप में प्रसिद्ध होगा जो राशि के स्वरूप और उससे संबंधित ग्रहों पर आधारित होगा।

चतुर्थ भाव—माता-पिता से सुख होगा, अधिक भाई होंगे, भौतिकवादी, अच्छे शरीर वाला, देखने में उत्तम तथा आचरण वाला होगा।

यदि चौथे भाव का स्वामी उत्तम स्थिति में है तो उस व्यक्ति को भू-सम्पति विशेष कर मामा से प्राप्त होगी। वह धनी, सुखी, प्रसिद्ध व्यक्ति होगा तथा अनेक गाड़ियों का स्वामी होगा।

पंचम भाव—पहला बच्चा नहीं रहेगा, बच्चों से अधिक सुख प्राप्त नहीं

होगा, तुनकमिजाज, किसी के अधीन कार्य करने वाला तथा दूसरों की सेवा करने वाला होगा।

यदि लग्नेश सुरक्षित है तो शासकों या शक्तिशाली राजनीतिक पार्टियों की कृपा प्राप्त होंगी। व्यापार या राजनयिक सेवाओं में लग जाएगा। यदि पंचम भाव का स्वामी उत्तम स्थिति में हों तो वह देवी देवताओं को वश में कर लेगा।

षष्ठ भाव—तीसरे भाव में रहकर लग्नाधिपति द्वारा दिए गए फलों के अतिरिक्त निम्नलिखित बातों पर भी ध्यान देना चाहिए वह कर्ज में रहेगा किन्तु जब लग्नाधिपति की दशा आएगी तो कर्ज समाप्त हो जाएगा।

यदि अधिपति उत्तम स्थिति में हो तो जातक सेना में प्रवेश पाता है और कमाण्डर या कमाण्डर इन चीफ तक बन जाता है, बशर्ते कि अधिपति की दशा सही समय पर आई हो। अथवा वह चिकित्सा या स्वास्थ्य सेवाओं का प्रधान बनता है। अथवा डाक्टर या सर्जन बनता है। यहां पर अन्य प्रभावों पर समुचित विचार कर लेना चाहिए।

सप्तम भाव—पत्नी जिन्दा नहीं रहेगी या एक से अधिक विवाह होगा। बाद में जीवन में सांसारिक कार्यों से विरक्ति हो जाती है और संन्यासी जीवन बिताने की कोशिश करता है। अन्य तथ्यों के आधार पर जातक अमीर या गरीब होगा। बहुत यात्रा करेगा।

यदि अच्छी स्थिति में हो तो वह अपना अतिरिक्त समय विदेश में बिताएगा और स्वतन्त्र जीवन वाला रहेगा। अथवा वह अपने सास-ससुर के हाथ का खिलौना बनकर रह जाएगा।

अष्टम भाव—विद्वान, जुआरी प्रवृत्ति का, तन्त्र विद्या या ब्रह्म विद्या में रुचि रखने वाला और दुराचारी होगा।

यदि अधिपति प्रबल है तो जातक दूसरों की सहायता करता है, उसके अनेक मित्र होते हैं धर्म में रुचि रहती है तथा जीवन का अन्त शान्तिपूर्वक व अचानक हो जाता है।

नवम भाव—सामान्यतः भाग्यशाली, दूसरों की रक्षा करने वाला तथा धर्म में रुचि रखने वाला होता है। यदि हिन्दू-विष्णु का उपासक है तो एक उत्तमवक्ता, पत्नी और बच्चों से सुखी तथा धनी होगा।

यदि अधिपति उत्तम स्थिति में हो तो पैतृक सम्पत्ति विरासत में मिलेगी। ऐसे जातक का पिता एक प्रसिद्ध, लोक प्रेमी तथा ईश्वर से डरने वाला होगा।

दशम भाव—चौथे भाव के फल के अतिरिक्त व्यावसायिक सफलता तथा

उत्कृष्ट व्यक्तियों से सम्मान पायेगा, अन्वेषक होगा तथा अपने क्षेत्र में या व्यवसाय में विशेष ज्ञान प्राप्त करेगा। लग्नाधिपति या दशमाधिपति इसके द्योतक हैं।

एकादश भाव—द्वितीय भाव के फल के अतिरिक्त यदि कारोबारी है तो कारोबार में हमेशा लाभ होगा। जातक को वित्तीय तंगी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

उसका बड़ा भाई उसी का ऋणी रहेगा। इस योग में शामिल होने वाले अन्य ग्रहों द्वारा दिए गए संकेतों के आधार पर उसे कारोबार से अत्यधिक लाभ होगा।

द्वादश भाव—इस स्थिति में वही परिणाम होता है जो आठवें भाव का है। इसके अतिरिक्त काफी हानि होगी, धार्मिक स्थानों की यात्रा करेगा और कारोबार में सफलता प्राप्त नहीं होगी।

विरासत में प्राप्त धन को दान और अन्य कारणों में ख़र्च करेगा। वह अपनी भावना पर नियन्त्रण रखेगा तथा अपना जीवन लोककल्याण के लिए समर्पित कर देगा।

अन्य महत्त्वपूर्ण योग

यदि जन्म का स्वामी छठें, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी के साथ जन्म में हो और उस पर क्रूर ग्रह की दृष्टि या युक्ति हो तो उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। यदि उस पर किसी सौम्य ग्रह की दृष्टि हो तो इस अनिष्ट की भविष्यवाणी नहीं करनी चाहिए।

यदि लग्नाधिपति लग्न में हो और क्रूर ग्रह की युक्ति हो तो जातक शारीरिक रूप से सुखी नहीं होगा।

यदि सभी ग्रह लग्न पर दृष्टि डाल रहे हों तो वह शक्तिशाली, धनी तथा अनेकों वर्षों तक जीवित रहने वाला होगा।

यदि स्वामी प्रबल हो, उत्तम ग्रह केन्द्र में पड़े हों और लग्न में अनिष्ट ग्रहों की दृष्टि न हो तो शरीर से काफी सुखी रहता है।

यदि लग्न के स्वामी के साथ अनिष्ट ग्रह की युक्ति हो और राहु लग्न में हो तो उस व्यक्ति के साथ कपट होता है।

यदि लग्न में राहु, मंगल और शनि हों तो उस व्यक्ति को लिंग सम्बन्धी बीमारी होती है।

यदि बृहस्पति या शुक्र लग्न से केन्द्र या मूल त्रिकोण में पड़े हों तो वे उत्तम फल देते हैं।

यदि लग्नाधिपति चर राशि में हो और उस पर उस राशि के स्वामी की दृष्टि हो तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य हमेशा ठीक रहता है और वह भाग्यशाली होता है।

यदि लग्नाधिपति आठवें भाव में हो तो जातक कमजोर होता है। किन्तु उस पर शुभ दृष्टि हो तो इसकी भविष्यवाणी नहीं करनी चाहिए।

जिस भाव में लग्नाधिपति पड़ा है उस भाव का स्वामी यदि खराब स्थिति में हो तो जातक बीमार रहेगा।

यदि लग्न में शनि हो तो उसके यहाँ चोरी होगी और उसके साथ धोखा होगा।

यदि लग्नाधिपति मंगल या शनि हो और उस भाव में अनिष्ट ग्रह पड़े हों या उस पर अनिष्ट ग्रह की दृष्टि हो तो जातक के सिर पर चोट लगती है।

यदि शुष्क ग्रह (सूर्य, मंगल और शनि) लग्न में हों तो वह व्यक्ति दुबला पतला होता है। यदि लग्न कोई भी शुष्क राशि (मंगल, सूर्य और शनि के स्वामित्व वाली राशि) हो तो उस जातक का शरीर दुर्बल होगा। यदि लग्नाधिपति के साथ शुष्क ग्रह की युक्ति हो तों भी फल वही होगा।

यदि लग्न कर्क, वृश्चिक या मीन हो और उसमें अच्छे ग्रह पड़े हों तो उसका शरीर गोल होगा।

यदि लग्नाधिपति जलीय तत्त्व ग्रह (शुक्र और चन्द्र) हो तथा वह प्रबल हो, अच्छे ग्रहों की युक्ति हो तो जातक बली होता है।

यदि लग्न का स्वामी सौम्य ग्रह हो और नवांश स्वामी के स्थान पर जलीय तत्त्व राशि में हो तो कारपुलेन्स की भी भविष्यवाणी की जा सकती है।

यदि बृहस्पति लग्न में हो या जलीय तत्त्व राशि से लग्न पर दृष्टि डाल रहा हो अथवा यदि लग्न जलीय तत्त्व राशि में पड़ा हो जिसमें सौम्य ग्रह की युक्ति हो तो शरीर मजबूत होता है।

यदि सूर्य लग्न में हो और उस पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक को दमा या फेफड़े की बीमारी होती है।

यदि मंगल लग्न में हो और उस पर सूर्य या शनि की दृष्टि हो तो उसे घाव होता है या दुर्घटना होती है।

यदि लग्न, उसका अधिपति, नवांश में लग्न या उसका स्वामी चर राशि में हो तो जातक लाभ के लिए काफी दूर की यात्रा करता है।

यदि लग्नेश वर्गोत्तम में, उच्च में, मित्र राशि में हो और अच्छे ग्रहों की युक्ति या दृष्टि हो तो वह जीवन में बहुत सुखी रहेगा।

यदि प्रथम, एकादश और द्वादश भावों में सौम्य ग्रह हों और प्रबल स्वामी त्रिकोण में हो तो वह आरम्भ में और मध्यावस्था में सुखी रहेगा। यदि लग्नेश प्रबल हो या बृहस्पति लग्न में हो तो वह जीवन के आरम्भ में सुखी रहेगा।

ऊपर कुछ ऐसे योग दिए गए हैं, जिनमें प्रथम भाव के स्वरूप का साधारण विश्लेषण किया जा सकता है और जातक के रूप, सामान्य भाग्य, स्वास्थ्य, आकृति आदि के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है। यदि यहाँ पर दिए गए सिद्धान्तों को वास्तविक कुण्डली पर लागू किया जाए तो आसानी से वास्तविक प्रगति की जा सकती है।

यदि लग्न और लग्नेश दो क्रूर ग्रहों (शनि और राहु) के बीच पड़े हों तो जातक चोरों का मुकाबला करेगा और उनके कारण वह पीड़ित रहेगा। राहु १२ वें भाव में उतना नुकसान नहीं देता जितना वह दूसरे भाव में देता है जबकि शनि दूसरे भाव में उतना नुकसान नहीं देता जितना बारहवें भाव में देता है।

यदि लग्न में अनेक अनिष्ट ग्रह पड़े हों तो वह व्यक्ति हमेशा कष्ट में रहेगा। यदि लग्नेश या नवांश का स्वामी जिसके साथ लग्नेश भी हो अथवा एकादशेश दूसरे भाव में हो तो वह व्यक्ति २० वर्ष की आयु के बाद सुखी होता है। उपरोक्त स्वामी यदि केन्द्र में पड़े हों तो ३० वर्ष की आयु के बाद सुखी होता है। यदि लग्नेश नवम भाव में पड़ा हो तो १६ वर्ष की आयु के बाद सुखी होता है।

यदि लग्नेश अच्छी स्थिति में हो तो यह अपने आप में एक परिसम्पत्ति है जो उस व्यक्ति को आजीवन सुख देती है। इसके साथ ही यदि दशम भाव में कोई ग्रह हो तो वह इसमें चार चांद लगा देता है। इन दोनों के साथ वह कुंडली भाग्यशाली है जिसमें कोई ग्रह द्विर्द्वादश स्थिति (एक दूसरे से १२वें या दूसरे भाव) में न हों।

अनेक जन्मकुंडलियों की सावधानी पूर्वक जाँच करने से यह पता चलता है कि जब लग्नाधिपति प्रबल और अच्छी स्थिति में न हो किन्तु जन्म नक्षत्र (जन्म के समय में चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर हो) से तीसरे (विपत्), पाँचवें (प्रत्यक्) और सातवें (नैधन) नक्षत्रों में हो तो अनिष्ट का संकेत मिलता है। इसके विपरीत यदि लग्नाधिपति प्रबल हो किन्तु उपरोक्त नक्षत्रीय स्थिति में हो तो पक्ष में संकेत कम मिलते हैं। फिर भी जब लग्नाधिपति प्रबल हो किन्तु लग्नाधिपति जिस राशि में है उसका स्वामी कलुषित हो तो अच्छे परिणाम का अभाव रहता है और बुरे परिणाम की अधिकता होती है। लग्न भाव का विश्लेषण करते समय चन्द्र लग्न और नवांश लग्न की स्थिति पर भी ध्यान देना चाहिए।

हम कुछ वास्तविक जन्मकुण्डलियों की जाँच करेंगे और फिर प्रथम भाव पर बातचीत जारी रखेंगे।

कुण्डली सं० ८—जन्म तारीख १२-२-१८५६ समय १२–२१ अपराह्न (स्था० स०) (अक्षांश १८° १८ उत्तर, देशा० ८३° ५८° पूर्व)

राशि

३ श. १चं.रा
४ २ १
५ ११सू.बु.गु
६ ८ १०
मं.के.७ शु ९

नवांश

२रा १२
३ गु १ ११
४ १०
५ सू.श.शु.मं.७ बु.९
चं.६ के.८
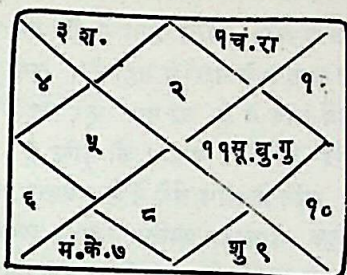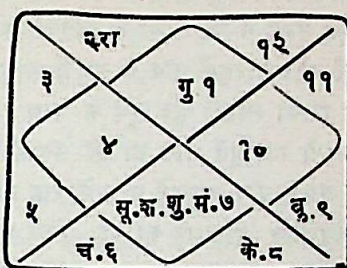
जन्म समय सूर्य की दशा शेष १२-३-९ वर्ष

कुण्डली सं० ८ में लग्नाधिपति शुक्र है जो एक सौम्य ग्रह है। लग्न पर क्रूर ग्रह मंगल की दृष्टि है। बृहस्पति यद्यपि शुक्र का शत्रु है, वह सौम्य है। परिणाम-स्वरूप लग्नाधिपति का बृहस्पति की राशि में होना अच्छा है। लग्नाधिपति आठवें भाव में है और उसने जातक को बहुत विद्वान बना दिया। अब नवांश देखें—लग्नेश लग्न भाव को देख रहा है अतः यह अच्छा है। नवम भाव का स्वामी बृहस्पति लग्न में स्थित है। शुक्र अपनी ही राशि में है और लग्न पर दृष्टि डाल रहा है। उच्च का शनि और नीच का सूर्य लग्न को देख रहा है। अतः प्रथम भाव को पूरा बल प्राप्त है। चूंकि नवांश लग्न का स्वामी चरं राशि में है और लग्न भी चर राशि में है अतः जातक ने अपने जीवन काल में बहुत यात्रा की। आकृति साधारण थी। जातक गोरे वदन का था (ध्यान दें कि शुक्र और मंगल, लग्नेश और नवांश स्वामी गोरे रंग के ग्रह हैं)। साधारण ऊँचाई थी। मंगल की दृष्टि के कारण वह स्वभाव से सख्त था। कुछ और योग हैं जिनका उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। इन्हीं योगों के कारण जातक विश्व का सबसे महान व्यक्ति बना। दशम भाव में तीन ग्रहों का होना और राजयोग के निर्माण का जातक को महान बनाने में बहुत बड़ा हाथ था जिसे अनदेखी नहीं किया जा सकता।

कुण्डली सं ९—जन्म तारीख २२-२-१८६३ समय १०-१६ रात्रि (स्था० स०) (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० २० से० से पूर्व)

राशि
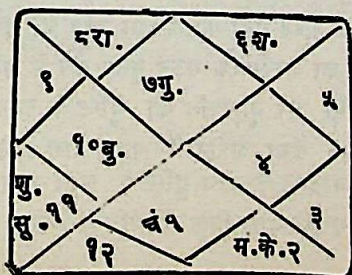
नवांश
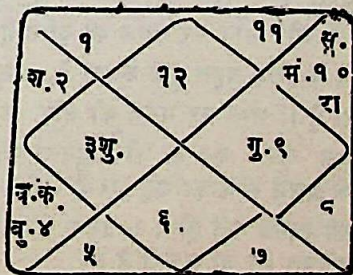
जन्म समय केतु की दशा शेष ०-९-२९

एक नजर में यह देखने में आएगा कि राशि और नवांश दोनो में ही एक दूसरे से दूसरे और बारहवें भाव में ग्रह हैं अतः ये जातक के पक्ष में नहीं हैं। लग्न तुला है और इसका स्वामी शुक्र सूर्य के साथ पांचवें भाव में है जो एक क्रूर ग्रह है और वह लग्न से ग्यारहवें भाव का भी स्वामी है। लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि है। यह क्रमशः दूसरे और बारहवें भाव में राहु और शनि के बीच घेरे में है। जातक यद्यपि एक सम्मानित परिवार का था, फिर भी एक साधारण व्यक्ति रहा। लग्न चर राशि में है, परन्तु स्वामी अचर राशि में है। जातक ने बिल्कुल यात्रा नहीं की।

कुण्डली संख्या ८ में लग्नाधिपति शुक्र है और वह लग्न से आठवें भाव में है। लग्न के एक ओर राहु (१२वें भाव के चन्द्रमा के साथ) और दूसरी ओर शनि दूसरे भाव में) हैं। यह अच्छा है। अर्थात राहु दूसरे भाव में है और उस पर कोई दृष्टि नहीं है और शनि १२वें भाव में है। इस योग के कारण जातक को चोरों और डाकुओं के हाथ से चोट लगी।

कुण्डली सं० १०—जन्म तारीख ८-८-१९१२ समय ७-३५ संध्या (आ० आ० स) (अक्षांश १३° उत्तर देशा० ५ घं० १० मि० २० से० पूर्व)

राशि

१२रा.
१०
१
११
९
२चं.श.
गु.४
३
मं.बु.शु.५
७
सू.४
के.८

नवांश
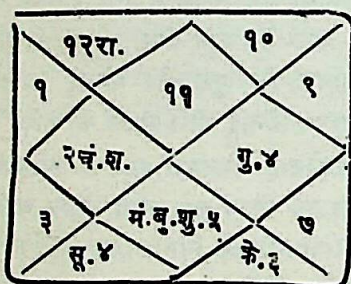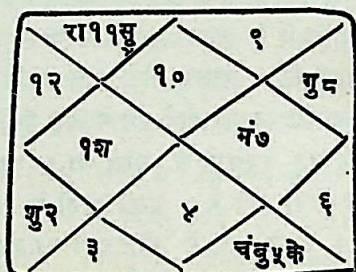
जन्म समय मंगल की दशा शेष ६-०-१० वर्ष

लग्नेश शनि वृषभ राशि में है जो उसकी मित्र राशि है और छठें भाव के स्वामी चन्द्रमा के साथ युक्ति है। लग्नेश पर वृहस्पति की दृष्टि भी है और लग्न पर भी मंगल, बुध और शुक्र की दृष्टि है। पुनः नवांश मे लग्नाधिपति शनि नीच का है और लग्न पर मंगल की दृष्टि है। चूंकि अन्य ग्रहों की अपेक्षा शनि को लग्न भाव के लिए बहुत कुछ करना है, इस व्यक्ति का शारीरिक गठन मुख्य रूप से शनि जैसा है। लग्न पर मंगल की और लग्नाधिपति पर वृहस्पति की दृष्टि के कारण जातक लम्बे कद का और दुबला पतला होगा तथा शरीर में बहुत बाल होगे। चूंकि प्रथम भाव का ग्रह क्रूर है और उसकी चन्द्रमा के साथ युक्ति है अतः जातक काफी स्वस्थ नहीं होगा। उसके खराब स्वास्थ्य की वास्तविक स्थिति छठे भाव से सुनिश्चित की जा सकती है।

यह देखा जाएगा कि अनेक जन्म कुण्डलियों की जांच से यह स्पष्ट हो जाएगा कि ऊपर की स्थिति में लग्नाधिपत्ति के होने पर कमजोर शरीर होता है। कोई भी ग्रह कमजोर शरीर दे सकता है किन्तु साथ ही वह वित्तीय और व्यावसायिक सम्पन्नता भी देता है।

विभिन्न लग्नों के परिणाम

ग्रह मण्डल की प्रत्येक राशि जब लग्न में होती है तो इसकी अपनी निश्चित मानसिक, शारीरिक और व्यक्तिगत विशेषताएँ होती हैं। इसे उदय होने वाले ग्रहों और दृष्टि डालने वाले ग्रहों के साथ मिश्रित करना होता है। प्रथम भाव में कोई ग्रह न हो तो मात्र राशि की निम्नलिखित रूप रेखा होती है। यदि वहाँ पर कोई ग्रह विद्यमान हो तो उससे इन कथनों में परिवर्तन हो जाता है। सूर्य आकृति में वृद्धि और स्वास्थ्य में सुधार करता है। चन्द्रमा से आकृति में सुन्दरता और कोमलता आती है। मंगल से व्यक्ति में कड़वापन, स्वस्थ गठन, परिश्रमी आकृति और मुख्यतः उग्र तथा शुष्क स्वभाव होता है। बुध से आनुपातिक रूप से अच्छे आकार का शरीर, मुख्यतः उग्र स्वभाव और शरीर का रंग कुछ पीलापन लिए हुए होता है। बृहस्पति से साफ रंग, बड़ी आँखें और गौरवान्वित डीलडौल होता है। शुक्र स्त्री की प्रकृति से मिलता जुलता गुण, सुन्दर, कोमलता प्रदान करता है। शनि से काला रंग और घुंघराले बाल, लम्बा शरीर, आलसी, तथा तंग छाती होती है।

मानसिक स्थिति का हमेशा चन्द्रमा और उसकी स्थिति को ध्यान में रखकर निर्णय करना चाहिए। नीचे दी गई स्थिति साधारण स्वरूप की हैं। तथापि वास्तविक व्यवहार में मुख्य राशि के बल, इसके स्वामी, लग्न पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों के कारण कुछ मामलों में इनमें अन्तर आ जाता है। बीमारी और दुर्घटना पर उदय या अस्त होने वाले ग्रहों से तथा चन्द्रमा के साथ युक्त ग्रहों से विचार किया जाता है यदि सूर्य, चन्द्रमा और लग्न एक से अधिक क्रूर ग्रहों से पीड़ित हों तो दुर्घटना होती है और विद्रोह होता है या अचानक मृत्यु हो जाती है। यदि राहु और केतु, सूर्य और चन्द्रमा से त्रिकोण में हों और त्रिकोण राशि मेष, वृषभ, वृश्चिक और मकर हो तो जातक का शरीर विकृत हो जाता है, लंगड़ा हो जाता है या उसे लकवा मार देता है।

मेष लग्न

मानसिक प्रवृत्ति—स्वतन्त्र विचार, साहसी और भावुक।

शारीरिक प्रवृत्ति—मध्यम कद, रक्तिम वर्ण, तीक्ष्ण दृष्टि, लम्बा चेहरा और नाक, ऊपर से सिर बड़ा और ठोड़ी पर छिछला, भूरा या हल्का घुंघराला सिर या सिर के ऊपर निशान या मस्सा, सजे हुए दांत और गोल आँखें।

सामान्य प्रवृत्ति—मेष राशि में उत्पन्न व्यक्ति वैज्ञानिक चिंतन पसन्द करते हैं। वे उद्यमी और महत्त्वाकांक्षी होते हैं। उनमें योजना बनाने की क्षमता होती है। वे दूसरों से मार्ग निर्देशन प्राप्त करना पसन्द नहीं करते। जब वे चाहते हैं तो प्रवल हो जाते हैं और जब क्रोध में आते हैं तो प्रचण्ड हो जाते हैं। शीघ्र ही क्रोध में आ जाते हैं, वे चरम सीमा तक भी पहुँच सकते हैं। उनकी प्रकृति उष्ण होती है। वे सुन्दरता, कला और लालित्य प्रेमी होते हैं। उन्हें व्यावहारिक ज्ञान होता है, यदि मेष राशि पीड़ित हो तो वे सिर से सम्बन्धित रोग से पीड़ित होते हैं। यदि मेष राशि में शनि और चन्द्रमा हों तो मानसिक पीड़ा और पागलपन की भी सम्भावना है।

वृषभ लग्न

मानसिक प्रवृत्ति—हठी अभिमानी और महत्त्वाकांक्षी, आसानी से चापलूसी में आने वाला किन्तु बहुत ही प्यारा, कभी-कभी अविवेकी, पूर्वाग्रही और जिद्दी।

शारीरिक प्रवृत्ति—इस राशि में उत्पन्न व्यक्ति का कद छोटा होगा और मोटा बदन, मोटे होट और सांवला रंग होगा तथा शरीर का गठन गोलाकार होगा। सुन्दर चेहरा, आंखे और कान बड़े, बड़े ललाट तथा प्रहारी तथा बड़े हाथ।

सामान्य प्रवृत्ति—यदि लोग उसे सावधानी पूर्वक नहीं सुनते तो इस राशि में उत्पन्न व्यक्ति बैल के जैसा व्यवहार करने लगता है। वे लोग आत्म विश्वासी होते हैं। उनके अपने सिद्धान्त और तरीके तथा मर्माहत करने की बुद्धि होती है। उनके पास काफी सहनशीलता, अप्रकट शक्ति तथा ताकत होती है। वे हमेशा ही अपने विचारों का प्रयोग करते हैं। उनकी शारीरिक तथा मानसिक सहनशील शक्तियाँ वास्तव में प्रशंसनीय होती हैं। वे आमोद प्रमोद के शौकीन होते हैं, वे सुन्दरता और संगीत के प्रेमी होते हैं। उनका व्यक्तित्व चुम्बकीय होता है। वे सोचते हैं कि वे अपना अधिकार जमाने के लिए पैदा हुए हैं। सामान्यतः ५० वर्ष की आयु के बाद वे उत्तेजित होने की बीमारी से पीड़ित हो जाते हैं। बच्चों के संबंध में अधिक सुख का संकेत नहीं मिलता। स्वर्गीय श्री बी. सुब्रह्मण्यम् राव वृषभ लग्न के ज्वलन्त उदाहरण हैं।

मिथुन लग्न

मानसिक प्रवृत्ति—उनका मस्तिष्क गतिमान होता है। पढ़ने लिखने में शौकीन होते हैं। वे सरल, विवेकशील, जीवन्त और परस्पर विरोधी, उत्तेजित तथा परेशान होते हैं।

शरीरिक प्रवृत्ति—वे कद में लम्बे तथा सीधे और गति में चंचल होते हैं। चेहरा अच्छी प्रकार से विकसित होता है। ठोड़ी के पास गड्ढा, पतला चेहरा, रक्तिम

रंग, यदि वहाँ पर अनिष्ट ग्रह है तो असामान्य लम्बाई, आँखें साफ तथा नाक चपटी होती है। वे कमजोर किन्तु चंचल होते हैं।

सामान्य प्रवृत्ति—वे काफी चंचल तथा मैकेनिकल विज्ञान में निपुण बनना चाहते हैं। वे अचानक उत्तेजना से पीड़ित हो सकते हैं। उन्हें स्त्रियों के साथ घूमने में सावधान रहना चाहिए। कभी-कभी उनका मस्तिष्क अपनी ही चरित्र हीनता से जाग्रत हो उठता है। वे काफी होशियार होते हैं तथा वाद-विवाद एवं साहित्यिक क्षमता उन्हें विरासत में प्राप्त होती है। वे छल कपट और धोखाधड़ी में पकड़े जा सकते हैं। यदि मिथुन में अनिष्ट ग्रह हों तो उनके स्वभाव में जुआ तथा धोखाधड़ी की विशेषता होगी। जहाँ पर अधिक क्रिया कलाप होगा वहाँ पर उनके व्यवसाय अधिक सफल होंगे।

कर्क लग्न

मानसिक प्रवृत्ति—इस राशि में उत्पन्न व्यक्ति काफी संवेदन शील, जिज्ञासु, उत्तेजित और परेशान तथा संगीत तथा दक्षिण हस्त में रुचि रखते हैं।

शारीरिक प्रवृत्ति—उनका शरीर मध्यम, चेहरा पूरा, हल्की चिपकी नाक, साफ रंग, लम्बे हाथ, लम्बा चेहरा तथा फैली हुई छाती होती है।

सामान्य प्रवृत्ति—वे काफी तेज चमकीले और काफी मिताहारी और उतने ही मेहनती होते हैं। अपनी मितव्ययिता के कारण वे कभी-कभी काफी कंजूस भी बन जाते हैं। मस्तिष्क दैव ज्ञानी और अवगम्य होता है। वे मनोरंजन के प्रेमी होते हैं। अपने परिवार और बच्चों को बहुत चाहते हैं। वे अक्सर प्रेम में निराश होते हैं। वे काफी बातूनी, आत्म विश्वासी, ईमानदार होते हैं और दूसरे के सामने झुकते नहीं। उन्हें न्याय और ईमानदारी के लिए सम्मान मिलता है। उनकी भावना मजबूत होती है। उनकी प्रवृत्ति मनोवैज्ञानिक होती है तथा नए विचारों की खोज करके उन्हें पर्यावरण में लागू करते हैं। वे अधिकार और सावधानी के इच्छुक होते हैं। वे उतार चढ़ाव के व्यवसाय में काफी सफल होते हैं।

सिंह लग्न

मानसिक प्रवृत्ति—सिंह राशि में उत्पन्न लोग महत्त्वाकांक्षी धनलोलुप, और सहृदय होते हैं तथा कला, साहित्य और संगीत के शौकीन होते हैं। वे हंसमुख तथा अनावेगी होते हैं।

शारीरिक प्रवृत्ति—इस राशि में उत्पन्न व्यक्ति देखने में आकर्षक होता है, उसके कंधे चौड़े होते हैं। पित्तदोषग्रस्त, साधारण ऊँचाई, चेहरा अंडाकार, चिन्तन मुद्रा होती है। शरीर को ऊपरी भाग का बेहतर गठन होता है।

सामान्य प्रवृत्ति—वे जीवन की किसी भी स्थिति में अपने आप को शामिल कर देते हैं। उन्हें विश्वास होता है। वे स्नेह में काफी ईमानदार होते हैं। वे धर्म में दकियानूसी सिद्धान्तों को मानते हैं किन्तु उनमें काफी सहन शक्ति होती है। वे संगीत साहित्य के प्रेमी होते हैं तथा उन्हें दर्शन शास्त्र का भी कुछ ज्ञान होता है। वे अतृप्त पाठक होते हैं। जीवन में उन्हें आखिरकार उतनी सफलता नहीं मिलती जितनी आशा होती है और कभी-कभी जीवन भर संघर्ष करना पड़ता है। उनकी आकांक्षाएँ काफी हद तक पूरी नहीं होती। उनमें नैसर्गिक नीति का अभाव होता है। अतः उनके सामने अनेक कठिनाइयां आती हैं। वे क्षमा कर देते हैं और काफी समय तक ईर्ष्या नहीं रखते। वे उत्तेजना के रोग से पीड़ित हो सकते हैं और उनके वरिष्ठ अधिकारी साधारणतः उन्हें गलत समझ बैठते हैं।

कन्या लग्न

मानसिक प्रवृत्ति—कन्या लग्न में उत्पन्न लोग भावुक, आवेशी तथा अध्ययन के शौकीन होते हैं; वे संगीत और आधुनिक कला के प्रेमी होते हैं। उनमें आत्म विश्वास का अभाव होता है। वे औपचारिक तथा मेधावी होते हैं। उनका मस्तिष्क चंचल होता है।

शारीरिक प्रवृत्ति—इस राशि में उत्पन्न व्यक्ति मध्यम आकार का होता है। उसकी छाती उभरी हुई और यदि पीड़ित हो तो दुर्बल भी होगी। उसकी नाक सीधी, तथा गाल स्थूल तथा ललाट उत्तम होगा।

सामान्य प्रवृत्ति—वे युवावस्था में अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करते हैं। वे विचार शील तथा भावुक होते हैं और अपने आवेग पर आसानी से काबू पा लेते हैं। वे अपने हित के बारे में सावधान दूरदर्शी, मितव्ययी, राजनयिक और चतुर होते हैं। भौतिक और रसायन विज्ञान में लेखक के रूप में वे प्रगति करते हैं। दूसरों के ऊपर उनका काफी अधिकार और प्रभाव होता है। वे उत्तेजना और पक्षाघात से पीड़ित हो सकते हैं यदि यह राशि पीड़ित हो। वे चिन्तनशील स्वभाव के होते हैं।

तुला लग्न

मानसिक प्रवृत्ति—तुला लग्न में उत्पन्न व्यक्ति आदर्शवादी; वैरसाधक, बली और निरपेक्ष होते हैं।

शारीरिक प्रवृत्ति—सामान्यतः उनका रंग साफ, मध्यम कद, शान्त, सुन्दर, बड़ा चेहरा, सुन्दर आँख, लम्बी छाती और सामान्य शरीर होता है। देखने में वे युवक लगते हैं।

सामान्य प्रवृत्ति—इस राशि में उत्पन्न व्यक्ति सामान्यतः कामुक होते हैं। वे मानव प्रकृति के निरीक्षण के शौकीन होते हैं। वे अपने विचारों से पूर्वानुमान

करने के शौकीन होते हैं। वे न्याय, शान्ति, व्यवस्था और तर्क संगत लोगों को पसन्द करते हैं। वे महत्त्वाकांक्षी होते हैं। वे वास्तविक और व्यावहारिक लोगों की अपेक्षा अधिक आदर्शवादी होते हैं और अक्सर ख्याली पोलाव पकाने की योजना बनाते हैं। वे उतने भावुक नहीं होते जितना लोग समझते हैं। राजनैतिक नेताओं और धार्मिक सुधारकों के रूप में जनता पर उनका काफी प्रभाव जम जाता है। और कभी-कभी उनकी उत्तेजना और जोश उस सीमा तक पहुँच जाता है कि वे अपने विचार अनिच्छुक लोगों को मनवाने के लिए बाध्य कर देते हैं। वे आसानी से अनुगामी नहीं बनते। वे संगीत के बहुत प्रेमी होते हैं। उनके लिए सच्चाई और इमानदारी का बहुत बड़ा स्थान होता है।

वृश्चिक लग्न

मानसिक प्रवृत्ति—व्यंगप्रिय और आवेशी होते हैं। इस राशि में उत्पन्न स्त्री में पुरुष के गुण होते हैं। ज्योतिष में विश्वास रखने वाले होते हैं। उनका मस्तिष्क सूक्ष्म होता है तथा लोगों पर निष्प्रभावी होते हैं।

शारीरिक प्रवृत्ति—इस लग्न में उत्पन्न व्यक्ति देखने में सुन्दर होते हैं। उनकी हड्डियां पूर्णतः विकसित होती हैं। उनकी आँखें बड़ी, कद लम्बा, घुंघराले बाल और चेहरा बड़ा होता है। उनका व्यक्तित्व आकर्षक तथा भौंहें सुन्दर और उपदेशात्मक होती हैं।

सामान्य प्रवृत्ति—वे उदार प्रवृत्ति के होते हैं। वे चंचल मस्तिष्क वाले तथा अधिक भावुकता पसन्द होते हैं। वे कामुकता वाली वस्तुओं को पसन्द नहीं करते किन्तु कामुकता सम्बन्धी आनन्द पर नियन्त्रण रखते हैं। वे उत्तम पत्रकार होते हैं। वे अक्सर अपरिष्कृत और अशिष्ट हो जाते हैं। वे मुकाबला करने में काफी शौकीन होते हैं। वे उद्यमी होते हैं। वे आराम पसन्द होते हैं किन्तु मितव्ययी भी होते हैं। यदि वे संगीत सीखें तो उस विद्या में निपुण हो सकते हैं। वे आधुनिक कला, नृत्य और अन्य कलाओं में निपुण हो सकते हैं। उनका अपना मत हाता है वे गर्म विचार के होते हैं और उन्हें बवासीर की बीमारी हो सकती है। यद्यपि वे बहुत अच्छे वादी और लेखक होते हैं पर उन्हें अपनी बुद्धि पर कम भरोसा होता है।

धनु लग्न

मानसिक प्रवृत्ति—धनु लग्न में उत्पन्न व्यक्ति दर्शनशास्त्र और ज्योतिष के अध्ययन में रुचि रखता है। इन विषयों में उनका अपना अधिकार होता है। वे कुछ आवेशी तथा सामान्यतः चंचल और उद्यमी होते हैं।

शारीरिक प्रवृत्ति—इस राशि में उत्पन्न व्यक्तियों का शरीर स्थूल होता है। उनकी आंखें बादामी और बाल भूरे होते हैं। वे देखने में सुन्दर होते हैं। उनके

दांत भी सुन्दर ढंग से सजे हुए होते हैं, प्रसन्न मुद्रा धनु के जातक के शरीर की विशेषता होती है।

सामान्य प्रवृत्ति—वे कफ प्रवृत्ति के होते हैं। वे काफी पारम्परिक और कारोबार पसन्द होते हैं। वे सदा तत्पर रहते हैं और दकियानूसी विचार के होते हैं। वे हमदर्द प्रिय तथा दूरदर्शी होते हैं। किसी किसी समय परेशान और चिन्तित हो जाते हैं। वे बहुत निष्ठुर और उत्साही होते हैं। ईश्वर से डरते हैं, ईमानदार, नम्र और कपट से मुक्त होते हैं। वे अपने भोजन और पेय पर तथा विपरीत लिंग के साथ सम्बन्धों पर नियन्त्रण रखते हैं। अन्य लोग उन्हें दूसरों के खिलाफ भड़काते हैं। इन्हें उम्र बढ़ने पर फेफड़े से सावधान रहना चाहिए क्योंकि वे वात सम्बन्धी. दर्द से पीड़ित हो सकते हैं।

मकर लग्न

मानसिक प्रवृत्ति—वे जीवन की चिन्ताओं में संयम रखते हैं। हमदर्द, उदार और मानवप्रेमी, अपने प्रयोजनों में प्रबल, रहस्यमय और बदला लेने वाले होते हैं। मकर लग्न के जातक धूर्त और दृढ़ निश्चयी होते हैं।

शारीरिक प्रवृत्ति—इस राशि में उत्पन्न व्यक्ति लम्बा, दुबला, लाल और भूरे रंग का और भोंह तथा छाती पर घने बाल बाला होता है। सिर बड़ा और चेहरा विस्तृत होता है। उसके दांत लम्बे, मुंह बड़ा, लम्बी नाक होती है और झुकने की प्रवृत्ति होती है, शरीर मोटा और मांसल होता है।

सामान्य प्रवृत्ति—वे स्वयं को परिस्थिति के अनुसार बनाने में दक्ष होते हैं। उनके जीवन में बहुत अभिलाषा होती है और धन बचा नहीं सकते हैं। वे प्रदर्शन को पसन्द करते हैं। वे बहुत अध्यवसायी होते हैं। जब शनि पीड़ित हो तो वे प्रतिशोधी होते हैं। और कभी-कभी कारण बन जाते हैं। वे प्रयास करने में सक्षम होते हैं। घरेलू जीवन में वे निपुण होते हैं और कभी कभी पति पत्नी से बनती नहीं है। उन्हें अपने इस कष्टप्रद प्रवृत्ति पर नियन्त्रण रखना चाहिए। वे परिश्रमी होते हैं। यदि मंगल अपनी राशि के अतिरिक्त कहीं और हो तो उनमें आत्म-विश्वास की कमी होती है और वे भीरु, उत्तेजित और कमजोर दिमाग के हो जाते हैं। उन्हे गप्पी कहा जा सकता है और उन्हें अपनी जुबान पर कम नियंत्रण रहता है।

कुम्भ लग्न

मानसिक प्रवृत्ति—कुंभ एक दार्शनिक राशि है। इस राशि में उत्पन्न व्यक्ति महान शिक्षक, लेखक, व्याख्याता होते हैं यदि यह राशि पीड़ित न हो। कुंभ राशि का जातक संचयी होता है। जब उन्हें उत्तेजित किया जाता है तो वे चिड़चिड़े हो

जाते हैं। वे उदार. हमदर्द और हमेशा दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। वे तेज बुद्धि वाले, अच्छे याददास्त वाले तथा तथ्यों को समझने में सक्षम होते हैं।

शारीरिक प्रवृत्ति—वे साधारणतया लम्बे, पतले, सुन्दर तथा आकर्षित और मनोहर होते हैं। उनके होंठ लाल और गाल चौड़े होते हैं। उनकी कनपटी और नितंब उभड़े हुए होते हैं। यदि शनि चौथे भाव में हो तो उनकी छाती कमजोर हो होती है और थोड़ी झुकी हुई होती है।

सामान्य प्रवृत्ति—वे दूसरों को शीघ्र ही मित्र बना लेते हैं। चिड़चिड़े होते हैं, और यदि उत्तेजित कर दिया जाए तो सांढ़ की तरह खूंखार हो जाते हैं किन्तु उनका गुस्सा शीघ्र शान्त हो जाता है। वे लेखक के रूप में उभरते हैं। उनकी बात चीत रुचिकर होती है। वे कभी-कभी डरपोक और भीरु हो जाते हैं। नए श्रोताओं के समक्ष अपनी बुद्धि का प्रदर्शन करने में उन्हें शर्म आती है। वे ज्योतिष शास्त्र के विशेषज्ञ होते हैं और उस क्षेत्र में उनका स्थान होता है। जब वे युवावस्था में रहते हैं तभी वे साहित्य के क्षेत्र में विश्व में महान बन जाते हैं। यदि ग्रह अनुकूल स्थिति में न हो तो इस राशि में उत्पन्न व्यक्ति को धक्का पहुँचता है और वह अपना सम्मान खो देता है। उनके मानवीय सिद्धान्तों के कारण उन्हें गलत समझा जाता है। पारिवारिक जीवन में उन्हें पर्याप्त सुख नहीं मिलता। वे पति/पत्नी के काफी भक्त होते हैं। शूल या छाती के दर्द तथा इसी प्रकार की बीमारी से पीड़ित होते हैं। उनके पति या पत्नी को चाहिए कि वे उन्हें हमेशा खुश रखे। अन्यथा स्वास्थ्य से पीड़ित रहेंगे।

मीन लग्न

मानसिक प्रवृत्ति—मीन राशि में उत्पन्न व्यक्ति जिद्दी, आध्यात्मिक, ग्रहणशील, अत्यधिक धार्मिक, संयमी, धर्मान्ध और ईश्वर से डरने वाले होते हैं।

शारीरिक प्रवृत्ति—वे साफ मध्यम ऊंचाई, सांवला रंग, मछली की आंख जैसी आखों और मोटे शरीर वाले होते हैं।

सामान्य प्रवृत्ति—वे दकियानूसी सिद्धान्तों का आदर करते हैं और हर बातें भूल सकते हैं किन्तु ददियानूसी बातें नहीं भूल सकते। वे बहुत संजीदा रहते हैं और किसी बात पर समय से पहले निर्णय ले लेते हैं। वे ईश्वर से डरने वाले होते हैं और धार्मिक परम्परा तथा प्रथाओं का सख्ती से पालन करते हैं। वे भीरु, जिद्दी तथा दूसरों पर अधिकार जताने में महत्त्वाकांक्षी होते हैं। वे अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को समझ नहीं पाते। बेचैन रहते हैं और इतिहास, पौरातनिक बातचीत और धर्मग्रन्थों के शौकीन होते हैं। वे धन खर्च करने में कंजूस होते हैं, यद्यपि जीवन में दूसरों पर आश्रित होते हैं फिर भी उनके चेहरे पर स्वतन्त्रता का चिन्ह

होता है। वे अपने व्यवहार में न्याय परायण होते हैं और सत्य का पालन करते हैं इन सबके बावजूद उनमें आत्मविश्वास का अभाव होता है।

प्रथम भाव की ग्रह स्थिति

लग्न में उदय होते ग्रह अपना प्रभाव देते हैं। आरम्भ में यह असंगत दिखता है कि एक बच्चे के जन्म के समय ग्रहों की आकस्मिक स्थिति का जीवन काल में उसके स्वास्थ्य, वित्त, भाग्य, प्यार और मनोभाव आदि पर प्रभाव पड़ता है किन्तु प्रयोग से ऐसा देखा गया है कि उसके जन्म के समय की ग्रहों की स्थिति और उसके वास्तविक तथा नैतिक मनोभाव के बीच गहरा सम्बन्ध होता है। जन्म कुंडली को एक व्यक्ति के रूप में मानना चाहिए न कि असंबद्ध ग्रहों के प्रभावों के रूप में। कहीं कुछ ऐसी चीज है जो इन तितर-बितर और विरोधी खंडों को एक साथ जोड़ती है। बारह भाव केवल उस ढांचे के द्योतक नहीं हैं जो जन्म समय बच्चे का आकार होता है बल्कि वे उसके मूल कारक के अनुसार बदलते रहते हैं यदि वे जन्म समय ग्रहों से पीड़ित होते हैं। जब विभिन्न राशियों में स्थित ग्रहों के प्रभाव को हम दर्शाते हैं तो हमें उस कुंडली का निदान प्राप्त करना चाहिए।

नीचे दिए गए विवेचन भावों में स्थित ग्रहों के लिए हैं। इसमें उन पर आ रही दृष्टि का विचार नहीं किया गया है। यदि प्रथम भाव में स्थित किसी ग्रह पर कोई दृष्टि हो या किसी अन्य ग्रह के साथ युक्ति हो तो भाव स्थिति के अनुसार उसके प्रभाव में परिवर्तन किया जाएगा। नीचे दिए गए ब्यौरे को प्रश्नाधीन कुंडली की आवश्यकताओं के अनुसार लागू करना चाहिए। सर्व प्रथम यह देखें कि क्या प्रथम भाव में कोई ग्रह उच्च या नीच का पड़ा है और क्या प्रथम भाव में पड़े ग्रह से कोई योग आदि बनता है (यह सिद्धान्त अन्य सभी भावों पर लागू होता है) उसके अनुसार अपने पठन में संशोधन कर लें। उदाहरण स्वरूप, लग्न में कुंभ राशि है और उस राशि में शनि का उदय हो रहा है तो मनोभाव शान्त गम्भीर और गहरा है। जातक विश्वासी है। चूंकि लग्न कुंभ है अतः उसमें शनि के गुण होंगे क्योंकि उदय राशि का स्वामी अपने ही भाव में है। यदि उदय राशि सिंह है तो सामान्यतः कुण्डली दुर्भाग्यपूर्ण होती है। इसमें विपत्ति, असफलता, दरिद्रता और कठिन चढाई वाली सड़क का संकेत मिलता है। ज्योतिष सम्बन्धी जांचों के अनुरूप अपने निष्कर्षों को ढालकर पर्याप्त विवेक का प्रयोग करके आप अपनी भविष्य वाणी कर सकते हैं। ऊपर की टिप्पणियों का सार निम्नवत है—
(क) उदय होने वाले ग्रह के स्वरूप का विचार करना (ख) क्या यह नीच का है या उच्च का, क्या मित्र राशि में है या शत्रु राशि में। (ग) ग्रहों की दृष्टियों पर ध्यान दें—किस भाव से दृष्टि आती है और उदय होने वाले ग्रह की युक्ति। (घ) उस

राशि का स्वभाव—चर, अचर, द्विस्वभाव, वायु, जलीय आदि। अन्त में सभी भावों का सावधानी पूर्वक मिश्रण करें।

सूर्य प्रथम भाव में—नैतिक, न्यायवादी, महत्त्वाकांक्षी अधिकार पसन्द, उत्तम स्वास्थ्य और जीवन शक्ति वाला होगा। उसकी हंसमुख प्रवृत्ति तथा आशावादिता से उसे विख्यात बनने में सहायता मिलेगी। इससे उसके व्यक्तित्व में मदद मिलती है और उसके विचार नर्म होते हैं। यदि शनि या मंगल के साथ हों तो इससे तिल का संकेत मिलता है और गर्म प्रवृत्ति होती है। खून अशुद्ध हो जाता है और सारे शरीर में खुजली होती है। बुखार प्रदाह और आँख की बीमारी की भी आशा की जा सकती है।

चन्द्रमा प्रथम भाव में—जातक उच्छृंखल, रोमांसवादी, और आधुनिक हो हो जाता है। आरामतलब मनोभाव के कारण उसके अन्दर पर्याप्त बेचैनी रहती है। उसके भाग्य में परिवर्तन होता रहता है। इससे आदमी आदर्शवादी, यात्रा करने वाला और अन्वेषक बन जाता है। यदि शनि की युक्ति हो तो वह हमेशा चिन्तित रहेगा। यदि चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो स्त्री के मामले में मासिक की अनियमितता का संकेत मिलता है। सामाजिकता उसकी विशेषता होती है। वह अपने व्यवसाय में सफल होगा। इससे जनता के सम्पर्क में आएगा। लग्न में चन्द्रमा के साथ राहु की युक्ति होने पर उन्माद की प्रवृत्ति का संकेत मिलता है और चन्द्रमा के साथ बृहस्पति की युक्ति होने पर मस्तिष्क का उत्थान होता है।

मंगल प्रथम भाव में—यह गर्म स्वभाव, साहस, आत्मविश्वास और उद्यमी बनाता है। इस जातक को व्यावहारिक सक्षमता होगी और आजादी तथा स्वतन्त्रता का प्रेमी होगा। वह पराजय के तिरस्कार के खतरे से दुस्साहसी हो जाता है। इससे उसका स्वभाव उच्छृंखल बन जाता है। शरीर पर तिल होते हैं और देखने में सुन्दर होता है। यदि कोई अनुकूल योग न हो तो पारिवारिक जीवन दुखद हो जाता है। शरीर का दुरुपयोग करने के कारण स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। दुर्घटना हो सकती है। दृष्टियों की सावधानी पूर्वक जांच कर लेनी चाहिए। कटने, जलने आदि की सम्भावना का खतरा रहता है।

बुध प्रथम भाव में—इस स्थिति में जातक विनोदी होता है। वाक् चातुर्य की तत्परता और मानसिक पटुता पाई जाती है। जातक विशेषकर ग्रहों के अध्ययन में प्रवीण होता है। यदि शुक्र की उत्तम दृष्टि हो तो जातक संगीतज्ञ और मेधावी होता है। किसी चीज को ग्राह्य करना उनकी विशेषता होती है। बुध आदमी को प्रतिभा शाली बनाता है। यदि लग्न में राहु या केतु हो तो जातक उत्तेजना के कष्ट से पीड़ित होता है।

बृहस्पति प्रथम भाव में—जातक का व्यक्तित्व सम्मोहक होता है। इसमें आशावादी चेतना, प्रसन्नचित मनोभाव, और आकर्षक आचरण का संकेत मिलता है। यदि पांचवां भाव पीड़ित न हो तो जातक के अधिक पुत्र होंगे। विशेषकर अधिक खुराक खाने के कारण स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ेगा। यदि साथ में राहु हो तो वह पाप करेगा, शरीर झुका हुआ होगा। इस ग्रह के अधीन वकील, प्रोफेसर, लेखक, धर्मशास्त्री आदि आते हैं। ऐसा व्यक्ति एक प्रभावी नेता बनता है। अशुद्ध रक्त के कारण रोगग्रस्त होता है।

शुक्र प्रथम भाव में—यह एक भाग्यशाली योग है, यदि लग्न मकर या कुम्भ हो तो वह अधिक भाग्य शाली होता है। जातक का स्वभाव सौहार्दमय तथा प्रसन्न होता है। वह कला का प्रेमी होता है। उसमें मनोरंजन की आकांक्षा और काम की इच्छा होती है। जातक संगीत, नाटक और गानों में रुचि रखता है। सेन्ट, फूलों आदि सुगन्धों का शौकीन होगा। इस राशि में उत्पन्न व्यक्ति की विपरीत सेक्स वाले प्रशंसा करते हैं। साधारणतया उत्तम भाग्य का संकेत मिलता है। जातक पत्नी/पति का प्रेमी होता है। उसका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक होता है। शादी जल्दी होती है। यदि पीड़ित हो तो विवाहित जीवन में असामन्जस्य रहता है।

शनि प्रथम भाव में—विदेशी रिवाजों को आसानी से नकल और अनुकरण करता है किन्तु यदि शनि पीड़ित न हो तो दूसरों का कल्याण करता है। साधारणतया आत्मविश्वास पाया जाता है। इसमें नैतिक स्थिरता भी पाई जाती है। शान्त और गम्भीर मनोभाव होता है। शरीर दुबला पतला और क्षीण होता है। वह अपने उत्तरदायित्व से विमुख हो सकता है शनि की इस स्थिति में निष्क्रिय आदत हो जाती है। लापरवाही के कारण हानि और सुअवसर का अभाव संभव है। यदि लग्न पर शनि की दृष्टि हो तो ऐसा ही परिणाम ध्यान में आएगा। जीवन के आरम्भ में दुर्भाग्य रहता है।

राहु प्रथम भाव में—सामान्यतः स्वास्थ्य असन्तोष जनक रहेगा और डाक्टरी उपचार से भिन्न विधि से उपचार कराएगा। उसका झुकाव जादू की ओर होता है तथा उसमें नैसर्गिक गंभीरता पाई जाती है। दूसरे के प्रति मिथ्याचारी रहता है। यह योग विवाह के लिए खराब है। राहु में सामान्यतः शनि की विशेषता आ जाती है।

केतु प्रथम भाव में—आध्यात्मिक शक्ति की संभावना है। इसमें कमजोर शरीर और क्षीण आकृति का संकेत मिलता है। अस्थिरता और कपट का आचरण पर प्रभाव पड़ता है। विकृत कल्पना, आश्चर्यजनक अभिरुचि, उत्तेजना की प्रवृत्ति और विचरणशील मनोभाव का संकेत मिलता है। यदि अनुकूल दृष्टि या युक्ति न हो तो विवाहित जीवन सुखी नहीं होता।

प्रत्येक ग्रह कुछ विकिरण बल या शक्ति का केन्द्र होता है। ग्रहों के इस विकिरण का संसार के सभी जीवों द्वारा अपनी क्षमता के अनुपात में ग्रहण किया जाता है। उन पर ग्रहों के बल का प्रभाव पड़ता है।

प्रथम भाव के संकेतों का फल कब प्राप्त होता है

हिन्दू ज्योतिष के निर्देशों की अनेक प्रणालियाँ हैं जिनमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण उडु दशा या विंशोतरी दशा है जिसकी गणना के बारे में विवरण ज्योतिष की मानक पुस्तकों में और मेरी हिन्दू फलित ज्योतिष में दिया गया है। इस अध्ययन में हम प्रथम भाव से संबंधित समय-काल की पद्धति का विवेचन करेंगे।

प्रथम भाव से शरीर, सामान्य स्वास्थ्य, बचपन और व्यक्तित्व का संकेत मिलता है। प्रथम भाव के परिणामों के विश्लेषण में हमें निम्नलिखित बातों पर सावधानी पूर्वक विचार करना चाहिए—

क्या उस कुण्डली का जातक लग्नाधिपति की दशा को भोगेगा? या इस काम के लिए विचाराधीन किसी भाव के स्वामी की दशा आएगी? यह जानने के लिए सर्वप्रथम आयु सुनिश्चित कर लेनी चाहिए। यदि मारक अवधि के आरम्भ होने से पहले लग्नाधिपति की दशा आरम्भ नहीं होती है तो स्थिति के अनुसार प्रथम भाव पर किन अन्य ग्रहों का प्रभाव है और क्या जातक उस ग्रह की दशा को भोगेगा? महादशा और अन्तर्दशा सामान्यतः जातक के जीवन की रूपरेखा बताती है। प्रथम भाव से संबंधित घटनाओं का समय बताने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें–

(क) प्रथम भाव का स्वामी
(ख) प्रथम भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह
(ग) प्रथम भाव में स्थित ग्रह
(घ) प्रथम भाव के स्वामी पर दृष्टि डालने वाले ग्रह
(ङ) प्रथम भाव के स्वामी के साथ युक्ति करने वाले ग्रह।

आगे के पृष्ठों में वर्णित अन्य भावों के सम्बन्ध में भी इनका ध्यान रखना चाहिए।

ये पाँच तथ्य दशानाथ (महादशा काल के स्वामी) या भुक्तिनाथ (अन्तर्दशा काल के स्वामी) के रूप में प्रथम भाव पर प्रभाव डालते हैं। इसके अतिरिक्त (१) अन्तर्दशा का स्वामी जिसका प्रथम भाव पर प्रभाव पड़ता है उसके महादशा काल में भी प्रथम भाव पर प्रभाव पड़ता है। जिस स्वामी की प्रथम भाव के साथ युक्ति है उसकी अन्तर्दशा, जिस स्वामी की प्रथम भाव से युक्ति नहीं है उसकी महादशा में प्रथम भाव पर सीमित रूप में प्रभाव होगा। निम्नलिखित विवेचन से उपरोक्त सिद्धान्त स्पष्ट हो जायेगा—

कुंडली संख्या ११—जन्म तारीख ४-४-१९९२ समय ७.३५ संध्या (मा० स्टे० रा०) (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० २० से०)

राशि

१२रा १० १ ११ ९ २चंश ग ८ ३ शुबुमं५ ७ सू४ के६

नवांश

सू.रा११ ९ १२ १० गु.८ १श. मं.७ शु.२ ४ ६ ३ के.चं.बु.५
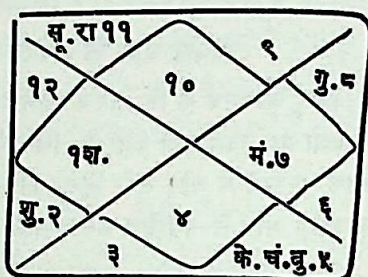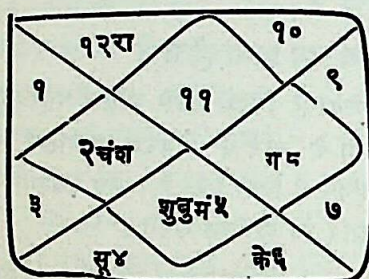
जन्म समय मंगल की दशाशेष ६-०-१० आयु० लगभग ७५ वर्ष

अपना महादशा और अन्तर्दशा काल के प्रथम भाव का फल देने वाले ग्रह।

(क) प्रथम भाव का स्वामी—शनि

(ख) प्रथम भाव पर दृष्टि देने वाले ग्रह—शनि, मंगल, शुक्र और बुध

(ग) प्रथम भाव में स्थित ग्रह— कोई नहीं

(घ) प्रथम भाव के स्वामी पर दृष्टि देने वाला ग्रह—वृहस्पति

(ङ) प्रथम भाव के स्वामी के साथ युक्ति करने वाला ग्रह—चन्द्रमा

ऊपर की कुण्डली में शनि, मंगल, बुध, शुक्र, वृहस्पति और चन्द्रमा अपनी महादशा या भुक्ति में प्रथम भाव का प्रभाव दे सकते हैं। चूंकि आयु लगभग ७५ वर्ष है अतः मंगल, वृहस्पति, शनि और बुध महादशा और अन्तर्दशा स्वामी के रूप में प्रथम भाव को प्रभावित कर सकते हैं किन्तु शुक्र केवल अन्तर्दशा स्वामी के रूप में प्रथम भाव को प्रभावित कर सकता है।

प्रथम भाव पर प्रभाव डालने वाले अनेक ग्रहों में से जिनमें दो कार्य (ऊपर लिखित ५ में से) मिले जुले हों, वे उस भाव को अधिक प्रभावित करेंगे। उदाहरण स्वरूप उपरोक्त कुण्डली में शनि न केवल लग्नाधिपति है बल्कि लग्न पर दृष्टि भी डाल रहा है अतः वह अन्य ग्रहों की तुलना में प्रथम भाव को अधिक प्रभावित करेगा। एक ग्रह किसी भाव को तभी प्रभावित करता है यदि वह उस भाव का स्वामी हो, उस भाव में हो, उस भाव या उस भाव के स्वामी पर दृष्टि डाल रहा हो।

फल का स्वरूप

प्रत्येक व्यक्ति के मामले में फल के स्वरूप में अन्तर होता है। प्रथम भाव पर प्रभाव डालने वाले ग्रह की महादशा में—

(क) प्रथम भाव पर प्रभाव डालने वाले अन्य ग्रह जिनकी मुख्य स्वामी के साथ युक्ति हैं, की अन्तर्दशा में प्रथम भाव से सम्बन्धित फल मिलेगा—जो लगभग बहुत उत्तम होगा।

(ख) प्रथम भाव पर प्रभाव डालने वाले ग्रह जिनकी मुख्य स्वामी के साथ युक्ति है, की अन्तर्दशा में प्रथम भाव के सम्बन्ध में साधारण फल मिलेगा।

(ग) फल का अच्छा या बुरा स्वरूप इस बात पर निर्भर करता है कि क्या वह ग्रह सौम्य है या क्रूर है, क्या वह उस विशेष लग्न के लिए अनुकूल है या प्रतिकूल है और क्या वह राजयोग कारक है या मारक है।

(घ) मुख्य स्वामी या गौण स्वामी (प्रथम भाव को प्रभावित करने वाले) उन अन्य भावों के सम्बन्ध में प्रथम भाव से सम्बन्धित प्रभाव देगा जो कि स्वामित्व दृष्टि, स्थिति आदि के कारण स्वामी का प्रभाव होगा। इस प्रकार वृषभ लग्न के मामले में जबकि मंगल लग्न में स्थित हो, मंगल अपनी दशा में सातवें भाव से सम्बन्धित प्रथम भाव का फल देगा।

ऊपर की कुण्डली में हम मंगल को लेते हैं और यह देखें कि वह अपनी दशा के दौरान (प्रथम भाव के सम्बन्ध में) क्या प्रभाव देगा। जन्म के समय ५ वर्ष ८ महीने ६ दिन (८-८-१९१२ से १४-१४-१९१८ तक) मंगल की दशा शेष थी। मंगल की महादशा में अक्तूबर १९१४ तक शनि की अन्तर्दशा थी। महादशा तथा अन्तर्दशा दोनों ही स्वामी प्रथम भाव पर प्रभाव डालने में सक्षम हैं। महादशा स्वामी चौथे भाव (मां तथा सुख भाव) के स्वामी शुक्र (प्रथम भाव पर प्रभाव डालने में सक्षम) के साथ है। इस कारण जातक की मां की मृत्यु हो गई और उसका सुख समाप्त हो गया।

साधारणतः प्रथम भाव पर प्रभाव डालने में सक्षम विभिन्न ग्रह अपनी दशा अन्तर्दशा के दौरान निम्नलिखित फल देते हैं—

सूर्य—शरीर में गर्मी ज्यादा रहेगी और स्वास्थ्य खराब रहेगा। निरुद्देश्य यात्रा करेगा और शारीरिक सुख नहीं मिलेगा। वह अनैतिक या धर्म को नहीं मानने वाला होगा तथा पृथक हो जाने के कारण पारिवारिक सुख से वंचित रहेगा।

सूर्य उच्च या नीच का हो सकता है, वह मित्र राशि में हो सकता है, अपनी राशि में हो सकता है और महत्त्वपूर्ण योग बना सकता है। ऐसी हालत में ऊपर दिए गए फल बदल सकते हैं। प्रत्येक ग्रह के सम्बन्ध में यह लागू होगा।

चन्द्रमा—वह व्यक्ति शरीर से सुखी होगा, स्वास्थ्य और जवाहरात का भी सुख प्राप्त होगा। उसके कई नौकर होंगे और आराम तलब होगा। उसकी प्रसिद्धि बढ़ेगी।

मंगल—चोरों और विष से पीड़ित होगा। शरीर पर फोड़ा फुंसी होगी, माता पिता के सुख से वंचित हो जाएगा यदि मंगल की युक्ति चतुर्थ, नवम भावों के स्वामी के साथ हो। मस्तिष्क चिन्तित रहेगा जिसका प्रभाव स्वास्थ्य पर पड़ेगा।

राहु—वह व्यक्ति अपना विवेक और मित्र खो देता है। शरीर क्षीण हो जाता है। वह अपना घर छोड़ देगा और निरुद्देश्य घूमता रहेगा। सभी सम्बन्धी शत्रु हो जाते हैं।

बृहस्पति—यह व्यक्ति अमीर होता है। सुखी रहता है। स्वास्थ्य उत्तम हो जाएगा। उसे सुविधाएँ मिलेंगी तथा अपने शरीर और स्वास्थ्य में सुधार के लिए व्यायाम करेगा।

शनि—स्वास्थ्य में गिरावट आती है। चेतना में अभाव की शिकायत रहती है। स्थिति में गिरावट आती है। यदि चन्द्रमा के साथ हों तो पागलपन की सम्भावना होती है। वह धर्म विरुद्ध तथा अधर्मी होता है। उसे वायु विकार की शिकायत रहेगी। उस पर दैवी प्रकोप हो सकता है। यदि अष्टम और षष्ठ स्थान के अधिपति लग्न में युक्ति कर रहे हों तो वह जेल जा सकता है।

बुध—स्वास्थ्य सामान्य हो जाता है, प्रसिद्धि होती है, शिक्षा में उन्नति होती है और शासन में आदर प्राप्त होता है। जादू टोना के अध्ययन में उसकी रुचि बढ़ती है। यदि पीड़ित हों तो सिर दर्द होगा।

केतु—उसे बुखार तथा अन्य शिकायतें होंगी जिसका औषधि से इलाज नहीं हो सकता। शरीर कमजोर और क्षीण हो जाता है। अधिक गर्मी के कारण शरीर पर फोड़े फुन्सी होंगे। प्रसिद्धि में कमी आएगी और मस्तिष्क परेशान रहेगा।

शुक्र—अपने आवेश पर नियन्त्रण न कर पाने के कारण पाप करेगा। प्रसन्नता होगी। शरीर में शक्ति का संचार होगा।

आन्तर्दशा की अवधि में स्वामियों का वही प्रभाव होगा जो उस अवधि में ऊपर बताया गया है। तथापि इस मामले में दोनों ग्रहों के प्रभाव को मिश्रित करके उनके बीच का सम्बन्ध ध्यान में रखना चाहिए। साधारणतया प्रथम भाव पर प्रभाव डालने वाले ग्रहों की महादशा और अन्तर्दशा में निम्नलिखित परिणामों की आशा की जाती है—

यदि लग्नेश क्षीण हो और नीच का हो या दबा हुआ हो तो जातक देखने में बीमार और विरूप होगा। वह कुबुद्धि, गरीब और अप्रसिद्ध होगा तथा दूसरों की सेवा करेगा। जब लग्नेश नवांश मे १२ वें भाव में हो तो वह व्यक्ति हमेशा घुमता रहेगा और मस्तिष्क तथा शरीर की पीड़ा से पीड़ित रहेगा।

यदि लग्नाधिपति दूसरे भाव में दूसरे भाव के स्वामी के साथ हो तो धन का अधिग्रहण होगा। वह स्वामी के नैसर्गिक स्वभाव के अनुसार सोना, चाँदी और

अन्य कीमती धातु का पत्थर प्राप्त करेगा। वह अपने सभी प्रयासों में सफल रहेगा। परिवार का विस्तार होगा और उसका जीवन शान्तिपूर्ण और सुखी होगा। लग्नाधिपति ऊपर के अनुसार बली हो किन्तु यदि नवांश में दूसरे भाव के स्वामी से ६, ८, १२, वें भाव में स्थित हो तो ऊपर के प्रभावों में कमी आ जाएगी।

लग्नेश तीसरे भाव के स्वामी के साथ तीसरे भाव में बली होता है। भाई का जन्म होगा या उनकी समृद्धि होगी मानसिक शान्ति होगी और दोनों ही सेक्सों के मनोरंजक लोगों के साथ सम्बन्ध होगा। यदि लग्नेश नवांश में तृतीय भाव के स्वामी से ६, ८, १२ वें भाव में हो तो भाइयों के साथ शत्रुता या उन्हें कष्ट की आशा की जा सकती है।

यदि लग्नाधिपति बली हो और चौथे भाव के स्वामी के साथ चौथे भाव में हो तो गाड़ी, कीमती कपड़ों, मवेशी, मकान और भूमि का अधिग्रहण होता है मकान का निर्माण होता है, दोस्तों तथा सम्बन्धियों से आदर मिलता है, विद्वानों के साथ परिचय होता है तथा उनके साथ बातचीत होती है और नई दोस्ती बनती है। यदि लग्नाधिपति नवांश में चौथे भाव के स्वामी से ६, ८, १२ वें भाव में हो तो मां तथा अपने नजदीकी रिस्तेदारों के साथ शत्रुता होती है, दुर्घटना होती है और कानून के चंगुल में फंस जाता है।

यदि लग्नेश पंचम भाव के स्वामी के साथ पंचमभाव में बली हो तो शासक या सरकार की कृपा प्राप्त होती है। मानसिक शान्ति होती है। वह अपने संप्रदाय का नेता होता है। लग्न और पंचमाधिपति के बलाबल के आधार पर वह राजदूत या मन्त्री बनेगा या सरकार में उच्च पद पर आसीन होगा। एक पुत्र का भी जन्म होगा। राजनैतिक समृद्धि की आशा की जा सकती है। इससे विपरीत फल की आशा तब की जाती है यदि लग्नाधिपति नवांश में पंचमेश से ६, ८, १२ वें भाव में स्थित हो। उस व्यक्ति के राजनैतिक और सरकारी जीवन में विपरीत परिणाम होगा।

यदि लग्नाधिपति छठे भाव में षष्ठेश के साथ हो तो वह व्यक्ति सभी प्रकार की शारीरिक बीमारियों, घाव से पीड़ित होता है, राजा के साथ दुश्मनी, असफलता, चचेरे भाइयों के साथ गलतफहमी, कानूनी परेशानी, दरिद्रता, हथियार से घाव तथा शारीरिक कष्ट होता है। तथापि नवांश में षष्ठेश नीच का हो और लग्नेश उच्च का हो तो अनुकूल परिणामों की आशा की जा सकती है। वह व्यक्ति सेना में जा सकता है। शत्रुओं पर विजय होगी। मुकदमों में उसकी जीत होगी। तथापि यदि नवांश में लग्नेश षष्ठेश से ६, ८, १२ वें भाव में हो तो अनुकूल परिणामों में कमी आ जाएगी और विरोध में परिणाम अधिक होंगे।

यदि लग्नेश ७ वें भाव में सप्तमेश के साथ हो तो जातक धर्म स्थलों की यात्रा करेगा। यदि अविवाहित हो तो वह शादी करेगा। यदि सप्तम राशि चरराशि हो तो वह सुदूर देशों की यात्रा करेगा, यदि स्थिर राशि हो तो अपने ही देश में यात्रा करेगा, और यदि द्विस्वभाव हो तो विदेश की यात्रा करेगा। यदि लग्नाधिपति सप्तमेश से कमजोर हो तो यात्रा से लाभ नहीं होगा। यदि लग्नाधिपति नवांश में सप्तमेश से ६, ८, १२ वें भाव में हो तो वह व्यक्ति जीवन यापन के साधनों से वंचित रहेगा, उसे प्रसिद्धि नहीं मिलेगी और पत्नी के साथ मतभेद रहेगा। जीवन में असफल रहेगा, कारोबार में हानि होगी और उसके सभी कामों में गिरावट आएगी।

यदि लग्नाधिपति अष्टमेश के साथ अष्टम भाव में हो तो जातक चिन्ता और गरीबी से पीड़ित होता है। वह पाप का जीवन बिताएगा और कर्ज में डूबा रहेगा। वह हमेशा बुरी बातें सोचता रहेगा। यदि अष्टमेश कमजोर हो तो बुरे परिणाम कम हो जाते हैं। किन्तु वह उत्तरोतर पाप के जीवन का सहारा लेगा।

यदि लग्नाधिपति नवमेश के साथ नवम भाव में पड़ा हो तो लग्नाधिपति की दशा के दौरान पिता को सुख मिलेगा। वह उचित कार्य करेगा और अपने माता-पिता तथा बड़ों की सेवा करेगा। विपरीत फल की आशा तब की जा सकती है यदि नवांश की स्थिति उलटी हो। उसे दमा की बीमारी होगी। पैत्रिक सम्पत्ति के सम्बन्ध में मुकदमा होगा। यदि दोनों में से एक स्वामी उच्च का हो तो काफी धन मिलेगा और वांछित तथा आवश्यक कारणों पर खर्च होगा।

जब लग्नेश दशम भाव में हो और साथ में दशमेश हो तो जातक अपने विश्वासों के आधार पर वली होता है तथा अन्य धार्मिक कार्य करता है। उसे एक अच्छा प्रशासनिक या राजनैतिक काम मिलता है। वह बहुत अधिक आस्तिक होगा तथा ऊँचे सर्किलों में उसका प्रभाव बनेगा। यदि नवांश में स्थिति विपरीत हो तो उसका आदर समाप्त हो जाएगा और वह बदनामी का शिकार हो जाएगा तथा पाप का काम करने में लग जाएगा।

जब लग्नाधिपति एकादशेश के साथ एकादश भाव में हो तो व्यापार से काफी लाभ होगा। बड़ा भाई सुखी होगा और उससे जातक को लाभ होगा। संबंधित ग्रहों के कारकत्व के अनुसार ही लाभ का स्वरूप और स्रोत होगा। यदि नवांश में स्थिति विपरीत हो तो लाभ की मात्रा कम हो जाएगी। बड़े भाई के साथ मतभेद होगा। किसी निर्णय पर पहुंचने से पूर्व दोनों स्वामियों के बलाबल के स्वरूप पर सावधानी पूर्वक विचार कर लेना चाहिए।

यदि लग्नेश बारहवें भाव में १२ वें भाव के स्वामी के साथ हो तो उसे पैत्रिक सम्पत्ति नहीं मिलेगी। उसे गरीबी सताएगी। उसका देशनिकाला होगा। सभी

प्रकार की वित्तीय कठिनाइयां उसके सामने आएंगी। तथापि यदि लग्नेश अपने नवांश में हो तो उसे विदेश में थोड़ा लाभ होगा अर्थात वह कुछ धन कमाएगा। जिस राशि में लग्नेश है यदि उस राशि का स्वामी नवांश में चर राशि में उच्च का हो तो भाग्य का काफी संचय होगा।

अन्य भावों में स्थिति के साथ लग्नाधिपति की दशा में परिणामों का निर्णय करना चाहिए। जब लग्नाधिपति पर दूसरे ग्रहों की दृष्टि हो और लग्नाधिपति अच्छा या बुरा कोई अन्य योग बना रहा हो तो उन सभी बातों पर विचार करना चाहिए और उसके बाद ही कोई निर्णय निकालना चाहिए।

विशेषकर प्रथम भाव के सम्बन्ध में हम अनेक जन्म कुण्डलियों की जाँच करेंगे—

कुंडली सं०१२—जन्म तारीख १६-१०-१९१८ समय २,२० संध्या (स्था० सं०) (अक्षांश १३° उ०, देशा० ५ घ० १० मि० २० से०)

राशि

नवांश
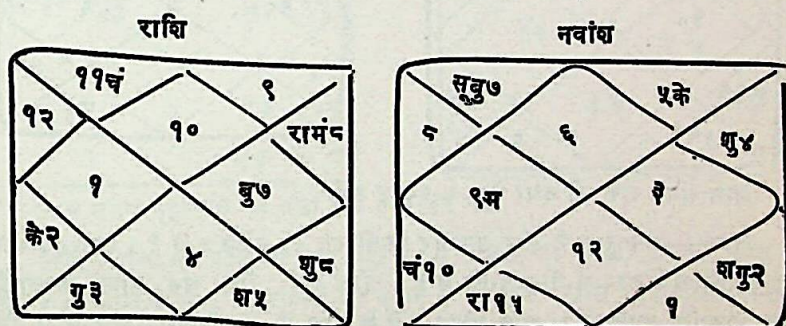
जन्म समय राहु की दशा शेष ११-८-२० वर्ष

लग्न—लग्न मकर है, लग्न पर किसी अच्छे या बुरे ग्रह की दृष्टि नहीं है। लग्न में कोई ग्रह नहीं हैं, यह उत्तम होता है। नवांश में लग्न पर गुरु की दृष्टि है यह उत्तम होता है। इस प्रकार लग्न संयत रूप से बली है।

लग्नाधिपति—लग्नाधिपति शनि, कटु शत्रुराशि में अष्टम भाव में पड़ा है। शनि पर चन्द्रमा की दृष्टि है जो इस कुण्डली में अशुभ ग्रह है। यह खराब है। तथापि नवांश में अपने मित्र शुक्र की राशि में शनि के साथ गुरु है। अतः लग्नाधिपति बली है।

लग्नकारक—सूर्य शरीर का कारक होता है। वह वर्गोत्तम स्थिति में है किन्तु शत्रु की राशि में है। फिर भी कारक अच्छा फल देने वाला है।

निष्कर्ष—प्रथम भाव पर अधिक प्रभाव डालने वाला ग्रह शनि चन्द्रमा और गुरु है, तनु कारक सूर्य अलग है। जातक पर शनि, गुरु और चन्द्रमा की मिली-

जुली विशेषता का प्रभाव रहेगा। सिर बड़ा, चौड़ा चेहरा, बड़ा मुंह, शरीर लम्बा, पतला, रंग साफ, बैर साधक होगा स्वास्थ्य उत्तम होगा किन्तु अक्सर शारीरिक कष्ट की शिकायत होगी। उसमें आत्म विश्वास का अभाव होगा। वह उत्तेजित होगा। यहां पर बृहस्पति अनिष्टकारी ग्रह है जो लग्न को प्रभावित करने में सक्षम है। अतः बृहस्पति की दशा में वह स्वास्थ्य खराब होने के कारण पीड़ित रही।

कुंडली सं० १३—जन्म तारीख २-११-१९३५ समय ५.२० प्रातः (स्था० सं०) (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ५ घं० मि० २० से०)
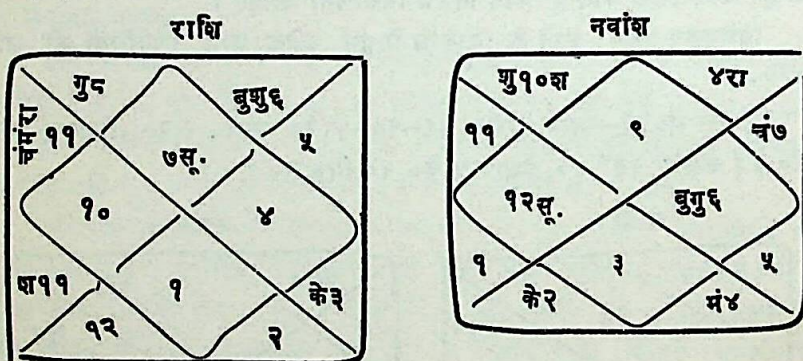
जन्म समय शुक्र की दशा शेष ६-१-२४ वर्ष

लग्न—लग्न तुला है और उस पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है। ग्यारहवें भाव का स्वामी सूर्य लग्न में नीच राशि में है। चूंकि सूर्य नीच भंग प्राप्त करता है, अतः राजयोग बनता है। लग्न सौम्य ग्रहों के बीच में पड़ा है अतः शुभकर्तरी योग बनता है। नवांश में भी लग्न पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है किन्तु लग्न शनि और राहु के बीच में पड़ा है अतः पाप कर्तरी योग बनता है अतः कुल मिलाकर लग्न बली है।

लग्नाधिपति—लग्नेश शुक्र १२वें भाव में नीच राशि में पड़ा है किन्तु नीचता भंग हो रही है। शुक्र उच्च के बुध के साथ है और यह उत्तम है। शुक्र पर किसी अच्छे या बुरे ग्रह की दृष्टि नहीं है। नवांश में शुक्र मित्र राशि में है और साथ में अनिष्ट ग्रह शनि है जिस पर बृहस्पति की दृष्टि है। अतः लग्नाधिपति बली है।

लग्न कारक—सूर्य पर अच्छी या बुरी कोई दृष्टि नहीं है। वह शुभ कर्तरी योग बना रहा है और उसके लिए नीच भंग है। नवांश में सूर्य पर शनि (क्रूर), बुध और गुरु की दृष्टि है। अतः सूर्य बली है।

निष्कर्ष—प्रथम भाव को प्रभावित करने वाले ग्रह शुक्र, सूर्य, बुध और कुछ सीमा तक शनि और गुरु हैं (क्योंकि नवांश में शनि लग्नाधिपति के साथ है और

तनुकारक पर गुरु की दृष्टि है। जातक का रंग साफ मध्यम आकार का शरीर और सुन्दर चेहरा होगा। वह मानव प्रकृति का शौकीन होगा। वह आसानी से अनुगामी नहीं बन सकता और उसमें स्वतन्त्रता की भावना होती है।

सामान्यतः देखने में युवा लगता है। जन्म के बाद दो वर्ष तक शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा रहती है। शुक्र की दशा और शनि की भुक्ति में जातक टायफायड और मलेरिया से पीड़ित रहा। शुक्र अष्टम भाव का भी स्वामी है और यह खराब है। चन्द्रमा, मंगल, राहु की युक्ति से भावुक होने का संकेत मिलता है।

कुण्डली सं० १४ जन्म तारीख ७-८-१८७८, समय १-३० संध्या (स्था० स०) (अ० ११° उत्तर, देशा० – घं० ८ मि० ८ से० पूर्व)

राशि

नवांश

९गु
७
सू१०
८
बु६के
११
श ५
शुरा
१२
मं २
चं४
१
३
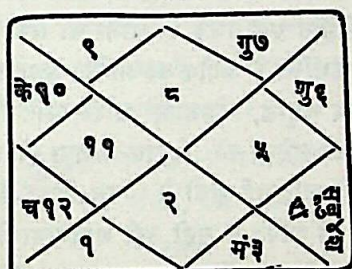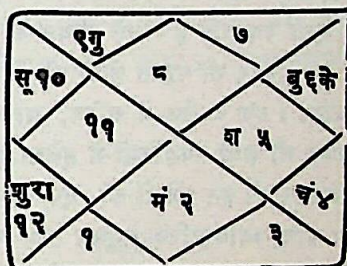
जन्म समय वृहस्पति की दशा शेष ०-२-२२ वर्ष

लग्न—लग्न में कोई भी ग्रह नहीं है और उस पर किसी ग्रह की दृष्टि भी नहीं है। नवांश में लग्न पर लग्नेश की दृष्टि है। चूंकि राशि और नवांश दोनों में ही लग्न की राशि एक ही है अतः यह वर्गोत्तमांश की श्रेणी में है। अतः लग्न बहुत बली है।

लग्नाधिपति—मंगल लग्नेश है और वह ८वें भाव में है। गुरु की लग्नाधिपति पर दृष्टि है। नवांश में मंगल वृषभ राशि में है और उस पर शनि की दृष्टि है। इस क्षीणता को छोड़कर लग्नाधिपति वास्तव में बहुत बली है।

लग्न कारक—सूर्य ९वें भाव में बुध, शनि, राहु के साथ है। नवांश में सूर्य शत्रु राशि में है परन्तु उस पर चन्द्रमा की दृष्टि है। अतः सूर्य संयत रूप से बली है।

निष्कर्ष—प्रथम भाव पर प्रभाव डालने वाले ग्रह मंगल, वृहस्पति, सूर्य और कुछ सीमा तक शनि हैं। इस कुण्डली में अनेक योग हैं। सूर्य जो प्रत्यक्षतः शनि और राहु की युक्ति में है, शनि से १८° दूरी पर है। जीवन के त्रिक में सामन्जस्य पूर्ण दृष्टि—लग्न, चन्द्रमा और सूर्य शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के द्योतक हैं जो उत्तम स्वास्थ्य, उत्तम मस्तिष्क और अहं प्रदान करते हैं। नवें भाव में लग्नेश की

स्थिति से जीवन में मजा और पर्याप्त उत्तरदायित्व का सृजन होता है। प्रयोजनों की दृढ़ता और संकल्प देखने में आता है। उदार होने के कारण धोखा वाली किसी बात से घृणा करता है। जातक हमदर्द होता है और मित्रों तथा आश्रितों पर विश्वास करता है। धोखा और गैर वफादारी से उसका हृदय टूट जाता है। कभी कभी वह बहुत नाजुक बन जाता है। यह कुण्डली एक महान व्यक्ति की है जिसे भारत के इस भाग में जनमत प्राप्त था। वह प्रतिभा की प्रशंसा करता था।

ऊपर प्रथम भाव के सम्बन्ध में हमने तीन कुण्डलियों का विवेचन किया। कुण्डली की जाँच करने की वास्तविक कला व्यवहार से ही आती है। कुछ विद्यार्थियों को सही और संक्षिप्त निर्णय देने की शक्ति प्राप्त है। स्वर्गीय प्रो० बी० सूर्यनारायण राव को इस विषय के ज्ञान के अतिरिक्त अन्तर्ज्ञान की शक्ति थी। कोई ऐसा पथ नहीं है जिसे जीवन का पूरा इतिहास एक नजर में जाना जा सके। यदि इस प्रकार की पद्धति होती तो विभेदक मनःशक्ति के प्रयोग का आनन्द समाप्त हो जाता। एक व्यक्ति में चरित्र, भाग्य, वित्तीय समृद्धि, व्यवसाय, शादी आदि के अध्ययन की सभी पद्धतियों में हमेशा ही विरोधी संकेतों को हिसाब में लेना होता है। अक्सर ही इन संकेतों को एक साथ करने में कठिनाई होती है। इस विषय के उत्तम ज्ञान, व्यावहारिक अनुभव तथा अन्तर्ज्ञान की शक्ति से सही सही भविष्यवाणी करने में कठिनाई नहीं होती। किस प्रकार एक ही लग्न में अलग-अलग फल होते हैं, यह दर्शाने के लिए अब हम कुछ उदाहरणों पर विचार करेंगे।

अब हम प्रत्येक लग्न के सम्बन्ध में अलग अलग उदाहरण प्रस्तुत करेंगे—

मेष

कुण्डली सं० १५—जन्म तारीख ९/१०-६-१८९१ समय ३-३० प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश १८° ५२° उत्तर, देशा० ७२° ४९ पूर्व)

राशि

नवांश
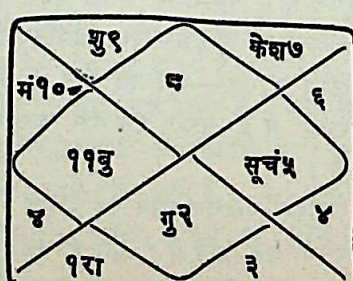
जन्म समय शनि की दशा शेष १५-६-६ वर्ष

लग्नाधिपति मंगल है और और वह अपनी मित्र राशि में तीसरे भाव में है

तथा उस पर बृहस्पति की दृष्टि है जो ९वें और बारहवें भाव का स्वामी है और एक तटस्थ सौम्य ग्रह है। यह अनुकूल है। शुक्र लग्न में है तथा उस पर अच्छी या बुरी दृष्टि नहीं है। नवांश में लग्न वृश्चिक है और इसका स्वामी मंगल तीसरे भाव में है। लग्न पर गुरु की दृष्टि है। जातक में मंगल और शुक्र के गुणों के साथ मिला जुला होना मेष की विशेषता होगी। वह व्यक्ति मध्यम कद, साफ रंग, चौड़े कनपटी तथा उथले ठोड़ी वाला होगा। वह स्वतन्त्र विचार का व्यक्ति होगा। अपने बल पर अपना उत्थान करेगा। काफी संघर्ष के बाद जीवन में ऊंचे पद तक पहुँच जायेगा। राहु के साथ तनुकारक सूर्य की स्थिति वांछित योग नहीं है। वह सुन्दरता, कला और ललित कला का प्रेमी होगा क्योंकि शुक्र लग्न में है। मानवोचित सिद्धान्त वाला और मित्रता के पवित्र विचार वाला होगा। चन्द्रमा मंगल और शनि के बीच में पड़ा है अतः मस्तिष्क में चिन्ता रहेगी। चूंकि लग्न और चन्द्र दोनों की राशि चर है अतः जातक अस्थिर विचार वाला होगा। वह सामान्यतः बुद्धिमान और नास्तिक होगा।

कुण्डली सं १६—जन्म तारीख १-९-१८९७ समय ८-१५ रात्रि (स्था० स०) (अक्षांश ११° उत्तर, देशा० ७८-४० पूर्व)

राशि

नवांश
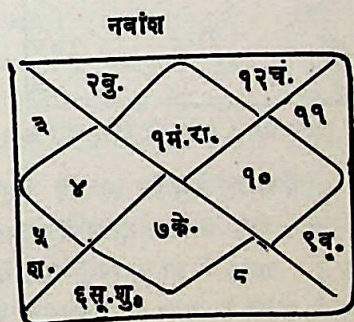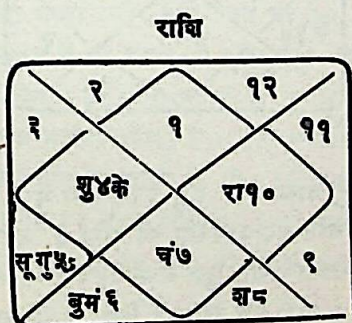
जन्म समय राहु की दशा शेष ३-८-८ वर्ष

उक्त कुण्डली में ग्रहों की स्थिति पर ध्यान दें। लगभग सभी ग्रह एक दूसरे से १२वें और २रे भाव में हैं। लग्न में कोई भी ग्रह नहीं है किन्तु उस पर बृहस्पति चन्द्रमा और मंगल की दृष्टि है। लग्न वर्गोत्तम में है अतः बली है। लग्नाधिपति मंगल लग्न को देख रहा है। वह नवांश में लग्न में है। जातक की शारीरिक विशेषता मंगल ग्रह सम्बन्धी है चूंकि लग्नेश नवांश में राहु के साथ है और राहु और मंगल के प्रभाव का मिश्रण है। जैसा कि इससे पहले वाली कुण्डली में जातक का उत्थान अपने बल पर हुआ। यह व्यक्ति कुण्डली संख्या १५ के जैसा नहीं है। सूर्य अपनी ही राशि में बृहस्पति के साथ है। कद मध्यम और नजर तेज है। लग्न,

सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति से स्थिर मस्तिष्क का संकेत मिलता है और उसमें एकाग्रचित होने की शक्ति है और काफी उदार होगा। कुण्डली संख्या १५ में लग्न पर वृहस्पति की दृष्टि है जबकि यहाँ पर बुध उच्च का है और साथ में लग्नेश मंगल की युक्ति है। जातक धार्मिक विचार का होगा।

वृषभ

कुण्डली सं० १७—जन्म तारीख ९-३-१८६४ समय ११-१५ प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७७° ३३ पूर्व)
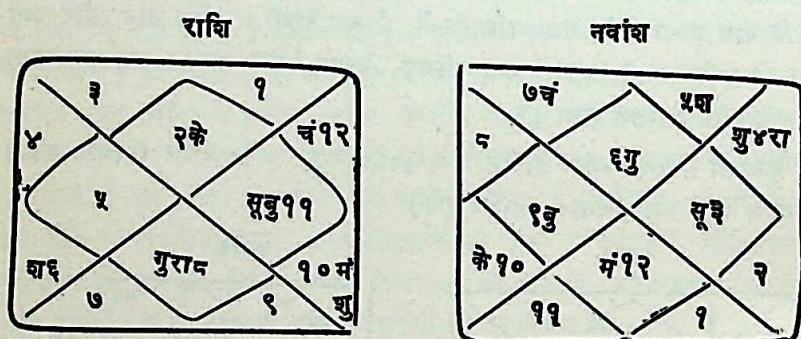
जन्म समय शनि की दशा शेष ७-०-२२ वर्ष

इसमें सन्देह नहीं कि लग्न में केतु है किन्तु वास्तव में केतु १२वें भाव में है। इस प्रकार लग्न अनिष्ट युक्ति से मुक्त है। लग्न पर वृहस्पति की दृष्टि है अतः बली है। नवांश में भी वृहस्पति लग्न में हैं। लग्नाधिपति शुक्र अपने मित्र राशि में उच्च के मंगल के साथ है। अतः यह बली है। सूर्य शत्रु राशि में स्थित है किन्तु चूंकि वह केन्द्र में है अतः बली है। जातक देखने में तथा उसके चरित्र और मानसिक मनोभाव में शुक्र और मंगल की विशेषता है। कद छोटा है, शरीर झुका हुआ तथा चोकोर, रंग साफ, ललाट चौड़ा और देखने में सुन्दर है। वह आत्म-विश्वासी है। उसमें काफी सहन शक्ति और गुप्त शक्ति है। बच्चों के सम्बन्ध में वह सुखी नहीं है। पंचम भाव में शनि देखें। चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि है। अतः जातक को हमेशा चिन्ता रहती है। इसकी तुलना कुण्डली संख्या ८ से करें जातक को कानूनी लाइन में श्रेष्ठ उपाधि मिली। इस कुण्डली में और कुण्डली सं० ८ में कुछ इसी प्रकार के योग हैं। जातक विष्णु का उपासक है (लग्नेश नवम भाव में है)।

मिथुन

कुण्डली सं० १८—जन्म तारीख १२-८-१८९६ समय १-५२ प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश १३° २ उत्तर, देशा० ५ घं० १० मिनट २० से पूर्व)

राशि

नवांश

जन्म समय चन्द्रमा की दशा शेष ६-०-१४ वर्ष

लग्न मिथुन है। इस पर अच्छे या बुरे किसी भी ग्रह की दृष्टि नहीं है। लग्नाधिपति बुध केतु तथा शुक्र के साथ तीसरे भाव में है। इस पर मंगल की दृष्टि है। सूर्य उच्च के वृहस्पति के साथ है। यह कुण्डली एक मध्यम श्रेणी के व्यक्ति की है। वह लम्बा और सीधे कद का है। चेहरा अच्छी तरह विकसित है। लग्नेश पर नवांश में भी मंगल की दृष्टि है। शारीरिक ढांचे में जातक पर मंगल और बुध की विशेषता है और केतु की भी। जातक की साधारण आदत है, क्षमा करने वाला तथा आत्मविश्वासी है। इस मामले में भाग्य में काफी परिवर्तन हुआ। प्रथम और छठे भाव के स्वामी के बीच दृष्टि या युक्ति का सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। यहाँ लग्नेश पर मंगल की दृष्टि है जो षष्ठेश और एकादशेश है। जातक एकबार बदनामी के मामले में फंस गया था किन्तु बाद में बरी हो गया।

कुण्डलीसं०१९—जन्म तारीख ११-४-१८८० समय १०-४१ प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश १८° उत्तर, देशान्तर ५घं० ३४ मि० पू०)

राशि

नवांश

जन्म समय शुक्र की दशा शेष १३-३-२० वर्ष

पहली कुण्डली के साथ इस कुण्डली की तुलना करें। जबकि कुण्डली सं० १८ में लगभग सभी ग्रह द्विद्वीदश (एक दूसरे से २ सरे और १२ वें) में स्थित हैं, यहाँ पर अधिकतर ग्रह प्रथम और दूसरे भाव में स्थित हैं जिससे कुण्डली के बली होने का संकेत मिलता है। लग्न में मंगल और केतु स्थित हैं तथा उस पर राहु की दृष्टि है जो उत्तम स्वास्थ्य के लिए अच्छा योग नहीं है। लग्नाधिपति बुध दशम भाव में नीच राशि में है किन्तु नीच भंग हो रहा है। पंचम भाव का स्वामी दशम में उच्च का है। बृहस्पति दशम भाव में सूर्य के साथ अपनी राशि में है। दशम भाव में पाँच ग्रह हैं जो एक प्रबल योग है। जातक एक महान पत्रकार और राजनीतिज्ञ था—आधुनिक विचार वाला, अपने कार्य में अटल तथा दूसरों के काम आने वाला था। शारीरिक गठन में मंगल का प्रभाव था। पतला चेहरा, रक्तिम रंग चंचल, चालाक, वाक्पटुता। यह ध्यान दें कि चन्द्रमा किसी अनिष्ट युक्ति या दृष्टि से युक्त है। लग्न और दशम भाव में छः से कम ग्रह हैं। इसमें चंचल और तेज मस्तिष्क होता है। लग्न पर अनिष्ट दृष्टि के कारण वह प्रतिकूल टिप्पणी, आलोचना और विरोध से पीड़ित रहा।

कर्क

कुण्डली सं० २०—जन्म तारीख २९–७–१९०९ समय ६–४२ प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश १३° उत्तर, देशान्तर ५ घं० १० मि० २० से० पूर्व)

राशि

नवांश

जन्म समय बुध की दशा शेष ६–८–२७ वर्ष

लग्न में दूसरे और तीसरे भाव के स्वामी सूर्य और बुध स्थित हैं। यह अधिक अनुकूल नहीं है लग्नाधिपति चन्द्रमा पांचवें भाव में चन्द्रमा के साथ है अतः यह उत्तम नहीं है। सूर्य तृतीयेश के साथ है। लग्नाधिपति पर बृहस्पति की दृष्टि है (नवांश में) और शनि तथा केतु के बीच में पड़ा है। अतः पापकर्तरी योग बनता है। प्रथम भाव से सम्बन्धित तीनों ही तथ्य अनुकूल हैं। जातक का शरीर गठीला, उत्तेजित काफी भावुक और काले रंग का है। शनि और मंगल तथा चन्द्रमा और

केतु की युक्ति से कुण्डली के कुछ अच्छे संकेत बर्बाद हो जाते हैं। जातक अकाल्पनिक कंजूस, नीच और अत्यधिक सावधान है सूर्य और बुध अनिष्ट ग्रह हैं और लग्न में उनकी स्थिति ठीक नहीं है।

कुण्डली सं० २१—जन्म तारीख १३-३-१८९१ समय २-३० संध्या (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० २० से०)
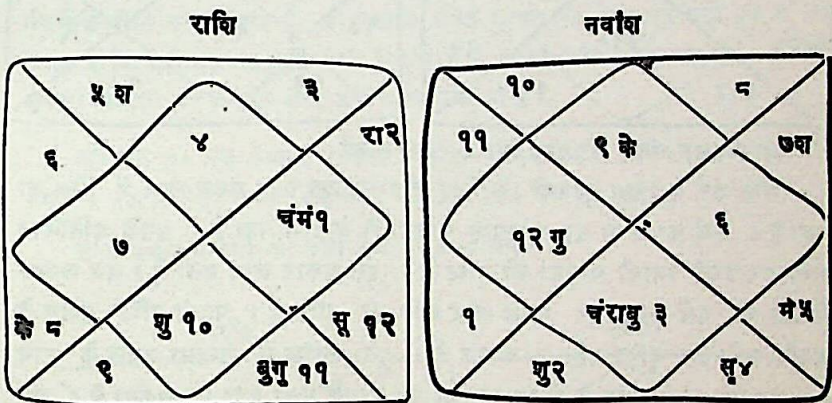
जन्म समय केतु की दशा शेष २-७-१० वर्ष

इस कुण्डली की तुलना पहले वाली कुण्डली के साथ करें। नवांश लग्न भी वही है। इस मामले में लग्न में कोई ग्रह स्थित नहीं है किन्तु उस पर मंगल और शुक्र की दृष्टि है। लग्नेश दशम भाव में मंगल के साथ है—चन्द्रमंगला योग बन रहा है। यह एक उत्तम योग है। सूर्य मीन में है जो उसकी मित्रराशि है। यह स्थिति पहली कुण्डली की तुलना में बेहतर है। जातक हृष्ट-पुष्ट मध्यम कद, साफ रंग, पूरे शरीर पर तिल, (लग्न पर मंगल की दृष्टि है), उत्तम आचरण, नम्र स्वभाव वाला है। दोनों ही कुंडलियों में योगों पर ध्यान दें और उनकी अलग-अलग स्थिति पर विचार करें—मानसिक क्या शारीरिक—यद्यपि दोनों में लग्न एक ही है, नवांश लग्न भी वही है। पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि कुण्डली संख्या २० में जातक की पत्नी पर लकवाआ से प्रहार हुआ। वह क्षय रोग से पीड़ित रही जबकि कुण्डली स० २१ के जातक की पत्नी काफी समय तक लकवा से पीड़ित रही।

कुण्डली सं० २२—जन्म तारीख २३-१०-१८९८ समय ११-३० रात्रि (स्या० स०) (अक्षांश १९-१० उत्तर, देशान्तर ४ घं० ५९ मि० २८ से० पूर्व)

राशि

नवांश
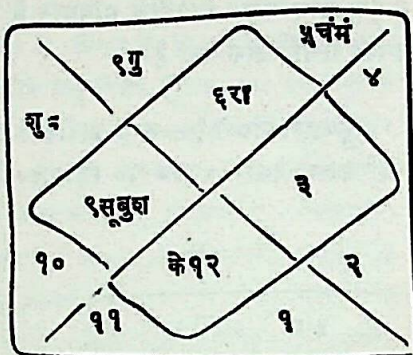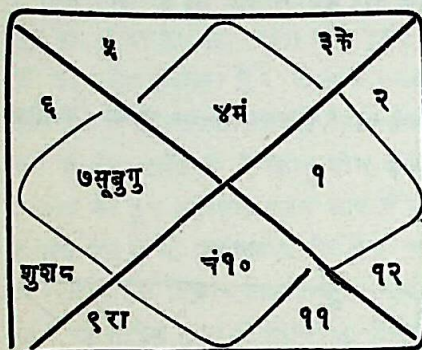
जन्म समय मंगल की दशा शेष ६–१–१२ वर्ष

लग्न कर्क है। इस कुण्डली के लिए योग कारक ग्रह मंगल लग्न में नीच का पड़ा है। कर्क का उच्च ग्रह बृहस्पति चन्द्रमा से केन्द्र में पड़ा है। इसके अतिरिक्त लग्न पर इसके स्वामी चन्द्रमा की दृष्टि है। इस प्रकार लग्न बली है। अब लग्नाधिपति को देखें—उस पर मंगल और शनि की दृष्टि है। पहली दृष्टि उत्तम है जबकि शनि की दृष्टि अनिष्ट कारक है। पुनः नवांश में चन्द्रमा मंगल के साथ है—यह एक उत्तम योग है। अतः लग्नेश को मध्यम बली कहा जा सकता है। सूर्य (तनु कारक) तुला में है जो उसकी नीच राशि है और साथ में बुध और बृहस्पति स्थित हैं—इनमें बुध अनिष्ट कारक है और बृहस्पति उतम है। पुनः नवांश में सूर्य दो अनिष्ट कारकों के साथ है—शनि और बुध। कुण्डली में सूर्य के लिए नीच भंग नहीं है। इस प्रकार जहाँ तक प्रथम भाव का सम्बन्ध है—लग्न पूर्ण रूप से बली है, लग्नेश मध्यम है और तनु कारक विकृत है। जातक पर मंगल और चन्द्रमा की विशेषता का प्रभाव है। लग्न में मंगल होने के कारण शरीर पर चेचक का दाग रह गया। मंगल के कारण उस व्यक्ति का शरीर रक्तिम, स्वस्थ, बलिष्ठ, थोड़ा झुका हुआ और दिमाग गर्म और शुष्क है। चन्द्रमा की दृष्टि से सजीले शरीर और नम्रता का संकेत मिलता है। उसमें जादू टोना की प्रवृत्ति पाई जाती है। मांसल नाक, धन का शौकीन, उत्तरदायी और भारी चाल वाला है। मस्तिष्क शान्त नहीं है क्योंकि चन्द्रमा पर शनि और मंगल की दृष्टि है।

कर्क लग्न से सम्बन्धित ऊपर दी गई तीनों कुण्डलियों में शारीरिक गठन के बारे में विचित्रता है। शरीर मध्यम और मजबूत है।

हम तीन जन्मकुण्डलियों का उदाहरण देते हैं जिनमें कुण्डली संख्या २५ के जातक का व्यक्तित्व आकर्षक है और चेहरा तथा स्थिति के सम्बन्ध में कुण्डली संख्या २३ के जातक के साथ प्रत्यक्ष विरोध है।

कुण्डली संख्या २३ में लग्न में केतु है और उस पर राहु की दृष्टि है। अतः लग्न कमजोर है। लग्नाधिपति सूर्य वृषभ राशि में दूसरे और ग्यारहवें भाव के स्वामी बुध और चन्द्रमा के साथ है जो सूर्य की शत्रु राशि है। नवांश में सूर्य मकर में है जो उसकी शत्रु राशि है। अतः प्रथम भाव से संबन्धित तीनों ही तथ्य कमजोर हैं। जातक दुबला पतला और रोगी है। मनोवैज्ञानिक रूप से वह महसूस करता है कि उसके स्वास्थ्य में कोई खराबी है। लम्बाई औसत है, चेहरा अंडाकार, और संवेदी है। उसे दर्शन शास्त्र का पर्याप्त ज्ञान है, वह एक भूखा पाठक है, उसमें नैसर्गिक नीति का अभाव है और उसके लक्ष्य काफी हद तक पूरे नहीं हुए। यह ध्यान दें कि अधिकतर ग्रह द्विर्द्वादश स्थिति में हैं। बृहस्पति उच्च का है। सूर्य की अपेक्षा चन्द्रमा की स्थिति और अधिक भाग्यशाली है।

कुण्डली सं० २३—जन्म तारीख १४–५–१८९६ समय १२–१६ अप० (स्था० समय) अक्षांस १३° उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० २० से० पूर्व)

जन्म समय चन्द्रमा की दशा शेष ३–३–८ वर्ष
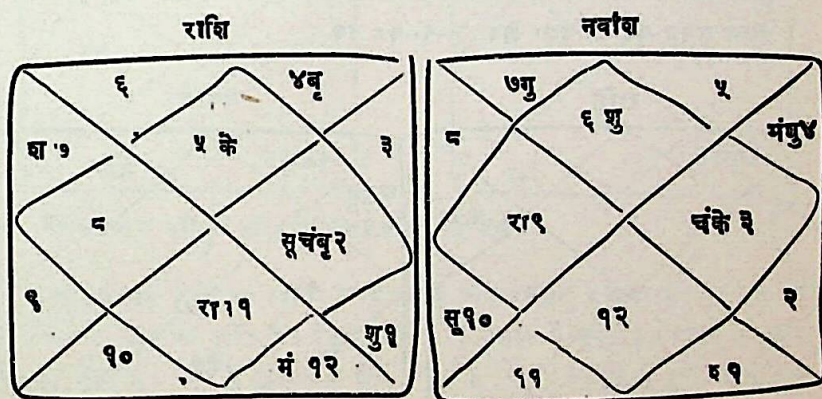
कुण्डली सं० २४ का लग्न सिंह है। इस राशि का स्वामी सूर्य यहीं है और साथ में बुध भी है। लग्न पर शनि की दृष्टि है। यह हल्का अनिष्ट कारक है। लग्न और लग्नेश सूर्य पर भी शनि की दृष्टि है। तथापि नवांश में सूर्य कर्क राशि में उच्च के गुरु के साथ है। प्रथम भाव का तथ्य स्पष्ट रूप से उत्तम है। जातक का चेहरा आकर्षक, गठीला शरीर, और अंग सजे हुए हैं। उत्तम प्रकृति, प्रबल इच्छा, खुले दिल वाला, उत्तम साहस वाला, महत्वाकांक्षी तथा परिरक्षण स्वभाव का है। उसकी कामभावना मजबूत है किन्तु नियन्त्रण रखता है। उसकी शिक्षा साधारण है किन्तु अब सम्पन्न है। जातक ठेकेदार है।

कुण्डली सं० २४—जन्म तारीख २८/२९–८–१८९८ समय ५.३० प्रातः (स्था० स०) (अक्षांस १६–५० उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० २० से० पूर्व)
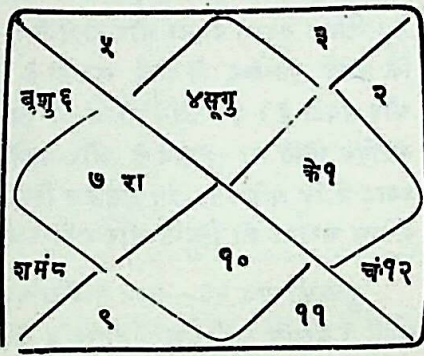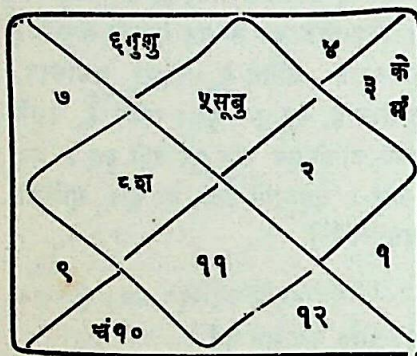
कुण्डली सं० २५—जन्म तारीख १३/१४–१०–१८७९ समय ४–० प्रातः (स्था० स०) (अक्षांस २१–४५ उत्तर, देशा० ४ घं० ५२ मि० पूर्व)

जन्म समय सूर्य की दशा शेष २–१–१८ वर्ष
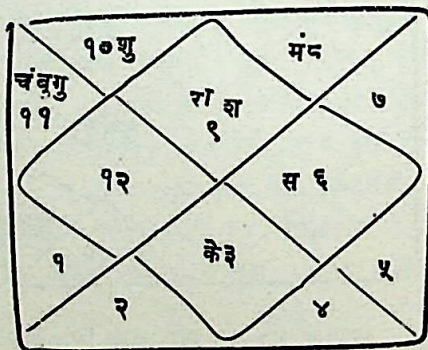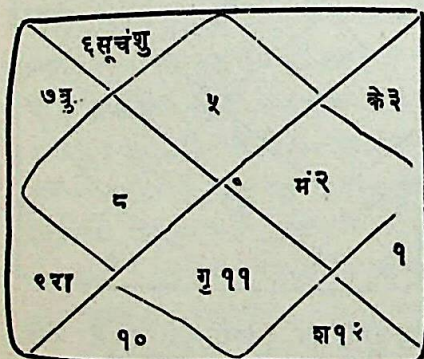
कुण्डली संख्या २५ में लग्न में कोई ग्रह नहीं है किन्तु लग्न पर बृहस्पति और और मंगल की दृष्टि है जो योग कारक है। अतः लग्न पर पूरा बल है। कन्या में सूर्य की स्थिति उत्तम है। किन्तु शुक्र की युक्ति और शनि की दृष्टि से वह कमजोर हो गया है। उसकी शारीरिक बनावट में मंगल और बृहस्पति प्रधान हैं। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक है, उसकी आँखें रक्तिम हैं, लम्बे गाल, बड़ा चेहरा, एकाग्र मस्तिष्क, उदार और सम्मानित है। शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्थिति में इस कुण्डली और कुण्डली संख्या २३ के जातक में काफी अन्तर है। मंगल की दृष्टि

के कारण वह व्यक्ति अधिक रक्तिम है, स्वस्थ, मिहनती है जबकि बृहस्पति की दृष्टि के कारण रंग साफ है, आँखें बड़ी हैं और सम्मानित आकृति है। उसके भाग्य बदलते रहे, एक बार उसके पास काफी धन था किन्तु अब एक साधारण स्थिति में है।

ऊपर के सभी मामलों में एक महत्त्वपूर्ण बात ध्यान में रखनी चाहिए अर्थात् बल या लग्न, सूर्य और चन्द्र भी। यदि उपरोक्त तीन में से दो उत्तम स्थिति में हों तो सामान्यतः भाग्य का स्थिर प्रवाह होता है।

कन्या

कुण्डली सं० २६—जन्म तारीख ४-९-१९०२ समय ७-५३ बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांस ११° उत्तर, देशा० ५ घं० २० मि० २० से० पूर्व)
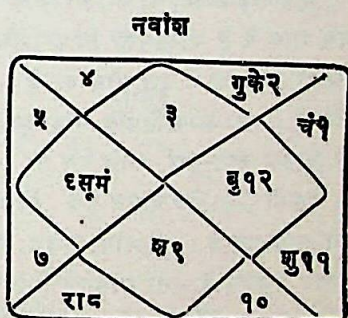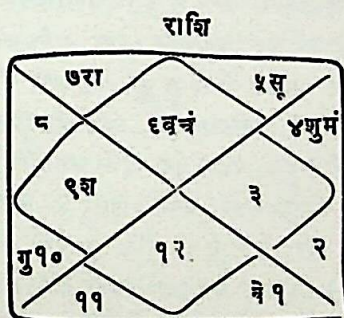
जन्म समय चन्द्रमा की दशा शेष ७-५-२५ वर्ष

लग्न में उस राशि का स्वामी उच्च का है और साथ में चन्द्रमा है तथा उस पर नीच के बृहस्पति की दृष्टि है। बृहस्पति नीच के प्रभाव से मुक्त है। लग्न पर शनि की भी दृष्टि है। लग्न में पापकर्तरी योग बनता है। पुनः नवांश में बुध पर अनिष्ट कारक ग्रह की दृष्टि है। सूर्य अपनी राशि में है किन्तु नवांश में उसकी स्थिति अनुकूल नहीं है क्योंकि वह मंगल के साथ है और उस पर नीच के बुध और शनि की दृष्टि है। सामान्य रूप से प्रथम भाव पूर्ण रूप से बली नहीं है। कन्या जलीयतत्त्व राशि है। जातक हृष्ट-पुष्ट है, कंधे और हाथ झुके हुए हैं। वह सत्यवक्ता तथा दयालु है, सीखने का शौकीन है और उसमें आत्मविश्वास की कमी है। वह दुष्ट, बुद्धिमान तथा कुछ अकर्मण्य है और उसका मस्तिष्क चिन्तनशील है। तनुकारक सूर्य के साथ मंगल है और उस पर शनि की दृष्टि है। उसके शरीर पर चेचक का दाग है। अनिष्ट ग्रहों की परस्पर दृष्टि ठीक नहीं है।

कुण्डली सं० २७—जन्म तारीख ७–६–१८९८ समय १–३५ बजे संध्या (अक्षांम ११° उत्तर, देशा–५ घं० ८ मि० ९ से० पूर्व)

राशि

नवांश
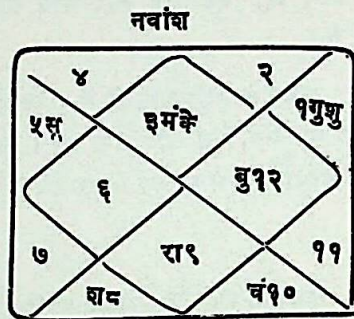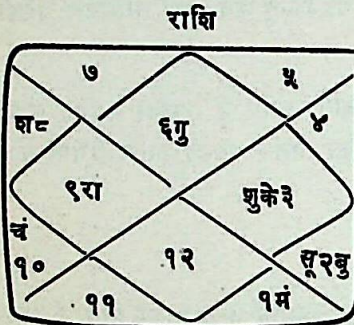
जन्म समय सूर्य की दशा शेष ४–२–१६ वर्ष

लग्न पर किसी भी ग्रह की दृष्टि नहीं है। बृहस्पति लग्न में है। लग्नाधिपति नवम भाव में है जो उसकी मित्र राशि है और उस पर बृहस्पति तथा शनि की दृष्टि है। नवांश में बुध नीच का है। राशि और नवांश दोनों में सूर्य पर शनि की दृष्टि है। अतः लग्नाधिपति और सूर्य मध्यम बली है। चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि है। जातक हृष्ट-पुष्ट, काले रंग का (लग्नेश और सूर्य दोनों पर शनि की दृष्टि) है। उसकी छाती प्रधान है। विचारशील, भावुक तथा अपने हितों के लिए अति सावधान है। बुद्धिमान, कंजूस, राजनयिक और दुष्ट है। चूंकि कुण्डली का आधार मजबूत है अतः सामान्य स्थिति ठीक है। वह एक कारोबारी और कर्जदाता है। वित्तीय रूप से वह उत्तम स्थिति में है। देखने में वह आकर्षक नहीं है क्योंकि लग्नाधिपति पर शनि की दृष्टि है।

तुला

कुण्डली सं २८—जन्म तारीख २४–९–१८७१ समय ८.४० बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांस १०° उत्तर, ५ घं० १३ मि० २० से० पूर्व)

राशि

नवांश
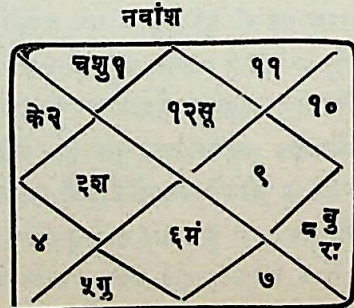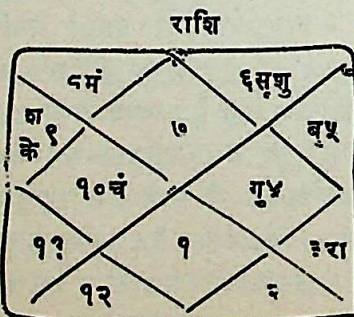
जन्म समय चन्द्रमा की दशा शेष ९–८–१७ वर्ष

लग्न में किसी अच्छे या बुरे ग्रह की युक्ति या दृष्टि नहीं है। फिर भी लग्नाधिपति सूर्य के साथ बारहवें भाव मे अपनी मित्र राशि में है। सूर्य इसका शत्रु ग्रह है। लग्नेश को बल प्राप्त है क्योंकि उस पर योग कारक शनि की दृष्टि है। नवांश में शुक्र सूर्य और राहु के बीच में पड़ा है और शुक्र पर मंगल और गुरु की दृष्टि है। जातक का रंग साफ, मध्यम कद, सुन्दर तथा देखने में युवा है। अधिक शिक्षित नहीं है फिर भी उसका पूर्वानुमान उत्तम है। आधुनिक है, सत्य और इमानदारी को प्यार करता है। उसका स्वभाव अनुलम्ब और उदार है। वह बहुत आशावादी और चिड़चिड़ा है। शौकीन और आनन्दप्रिय है। जीवन में अच्छे पद पर रहकर सेवानिवृत्त हुआ। ग्रहों की द्विर्द्वादश स्थिति पर ध्यान दें।

वृश्चिक

कुण्डली संख्या २९—जन्म तारीख १८-३-१९०३ समय १२.० बजे दोपहर (स्था० स०) (अक्षांस १५° ३२° उत्तर, देशा० ०°५ घं० पूर्व०)

राशि

नवांश
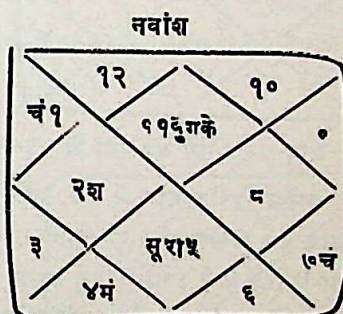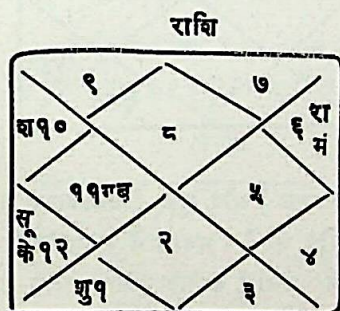
जन्म समय शनि की दशा शेष ८-११-३ वर्ष

लग्न में नवमाधिपति चन्द्रमा है। यह बहुत उत्तम योग है। लग्नाधिपति मंगल ग्यारहवें भाव में राहु के साथ है और उस पर सूर्य (दशमाधिपति) और केतु की दृष्टि है। नवांश में मंगल कर्क में अपनी नीच राशि में है किन्तु नीच का प्रभाव समाप्त हो रहा है। सूर्य अपनी मित्र राशि मीन में है किन्तु वह जन्म कुण्डली में केतु के साथ और नवांश में राहु के साथ है। लग्नाधिपति और सूर्य दोनों ही साधारण बली हैं। जातक पर मंगल की विशेषता का प्रभाव है। उसका चेहरा सुन्दर, बड़ी आंखें और पतला शरीर है। शरीर उत्तम है और भौंह प्रधान हैं। वह उदार है। एक बहुत उत्तम वादी है। चन्द्रमा भी किसी बुरी दृष्टि से मुक्त है, मानसिक स्थिति में आत्मसम्मानी है। जातक एक कारोबारी है और जीवन में सम्पन्न है।

शारीरिक बनावट में इस कुण्डली के जातक और पहले वाली कुण्डली के जातक के बीच पर्याप्त अन्तर है। यहाँ पर वह थोड़ा झुका हुआ है क्योंकि लग्न में बृहस्पति है, लग्न में बुध, बृहस्पति और राहु है तथा उस पर चन्द्रमा और केतु की दृष्टि है। बुध और बृहस्पति राहु से लगभग २० डिग्री पीछे हैं। अतः वे राहु की युक्ति के प्रभाव से मुक्त हैं। योगकारक ग्रहों के साथ लग्न की युक्ति है अतः उस पर पर्याप्त बल है।

कुण्डली सं० ३०—जन्म तारीख १५/१४-१२-१८९९ समय ५:४२ बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांस १०°४५ उत्तर, देशा० ५ घं० १६ मि० ४८ से० पूर्व)

राशि

नवांश
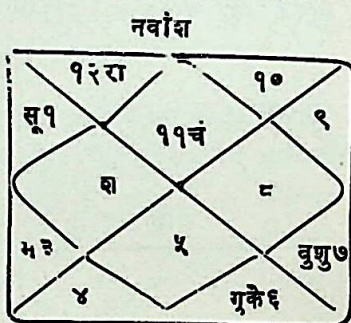
जन्म समय सूर्य की दशा शेष १-९-१८ वर्ष

लग्नेश द्वितीय भाव में सूर्य, शनि (अनिष्टकारक) और शुक्र (योगकारक) के साथ है। लग्नेश और बृहस्पति का परिवर्तन योग भी है। नवांश में लग्नाधिपति उत्तम स्थिति में है। सूर्य (तनु कारक) साधारण बली है क्योंकि मित्र राशि में रहकर मंगल, शनि और शुक्र की युक्ति है। वह नवांश में राहु और शनि के मध्य पड़ा हुआ है। जातक का स्वास्थ्य काफी अच्छा नहीं है। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक है, चेहरा बड़ा, रंग साफ और थोड़ा झुका हुआ है। वह कुछ महत्त्वाकांक्षी है। वह उदार, चंचल दिमाग वाला और उद्यमी है। उसकी शारीरिक बनावट में गुरु प्रधान है।

धनु

कुण्डली सं० ३१ में लग्न शनि और मंगल के बीच में पड़ा है। यह लग्न को बली नहीं बनाता।

लग्नाधिपति तीसरे भाव में है और केतु तथा शनि के बीच में पड़ा है। इससे बल का नाश होता है। इसमें सन्देह नहीं कि बृहस्पति पर शुक्र की दृष्टि है किन्तु यह दृष्टि भी अच्छी है क्योंकि शुक्र षष्ठेश और एकादशेश है। बृहस्पति पर स्वराशि के मंगल की भी दृष्टि है। पुनः नवांश में बृहस्पति और राहु एक साथ हैं

और उन पर अनिष्ट कारक शनि केतु और सूर्य की दृष्टि है। बृहस्पति निश्चित रूप से कमजोर है। सूर्य (तनुकारक) ग्यारहवें भाव में नीच का है। नीच भंग योग है और सूर्य पर बृहस्पति की दृष्टि है। इसके अतिरिक्त सभी ग्रह एक दूसरे से दूसरे और ११ वें भाव हैं। इन स्थितियों से जीवन वृत्ति में प्रगति और खुशी के अभाव का संकेत मिलता है। शारीरिक गठन के बारे में बृहस्पति, शुक्र और मंगल की विशेषता का मिश्रण है। जातक का शरीर मांसल नहीं है। चेहरा लम्बा, दुबला है किन्तु साधारण शरीर के साथ देखने में अच्छा है। शुक्र के कारण स्वभाव में नम्रता है जबकि मंगल की वजह से व्यक्तित्व में रूखापन है। शरीर में बाल अधिक हैं क्योंकि नवांश में बृहस्पति पर शनि की दृष्टि है। जातक सहानुभूति रखने वाला तथा कभी-कभी परेशान रहता है। बाहरी आडम्बर से घृणा करता है, ईश्वर से डरने वाला है। मस्तिष्क साफ और तेज है। स्वभाव नम्र है। जातक का रहन सहन साधारण है। वह शान्तिप्रिय व्यक्ति है। वह अपने स्नेह में उद्दीप्त है तथा शायद ही कभी विद्वेष करता हो। वह न्यायप्रिय है खुशी का अभाव है।

कुण्डली संख्या ३१—जन्म तारीख २१–१०–१९०३ समय १२.४३ बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांस १३° उ०, देशा० ५ घं० १० मि० २० से० पूर्व)

राशि

नवांश
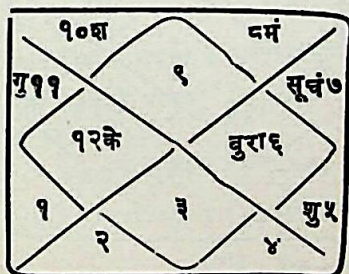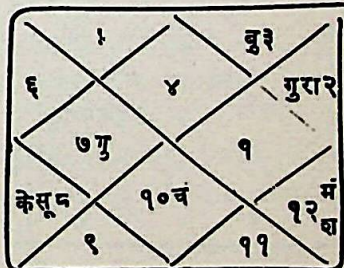
जन्म समय राहु की दशा शेष ११–६–११ वर्ष

कुण्डली संख्या ३२ में सूर्य और चन्द्रमा को छोड़कर लगभग सभी ग्रहों की स्थिति वही है जो कुण्डली संख्या ३१ में है। जातक थोड़ा मोटा है और शारीरिक बनावट में इस जातक और पिछली कुण्डली के जातक में काफी अन्तर है। पहली कुण्डली का जातक एक शिक्षक है जबकि इस कुडण्ली का जातक एक वैरिस्टर है। तनुकारक सूर्य मृत्तिका प्रकृति वाली राशि में है और नवांश लग्न ग्रहों की दृष्टि से मुक्त है।

कुण्डली सं० ३२—जन्म तारीख २–१०–१९०३ समय ११.४४ बजे प्रात: (स्था० स०) (अक्षांस ६°५६ उत्तर, देशा० ५ घं० १९ मि० २४ से० पूर्व)

जन्म समय मंगल की दशा शेष ४–१०–८ वर्ष

मकर

कुण्डली संख्या ३३—जन्म तारीख ३१–११–१९१० समय १.१० बजे अपराह्न (स्था० स०) (अक्षांस १३° उत्तर, देशान्तर ५ घं० १० मि० २० से० पूर्व)

जन्म समय मंगल की दशा शेष ५–१०–१७ वर्ष

यह एक विचित्र कुण्डली है। यद्यपि दशम भाव में छः ग्रह एकत्र हैं, जातक एक हस्ती नहीं है और वर्तमान में जातक दीन परिस्थिति में है। लग्न पर दो अनिष्ट कारी ग्रह शनि और मंगल की दृष्टि है। लग्नाधिपति नीच के सूर्य (अष्टमाधिपति) बृहस्पति (तीसरे और १२ वें भाव के स्वामी) केतु, बुध (षष्ठेश और नवमेश), मंगल (चतुर्थेश और एकादशेश) और शुक्र (पंचमेश और दशमेश) की दृष्टि है। पुन: नवांश में शनि केतु के साथ है और उस पर राहु, मंगल, गुरु और शुक्र की दृष्टि है। प्रथम भाव से सम्बन्धित ऊपर की तीनों ही बातें दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में हैं। जातक लम्बा दुबला पतला और रक्तिम-भूरे रंग का है। शरीर पतला और

आकर्षक है। वह सहानुभूति पूर्ण और उदार है। उसका कहने का उत्तम तरीका है। वह बहुत महत्त्वाकांक्षी तथा अपने काम के प्रति लगन वाला तथा उद्यमी है किन्तु आत्मविश्वास का अभाव है तथा वह उत्तेजित एवं कमजोर दिमाग का है। एक ही राशि में छः ग्रहों की स्थिति को सावधानीपूर्वक जांचना चाहिए।

कुम्भ

कुण्डली संख्या ३४—जन्म तारीख २८/२९–३–१८९० समय ४.३० बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांस १३° उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० २० से० पूर्व)

राशि
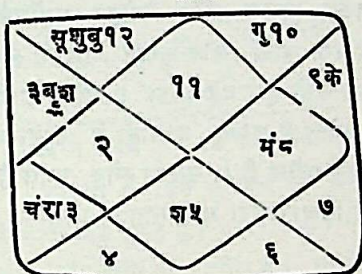
नवांश
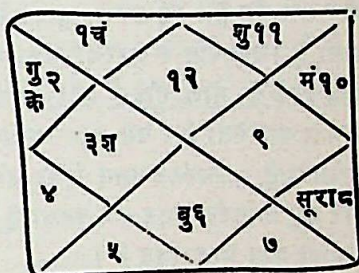
जन्म समय बृहस्पति की दशा शेष २२–११–७ वर्ष

जातक का चेहरा भद्दा और घिनौना है। लग्न पर शनि और मंगल की प्रबल दृष्टि है। नवांश में मीन राशि उदय हो रही है जिस पर पुनः शनि और बुध की दृष्टि है। नवांश लग्न के कारण वह हृष्ट-पुष्ट और मध्यम कद का है। शारीरिक विशेषता के अतिरिक्त जन्म कुण्डली में कोई और विशेष बात नहीं है। यह देखने में आएगा कि लग्न पर मध्यम बल है और लग्नाधिपति तथा सूर्य कमजोर हैं।

कुण्डली संख्या ३५—जन्म तारीख २७/२८–५–१९०३ समय १.१८ बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांस ९° उत्तर, देशान्तर ५ घं० १० मि० ४८ से० पूर्व)

राशि
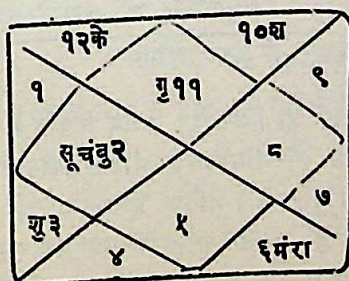
नवांश
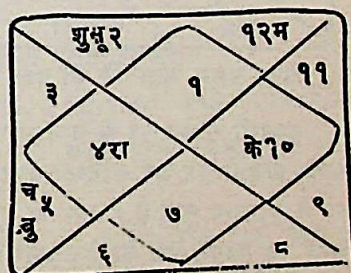
मंगल की दशा शेष ५–१०–७ वर्ष

कुंडली संख्या ३५ एक भाग्यशाली व्यक्ति की है जिसने अपने ही बल पर तरक्की की है। यद्यपि लग्न केतु और शनि के बीच में पड़ा है जिससे अस्थिर जीवन वृत्ति का संकेत मिलता है; इस पर कोई और अनिष्ट प्रभाव नहीं है बृहस्पति लग्न में है। लग्नेश शनि अपनी ही राशि में है। नवांश में भी शनि अपनी मित्र राशि में है और भाव योग कारक वृहस्पति उसके साथ है। वास्तव में सूर्य मध्यम बली है। लग्न में बृहस्पति का होना अपने आप में एक बल है जो अन्य अनिष्ट प्रभावों के लिए प्रत्यौषध का काम करता है। जातक का व्यक्तित्व सशक्त, प्रभावी और आकर्षक है। वह शान्त, सुन्दर चेहरे वाला, उत्तम और मनोहर मनोभाव वाला है। बृहस्पति के कारण उसका रंग साफ बड़ी आंखें और सुन्दर आकृति है। ओठ लाल हैं, गाल चौड़े हैं और उसकी कनपटी बड़ी है। वह शीघ्र दूसरों के साथ मित्रता कर लेता है। उसे बहुत जल्दी गुस्सा आता है परन्तु आसानी से सामान्य हो जाता है। उसकी इच्छाएं स्थिर और परिवर्तनशील हैं। उसका स्नेह प्रबल है और वह धैर्यपूर्वक प्यार कर सकता है। उसकी विचारधारा सामान्यतः उल्लसित, उत्साही तथा प्रसन्नचित है।

मीन

कुण्डली संख्या ३६—जन्म तारीख २६–६–१९२० समय २.६ बजे प्रातः (आई एस टी) (अक्षांस २४°–४७° उत्तर, देशान्तर ४ घं० २८ मि० पूर्व)

राशि

नवांश
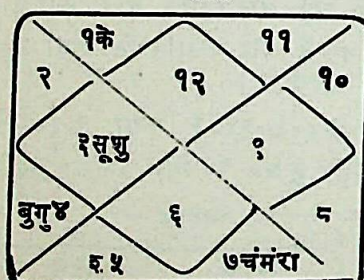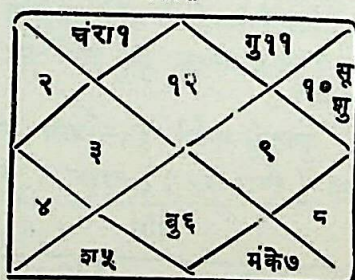
जन्म समय वृहस्पति की दशा शेष १२–११–१५ वर्ष

कुण्डली संख्या ३६ में लग्न और लग्नेश दोनों ही निस्सन्देह उत्तम स्थिति में हैं किन्तु चन्द्रमा पर कई अनिष्ट प्रभाव हैं जिसके परिणामस्वरूप जातक मानसिक रूप से सामान्य नहीं है। लग्न पर बृहस्पति की दृष्टि है। जातक हृष्ट-पुष्ट नहीं है किन्तु वह मध्यम कद का है। उसका रंग साफ है। इसमें बृहस्पति प्रधान है जहां तक शारीरिक विशेषता का सम्बन्ध है शरीर मांसल नहीं है क्योंकि नवांश में लग्न पर शनि की दृष्टि है।

कुण्डली संख्या ३७—जन्म तारीख २१-९-१९०९ समय ७.९ बजे संध्या (स्था० स०) (अ० ७° उत्तर, दे० ७९° ४° पूर्व)

राशि

नवांश
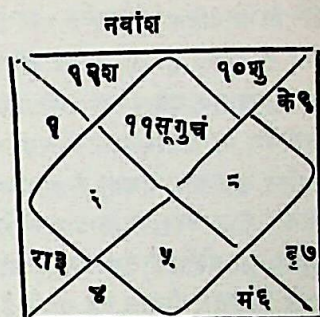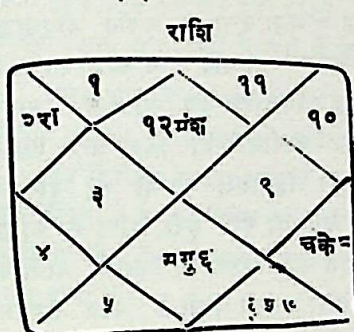
जन्म सयय बुध की दशा शेष ७-८-१२ वर्ष

कुण्डली सं० ३७ में लग्न में मंगल और शनि है तथा उस पर सूर्य और बृहस्पति की दृष्टि है। लग्नाधिपति सूर्य के साथ सप्तम भाव में है और उस पर मंगल और शनि की दृष्टि है। नवांश में भी बृहस्पति लग्न में है। जातक एक खिलाड़ी है। उसके शरीर का विकास अच्छा हुआ है। जातक दो वृत्ति में है। इस कुण्डली में सूर्य और बृहस्पति की स्थिति महत्त्वपूर्ण है।

दूसरे भाव के सम्बन्ध में

द्वितीय भाव परिवार, व्याख्यान, दृष्टि और वित्तीय सम्पन्नता का द्योतक है। द्वितीय भाव के सम्बन्ध में घटनाओं के निर्णय में प्रथम भाव पर विचार करते समय पिछले पृष्ठों पर दी गई सभी महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना चाहिए अर्थात (क) भाव (ख) भावेश (ग) उसमें स्थित ग्रह (घ) कारक। द्वितीयेश द्वारा अनेक उत्तम और निकृष्ट योगों का निर्माण किया जाता है और वे द्वितीय भाव पर अपना प्रभाव डालते हैं। नवांश में भी यह निर्णय लागू होता है। संक्षेप में द्वितीय भाव मुख्यत: धन को दर्शाता है।

द्वितीय भाव के स्वामी का विभिन्न भावों में फल

प्रथम भाव में—जातक निस्संदेह धनी होता है किन्तु वह अपने परिवार से घृणा करता है। उसमें नम्रता का अभाव होता है, वह उत्तेजित स्वभाव का तथा सहायक और समय सेवा के रूप में कार्य करता है।

जब द्वितीयेश लग्न में होता है तो जातक अपने ही प्रयास, बुद्धि तथा ज्ञान से धन कमाता है या वह पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करेगा यदि इस योग में नमवेश या सूर्य का कोई सहयोग हो।

द्वितीय भाव में—वह व्यक्ति अभिमानी होता है। सातवें भाव के बलावल के आधार पर वह व्यक्ति दो या तीन विवाह कर सकता है। यह बिना सन्तान का रह सकता है। किसी नक्षत्र में जो जन्मनक्षत्र से ३, ५ और ७ वां न हो द्वितीयेश की स्थिति अत्यधिक वांछित है यदि विशेषकर वह अन्यथा बली हो अर्थात योगकारक ग्रह की युक्ति हो या उसकी दृष्टि हो। द्वितीयेश लग्न में यदि उच्च का हो तो ४, ५, ७, ९ या १० उसे इतना बली बनाता है कि वह योगकारक बन जाता है। जातक द्वितीयेश या द्वितीय भाव के स्वरूप के अनुसार कारोबार या किसी अन्य देश से पर्याप्त धन कमा सकता है। अनिष्ट ग्रहों द्वारा द्वितीयेश पर दी गई दृष्टि के स्वरूप के आधार पर जातक को हानि होगी। द्वितीयेश पर बुरी दृष्टि के कारण जातक को पौष्टिक तथा उत्तम भोजन भी प्राप्त नहीं होगा या उसकी पत्नी या बच्चे निरन्तर बीमार वह सकते हैं या जातक तथा उसकी पत्नी के बीच सद्भाव पूर्ण सम्बन्ध का अभाव रहेगा।

तृतीय भाव में—साहसी, बुद्धिमान, उत्तम स्वभाव किन्तु दुराचारी और नास्तिक होगा तथा विलासिता पसन्द करेगा। जीवन में आगे चलकर वह कंजूस बन जाता है।

यदि द्वितीयेश तीसरे भाव में बली हो तो उसे उसकी बहन से लाभ होगा। आधुनिक कला अर्थात संगीत, नृत्य से उसे लाभ होगा। वह क्षुद्र देवता या बुरी आत्माओं की पूजा करता है।

चतुर्थ भाव में—निम्नलिखित के अतिरिक्त उपरोक्त निष्कर्ष लागू होंगे। वह अपनी खुशी पर धन व्यय करेगा। वह धन के मामले में बहुत ही मितव्ययी होगा।

जब द्वितीयेश चौथे भाव में बली हो तो जातक मोटर के व्यापार या एजेन्ट या खेती भूस्वामी या कमीशन एजेन्ट पेशे द्वारा धन अर्जित करेगा। उसे मामा की ओर से लाभ प्राप्त होता है। यदि चतुर्थेश पर बुरी दृष्टि हो तो मामा के कारण हानि भी होती है।

पंचम भाव में—परिवार से घृणा करता है, कामुक, अपने बच्चों पर भी व्यय नहीं करता। उसमें अच्छी आदतों और आचार का अभाव होता है। जब द्वितीयेश पंचम भाव में बली हो तो लाटरी, क्रास वर्ड या शासकों की कृपा से अप्रत्याशित धन की प्राप्ति होती है।

छठे भाव में—दुश्मनों से आय और व्यय। वह गुदा या जंघा की बीमारी से पीड़ित रहेगा। कालाबाजारी, धोखा, कपट और दोस्तों तथा सम्बन्धियों के बीच

गलत प्रचार करके तथा कष्ट पहुँचाकर और प्रश्नात्मक तथा संदेहात्मक धंधे से धन इकठ्ठा करेगा। यदि द्वितीयेश और षष्ठेश की युक्ति हो और वह पूर्ण रूप से बली हो। यदि उस पर बुरी दृष्टि हो तो वह इन कठिनाइयों में फंसेगा और विश्वासघात, जालसाजी के जुर्म में जेल जाएगा।

सप्तम भाव में—कल्याणकारी होगा। पति और पत्नी दोनों में नैतिकता का अभाव होगा। वह इन्द्रिय की शान्ति पर अधिक धन व्यय करेगा।

जब द्वितीयेश सप्तम भाव में सप्तमेश के साथ बली हो तो विदेशी स्रोत से धन आएगा। जातक विदेश की यात्रा करेगा और वहाँ कारोबार करेगा। यदि द्वितीयेश की राशि, नवांश या नक्षत्र स्त्री जाति का हो तो उसे स्त्रियों के सम्बन्ध से लाभ होगा।

अष्टम भाव में—उसे पति/पत्नी से बिल्कुल थोड़ी या बिल्कुल ही खुशी प्राप्त नहीं होगी। बड़े भाई के साथ गलतफहमी होगी। भू सम्पत्ति प्राप्त करेगा।

यदि द्वितीयेश प्रबल हो तो धन आएगा और धन की हानि भी होगी। वास्तविक जांच से पता लगता है कि इस प्रकार के योग में शायद ही कोई अर्जन होगा और पैतृक तथा एकत्रित सम्पत्ति का नाश होगा।

नवम भाव में—कुशल, युवावस्था में स्वास्थ्य बिगड़ जाना किन्तु बाद में सुधर जाना। उसके पास काफी धन होगा और खुश रहेगा। जब द्वितीयेश बली हो और नवमेश लग्न में हो तो जातक को बहुत बड़ी पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। द्वितीयेश की राशि और नक्षत्र के अनुसार विभिन्न स्रोतों से लाभ भी होगा।

दशमभाव में—बड़ों तथा वरिष्ठों से आदर, विद्वान, धनी और वह अपने से धन कमाएगा। जातक अनेक उपव्यवसाय करेगा। वह कारोबार या खेती करेगा और वह अपने आपको दार्शनिक व्याख्यान में व्यस्त रखेगा तथा उससे धन कमाएगा। पुनः यहाँ भी द्वितीयेश के नक्षत्र और राशि से वास्तविक स्वरूप और अर्जन के स्रोतों का निर्धारण किया जाता है। यदि उस पर प्रबल बुरी दृष्टि हो तो वे ही साधन हानि के कारण भी बन जाते हैं।

एकादश भाव में—बाल्यकाल में स्वास्थ्य खराब रहेगा, पर्याप्त धन का अर्जन करेगा किन्तु चरित्रहीन बन जाता है।

यदि बली हो तो जातक धन उधार देकर या बैंकर के रूप में या बोर्डिंग हाउस से धन कमाता है।

बारहवें भाव में—जातक सम्मानित व्यक्ति बन जाता है सभी सम्भावनाओं से वह एक सरकारी कर्मचारी होता है। और बड़े भाई के सुख से वंचित रह जाएगा।

धार्मिक साधनों से आय होगी। यदि द्वितीयेश पर बुरी दृष्टि हो तो इन साधनों पर धन की हानि होगी।

पुनः इन योगों का सामान्य क्षेत्र है। द्वितीय भाव से सम्बन्धित ग्रहों की विभिन्न उच्च या नीच स्थितियों को ध्यान में रखकर परिणामों के वास्तविक स्वरूप की व्याख्या करनी चाहिए।

यशस्वी सत्याचार्य युक्ति विचार पर बल देते हैं अर्थात् कुण्डली की होशियारी से जांच करनी चाहिए। इसका अर्थ यह है कि अपना मत देने से पूर्व ग्रहों के बलाबल के सभी साधनों पर विचार कर लेना चाहिए।

अन्य महत्त्वपूर्ण योग

नीचे कुछ महत्त्वपूर्ण योग दिये जाते हैं जिससे द्वितीय भाव के पूरे स्वरूप का पता लगता है।

यदि द्वितीयेश द्वितीय भाव में बुरे ग्रहों के साथ हो या उस पर उनकी दृष्टि हो तो वह व्यक्ति गरीब होगा। यदि शनि द्वितीय भाव में हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो साधारण धन मिलता है। यदि चन्द्र और मंगल दूसरे भाव में हों और उन पर शनि की दृष्टि हो तो वह व्यक्ति चर्म रोग से पीड़ित होता है। यदि बुध दूसरे भाव में हो और साथ में कोई क्रूर ग्रह हो और उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो धन इकट्ठा नहीं हो सकता। यहाँ तक कि यदि कोई पैतृक सम्पत्ति हो तो वह भी खर्च हो जाती है—वह अपव्यय में नष्ट हो जाती है। दूसरे भाव में सूर्य हो और उस पर शनि की दृष्टि न हो तो वह स्थिर भाग्य देता है। यदि द्वितीयेश वृहस्पति हो या वृहस्पति दूसरे भाव में हो और क्रूर ग्रह की दृष्टि न हो तो उसके पास काफी धन होगा। यदि इस योग में बुध का सम्पर्क हो (चन्द्र द्वारा दृष्ट) तो धन की हानि होती है। चन्द्रमा दूसरे भाव में हो और उस पर बुध की दृष्टि हो तो स्वयं की मेहनत से धन कमाने का उत्तम योग बनाता है। यदि द्वितीयेश और एकादशेश में स्थान परिवर्तन हो या दोनों ही केन्द्र में स्थित हों या चतुष्कोण में हों और दोनों में से एक पर बुध या वृहस्पति की दृष्टि हो या उनकी युक्ति हो तो वह व्यक्ति काफी धनी होता है। वह व्यक्ति गरीब होगा यदि द्वितीयेश या तृतीयेश छठें भाव में हों या अनिष्ट ग्रह से दृष्ट हों। वह जातक हमेशा ही अकिंचन होता है जिसकी कुण्डली में द्वितीयेश और एकादशेश अलग-अलग हों और उनके साथ कोई क्रूर ग्रह न हो या उनकी दृष्टि न हो। नैतिक प्रयोजनों के लिए धन का व्यय होगा यदि वृहस्पति ११ वें भाव में हो, शुक्र द्वितीय भाव में हो और उसका स्वामी योगकारक के साथ हो। यदि द्वितीयेश सौम्य ग्रहों के साथ केन्द्र में हो या यदि दूसरे भाव में सौम्य ग्रहों की युक्ति और दृष्टि हो तो अपने सम्बन्धियों के साथ

उसके अच्छे सम्बन्ध होंगे। यदि दूसरे भाव में मंगल और चन्द्र हों उन पर बुध की दृष्टि हो तो वह व्यक्ति एक अच्छा गणितज्ञ होता है। ऐसी ही भविष्यवाणी की जा सकती है यदि बृहस्पति लग्न में हो और शनि अष्टम भाव में हो अथवा यदि चतुष्कोण में हो और लग्नेश या बुध उच्च के हों वह व्यक्ति एक समर्थ वाक् प्रतियोगी होता है यदि सूर्य या चन्द्र पर बृहस्पति या शुक्र की दृष्टि हो।

यदि द्वितीयेश शुक्र के साथ हो तो आँख के रोग से पीड़ित होता है या वह जातक रतौंधी का रोगी होता है। यदि सूर्य और चन्द्रमा दूसरे भाव में हों। यदि द्वितीयेश और एकादशेश ६, ८ या १२वें भाव में हो तो उस व्यक्ति को अर्थदण्ड लगता है या उसके खिलाफ झूठा आरोप लगता है। मंगल ११ वें में और राहु १२वें में हो तो भी यही फल होता है। यदि द्वितीयेश ६, ८, या १२वें भाव में हो तो वह आँख की बीमारी से पीड़ित होता है। यदि द्वितीयेश बली हो तो आँख की दृष्टि अच्छी होती है। यदि द्वितीयेश के साथ शनि, मंगल या गुलिका की युक्ति हो तो आँख में चोट लगती है। अच्छी दृष्टि के लिए दूसरे भाव में शनि का होना खराब है। द्वितीयेश की क्षीण स्थिति से वह व्यक्ति असहाय बन जाता है और बहुत खराब हालत में जीवन व्यतीत करता है।

यदि द्वितीयेश नीच का हो और बुरे ग्रहों के साथ द्वितीय या अष्टम भाव में हो तो जातक हकला या गूंगा होता है।

यदि द्वितीयेश द्वादश में हो या द्वादशेश द्वितीय भाव में हो तो जातक को धन के जुर्माने से हानि होती है। यदि द्वितीयेश अष्टम भाव में हो और साथ में नीच के क्रूर ग्रह हों और उनके साथ सूर्य की युक्ति हो तो सरकारी कार्य या जुर्माने से धन की हानि होगी। जब द्वितीय और द्वादश भाव के स्वामी द्वितीय या द्वादश भाव में हों और उन पर लग्नेश की दृष्टि हो तो अधिकारियों के गुस्सा से धन की हानि होती है। यदि दूसरे भाव में बुरे ग्रह हों और लग्नेश १२वें भाव में हो और दशमेश या एकादशेश से दृष्ट या युक्त हो तो वह व्यक्ति हमेशा ही कर्ज में रहता है। यदि बृहस्पति, शुक्र या बुध द्वितीय भाव में हों और उच्च स्थिति में हों तो वह व्यक्ति काफी लोगों का पालन पोषण करता है। यदि द्वितीयेश उच्च स्थिति में होकर केन्द्र में हो, यदि लग्नेश बली हो और जहाँ द्वितीयेश है उस भाव का स्वामी केन्द्र में हो तो जातक एक राजकुमार का जीवन बिताता है। यदि लग्नेश द्वितीय भाव में हो, द्वितीयेश ११वें में हो और एकादशेश लग्न में हो तो जातक काफी धन इकट्ठा करता है।

यदि द्वितीयेश दशमेश के साथ हो और नवांश के स्वामी से दृष्ट हो और वहाँ पर लग्नेश हो तो वह व्यक्ति युवावस्था में ही धनी हो जाता है। एक जन्म

कुण्डली लेते हैं जिसमें लग्न कुम्भ है और शनि नवांश में वृषभ में है यदि द्वितीयेश बृहस्पति दशमेश मंगल के साथ हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो (जो नवांश स्वामी है और उसके साथ लग्नेश है) तो वह व्यक्ति युवावस्था में धन अर्जित करता है। वह जातक भी युवावस्था में धन अर्जन करने लगता है। यदि उसकी कुण्डली में द्वितीयेश दशम भाव में हो और उस पर लग्नेश या नवांश लग्न के स्वामी की दृष्टि हो। यदि द्वितीयेश या एकादशेश की लग्नेश के साथ युति हो और केन्द्र में हों तो वह कालबली होता है तो जातक मध्यम आयु में धन अर्जित करता है। यदि तृतीय भाव द्विस्वभाव राशि है (मिथुन, कन्या, धनु और मीन) और उनका स्वामी वहीं हो और उस पर सौम्य ग्रह की दृष्टि हो तो उस ग्रह की दशा के दौरान काफी धन का अर्जन होगा। यह योग नैसर्गिक रूप से उन मामलों में लागू होता है जहाँ केवल चर राशि लग्न में हो। यदि तृतीय भाव अचर राशि हो और अधिपति के मामले में उपरोक्त योग पाया जाता हो तो आय सौ में होगी जबकि पहले वाले मामले में आय हजारों में होगी। तीसरे भाव में चर राशि के होने पर इस योग में दो सौ से कम आय का संकेत मिलता है। आरूढ़ लग्न से एकादश में नीच का शनि या मंगल होने पर अच्छी आय होती है। यदि आरूढ़ लग्न जन्म लग्न से ४, ५, ७, ११ में हो तो भी वह व्यक्ति काफी धनी होता है।

वित्तीय लाभ के साधन और समय को दर्शाने के लिए ज्योतिष की प्राचीन पुस्तकों में अनेक योग दिए गए हैं। इसमें द्वितीयेश की स्थिति महत्त्वपूर्ण होती है। यदि द्वितीयेश प्रथम भाव में हो तो जातक अपनी मेहनत से धन कमाता है और सामान्यतः हाथ से काम करके। दूसरे भाव में—यदि प्रथम और दूसरे भाव स्वामियों के बीच स्थान परिवर्तन हो तो वह बिना प्रयास के अमीर बन जाता है। तीसरे भाव में—सम्बन्धियों, भाइयों से हानि और यात्रा से लाभ। चौथे भाव में—माँ से सम्पत्ति की प्राप्ति। पाँचवें भाव में—पैत्रिक सम्पत्ति, सट्टा और जुआ से प्राप्ति। छठे भाव में—दलाल का कारोबार, सम्बन्धियों से हानि। सप्तम भाव में—विवाह के बाद धन की प्राप्ति किन्तु पत्नी के रोग पर धन की हानि। अष्टम भाव में—वसीयत और शत्रु से। नवम भाव में—पिता से, समुद्री जहाज से। दशम भाव में—व्यवसाय से, प्रसिद्ध व्यक्तियों से, सरकार से। एकादश भाव में—विभिन्न साधनों से। बारहवें भाव में नौकरों से, अनैतिक साधनों से और गैरकानूनी घूस आदि से।

यहाँ पर हम कुछ अभियुक्तियाँ पाठकों की सूचना के लिए दे रहे हैं। महर्षि जैमिनी के अनुसार किसी व्यक्ति की वृत्ति को सुचारू रूप से चलाने के लिए

आत्म कारक का महत्त्वपूर्ण हाथ होता है। इस सम्बन्ध में आरूढ़ लग्न और ग्रह स्थिति का भी किसी व्यक्ति की वित्तीय स्थिति में काफी हाथ होता है। मेरे विचार से आरूढ़ लग्न को भी वही महत्त्व देना चाहिए जो जन्म को दिया जाता है। लग्नेश लग्न से जितनी दूर है उतनी ही राशि लग्नेश से गिनने के बाद आरूढ़ लग्न की राशि से प्राप्त होती है। इस प्रकार यदि लग्न कुम्भ है और इसका स्वामी शनि चौथे भाव में है तो वृषभ से चौथा अर्थात् सिंह राशि आरूढ़ लग्न में होगी। आय के उचित या अनुचित साधन का निर्णय आरूढ़ लग्न से ११ वें भाव में स्थित योग कारक या अनिष्ट कारक ग्रहों के आधार पर किया जाता है।

सम्पत्ति

यदि लग्नाधिपति १२ वें भाव में हो या मारक ग्रह से दृष्ट हो तो अति गरीबी होती है। ऐसे ही फल की आशा तब की जाती है यदि प्रथम और छठे भाव के स्वामी के बीच स्थान परिवर्तन हो और इनमें से किसी पर मारक ग्रह की दृष्टि हो। यदि कोई मारक ग्रह जो नवम या दशम भाव का स्वामी न हो, लग्न में मारक ग्रह के साथ हो या मारक ग्रह से दृष्ट हो तो वह व्यक्ति अत्यधिक गरीब होगा।

यदि लग्न पर शनि की दृष्टि हो और अनिष्टकारी ग्रह के बीच में पड़ा तो भाग्य का नाश होगा। फिर भी वृहस्पति की युक्ति या दृष्टि से बुरे संकेत की समाप्ति हो जाती है। यदि लग्न चर राशि हो और उसमें शनि या केतु पड़े हों और मारक ग्रह के बीच में हों तो न केवल गरीबी होती है बल्कि शरीर का अंग भंग होता है। यदि लग्न से ६, ८ या १२ राशि आरूढ़ हो तो वह व्यक्ति दरिद्र होता है।

द्वितीय भाव में ग्रह

सूर्य—यह अधिक उत्तम स्थिति नहीं है। अधिकारियों की नाराजगी से हानि होगी। उसका चेहरा रोगग्रस्त होगा। वह मेहनत करके धन प्राप्त करेगा। आयका स्वरूप राशि के स्वरूप पर निर्भर करेगा। वह जिद्दी और चिड़चिड़ा होगा।

चन्द्रमा—उसका परिवार बड़ा होगा और काफी सुख प्राप्त करेगा। स्त्रियों से भी धन की प्राप्ति होगी। वित्तीय स्थिति परिवर्तनशील होगी, उसका रंग साफ होगा। ढुण्ढीराज नामक एक प्रसिद्ध ज्योतिष लेखक कहते हैं कि जब चन्द्रमा दूसरे भाव में हो तो जातक गैर मिलनसार होगा और अधिक सामाजिक नहीं होगा। उसकी आँखें भैंगी होंगी तथा अधिक प्रशंसित होगा।

मंगल—वह व्यक्ति झगड़ालू होता है। उसमें धन कमाने की अच्छी शक्ति होती

है। वह काफी धन इकट्ठा करता है। वह उत्तम वादी होता है। वह दुष्टात्मा व्यक्तियों के साथ दोस्ती नहीं जोड़ता, उसके दिल में सहानुभूति नहीं होती और सबके साथ झगड़ा करता रहता है।

बुध—वह धार्मिक और दार्शनिक सिद्धान्तों का विद्वान होता है। व्याख्यान, कारोबार और वाणिज्य कार्य से धन अर्जित करता है। अमीर होता है। काफी तेज बुद्धि वाला होगा। दान और नैतिक प्रयोजनों पर धन व्यय करता है। वह धन कमाने में होशियार, सावधान और मितव्ययी होता है।

बृहस्पति—ऐसा जातक कवि, लेखक, ज्योतिषी या वैज्ञानिक बनता है। सफलता के अवसर बढ़ते हैं। वह धन इकट्ठा करता है, उसकी पत्नी अच्छी होती है। वह दूसरों के साथ लड़ाई नहीं करता। वह बृहस्पति के स्वामित्व वाली राशि से सम्बन्धित वस्तुओं से धन प्राप्त करेगा।

शुक्र—परिवार बड़ा होगा। सामान्यत. दूसरों से पक्ष प्राप्त होने पर धन आता है। अच्छा भोजन करता है, उसके पास अपनी गाड़ी होती है। देखने में सुन्दर, कुशल और मनोरम होता है तथा अच्छे पति/पत्नी से विवाह करेगा। स्वास्थ्य और धन के बारे में उत्तम संकेत होता है।

शनि—जब तक द्वितीय भाव में तुला, मकर या कुम्भ न हो तब तक शनि यदि दूसरे भाव में हो तो वह धन कमाने के लिए काफी संघर्ष करता है। काम अधिक करना पड़ता है और प्राप्ति कम होती है। रूखा वचन, असामाजिक, दुःखी और निरुद्देश्य घूमता रहता है। ऐसे व्यक्ति को अवसर बहुत मिलते हैं किन्तु वह उनका शायद ही लाभ उठाता है। पारिवारिक जीवन सुखी नहीं होता। वह धातु, भण्डारण, खान, श्रमिक आदि से धन प्राप्त करता है। वह व्यक्ति प्रसिद्ध नहीं बनता।

राहु—जिद्दी, रोगग्रस्त चेहरा, पारिवारिक जीवन में मतभेद, दृष्टि को खतरा। यदि कोई अनुकूल योग न हों तो वित्तीय स्थिति में अस्थिरता। यदि दूसरे भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो अच्छी आय होती है। मित्रों और कारोबार से धन आता है।

केतु—दुर्वचन बोलने वाला। जालसाजी और धोखाधड़ी से हानि। वित्तीय मामलों में देयता रहेगी। धर्म कर्म, समुद्री बेड़ा, रहस्यमय कला, अस्पताल आदि से सफलता की आशा की जा सकती है।

द्वितीय भाव के निष्कर्षों के फलित होने का समय

द्वितीय भाव से सम्बन्धित समय के बारे में निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें—

(क) द्वितीयेश (ख) द्वितीय भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (ग) द्वितीय भाव

में स्थित ग्रह (घ) द्वितीयेश पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (ङ) द्वितीयेश के साथ युक्ति करने वाले ग्रह (च) चन्द्रमा से दूसरे भाव का स्वामी।

उपरोक्त बातों का दशानाथ के रूप में या भुक्तिनाथ के रूप में द्वितीय भाव पर प्रभाव पड़ सकता है। (१) दूसरे भाव पर प्रभाव डालने वाले ग्रह की महादशा में दूसरे भाव पर प्रभाव डालने वाले ग्रह की अन्तर्दशा काल में दूसरे भाव से सम्बन्धित परिणाम मिलते हैं (२) जिसका स्वामी दूसरे भाव से सम्बन्धित नहीं है उसकी महादशा काल में जो ग्रह दूसरे भाव से सम्बन्धित है उसकी अन्तर्दशा काल में दूसरे भाव का फल सीमित सीमा में प्राप्त होता है। इसी प्रकार जिसका स्वामी दूसरे भाव से सम्बन्धित नहीं है उस ग्रह की अन्तर्दशा काल तथा जिसका स्वामी द्वितीय भाव से सम्बन्धित है उसकी महादशा काल में दूसरे भाव से सम्बन्धित फल सीमित सीमा में प्राप्त होता है।

कुंडली सं० ३८— जन्म तारीख २०/२१-१०-१८९३, समय ४:१ बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांस १३ उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० २० से० पूर्व)

राशि

७सूबु
५
४
६मंशके
शु८
३
९
चं१०
रा१२
गु२
११
१

नवांश
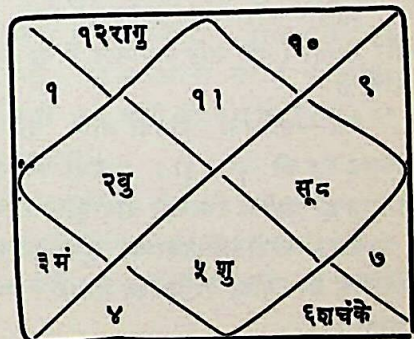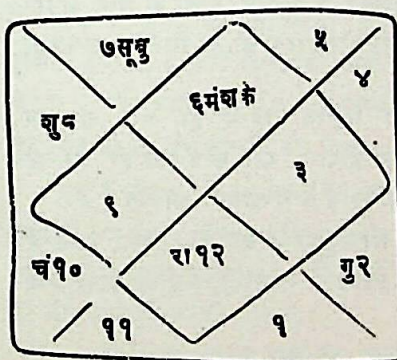
मंगल की दशा शेष ४-२-१४ वर्ष

(क) दूसरे भाव का स्वामी शुक्र (ख) दूसरे भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह कोई नहीं (ग) दूसरे भाव में स्थित ग्रह सूर्य और बुध (घ) द्वितीयेश पर दृष्टि डालने वाले—वृहस्पति (ङ) द्वितीयेश के साथ युक्ति करने वाले ग्रह—कोई नहीं (च) चन्द्रमा से दूसरे भाव का स्वामी शनि। इस कुण्डली में शुक्र, शनि, वृहस्पति, बुध और सूर्य अपनी महादशा या भुक्ति में दूसरे भाव को प्रभावित कर सकते हैं। शुक्र दूसरे भाव पर अन्य ग्रहों से अधिक प्रभाव डाल सकता है। इस जातक के जीवनकाल में वित्तीय क्षेत्र में शनि की महादशा में शुक्र की भुक्ति अति महत्त्वपूर्ण है। वह एक प्रमुख भारतीय राज्य में स्पीकर नियुक्त हुआ।

निष्कर्ष का स्वरूप

कोई ग्रह अपनी दशा और भुक्ति के दूसरे भाव का जो परिणाम देने में सक्षम है उसका स्वरूप उनके अन्य स्वामित्व, दृष्टि और स्थिति पर निर्भर करता है, प्रथम भावेश के सम्बन्ध में दिए गए सामान्य सिद्धान्त दूसरे भाव के लिए भी लागू होंगे। सामान्यतः उनकी दशा और भुक्ति में दूसरे भाव के सम्बन्ध में निम्नलिखित परिणामों की सम्भावना होती है—

सूर्य—स्वास्थ्य में गिरावट और उस कारण व्यय, झगड़ा और मुकदमेबाजी।

चन्द्रमा—धन में वृद्धि और अच्छी आय, पारिवारिक सुख, प्रसिद्धि, सम्पत्ति में वृद्धि और सभी उपक्रमों में लाभ।

मंगल—आराम और सुख, बड़े अधिकारियों से प्राप्ति और प्रसिद्धि में वृद्धि।

राहु—दूसरे भाव के फल का नाश, झगड़ा, मुकदमेबाजी और न्यायालय में व्यय, अधिकारियों की नाराजगी और उनसे हानि।

वहस्पति—सामान्यतः वित्तीय स्थिति में सुधार होगा। आँख में यदि कोई तकलीफ हो तो वह समाप्त हो जाएगी।

शनि—अधिक व्यय, आँख का रोग, परिवार में मतभेद, पत्नी के साथ झगड़ा और चिन्ता। यदि शनि स्वामित्व में या अन्यथा योगकारक हो तो वित्तीय सम्पन्नता आती है।

बुध—उत्तेजना लकवा आदि, यदि बुध द्वितीय भाव में हो और उस पर अनिष्ट ग्रह की दृष्टि हो। अन्यथा फल उत्तम होगा। यदि कोई कर्ज हो तो वह समाप्त हो जायेगा। अच्छी आय होगी और परिवार में सम्पन्नता आएगी।

केतु—चोरी, अग्निकाण्ड, मुकदमेबाजी और जुआ से धन की हानि, आँख में तकलीफ और दृष्टि पर उसका प्रभाव, जन्म स्थान से परेशानी, कर्ज में जाना और चिन्ता।

शुक्र—शक्ति का प्रभाव, वित्तीय सम्पन्नता और अति सफलता।

द्वितीय भावेश के दशा काल में सामान्यतः निम्नलिखित फल की सम्भावना होती है—

जब वह पूर्ण बली हो और दूसरे भाव में हो तो वह व्यक्ति धनी और प्रसिद्ध होता है। यदि लग्नाधिपति क्षीण हो तो धन की प्राप्ति नहीं होगी। यदि नवांश में द्वितीयेश ६, ८, या १२वें भाव में हो तो प्रसिद्धि होगी किन्तु धन की प्राप्ति नहीं होगी। द्वितीयेश के अन्य स्वामित्व के आधार पर और उस पर दृष्टि के आधार पर उसकी मृत्यु हो सकती है या पत्नी से अलग हो सकता है।

यदि द्वितीयेश तीसरे भाव में तृतीयेश के साथ हो तो वित्तीय मामलों में सुधार और सम्पन्नता होगी। आर्थिक मामलों में छोटा भाई मदद करेगा।

यदि वह व्यक्ति संगीतज्ञ है तो उसे प्रसिद्धि और धन की प्राप्ति होगी। यदि द्वितीयेश क्षीण हो तो न तो कोई लाभ होता है और न ही हानि, यदि नवांश में द्वितीयेश पंचमेश से ६, ८ या १२वें भाव में हो तो बिल्कुल ही विपरीत फल होता है।

यदि द्वितीयेश चौथे भाव में चतुर्थेश के साथ हो तो भूमि, कार, मकान का अधिग्रहण, साहित्यिक और बुद्धिजीवी कार्यों से धन लाभ होता है। खान, लाटरी, प्रतियोगिता और अप्रत्याशित साधनों से अचानक धन की प्राप्ति होती है। उसे माता या नाना से भी धन की प्राप्ति हो सकती है। यदि द्वितीयेश चतुर्थेश से अननुकूल नवांश में हो तो उपरोक्त लाभ प्राप्त नहीं होता। शुक्र द्वितीयेश हो, उसके साथ राहु हो या मंगल द्वितीयेश हो और उसके साथ शनि हो तो वह अपनी दशा या भुक्ति में पति/पत्नी को पथभ्रष्ट करता है।

जब द्वितीयेश पंचम भाव में पंचमेश के साथ हो तो बच्चे सम्पन्न होंगे और जातक को उनसे मदद मिलती है तथा वित्तीय सहायता प्राप्त होती है। वह व्यक्ति बुद्धिजीवी कार्यों में लग जाता है तथा उससे वित्तीय लाभ होता है।

यदि द्वितीयेश छठे भाव में षष्ठेश के साथ हो तो अपनी दशा या भुक्तिकाल में जातक के मामा को सम्पन्नता प्रदान करेगा। धनी लोगों के साथ जातक की दुश्मनी होती है। यदि द्वितीयेश बली हो तो वह डाक्टर के रूप में धन प्राप्त करेगा। यदि मंगल इस योग में शामिल हो तो उसे चोरी की सम्पत्ति मिलेगी या मुकदमेबाजी या गैर कानूनी ढंग से धन प्राप्त करेगा।

जब द्वितीयेश सप्तम भाव में सप्तमेश के साथ हो तो उसे अच्छा दहेज या ससुर से धन प्राप्त होगा। यदि सप्तमेश कारक हो तो इस दशा में जातक या उसकी पत्नी की मृत्यु हो सकती है। यदि कोई अन्य बली धन योग हो तभी धन की प्राप्ति की भविष्यवाणी करनी चाहिए।

जब द्वितीयेश अष्टम भाव में अष्टमेश के साथ हो तो जातक काफी कर्ज में चला जाता है। वह अपने प्रयासों के बावजूद कर्ज अदा नहीं कर पाता है। इस दशा में पत्नी की मृत्यु का भय रहता है या वह परिवार की प्रसिद्धि में बाधा डाल सकता है। उसे चिन्ता, मस्तिष्क में पीड़ा और दयनीय स्थिति में डाल सकता है। इस बुरे फल की आशा तब करनी चाहिए यदि द्वितीयेश नवांश में अष्टम से ६, ८ या ११वें भाव में हो। जब अष्टमेश क्षीण हो तो जातक बिना किसी उद्देश्य के घूमता रहेगा।

जब द्वितीयेश नवम भाव में नवमेश के साथ हो तो काफी धन आता है। पिता का भाग्य उत्तम होता है। जातक उचित ढंग से धन अर्जित करता है। वह विद्वानों के साथ मित्रता करेगा और उनके साथ विद्वत्ता की बातें भी करेगा।

जब द्वितीयेश दशवें भाव में दशमेश के साथ हो और लग्नेश राजयोग बना रहा हो तो द्वितीयेश की दशा में वह निश्चित ही उभर कर सामने आएगा। उसे उच्च राजनैतिक या प्रशासनिक पद और उच्च पद के अनुसार परिलब्धियां प्राप्त होंगी। यदि उसमें शामिल ग्रह मारक हों तो उसकी स्थिति बिगड़ जाएगी और दूसरों के लिए कष्ट का कारण बन जाएगा। वह घूस से धन कमायेगा। व्यापारी की कुंडली में यदि उपरोक्त योग हो तो इस दशा के दौरान अति लाभ होता है। यदि नवांश में द्वितीयेश दशमेश से ६, ८ या १२वें भाव में हो तो विपरीत फल प्राप्त होता है। वह राजनयिक, षडयन्त्र में प्रवीण और आडम्बरी होगा। एकादशेश के कारण ग्रह के स्वरूप से सम्बन्धित साधनों से काफी धन की प्राप्ति होगी। जब द्वितीयेश ग्यारहवें भाव में एकादशेश के साथ हो तो बड़े भाई के साथ सद्भाव बढ़ेगा। नवांश की मारक स्थिति से स्थिति विपरीत होती है और हानि होती है।

जब द्वितीयेश बारहवें भाव में द्वादशेश के साथ हो तो द्वादशेश के कारक ग्रह के स्वभाव के अनुसार साधनों से काफी हानि होगी। यदि द्वितीयेश और द्वादशेश दोनों ही क्षीण हों तो हानि कम होगी। जब द्वादशेश से नवांश में विपरीत स्थिति हो तो हानि की भविष्यवाणी नहीं करनी चाहिए। वित्तीय हानियों के अतिरिक्त पारिवारिक स्थिति में दुर्भाग्य होता है।

जब द्वितीयेश लग्न में लग्नेश के साथ हो तो उसकी दशा में जातक को बच्चा पैदा होता है। वह प्रसिद्ध और धनी होगा तथा वह पूर्त्त कार्य में संलग्न होगा। यदि द्वितीयेश क्षीण हो तो उसकी आय कम होगी।

दशा के फल की भविष्यवाणी करने के मामले में ज्योतिषी को द्वितीयेश और सम्बन्धित अधिपति पर विचार करना चाहिए। यह विचार केवल राशि में ही नहीं नवांश में भी करना चाहिए। अनुकूल और अननुकूल प्रभावों पर समान विचार करना चाहिए।

निम्नलिखित दशा और अन्तर्दशा में वित्तीय सम्पन्नता की भविष्यवाणी करनी चाहिए—

(क) यदि द्वितीयेश और पंचमेश तथा द्वितीयेश और एकादशेश के बीच स्थान परिवर्तन योग हो (ख) यदि पंचमेश और नवमेश क्रमशः पंचम और नवम भाव में हों (ग) यदि द्वितीयेश द्वादशेश के साथ हो तो द्वितीयेश की दशा के दौरान वित्तीय सम्पन्नता साधारण होगी।

यदि लग्नेश, चतुर्थेश और नवमेश अष्टम भाव में हों तो उसकी दशा और भुक्ति में जातक को हानि होती है। यदि पंचमेश अष्टम भाव में हो या अष्टमेश पंचम भाव में हो तो दोनों ही अधिपति अपनी दशा और भुक्ति में वित्तीय हानि देते हैं।

द्वितीय भाव के सम्बन्ध में हम कुछ चुनी हुई कुण्डलियों का अध्ययन करें—

कुण्डली सं० ३९—जन्म तारीख २४-३-१८८३, समय ६-० बजे (स्था० स०) (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० २० से०)

राशि

नवांश
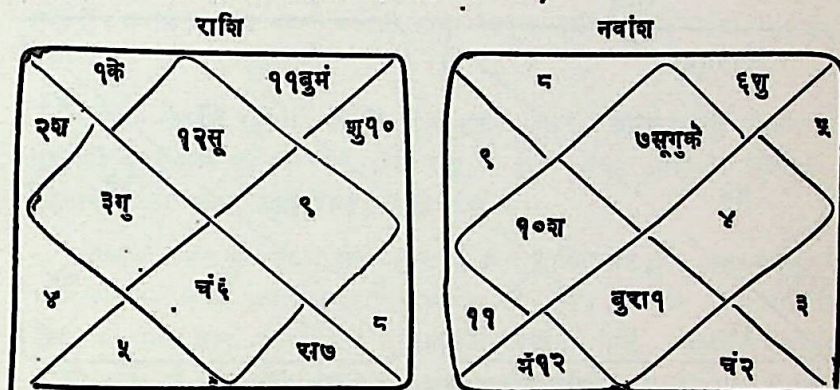
चन्द्रमा की दशा शेष ६-०-० वर्ष

द्वितीय भाव—दूसरे भाव में मेष राशि है। वहाँ पर केतु है जिस पर राहु की दृष्टि है। द्वितीय भाव दो पाप ग्रहों—सूर्य और शनि के बीच पड़ा है जिससे पाप कर्तरी योग बनता है। यह खराब है। नवांश में दूसरे भाव पर चन्द्रमा की दृष्टि है।

द्वितीयेश—द्वितीयेश मंगल है और वह चतुर्थेश तथा सप्तमेश बुध के साथ बारहवें भाव में स्थित है। दूसरे भाव के स्वामी पर शनि की दृष्टि भी है।

चन्द्रमा के दूसरे भाव में राहु स्थित है। द्वितीयेश पर लग्नेश की दृष्टि आगे चलकर आँख की दृष्टि के लिए ठीक नहीं है। नेत्रकारक एक ओर से मंगल और बुध तथा दूसरी ओर से केतु से घिरा हुआ है। द्वितीयेश मंगल पर वृहस्पति की दृष्टि है। नवांश में वृहस्पति केतु के साथ है और लग्न पर शनि की दृष्टि है। इन सभी योगों के कारण वृहस्पति की दशा और राहु की भुक्ति में जातक की दृष्टि चली गई।

कुण्डली सं० ४० में द्वितीय भाव—दूसरे भाव में सूर्य मं० चं० और बु० चार ग्रह हैं। दूसरे भाव में मंगल का होना खराब है। यह स्थिति रद्द हो रही है क्योंकि मंगल अपनी ही राशि में है। चन्द्रमा नीच का है किन्तु यह बुरा प्रभाव भी रद्द हो रहा है क्योंकि वृहस्पति की उच्च दृष्टि इस योग पर है। अतः दूसरा भाव बली है।

द्वितीयेश—चूंकि द्वितीयेश अपनी ही राशि में नवमेश बुध के साथ है अतः वह बली है। उस पर उच्च के वृहस्पति की दृष्टि है। नवांश में भी मंगल बुरी दृष्टि और युक्ति से मुक्त है।

कुण्डली सं ४०—जन्म तारीख १३/१४-१२-१८४५, समय ३.५ बजे प्रातः (जी एम टी) अक्षांश ५२°-५१° उत्तर, देशा० ०°-३०° पूर्व)

राशि

नवांश
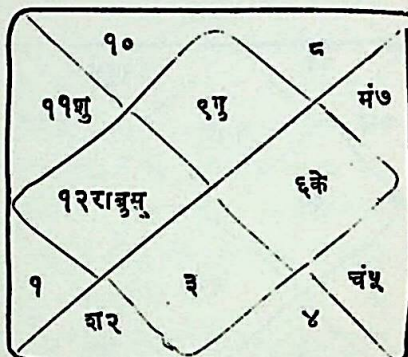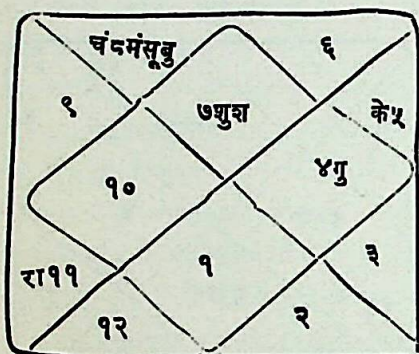
शनि की दशा शेष १८-२-१८ वर्ष

धनेश—(धनकारक)—वृहस्पति उच्च का है और दूसरे भाव पर उसकी दृष्टि है और लग्न से दशम तथा द्वितीय भाव से नवम में स्थित है। वृहस्पति पर उच्च के शनि की दृष्टि है जो इस कुण्डली में एक योगकारक है।

क्योंकि दूसरे भाव से सम्बन्धित तीनों ही बातें प्रबल हैं अत. असीम धन का संकेत है। दूसरे भाव पर प्रभाव डालने वाले ग्रह मंगल, बुध, चन्द्रमा, सूर्य और वृहस्पति तथा केतु हैं (क्योंकि केतु सूर्य का फल देगा।)

केतु एकादशेश सूर्य (लाभ) का फल देगा। बुध नवम भाव (भाग्य स्थान) का स्वामी है और दूसरे भाव में स्थित है। केतु की दशा बुध की भुक्ति में जातक को विरासत में साम्राज्य मिला।

कुण्डली सं० ४१—जन्म तारीख ३/४-२-१९००, समय ४-० बजे प्रातः (स्था० सं०) (अ० २३° उत्तर, देशा० १९° ३०° पूर्व)।
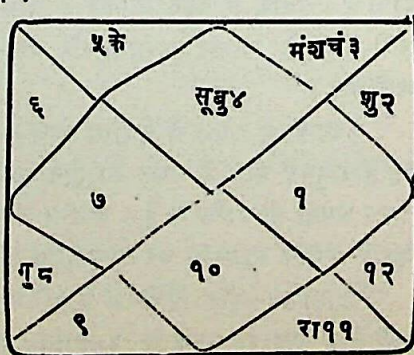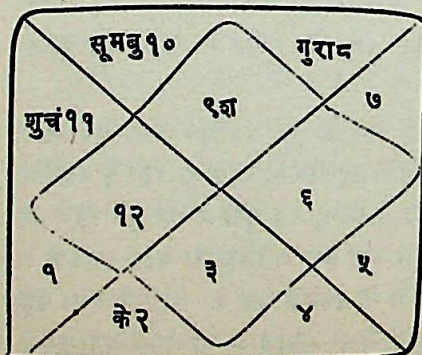
वृहस्पति की दशा शेष ५-५-२ वर्ष

द्वितीय भाव—कुण्डली सं० ४१ में दूसरे भाव में बहुत उत्तम योग है क्योंकि सूर्य (नवमेश), बुध (सप्तमेश और दशमेश) और मंगल (पंचमेश) दूसरे भाव में स्थित हैं। इससे राजयोग बनता है। दूसरा भाव बली है।

द्वितीयेश—द्वितीयेश शनि लग्न में है और इस पर कोई अच्छी या बुरी दृष्टि नहीं है। नवांश में शनि मंगल चन्द्र के साथ मिथुन राशि में है। अतः द्वितीयेश बली है।

धनेश—लग्नेश वृहस्पति राहु के साथ १३ वें भाव में है। परन्तु चन्द्रमा से वृहस्पति दूसरे भाव का स्वामी है और राहु के साथ दशम भाव में स्थित है। वृहस्पति न तो अधिक बली है और न ही क्षीण है।

निष्कर्ष—इस कुण्डली में कुछ महत्त्वपूर्ण योग हैं जिन पर हम इस उदाहरण में विचार नहीं करेंगे क्योंकि उनकी विद्यमानता की जांच करने के लिए ज्योतिष विद्या का उत्तम ज्ञान आवश्यक है। वृहस्पति वर्गोत्तम में है। जातक जीवन में काफी सम्पन्न है और उसका वेतन १५०० रु० माहवार है। दूसरे भाव में तीन ग्रहों का स्थित होना इस कुण्डली में अति महत्त्वपूर्ण योग है। यहां पर एक राज-योग बनता है क्योंकि मंगल पंचमेश है और बुध दशमेश और सप्तमेश है। शनि, बुध, मंगल, सूर्य और चन्द्रमा पर्याप्त रूप से दूसरे भाव पर प्रभाव डालेंगे बुध की दशा में वित्तीय सम्पन्नता आएगी।

कुण्डली सं० ४२—जन्म तारीख ३-५-१९०९, समय ९–१५ बजे सन्ध्या (स्था० स०) अक्षांस सं० १३° उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० २० से० पूर्व)
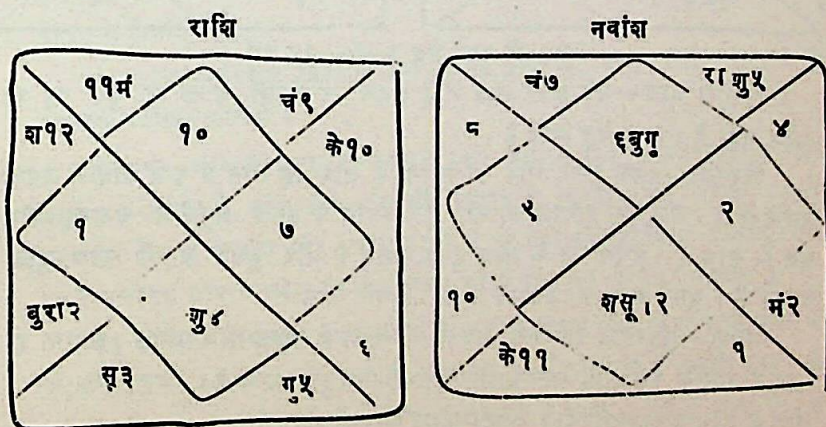
शुक्र की दशा शेष ९-४-२० वर्ष

द्वितीय भाव—मंगल दूसरे भाव में है और तीसरे तथा १२वें भाव का स्वामी बृहस्पति उस पर दृष्टि डाल रहा है, दोनों ही खराब हैं।

द्वितीयेश—द्वितीयेश तीसरे भाव में है। यह धन के लिए खराब है नवांश में शनि सप्तम भाव में अपने कट्टर शत्रु के साथ है।

धनेश—लग्न में अष्टम भाव में है और उस पर मंगल की दृष्टि है।

निष्कर्ष—लगभग सभी ग्रह द्विर्द्वादश स्थिति में हैं (क्योंकि वे एक दूसरे और बारहवें भाव में हैं) यह एक अननुकूल योग है जो जीवन में सफलता में हमेशा बाधा डालता है। मंगल की दशा और शनि की भुक्ति धन के लिए थोड़ी अनुकूल है। यह कुण्डली एक साधारण व्यक्ति की है जो ५० से ६० रु० प्रतिमाह कमाता है।

कुण्डली सं० ४३—जन्म तारीख २४–८–१८९०, समय ८-४४ बजे संन्ध्या (स्था० सं०) (अ० १२°–२०° उत्तर, देशा० ७६°.३८ पूर्व)।

राशि

१
११
रा२
१२
गु१०
३
९
४
बुशु६
चंमंके८
सूश५
७

नवांश

९
७
१०
८
शुश६रा
५
चंबुमं११
४
के१२
गु२
१
सू३
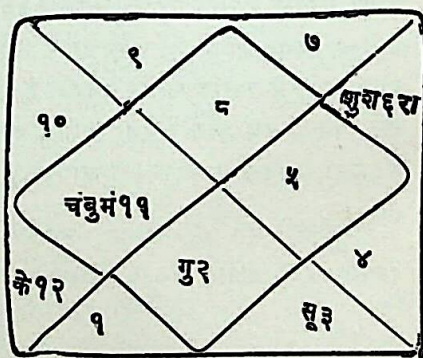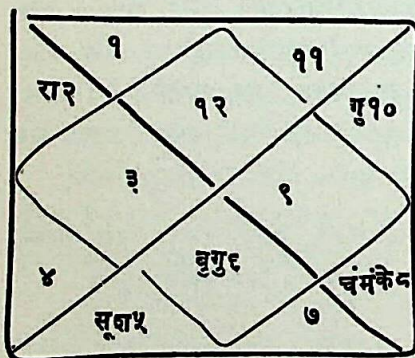
बुध की दशा शेष ५–९०–२५ वर्ष

द्वितीय भाव—मेष दूसरे भाव में है। इस पर किसी अच्छे या बुरे ग्रह की दृष्टि नहीं है। अतः यह बली है।

द्वितीयेश–मंगल दूसरे भाव का स्वामी है और यह लग्न से ९ वें भाव में अपनी राशि में है। यह एक भाग्यशाली योग है। नवांश में मंगल चतुर्थ में चन्द्रमा और बुध के साथ है। प्रथम ग्रह के साथ युक्ति उत्तम है और दूसरे ग्रह के साथ युक्ति खराब है। दूसरे भाव का स्वामी उत्तम स्थिति में है।

धनेश—बृहस्पति ग्यारहवें भाव में नीच का है किन्तु नीच प्रभाव समाप्त हो रहा है क्योंकि उस भाव का स्वामी चन्द्रमा से चतुष्कोण में है। यह एक कारक योग है और इसका परिणाम अधिक लाभ कारक होगा।

निष्कर्ष—यह ध्यान दें कि द्वितीयेश और द्वितीय भाव के साथ छठे भाव का

कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः जातक ऋणी नहीं होगा। वित्तीय स्थिति सामान्यतः सुदृढ़ होगी। विशेषकर मंगल की दशा में बचत होगी।

कुण्डली सं० ४४—जन्म तारीख २९/३०–९–१८८८, समय ४–३५ बजे प्रातः (अक्षांस ३६° ३०° उत्तर, देशा० ७४° ४५ पूर्व)
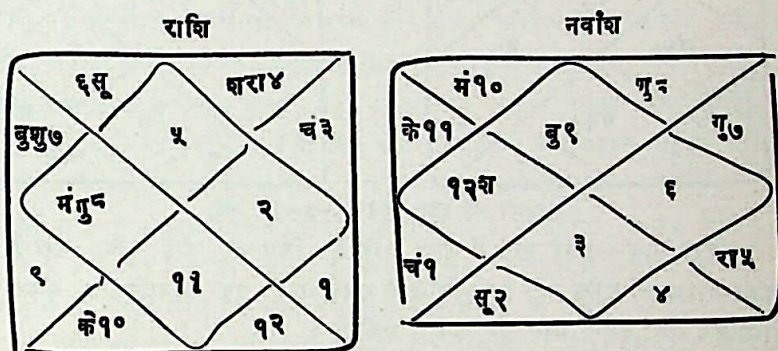
बृहस्पति की दशा शेष १३–१–२० वर्ष

द्वितीय भाव—दूसरे भाव में कन्या राशि है। इस राशि में लग्नेश सूर्य स्थित है और इस पर शनि की दृष्टि है जो षष्ठेश और सप्तमेश है, दूसरा भाव साधारण स्थिति में है।

द्वितीयेश—दूसरे भाव का स्वामी बुध तीसरे भाव में अपनी मित्र राशि में शुक्र के साथ है। शुक्र तीसरे और दसवें भाव का स्वामी होने के कारण मारक है। द्वितीयेश पर कोई और दृष्टि नहीं है। नवांश में बुध लग्न में है। द्वितीयेश भी साधारण स्थिति में है।

धनकारक—पंचमेश बृहस्पति योग कारक मंगल के साथ चौथे भाव में है। यह एक सर्वोत्तम योग है।

निष्कर्ष—शनि और राहु चन्द्रमा से दूसरे भाव में हैं। अतः जबकि जातक बहुत धन कमाता है, शनि और राहु की स्थिति के कारण वह गलत कामों में व्यय कर देता है। राशि और नवांश दोनों में ही ग्रहों की द्विर्द्वादश स्थिति देखें। इससे अचानक उत्थान और अचानक पतन की स्थिति का संकेत मिलता है।

केतु की दशा और शुक्र की भुक्ति में जातक के भाग्य का विनाश हो गया और उसके ऊपर ५०,००० रु० का कर्ज हो गया। केतु छठें भाव में है जबकि उस भाव का स्वामी शनि लग्न से १२ वें और चन्द्र से दूसरे भाव में है। केतु दशा के अन्त में वित्तीय स्थिति बिगड़ी।

कुण्डली सं० ४५—जन्म तारीख २२-१-१८९८, समय १६-७ बजे संध्या (स्था० स०) (अक्षां १३° ४° उत्तर, देशा० ८०°१५ पूर्व)।

राशि

नवांश

चन्द्रमा की दशा शेष ४-७-२१ वर्ष

दूसरा भाव—दूसरे भाव में तुला राशि है जिस पर कोई दृष्टि नहीं है या किसी मारक की युक्ति नहीं है। नवांश में दूसरे भाव पर लग्नाधिपति मंगल की दृष्टि है। अतः दूसरा भाव पूर्ण रूप से बली है।

द्वितीयेश—दूसरे भाव का स्वामी शुक्र पंचम भाव में अपनी मित्र राशि में है और उसके साथ १२ वें भाव का स्वामी सूर्य, एकादशेश चन्द्रमा और राहु स्थित है। उस पर कारक ग्रह वृहस्पति की दृष्टि भी है जो इस कुण्डली में केन्द्राधिपति है। नवांश में दूसरे भाव का स्वामी शुक्र ११ वें भाव में अपनी मित्र राशि में है और उस पर वृहस्पति की दृष्टि है। नवमेश और लग्नेश मंगल के साथ राहु हैं। शुक्र पर नवमेश वृहस्पति की दृष्टि भी है। अतः द्वितीयेश साधारण रूप से बली है।

धनकारक—वृहस्पति का लग्न में तथा चन्द्रमा से नवम में होना उसे बली बनाता है।

निष्कर्ष—चन्द्रमा से दूसरे भाव का स्वामी शनि ११ वें भाव में है। इससे द्वितीयेश की स्थिति अच्छी बन जाती है जो चन्द्रमा से योग कारक है और जातक की स्थिति मजबूत बनाता है। यह ध्यान देने योग्य है कि वह सेवानिवृत्त होने से पूर्व शनि की दशा में भारत सरकार में अवर सचिव पद पर चला गया और उसका मासिक वेतन १०००/=रु० था।

पिछले पृष्ठों पर योग कारक या विशेष योग बनने वाले ग्रहों की चर्चा की गई है। चूंकि मैंने योग के ऊपर अलग पुस्तक लिखी है अतः विशेषकर धन और सम्पत्ति के सम्बन्ध में हम यहाँ पर कुछ ही टिप्पणी देंगे।

अनेक जन्म कुण्डलियों के सावधानी पूर्वक अध्ययन और जांच से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि किसी व्यक्ति की वित्तीय हैसियत पर चन्द्र मंगल योग का

महान प्रभाव पड़ता है। यहाँ तक कि वराहमिहिर ने भी इस योग को अधिक महत्त्व नहीं दिया है। उनके अनुसार चन्द्र मंगल योग के परिणाम स्वरूप व्यक्ति अनैतिक ढंग से धन कमाता है। फिर भी वास्तव में यह पाया गया है कि जहाँ पर चन्द्र और मंगल वृषभ और वृश्चिक या कर्क और मकर में स्थित होने के कारण वली होते हैं वहाँ पर हमेशा ही प्रशंसित योग्य साधन से आय होती है। ऊपर दी गई पहली स्थिति में चन्द्रमा उच्च का होगा और मंगल अपनी राशि का होगा जबकि दूसरी स्थिति में विपरीत स्थिति होगी अर्थात चन्द्रमा अपनी राशि में होगा और मंगल उच्च का होगा। यहाँ पर भी इस योग से अच्छी आय होगी। यदि ये २, ९, १० या ११ वें भाव में हों। फल का स्वरूप योग बनाने वाले ग्रहों के स्वामित्व के स्वभाव पर भी निर्भर करता है। यदि लग्न में तुला राशि है और योग कर्क राशि में बनता है तो दूसरे और दशवें भाव से सम्बन्धित प्रभाव होंगे। इसी प्रकार कर्क और सिंह लग्न वालों के लिए वृश्चिक या वृषभ में बनने वाले चन्द्र मंगल योग भी काफी लाभ देने वाले होते हैं। योग बनाने के लिए चन्द्रमा और मंगल की युक्ति या परस्पर दृष्टि परिवर्तन होने चाहिए। जहाँ चन्द्रमा और मंगल नीच के हों और नीच भंग नहीं हो रहा है, उन्हें छोड़कर चन्द्र मंगल योग से धन के मामले में उत्तम परिणाम प्राप्त होता है। प्रभाव का वास्तविक स्वरूप लग्न से प्राप्त योग की स्थिति पर आधारित होता है।

कुण्डली सं० ४६—जन्म तारीख ३०-१-१८९१, समय ७-० बजे संध्या (स्था० सं०, अक्षांश १३° उत्तर, देशान्तर ४ घं० १० मि० २० से०)।

राशि

नवांश
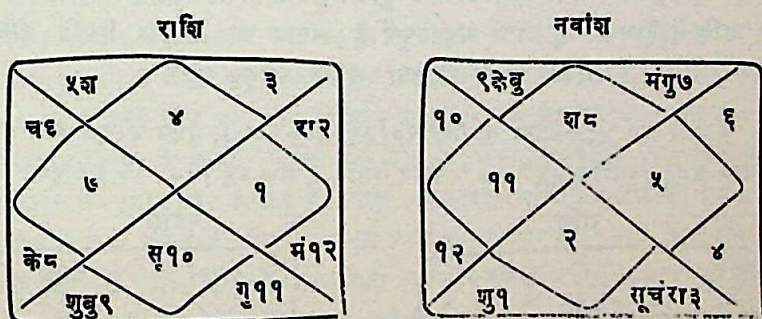
चन्द्रमा की दशा शेष २-९-१३ वर्ष

कुंडली सं० ४६ में दूसरे भाव में शनि है और उस पर बृहस्पति की दृष्टि है जो ६ और ९ वें भाव का स्वामी है। दूसरे भाव का स्वामी सूर्य सप्तम भाव में शत्रु राशि में है। अतः दूसरा भाव साधारण स्थिति में है।

यहाँ चन्द्र और मंगल परस्पर एक दूसरे पर दृष्टि डाल रहे हैं। इस लग्न के

लिए मंगल योग कारक है और चन्द्रमा लग्नाधिपति है। चन्द्रमा का तीसरे भाव में और मंगल का ९ वें भाव में होना अच्छा है। इससे योग को कुछ बल मिल जाता है जिसके परिणाम स्वरूप जातक की वित्तीय स्थिति अच्छी है। धन कारक अष्टम भाव में है और यह स्थिति विपरीत होती है।

कुण्डली सं० ४७—जन्म तारीख २४-८-१८९०, समय ८-४४ बजे संध्या (स्था० स०) (अ० १२°-२२° उत्तर देशा० ७६°-३८ पूर्व)।

बुध की दशा शेष ५-१०-२५ वर्ष

कुण्डली संख्या ४७ चन्द्र मंगल योग का अन्य विशेष उदाहरण है।

चन्द्र मंगल योग लग्न से नवम भाव वृश्चिक में बनता है। मंगल अपनी ही राशि में है और चन्द्रमा नीच का है। चूंकि चन्द्रमा निर्बल है और मंगल अपनी ही राशि में है अतः यह योग महत्त्वपूर्ण है। मंगल की अनुकूल स्थिति होने के कारण चन्द्रमा की अपेक्षा मंगल की दशा अधिक अनुकूल रहेगी।

कुंडली सं० ४८—जन्म तारीख २०/२१-१०-१८८७, समय ३-१० बजे प्रातः (स्था० सं०) (अक्षांस २५° २०° उत्तर देशा० ५ घं० ४५ मि० ४० से० पूर्व)।
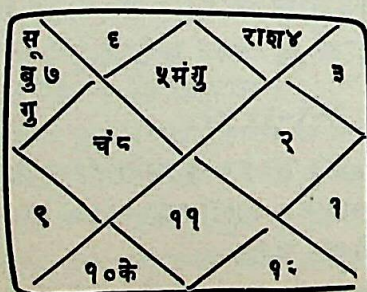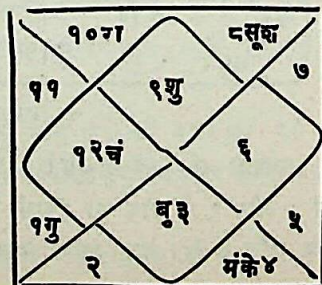
बुध की दशा शेष ४-२-२४ वर्ष

दूसरा भाव—कन्या दूसरा भाव है। इस पर षष्ठेश और सप्तमेश शनि की दृष्टि है जो तटस्थ है। अतः यह सामान्यतः उत्तम है।

द्वितीयेश—दूसरे भाव का स्वामी बुध है और वह पंचमेश तथा अष्टमेश वृहस्पति के साथ तीसरे भाव में है। बुध मित्र राशि में है और उस पर कोई मारक दृष्टि नहीं है। नवांश में बुध सातवें भाव में अपनी राशि में है। अतः द्वितीयेश की स्थिति अच्छी है।

धनेश—वृहस्पति पंचम भाव का स्वामी है और वह द्वितीयेश के साथ स्थित है किन्तु वह शत्रु राशि में है। नवांश में वृहस्पति लग्नेश है और वह पंचम भाव में मित्र राशि में है। अतः साधारण रूप से अच्छा है।

निष्कर्ष—यह ध्यान दें कि षष्ठेश की दृष्टि धन भाव पर है। लग्नेश सूर्य भी तीसरे भाव में है। धन की डिग्री पर्याप्त नहीं है और कड़ी मेहनत से धन कमाता है। नवांश में राहु दूसरे भाव में है जबकि द्वितीयेश १२ वें भाव में है। इससे सरकार की अप्रसन्नता के कारण हानि का संकेत मिलता है।

यह भी पाया गया है कि मंगल और चन्द्रमा यदि परस्पर केन्द्र में हों तो चन्द्र मंगल योग की तरह उत्थान करते हैं।

चन्द्रमा और वृहस्पति के परस्पर केन्द्र में स्थित होने पर गजकेशरी योग बनता है। यहाँ पर भी अपना प्रभाव देने के लिए योग का बल चन्द्रमा और वृहस्पति की स्थिति पर निर्भर करता है। जैसे उच्च, नीच, शत्रु राशि, मित्र राशि आदि। यदि लग्न से १२, ६, या ८ वें भाव में गजकेशरी योग बनता है तो जन्म कुण्डली में अच्छी प्रगति का संकेत नहीं मिलता। गजकेशरी योग या उस सम्बन्ध में कोई और अन्य योग विभिन्न प्रकार से अपना फल दे सकते हैं। इससे बिना धन लाभ के किसी व्यक्ति को प्रसिद्धि मिल सकती है; यह व्यावसायिक स्थिति में सुधार ला सकता है किन्तु तदनुसार आर्थिक लाभ के बिना और परिस्थिति में परिवर्तन लाए बिना धन लाभ हो सकता है। यदि वृहस्पति किसी भी प्रकार से द्वितीय भाव से सम्बन्धित और गजकेशरी योग बनाता हो तो वह उस व्यक्ति की आय बढ़ाने के लिए बाध्य है। कोई भविष्यवाणी करने से पूर्व ज्योतिष के विद्यार्थियों को इन सभी तकनीकी बातों पर सावधानी पूर्वक विचार कर लेना चाहिए।

सामान्यतः विभिन्न लग्नों में उत्पन्न व्यक्तियों की वित्तीय सम्भावनाएँ निम्न प्रकार होंगी। विभिन्न जन्म कुंडलियों के अध्ययन से निम्नलिखित सूचना एकत्र की गई है। जन्म कुण्डली में पाये जाने वाले अन्य योगों पर विचार किए बिना इन निष्कर्षों को लागू नहीं करना चाहिए।

मेष

प्रथम द्रेष्काण (०°-१०°)-भाग्य परिवर्तनशील होता है। सम्पत्ति और ग्रामीण उद्योग तथा कभी-कभी विवाह से लाभ होता है। इस लग्न वाला व्यक्ति मितव्ययी और अति सावधान होता है। वह अपना भाग्य सुधारने के लिए परिस्थितियों का लाभ उठाता है। उसके लिए महत्त्वपूर्ण वर्ष १८, २८, ३६, ४२, ४६ और ५० हैं।

दूसरा द्रेष्काण (११°-२०°)-उसका स्वभाव निस्संदेह अति सावधान होता है किन्तु वह व्यक्ति धन के लिए सभी प्रयास करता है। वह अधिक धनी होने का प्रभाव डालता है किन्तु वास्तविकता कुछ और होती है। धन के लिए महत्त्वपूर्ण वर्ष २०, २४. २९, ३६, ४७, ५६ और ६० होगा।

तीसरा द्रेष्काण (२१°-३०°)-जातक साधारणतया धन के मामले में जोखिम उठाता है और अपने शत्रुओं द्वारा धकेल दिया जाता है। सामान्यतः वह धन के मामले में भाग्यशाली होता है।। वर्ष २१, २५, ३१, ३४, ३६, ४२, ४५, ५१ और ५२ महत्त्वपूर्ण होगा।

वृषभ

प्रथम द्रेष्काण (१°-१०°)—जातक काफी धन अर्जित करता है किन्तु यह उसके हाथ में नहीं रहता। यदि वह अपने जीवन काल के आरम्भ में सावधानी नहीं रखता तो आखिरी समय चिन्ताजनक होता है। वह मितव्ययी नहीं होता। वह अपने बच्चों और आश्रितों के लिए शायद ही कुछ छोड़ जाता है। वह कर्ज में रहेगा और उसकी सम्पत्ति ऋणग्रस्त रहती है। उसे मुकदमेबाजी में हानि की सम्भावना होती है। महत्त्वपूर्ण वर्ष २१, २३, ३१, ४२, ५१, ६५ और ६८ हैं।

दूसरा द्रेष्काण (११°-२०°)—जातक मितव्ययी होगा और कर्ज में रहेगा। कभी कभी यह मितव्ययिता कंजूसी में परिवर्तित हो जाती है। वह अपने अति सावधान स्वभाव के कारण कभी कभी धन कमाने का अवसर गंवा देता है। वह अपनी वित्तीय स्थिति धीरे धीरे मजबूत करता है। यदि कोई अननुकूल योग न हों तो वह धनी बन जाएगा। महत्त्वपूर्ण वर्ष १८, २१, २४, ३३, ५० और ५५ होगा।

तीसरा द्रेष्काण (२०°-३९°)—जहाँ तक धन का सम्बन्ध है जातक अप्रसन्न रहेगा। उम्र बढ़ने के साथ साथ वह गरीब होता जाएगा। वह अपना धन दूसरों को दे सकता है या अनर्थ योजनाओं में बर्बाद कर सकता है। इस व्यक्ति के लिए सट्टे का धन्धा अनुकूल नहीं रहेगा। उसे सावधानीपूर्वक व्यापार करना चाहिए। महत्त्वपूर्ण वर्ष १८, २२, २६, ३१, ३५, ४२, ५१ और ५७ होगा।

मिथुन

प्रथम द्रेष्काण (१°-१०°)—इस व्यक्ति का भाग्य परिवर्तन होता है। इसमें

स्त्रियों का बहुत बड़ा हाथ होता है। जातक के साम ने गरीबी और वैभव होता है। जब उसकी उम्र तीस साल की हो जाती है तभी वह धन पर नियन्त्रण रख पाता है। उसे काफी विवेकपूर्ण रहना होगा और मुकदमेबाजी को टालना चाहिए। यदि कोई अन्य अनुकूल योग न हो या विशेष योग न हो तो धन के मामले में अप्रत्याशित उलटाव की आशा की जा सकती है। ऐसे व्यक्ति के लिए बीमा कम्पनी, न्यास, बिजली प्रतिष्ठान, विमानन और इसी प्रकार का व्यवसाय अनुकूल रहेगा। अत्यधिक महत्त्वपूर्ण वर्ष १६, २३, ३०, ४५ और ५४ होगा।

दूसरा द्रेष्काण (११°–२०°)—सरकारी नौकरी उतनी अनुकूल नहीं रहेगी जितना कारोबार या कोई अन्य उद्यम। जातक अपने बुढ़ापे के लिए धन जमा नहीं कर सकेगा। वह कितना भी दूरदर्शी क्यों न हो फिर भी उसे भारी हानि होगी। यदि चन्द्रमा नीच का हो तो आर्थिक मामले में हिचकोले आएँगे। वह धोखेबाजी और ढोंगी से अपनी रक्षा करता है। महत्त्वपूर्ण वर्ष १९, २३, २५, २९, ३२, ३६, ४३, ४६, और ४९ होंगे।

तीसरा द्रेष्काण (२१°–३०°)—जातक बुद्धि से धन कमाता है। सट्टे का कारोबार अनुकूल नहीं होगा ४५वें या ४६वें वर्ष में मुकदमेबाजी से हानि का संकेत है—सही अवधि प्रचलित स्थिति पर आधारित होगी। महत्त्वपूर्ण वर्ष २४, २९, ३३, ३५, ४१, ४७, ५९, ६० और ६२ होंगे।

कर्क

प्रथम द्रेष्काण (१°–१०°)—मितव्ययिता के कारण अक्सर जातक कंजूस बन जाता है। वह आर्थिक मामले में बहुत मूर्खता करेगा। धन प्राप्त करने में कठिनाई होती है और कभी कभी सम्बन्धियों के माध्यम से या सट्टा द्वारा, बच्चों के कारण और प्रेम में उत्तराधिकार की हानि हो जाती है। कभी कभी उसे काफी आर्थिक हानि होगी। निजी उद्यम से उसे लाभ होगा। महत्त्वपूर्ण वर्ष १७, २४, २९, ३१, ३९, ४९, और ५२ होंगे।

दूसरा द्रेष्काण (११°–२०°)—धन के मामले में जातक शायद ही भाग्यशाली हो। वह अपने उदार स्वभाव के कारण धन इकट्ठा नहीं कर पाएगा। जोखिम वाला निवेश अनुकूल नहीं होगा। मुकदमेबाजी और धमकी से रुपया ऐंठे जाने के कारण उसे हानि होगी। फिर भी कुछ स्थितियों में वह भाग्यशाली रहेगा। यदि सूर्य उच्च का हो तो राजनीति में नियुक्तियों से काफी आय होती है। महत्त्वपूर्ण वर्ष १८, २७, ३४, ४४, ५३ और ६० होंगे।

तीसरा द्रेष्काण (२१°–३०°)—जातक साधारणतः धन के मामले में असावधान रहता है। बुढ़ापे में उसे दरिद्रता का सामना करना पड़ सकता है और अपनी

हैसियत खो सकता है। वह अपने मामलों की सावधानी पूर्वक व्यवस्था करने में कठिनाई महसूस करेगा। उसके भाग्य में काफी परिवर्तन होता है। महत्त्वपूर्ण वर्ष १९, २६, ३३, ३६, ४५ और ४८ होंगे।

सिंह

प्रथम द्रेष्काण (१°–१०°)—निजी बुद्धि से धन आता है किन्तु जातक आर्थिक रूप से शायद ही सफल होता है। अच्छी आय होनेके बावजूद वह हमेशा ही अभाव में रहेगा। वस्तुओं, खाद्य, कपड़ा का व्यापार अनुकूल रहेगा। नौकरी में अचानक और अप्रत्याशित रुकावट आएगी। वह ज्योतिष के माध्यम से भी धन कमा सकता है। भाग्य में उलटाव आ सकता है।

दूसरा द्रेष्काण (११°–२०°)—कुण्डली में बुध की स्थिति पर बहुत कुछ निर्भर करता है। जातक एक बहुत अच्छा लेखक या पत्रकार बन सकता है या वह साहित्य या संगीत से धन कमा सकता है। यदि नौकरी में हो तो अपने अधिकारियों की अप्रसन्नता का शिकार हो सकता है। परिणामस्वरूप उसकी स्थिति में उलटाव आएगा। उसकी आर्थिक वृत्ति धीमी रहेगी। ५० वर्ष की आयु के बाद या उसके आस-पास बीमा या निवेश के माध्यम से वह कुछ धन प्राप्त कर सकता है। महत्त्वपूर्ण वर्ष २३, २६, ३१, ३६, ४५, ५३, ५४ और ५६ होंगे। प्रतिभाशील होने के बावजूद जातक अमीरी में नहीं मरता।

तीसरा द्रेष्काण (२१°–३०°)—दूसरे द्रेष्काण में उत्पन्न व्यक्तियों की अपेक्षा यह जातक आर्थिक मामले में बेहतर होगा। अप्रत्याशित साधनों से आय होती है। उसे ठेका, जहाजरानी और बुद्धिजीवी कार्यों में सफलता मिलेगी। महत्त्वपूर्ण वर्ष २०, २५, ३०, ३३, ३८, ४३ और ४८ होंगे।

कन्या

प्रथम द्रेष्काण (१°–१०°)— धन की डिग्री पर्याप्त नहीं है और वह अक्सर मेहनत और परिश्रम से प्राप्त करेगा। जीवन के आरम्भ में हानि की गुंजाइश है। यथासम्भव सट्टा का जोखिम नहीं लेना चाहिए। जातक कुछ स्वार्थी लोगों के प्रभाव में आ सकता है। असावधानी पूर्वक योजना और आवेगात्मक कार्रवाई से नाश हो सकता है। वह युक्ति संगत निवेशों, उद्योग, शौचालय की वस्तुओं के कारोबार, खुशबू, संगीत आदि से धन अर्जित कर सकता है। वह मुकदमेबाजी में भी फंसता है। महत्त्वपूर्ण वर्ष १८, २४, ३०, ३६, ४२, ४९ और ५५ होंगे।

दूसरा द्रेष्काण (११°–२०°)—आर्थिक स्थिति काफी अच्छी होगी। उसे पर्याप्त धन की प्राप्ति होगी। किन्तु सट्टा के मामले से सावधान रहना आवश्यक

है। सामान्यतः वह धन से सम्बद्ध रहता है। जिस अवधि में बृहस्पति; वृश्चिक, कुम्भ और कर्क में हो वह अवधि आर्थिक लाभ के लिए विशेषकर महत्त्वपूर्ण रहेगी। यदि कुण्डली में कोई अन्य अनुकूल प्रभाव न हों तो वह गलत रास्ते पर खर्च करता है। प्रथम द्रेष्काण वाले महत्त्वपूर्ण होंगे।

तीसरा द्रेष्काण (२१°-३०°)--आर्थिक मामलों में जीवन का आरम्भिक समय सफल रहेगा। व्यय अधिक होगा जिससे चिन्ता जढ़ेगी। जीवन में अनेक असफलताएं आएंगी। जुआ और सट्टा का परिहार्य करना चाहिए। महत्त्वपूर्ण वर्ष २०, २६, ३२, ३५, ४०, ४४ और ५० होंगे।

तुला

प्रथम द्रेष्काण (१°-१०°)—यह एक विचित्र राशि है। जातक या तो धन देवता कुबेर का पूजक बन जाता है या वह अमीरों का परित्याग कर देता है। यह जन्म कुण्डली में ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है। कारोबार, उद्यम, विधि या राजनैतिक व्यवसायों में आर्थिक सफलता की सम्भावना बनती है। वह ऐश आराम करने लगता है तथा रहन-सहन पर अपव्यय करता है। फिर भी सट्टे जैसे कार्य में हानि होती है। महत्त्वपूर्ण वर्ष १७, २४, ३१, ३३, ४०, ४३ और ५६ होंगे।

दूसरा द्रेष्काण (११°-२०°)—जातक की आर्थिक स्थिति में अचानक गिरावट आएगी। वह असामान्य तरीके से और कभी-कभी अनैतिक ढंग से धन अर्जित करेगा। वह दूसरों के पैसों का गलत उपयोग करने के कारण कष्ट में पड़ जाएगा। वह साधारण कारोबार के प्रति आकर्षित नहीं होगा। यदि बुध की स्थिति कुण्डली में अनुकूल हो तो लेखन से भी अच्छी आय होगी। वह असामान्य ढंग से व्यय करेगा। महत्त्वपूर्ण वर्ष १५, २२, २३, २९, ३१, ३६, ४२, ४४ और ५१ होंगें।

तीसरा द्रेष्कांण (२१°-३०°)--तुला के तीसरे द्रेष्काण में उत्पन्न जातक की आर्थिक स्थिति सामान्यतः भाग्यशाली होगी। होटल प्रबन्धक और खान पान के कार्य में उसे आर्थिक सफलता मिलेगी। उसका आकर्षण संगीत और ललित कला की ओर भी होगा। यदि नौकरी में है तो अचानक पदोन्नति होगी। इन सबके बावजूद उसे जीवन के आरम्भ में कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। महत्त्वपूर्ण वर्ष १६, १८, २३, २५, २७, ३२, ३९, ४६ और ५३ होंगे।

वृश्चिक

प्रथम द्रेष्काण (१°-१०°)--आर्थिक मामले में अनिश्चितता के साथ संग्रहण होता है किन्तु जब अनुकूल योग होते हैं तो जातक पर्याप्त मात्रा में धन का संग्रहण कर लेता है। सामान्यतः आय के दो भिन्न साधन हो सकते हैं। व्यापार, उद्यम,

पत्रकारिता और उद्योग से जातक धन अर्जित कर सकता है। गहन मुकदमेबाजी और शक्तिशाली दुश्मन उसके रास्ते में आ सकते हैं। उसका आकर्षण सट्टा में होगा किन्तु इसमें अधिक सफलता नहीं है। वह अपने प्रयासों में आगे बढ़ना भरसक नहीं चाहेगा। स्टाक, शेयर, और उद्योग में उसकी अधिक रुचि होगी। महत्त्वपूर्ण वर्ष १४, २२, २३, २९, ३०, ४०, ४१ और ४५ होंगे।

दूसरा द्रेष्काण (११°–२०°)—आर्थिक मामले में जातक अधिक दूरदर्शी नहीं होगा। वह स्वप्न देखेगा किन्तु कभी-कभी स्वप्न वास्तविक भी हो जाएगा। वह विचित्र स्थिति में भी आएगा। वह काल्पनिक सृजन में काफी उन्नति कर सकता है। यह कुण्डली में वृहस्पति की स्थिति पर अधिक निर्भर करेगा। जब उसके पास धन होगा तो वह काफी खर्च करेगा और जब उसके पास धन नहीं होगा तो वह परिस्थितियों के साथ समझौता कर लेगा। महत्त्वपूर्ण वर्ष २५, ३२, ४१, ४९, ५७ और ७३ होंगे।

तीसरा द्रेष्काण (२१°–३९°)—जातक के पास काफी सम्पत्ति होगी। धन के मामले में उसकी दूरदर्शिता और सावधानी अधिक महत्त्वपूर्ण होगी। वह लोगों में विश्वास कम करेगा। वह डकैती तथा धोखाधड़ी में काफी हानि उठाएगा। महत्त्वपूर्ण वर्ष २२, २५, ३३, ३६, ४१, ४४, ४९ और ५२ होंगे।

धनु

प्रथम द्रेष्काण (१°–१०°)—धन भाव का स्वामी शनि होगा। उसकी कुंडली में क्या स्थिति है इस पर ज्यादा कुछ निर्भर करेगा। इसका स्वभाव बिना किसी प्रतिफल के योजनाएँ बनाना है। भागीदारी में उसे सफलता नहीं होगी। उसकी आय के दो या अधिक साधन होंगे। लगभग ३२ वर्ष की आयु में गतिरोध आएगा। जाली संगठनों के साथ सम्बन्धित होने पर जातक को धन की हानि होगी। महत्त्वपूर्ण ठेका, कागजात, करार और प्रलेख पर हस्ताक्षर करते समय अति सावधानी रखनी होगी। महत्त्वपूर्ण वर्ष १९, २०, २८, २९, ३७, ३८, ४६ और ५५ होंगे।

दूसरा द्रेष्काण (११°–२९°)—जातक लगभग लुढ़कते हुए पत्थर के समान होगा जो किसी विशेष उप व्यवसाय में दृढ़ नहीं रह सकता। उसके मस्तिष्क में अनिश्चितता की भावना रहती है। आय से उतार-चढ़ाव आता रहता है। यदि नौकरी में हो तब भी उसमें अनेक परिवर्तन आएगे। सट्टा और जुआ को परिहार्य करना चाहिए। खनन, जहाजरानी, यातायात, मौसम विज्ञान, फैक्ट्री, श्रम आदि उसके लिए अनुकूल रहेंगे। महत्त्वपूर्ण वर्ष २०, २९, ३८, ४०, ४७, ४९ और ५६ होंगे।

तीसरा द्रेष्काण (२१°–३०°)—जीवन के आरम्भ को छोड़कर सामान्यतः आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। जातक विचित्र और कभी-कभी बिल्कुल ही अनुकूल साधनों से धन अर्जित करेगा। उसे विवाह में धन की प्राप्ति की सम्भावना है। उसे अचानक वसीयत मिलेगी किन्तु इससे वह परेशानी में फंस सकता है। यदि जातक सट्टा में नहीं जाएगा तो वह काफी धन एकत्र करेगा। महत्त्वपूर्ण वर्ष १७, २६, २०, ३५, ३८, ४२ और ४९ होंगे।

मकर

प्रथम द्रेष्काण (१°–१०°)—निजी परिश्रम और कभी-कभी सट्टा से भी धन आएगा। जातक की बड़ी-बड़ी योजनाएं होंगी किन्तु वह शायद ही सफल होंगी। वह हमेशा सुरक्षित रहेगा और किसी पर अधिक विश्वास नहीं करेगा। उसे किसी विधि संगत कारोबार में सफलता मिलेगी। उसे ऐसी योजनाओं की कोशिश करनी चाहिए जो उसे जनता के सम्पर्क में लाती हों। खनन कीमती पत्थर और बर्फ तथा फैक्ट्री में निवेश अनुकूल साबित होगा। महत्त्वपूर्ण वर्ष २०,२१, ३०, ३१, ४०, ४५ और ५० होंगे।

दूसरा द्रेष्काण (११°–२०°)—जातक धन का बहुत आदर करेगा। वह यदि आवश्यक हो तभी व्यय करेगा। जीवन में आगे चलकर वह बहुत उदार हो जाएगा। वह स्वयं में सुधार लाएगा। दूसरे शब्दों में उसे समझना कठिन होगा। ऐसे जातक के लिए बैंकिंग के कारोबार में निवेश करना अधिक उचित रहेगा। महत्त्वपूर्ण वर्ष २२, २४, ३२, ३५, ४२, ४५ और ५० होंगे।

तीसरा द्रेष्काण (२१°–३०°)—अवांछित मित्र आर्थिक साधनों में रुकावट बनेंगे। इस द्रेष्काण में उत्पन्न व्यक्ति के लिए संगीत, साहित्यिक कार्य, नृत्य और अन्य ललित कला उचित रहेगी। जातक धन के मामले में अधिक सावधानी बरतेगा। जीवन के आरम्भ में उसके सामने बहुत सी असफलताएं आएंगी किन्तु लगभग ४० वर्ष की आयु के बाद वह सफल होगा। सट्टा अनुकूल नहीं है। महत्त्वपूर्ण वर्ष २६, २९, ३६, ४१, ४६, ४९ और ५५ होंगे।

कुम्भ

प्रथम द्रेष्काण (१°–१०°)—यदि बृहस्पति अच्छी स्थिति में हो तो जातक आर्थिक अभाव महसूस नहीं करेगा। उसकी आय विभिन्न साधनों–विशेषकर पत्रकारिता, पुस्तक प्रकाशन, रहस्यमय साधन, राजनीति आदि से होगी। यदि बृहस्पति की स्थिति विपरीत हो तो अनिश्चित प्रकार की आर्थिक सफलता की सम्भावना है किन्तु भारी परिवर्तन और मुख्यतः सम्बन्धियों तथा शत्रुओं के कारण भारी रुकावट आएगी। वह अपनी उदारता के कारण कठिनाई में

पड़ेगा। यदि वह सट्टा में जाता है तो उसे सावधान रहना होगा। सहयोगी, भागीदार तथा विवाह से भी आय का संकेत मिलता है। धन प्राप्त करने और कब्जा में रखने की अति इच्छा होगी किन्तु धन केवल उसके अन्त का साधन होगा न कि धन का अन्त होगा। महत्त्वपूर्ण वर्ष १६, २४, २५, २९, ३५, ४६ और ५७ होंगें।

दूसरा द्रेष्काण (२१°–२०°)—ऊपर दिए गए परिणाम यहाँ भी लागू होंगे। जातक होटल प्रबन्धक, रेस्टोरेन्ट्स या खनन इंजीनियर के काम से धन कमा सकता है। वह ऐश आराम में प्रवृत्त होगा और जीवन में अपव्यय करेगा। वह सट्टा में जोखिम लेने में तत्पर हो जाएगा। किन्तु उसे कुछ सीमा तक ही सफलता मिलेगी। जातक के समक्ष अनेक अवसर आएंगे। उसे बड़ी योजनाएँ नहीं बनानी चाहिए। वह दूसरों के साथ काम करने में कठिनाई महसूस करेगा। महत्त्वपूर्ण वर्ष १५, २६, २७, ३७, ३८, ५१, ५८, ५९ और ६७ होंगे।

तीसरा द्रेष्काण (२१°–३०°)—आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होगी। सामान्यतः कारोबार अच्छा चलेगा और जातक कला के क्षेत्र में नाम करेगा। आरम्भ काल में वह मेहनत करेगा किन्तु उसे असफलता मिलेगी। उसके जीवन में अनेक गतिरोध आएंगे। वह किसी भी प्रकार के जुए में सफल रहेगा। भूमि सम्पत्ति से काफी लाभ होगा। महत्त्वपूर्ण वर्ष १७, २२, २६, ३३, ४०, ४८, ४९, ५३, ५५ और ६० होंगे।

मीन

प्रथम द्रेष्काण (१°–१०°)—यदि जातक अपने ऊपर नियन्त्रण रखे तो धन इकट्ठा करने में उसे अनेक अवसर मिलेंगे। वह उदार होगा और अपने आधे जीवन काल में काफी खर्च करेगा। किन्तु ५५ वर्ष की आयु के बाद जातक कजूस बन जाएगा। यदि मंगल ८ वें भाव में हो तो वह खर्चीले मुकदमे में फंसकर अपने भाग्य को बर्बाद कर देगा। वह डाक्टर के रूप में अधिक सफल रहेगा। वह सट्टा की ओर प्रवृत्त होगा और इस प्रकार के खेल में कुछ सीमा तक सफल भी रहेगा। उसे स्टाक, शेयर और उद्योग में सफलता मिलेगी। महत्त्वपूर्ण वर्ष २२, २४, २९, ३४, ३८, ४१, ४९ और ५६ होंगे।

दूसरा द्रेष्काण (११°–२०°)—उसके अपने प्रयास से स्वास्थ्य सुधरेगा। जातक दोहरा व्यवसाय करेगा। वह आसानी से धन कमाएगा। जातक की लालसा हमेशा बनी रहेगी और वह कभी संतुष्ट नहीं होगा। जीवन के अन्तिम समय में उसकी स्थिति अनिश्चित हो जाएगी। महत्त्वपूर्ण वर्ष २०, २९, ३२, ४३, ४७, ५५ और ६१ होंगे।

तीसरा द्रेष्काण (२१°–३०°)—जातक आर्थिक मामले में दूरदर्शी होगा और आसानी से किसी पर विश्वास नहीं करेगा। डकैती से उसके धन की हानि होगी। वह जोखिम वाले व्यापार में सफल रहेगा। उसके जीवन में अनेक अप्रत्याशित परिवर्तन आयेंगे। उसे प्रलेख और महत्वपूर्ण कागजों पर हस्ताक्षर करने में सावधानी बरतनी चाहिए। उसे अप्रत्याशित साधनों से लाभ की आशा करनी चाहिए। वह निवेश और जन जीवन में सफल रहेगा। महत्त्वपूर्ण वर्ष २५, २७, २८, ३२, ३७, ४१, ४७, ५३ और ६० होंगे।

आर्थिक सम्भावनाओं की जाँच की नई पद्धति में धन की श्रेणी भिन्न भिन्न होती है। धन के विभिन्न भाग होते हैं और इसकी व्याख्या स्थान, समय, परिस्थिति और अन्य वातावरण को ध्यान में रखकर करनी चाहिए। साधारणतया हम तीन श्रेणियों को मान्यता देते हैं—अर्थात् कुलीन वर्गों, असीम धन वाले, मध्यम वर्ग के लोग, जिनके पास खाने के लिए बहुत कुछ होता है किन्तु उनके पास इतना नहीं होता कि जमा कर सकें और गरीब वर्ग जिनके पास केवल एक समय का भोजन होता है और जो धन के लिए काफी दबाव में रहते हैं। वास्तव में इस वर्ग के लोगों की संख्या अधिकतम है। उनके पास मकान नहीं होता, उनके पास सम्पत्ति नहीं होती, अपना अस्तित्व कायम रखने का कोई साधन नहीं होता। तत्पश्चात कुछ ऐसे लोग होते हैं जिनकी आय निस्सन्देह अच्छी होती है किन्तु अपने द्वारा या अपने पूर्वजों द्वारा लिए गए कर्जों का बोझ असहनीय होता है और जो आत्म सम्मान की गलत धारणा, सामाजिक स्थिति और पारिवारिक परम्परा के कारण साधारण जीवन नहीं बिता सकते हैं। मध्यम श्रेणी के लोग भी जिनके पास खाने के लिए तो बहुत कुछ होता है, विवाह और अन्य पारिवारिक समारोहों का अतिरिक्त खर्च पूरा करने में असमर्थ होते हैं। जो ग्रह वित्तीय प्रचुरता और दबाव के इन सभी विभिन्न चरणों का फल देते हैं उनके योगों का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति का इस विषय में उत्तम ज्ञान ही आवश्यक नहीं है बल्कि इसके लिए काफी अनुभव भी आवश्यक है। एक प्राचीन ज्योतिष की पुस्तक से लिए गए निम्नलिखित नियम की ज्योतिष के विद्यार्थी जांच करें।

सात ग्रहों की निम्नलिखित कला या संख्या दी गई है—

सूर्य	३० कला	वृहस्पति	१० कला
चन्द्रमा	१६ कला	शुक्र	१२ कला
मंगल	६ कला	शनि	१ कला
बुध	८ कला		

लग्न और चन्द्रमा से नवमेश को लीजिए और उसमें इन ग्रहों की कला जोड़ दें। योग में १२ से भाग दें। चन्द्रलग्न (चन्द्रलग्न की स्थिति) से शेष की गिनती

करने पर विशेष चन्द्र लग्न आयेगा जिसे सुविधा के लिए हम धन लग्न कहते हैं, यदि योग कारक की संख्या धन लग्न में है तो वह व्यक्ति प्रचुर धन अर्जित करेगा। केवल एक योग कारक हो जिस पर अन्य कारक या कारक की दृष्टि न हों, तब भी जातक बहुत धनी होगा। यदि धन लग्न में अनिष्ट कारक ग्रह हों जैसे सूर्य, शनि या मंगल हो तो जातक के पास साधारण धन होगा। यदि मारक ग्रह उच्च के हों तो आरम्भ में साधारण धन होगा किन्तु बाद में पर्याप्त धन होगा। यदि विशेष धन लग्न में कारक ग्रह और मारक ग्रह दोनों ही हों तब भी उस व्यक्ति के पास काफी धन होगा। यही नियम दृष्टि के मामले में भी लागू होता है। इस विशेष धन लग्न में स्थित ग्रह या इस पर दृष्टि डालने वाले ग्रह या यहाँ से कोण या मूल त्रिकोण में स्थित ग्रह भी अपनी दशा और भुक्ति में धन देते हैं जबकि यदि ये विशेष धन लग्न से ३, ६, ८, और १२वें भाव में स्थित हों तो ये धन का नाश करते हैं, अनावश्यक व्यय कराते हैं और हानि होती है।

कुण्डली सं० ४९—जन्म तारीख ८–८–१९१२, समय ७.३५ बजे सन्ध्या (आई एम टी).१ अक्षांस १३° ४′ उत्तर, देशान्तर ५ घं० १० मि० २० से०)

राशि

नवांश
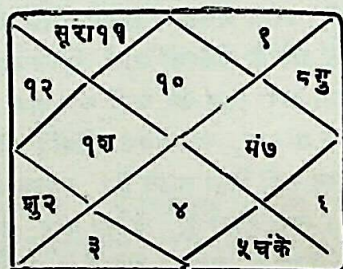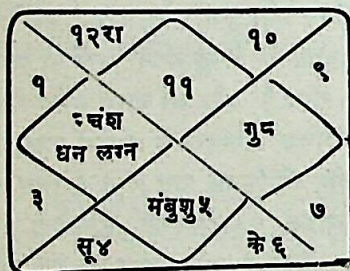
मंगल की दशा शेष ५–८–२६ वर्ष

कुण्डली सं० ४९ में लग्न से नवमेश शुक्र है और उसकी कला १२ है। चन्द्रमा से नवमेश शनि है और उसकी कला एक है। दोनों का योग १३ हुआ। इसमें १२ का भाग करने से शेष १ बचा। वृषभ (जहाँ जन्म चन्द्र है) से एक की गिनती करने पर विशेष धन लग्न वृषभ आता है। यहाँ पर दो ग्रह हैं—दोनों ही अनिष्ट कारक हैं और उन पर बृहस्पति की दृष्टि है। चन्द्रमा उच्च का है। जातक बृहस्पति की दशा में काफी धन अर्जित करेगा क्योंकि वह विशेष धन लग्न पर दृष्टि डाल रहा है। चूंकि शनि पूरा ही मारक ग्रह है अतः वह अपनी दशा में बेहतर आर्थिक सम्पन्नता देगा। बृहस्पति या शनि की दशा तथा चन्द्रमा की भुक्ति में भी आर्थिक दृष्टि से स्थिति अनुकूल रहेगी। विशेष धन लग्न से बृहस्पति अष्टमेश और एकादशेश होने के कारण अच्छा फल देने के लिए उसकी शक्ति सीमित है।

कुण्डली सं० ५०—जन्म तारीख १५-४-१८८३, समय १.३० बजे संध्या (स्था० स०) अक्षांस ३०° उत्तर, देशा० ७०° पूर्व)

राशि

नवांश
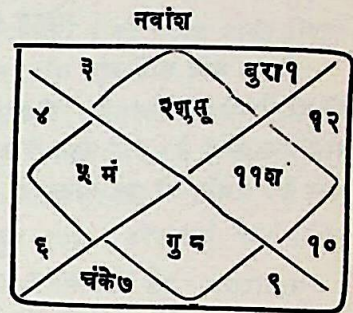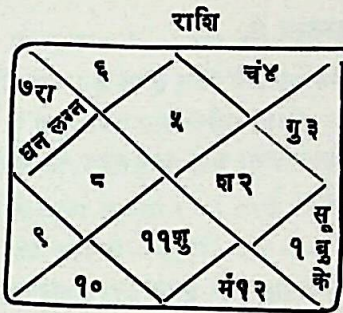
शनि की दशा शेष ६-७-२४ वर्ष

कुण्डली सं० ५० में लग्न से नवमेश मंगल है। उसकी कला ६ है। चन्द्रमा से नवमेश वृहस्पति है और उसकी कला १० है। दोनों का योग १६ आया। इसमें १२ का भाग करने पर शेष ४ बचा जिसे कर्क से गिनती करने पर विशेष धन लग्न तुला आया। दुर्भाग्यवश तुला में राहु है और उस पर सूर्य, बुध और केतु की दृष्टि है। बुध दबा हुआ है और उसका बल समाप्त हो चुका है। वहाँ पर केतु स्थित होने के कारण ये ग्रह निर्बल हो गए हैं। विशेष धन लग्न में उत्तेजक ग्रह का स्थित होना वांछित नहीं है। यह कुण्डली एक ऐसे व्यक्ति की है जो कभी कुलीन थे किन्तु अब गरीब, ऋणी और मानसिक उत्पीड़न में हैं।

कुण्डली सं० ५१—जन्मतारीख ७-८-१८८७, समय १.३० बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांस ११° उत्तर, देशा० ५ घं० ८ मि० पूर्व)

राशि

नवांश
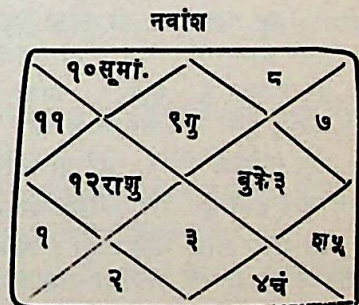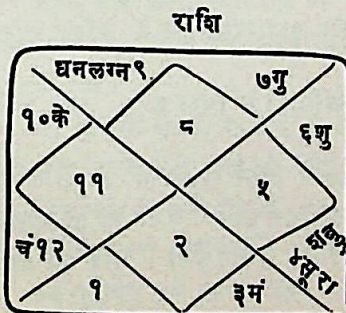
वृहस्पति की दशा शेष ०-२-१२ वर्ष

कुण्डली सं० ५१ में लग्न से नवमेश चन्द्रमा है और चन्द्र लग्न से नवमेश मंगल है। उनकी कला का योग २२ है। इसमें १२ का भाग करने पर शेष १० बचता है जिसे मीन से गिनती करने पर विशेष धन लग्न धनु आया। धन लग्न पर

मारक मंगल की दृष्टि है। जातक के पास लाखों रुपये हो सकते हैं। धन लग्न से दशम भाव में शुक्र (नवांश में उच्च का) ने अपनी दशा में जातक को प्रचुर धन दिया।

तीसरे भाव के सम्बन्ध में

तीसरा भाव भाई बहन और सामान्य सम्बन्धियों के लिए होता है। यह साहस को भी नियन्त्रित करता है। तीसरा भाव गला, कान और पिता की मृत्यु से भी सम्बन्धित होता है। भाई बहन के सम्बन्ध में सामान्यतः छोटे भाई बहन का द्योतक होता है। अर्थात् जो उस जातक के बाद पैदा होता है।

मुख्य बातें

साधारणतः इस भाव के विश्लेषण में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए। (क) भाव का बल (ख) कारक (ग) स्वामी और वहाँ स्थित ग्रह। तीसरे भाव में संकेतों का सही मूल्यांकन इन बातों की सावधानी पूर्वक जाँच पर निर्भर करता है।

तृतीयेश के विभिन्न भावों में स्थित होने पर क्या फल होता है—

प्रथम भाव में—अपनी मेहनत से जीविका अर्जित करता है, प्रतिशोधी होता है, दुबला और लम्बा शरीर, बहादुर और साहसी, हमेशा बीमार रहता है तथा दूसरों की सेवा करता है।

यदि पूर्ण बली हो तो वह निपुण नर्तक, संगीतज्ञ और अभिनेता होगा और जीविका का मुख्य साधन ललित कला होगा। अभिनेता के रूप में वह अच्छा नाम करेगा।

दूसरे भाव में— यह एक अनुकूल स्थिति है क्योंकि यदि कोई और अनुकूल योग न हों तो यह जातक को चरित्रहीन बनाता है। वह स्त्रियों और दूसरों पर धन खर्च करेगा। वह नीच काम को पसन्द करता है और सामान्यतः सुख से वंचित रहता है। उसके छोटे भाई का नाश हो सकता है।

तीसरे भाव में—बहादुर, मित्रों और सम्बन्धियों से घिरा हुआ, उत्तम बच्चे होंगे, धनी, सुखी तथा सन्तुष्ट होगा।

यदि तृतीयेश तीसरे, छठे या ग्यारहवें भाव में उत्तम स्थिति में हो तो उसके अनेक भाई होते हैं। यदि तृतीयेश मंगल हो और तीसरे भाव में स्थित हो तो जातक का कोई छोटा भाई नहीं होगा। शनि भी ऐसा ही प्रभाव देगा। यदि सूर्य ऐसी स्थिति में हो तो बड़े भाई का नाश करता है।

चतुर्थ भाव में—यदि तृतीयेश चौथे भाव में हो तो जीवन सुखी रहेगा। वह अमीर और विद्वान बनेगा किन्तु पत्नी कठोर हृदय की और नीच होगी।

यदि तृतीयेश चौथे भाव में बली हो और लग्नेश तथा नवमेश कमजोर हों तो उसका भाई उसे जिन्दा रखेगा। यदि नवमेश बली हो तो उसका सौतेला भाई

होगा। जब मंगल कमजोर हो तो वह अपनी जमीन खो देगा और उसे दूसरों के घर में रहना पड़ेगा। यदि तीसरा भाव अनुकूल स्थिति में हो तो बुरे फल नहीं होंगे।

पंचम भाव में—बच्चों से अधिक सुख नहीं मिलेगा। जीवन में धन काफी होगा पारिवारिक जीवन में मतभेद चलता रहेगा।

यदि तृतीयेश पाँचवें भाव में हो और अच्छी स्थिति में हो तो जातक को अपने भाई से काफी लाभ होगा। वह बड़े पैमाने पर कृषि करेगा या अमीर परिवार द्वारा गोद ले लिया जाएगा। वह सरकारी सेवा में भी उन्नति करेगा।

छठे भाव में—भाईयों और सम्बन्धियों से घृणा करता है और उनसे कष्ट पाता है। अमीर होगा। मामा के परिवार पीड़ित होते हैं। घूस लेता है।

जब तृयीयेश छठे भाव में अच्छी स्थिति में हो तो छोटा भाई सेना में जाता है। एक भाई डाक्टर बनता है। यदि षष्ठेश और तृतीयेश दोनों एक साथ हों तो जातक खिलाड़ी, या पायलेट बनता है। जब षष्ठेश और तृतीयेश दोनों ही बुरे प्रभाव में हों तो वह रोग ग्रस्त होगा तथा शत्रुओं द्वारा सताया जायेगा और वह स्वयं भी धोखेबाज होगा।

सप्तम भाव में—शासकों या अधिकारियों की अप्रसन्नता मिल सकती है, जीवन में अनेक परिवर्तन आएंगे। बचपन में काफी कष्ट होगा। यात्रा में दुर्घटना हो सकती है।

जब तृतीयेश सप्तम भाव में प्रबल हो तो भाइयों के बीच सद्भाव रहता है। यदि सप्तमेश लग्न में हो तो एक भाई विदेश में रहेगा और वह जातक की मदद करेगा।

आठवें भाव में—हत्याकाण्ड या गलत अभियोग में फँसेगा। मृत्यु या वसीयत के कारण कष्ट, विवाह दुर्भाग्यपूर्ण, जीविका सुचारु रूप से नहीं चलेगी, दुर्भाग्य का शिकार होगा।

जब तृतीयेश आठवें भाव में हो तो वह गम्भीर और खतरनाक रोग से पीड़ित होगा और उसके छोटे भाई की मृत्यु हो जाएगी।

नवम भाव में—विवाह के बाद भाग्यशाली होगा। पिता अविश्वासी होगा। लम्बी यात्रा करेगा। जीवन में अचानक और अप्रत्याशित परिवर्तन आएगा।

जब तृतीयेश ९वें भाव में हो और अनुकूल स्थिति में हो तो जातक के भाई को पैत्रिक सम्पत्ति मिलेगी। जातक को स्वयं भी भाई से लाभ होगा। यदि पीड़ित हो तो उस व्यक्ति का अपने पिता के साथ मतभेद रहेगा।

दशम भाव में—पत्नी झगड़ालू चोर अविश्वासी होगी। जातक अमीर होगा। वह सुखी और तीव्र बुद्धि वाला होगा। व्यावसायिक यात्रा से लाभ होगा।

जब तृतीयेश दशम भाव में हो तो सभी भाई उन्नति करेंगे। और वे सभी प्रकार से उसकी सहायता करेंगे।

ग्यारहवें भाव में—यह एक बहुत उत्तन योग नहीं है। प्रयास से आय होगी। वह प्रतिशोधी होता है। शरीर अनाकर्षक होगा। दूसरों की सेवा करने वाला और दूसरों पर आश्रित होगा। वह रोग से यदाकदा पीड़ित रहेगा।

बारहवें भाव में—सम्बन्धियों से दुःख, विवाह के बाद भाग्यशाली, एकांत वास पसन्द करेगा। जीवन में अनेक उतार चढ़ाव आयेंगे। पिता चरित्रहीन होगा।

जब तृतीयेश बारहवें भाव में हो तो सबसे छोटा भाई निरंकुश होगा। जातक अपने ही कारण गरीब होगा।

अलग अलग व्यक्तियों के अनुसार ये फल होंगे। यद्यपि तीसरा भाव आवश्यक रूप से भाइयों के लिए है, तृतीयेश विभिन्न भावों में अलग अलग फल देता है जिनमें से कुछ ही तीसरे भाव से सम्बन्धित होते हैं। ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए इन सिद्धान्तों के महत्त्व को समझना आसान नहीं है। वे भविष्यवाणी करते समय गलती कर जाते हैं और इस विज्ञान को अपमानित और कलंकित करते हैं।

जब ततीयेश कारक नक्षत्र और नवांश में होता है और उस पर कारक ग्रहों की दृष्टि होती है तथा मंगल भी उत्तम स्थिति में होता है तो वह व्यक्ति चरित्रवान और दृढ़ विश्वासी, बहादुर और ईमानदार होता है। यदि तृतीयेश लग्न या लग्नाधिपति से मूल त्रिकोण में हो तो उसका भाई होता है।

सामान्य योग

यदि तृतीयेश और भाई का कारक (मंगल) ६,८ और ११वें भाव में न हों और उनपर कारक ग्रहों की दृष्टि या युक्ति हो या अन्यथा उत्तम स्थिति में हों तो जातक के भाई दीर्घजीवी और सम्पन्न होंगे। यदि अच्छे ग्रह तीसरे भाव में हों या दृष्टि डाल रहे हों तो उसके अनेक भाई होंगे। यदि मंगल और तीसरे भाव की स्थिति कुण्डली में उत्तम हो तो भी इसी प्रकार के फल की आशा की जाती है। यदि तृतीयेश या मंगल उच्च के हों, अपनी राशि या नवांश या योगकारक नवांश में हों तो भाइयों की संख्या में वृद्धि की आशा की जा सकती है।

यदि तृतीयेश एक अनिष्टकारी ग्रह हो, यदि तीसरे भाव में मारक ग्रह हों तो जातक के बहुत कम भाई होंगे। यदि कारक या भाई के कारक (मंगल) या तृतीयेश नीच के हों, दबाव में हों या शत्रु ग्रह के साथ हों तो तीसरे भाव के विनाश की भविष्यवाणी की जा सकती है।

यदि मंगल और तृतीयेश विषम राशि में हों, उनपर पुलिंग ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक का भाई होगा। यदि मंगल और तीसरा भाव सम राशि में हो और

उनपर स्त्री ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक की बहनें होंगी। तीसरे भाव के कमजोर होने पर भी जातक के भाई होंगे यदि इसके साथ मंगल या वृहस्पति की युक्ति हो।

यदि वृहस्पति ११वें भाव में हो तो जातक अपने बड़े भाई के कारण चिन्ता-ग्रस्त रहता है। बड़े भाई, उसकी आर्थिक सम्पन्नता और उसकी विपरीत स्थिति की जांच ११वें भाव से की जाती है।

भाइयों की संख्या का निर्णय तृतीयेश, मंगल या तीसरे भाव में स्थित ग्रहों से जो भी बली हों, के नवांश के आधार पर किया जाता है। कालिदास ने अपने उत्तर-कालामृत में कहा है कि ग्यारहवें भाव के नवांश की संख्या बड़े भाइयों की संख्या होगी। अभी पार करने वाले नवांश की संख्या (तीसरे भाव की) से छोटे भाइयों का संकेत मिलता है।

क्या कोई व्यक्ति डरपोक या साहसी होगा, इसका भी उत्तर तीसरे भाव से मिल सकता हैं। यदि तृतीयेश नीच का हो और मारक के साथ युक्ति हो तो वह व्यक्ति अकुशल और डरपोक होगा। यदि तृतीयेश सूर्य के साथ हो तो वह व्यक्ति उतावला और क्रोधी होगा। यदि चन्द्रमा के साथ हो तो वह मानसिक रूप से साहसी होगा। यदि मगल के साथ हो तो शक्तिशाली और बहादुर, यदि बुध के साथ हो तो सावधान और शूरवीर, यदि वृहस्पति के साथ हो तो दुष्ट विचार का और शक्तिवान होगा। यदि शुक्र के साथ हो तो वह व्यक्ति कामी होता है और स्त्रियों के साथ अपने सम्बन्ध के कारण झगड़ा करता है। यदि शनि के साथ हो तो आलसी और जड़बुद्धि होता है, यदि राहु या केतु के साथ हो तो वह व्यक्ति बाहर से साहसी दिखता है किन्तु उसका हृदय डरपोक और मस्तिष्क कमजोर होता है।

यदि तृतीयेश राहु के साथ हो या जिस भाव में राहु है उसके स्वामी के साथ हो तो उस व्यक्ति को साँप जैसे जन्तुओं से भय रहेगा। तृतीयेश के साथ बुध की युक्ति से गले का रोग होता है। साधारणतः तीसरे भाव में बुरे ग्रह गले का रोग देते हैं। तीसरे भाव में—विशेषकर द्वादशांश में बुरे ग्रह की विद्यमानता से कान की खराबी या बहरेपन की भविष्यवाणी करनी चाहिए।

तीसरे भाव में ग्रह

सूर्य—जातक को साहसी बनाता है। मस्तिष्क साधन सम्पन्न, चंचल और सफल होता है। यदि यह पीड़ित हो तो भाई के लिए खराब है। स्वाध्याय से कुनाम। तीसरे भाव में सूर्य की स्थिति जन्म कुण्डली में एक उत्तम बल होता है।

चन्द्रमा—सामान्यतः व्यवसाय में परिवर्तन, यात्रा का शौकीन और चंचल मस्तिष्क का द्योतक होता है। पत्नी साफ होगी। जातक का ज्ञान उत्तम होता है। बच्चों से अधिक प्यार करता है। यदि चन्द्रमा जीर्ण हो तो वह व्यक्ति कठोर,

चिन्ता ग्रस्त, नास्तिक नौर चरित्रहीन होता है। यदि चन्द्रमा पीड़ित हो तो दिमाग की शान्ति के लिए अनुकूल स्थिति होती है।

मंगल—यह स्थिति भाई बहन के लिए खराब होती है। यात्रा में खतरा या दुर्घटना हो सकती है। परिवार में मतभेद के कारण चिन्ता रहेगी। लापरवाह, अग्रदूत और असैद्धान्तिक होगा। यदि यह भाव अधिक पीड़ित हो तो यह आत्महत्या कर सकता है या वह खूनी प्रवृत्ति का होगा। यदि तीसरे भाव में मकर, मेष या वृश्चिक हो तो बुरे फल कम हो सकते हैं।

बुध—वह दूसरों के लिए अच्छा काम करेगा किन्तु वह स्वयं खुश नहीं रहेगा। तेज बुद्धि वाला होगा। लिखने पढ़ने का शौकीन होगा; जब वह कोई काम आरम्भ कर देता है तो उसे समाप्त करके ही दम लेता है। और कभी हिम्मत नहीं हारता। वह व्यवहार कुशल तथा राजनयिक होता है। उसकी दोस्ती व्यापारी और मर्चेन्ट के साथ होती है। वह साधारणतः व्यापार और सट्टा में सफल होता है। उसके कई भाई बहन होते हैं। उसका अपना स्वतन्त्र विचार होता है। मित्र और सम्बन्धी उसे बहुत चाहते हैं। यदि बुध पीड़ित हो तो जातक की उत्तेजना बढ़ जाती है। तीसरे भाव के कार्य से धन लाभ होता है।

वृहस्पति—यह भी एक उत्तम स्थिति है दिमाग आस्तिक और दार्शनिक होता है। उसके कई अच्छे भाई होंगे। वह कंजूस होता है और परिवार तथा बच्चों को प्यार नहीं करता। शरीर गर्म हो जाता है और वह बीमार रहता है। उसके अधिक मित्र नहीं होते हैं। वह अवसर से लाभ नहीं उठाता। वह स्वयं को परम्परा में ढाल लेता है।

शुक्र—मानसिक स्थिति उत्तम होती है किन्तु स्वास्थ्य खराब रहेगा। उसमें जीवन शक्ति का अभाव होता है। उसे गाना, संगीत, नृत्य और कला में आनन्द आता है। आर्थिक क्रम से वह अधिक सफल नहीं होगा। यदि शुक्र पीड़ित हो तो वह व्यक्ति चिन्तित, नीच, गरीब और अत्यधिक कामुक होता है। वह भीरु और झूठी निन्दा में रुचि लेने लगता है। भाई अच्छे होंगे। बच्चों से अधिक सुख की प्राप्ति नहीं होगी।

शनि—बहादुर और साहसी, धनी, भाइयों का नाश, सनकी और कठोर होगा। भाइयों से चिन्ता, शासकों से सम्मान, स्थानीय बोर्ड का प्रधान या अध्यक्ष बन सकता है। वह अनेक लोगों की रक्षा करेगा। इस योग की यह विशिष्टता है कि उसे असफलता के बाद ही सफलता मिलती है। मस्तिष्क शोक, चिन्ता आदि में प्रवृत्त रहता है। आयु के साथ-साथ मानसिक स्थिति में सुधार होता है। यदि पीड़ित हो तो मानसिक उत्पीड़न में निराशा की संभावना अधिक रहती है।

राहु—बाहर से देखने में बहादुर। अचानक और अप्रत्याशित समाचार। यह

योग साधारणतः भाई के लिए ठीक नहीं है। उसे अनेक विचारों के कारण आलोचना का सामना करना पड़ता है।

केतु—बली और दुस्साहसी किन्तु भीरु। मतिभ्रम के कारण दिमाग परेशान रहता है।

ऊपर बताए संकेत कब फलित होंगे—

प्रथम और द्वितीय भावों के संबंध में दशा और भुक्ति के फल का निर्णय करने के लिए दिए गए सामान्य सिद्धान्त तीसरे भाव के संबंध में भी लागू होंगे। पहले भाव को लें, फिर उस भाव के स्वामी को और अन्त में कारक ग्रह को। स्वामी या कारक ग्रह के साथ युक्ति या दृष्टि देने वाले ग्रह उनकी विशेषता भी दर्शाते हैं। तीसरे भाव में स्थित ग्रह और उस पर दृष्टि डालने वाले ग्रह भी उतने ही महत्त्व पूर्ण हैं। इस प्रकार (क) तृतीयेश (ख) तृतीयेश के साथ युक्ति या दृष्टि देने वाले ग्रह (ग) तीसरे भाव से स्थित या उन पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (घ) कारक और उसके साथ युक्ति या दृष्टि डालने वाले ग्रह दशानाथ या भुक्तिनाथ के रूप में तीसरे भाव को प्रभावित करते हैं।

परिणाम स्वरूप ऊपर लिखित किसी भी प्रकार से तीसरे भाव से संबंध रखने वाले ग्रह की दशा में तीसरे भाव पर प्रभाव डालने में सक्षम ग्रहों की युक्ति में तीसरे भाव से संबंधित उचित फल देंगे। किसी दशा काल में तीसरे भाव से संबंधित उस ग्रह की युक्ति जिसका स्वामी तीसरे भाव से संबंधित न हो, में तीसरे भाव का फल सीमित होता है। परिणाम-स्वरूप तीसरे भाव से जो ग्रह संबंधित नहीं हैं उनकी भुक्ति और जिसके स्वामी तीसरे भाव से संबंधित हैं उनकी दशा में तीसरे भाव से संबधित फल सीमित होता है। तीसरे, नवें, ग्यारहवें और सातवें भाव के स्वामियों की दशा (या भुक्ति) में भाई के जन्म की भविष्यवाणी करें, भाई का जन्म तीसरे भाव में स्थित बली ग्रहों की दशा में हो सकता है। अन्य भावों के संबंध में निष्कर्ष का वास्तविक स्वरूप तीसरे भाव से संबंधित अन्य ग्रहों के स्वामित्व आदि पर निर्भर करेगा। यदि निम्नलिखित ग्रहों का तीसरे भाव के साथ संबंध हो तो वे अपनी दशा और भुक्ति में निम्न प्रकार से अपना फल देते हैं—

सूर्य—प्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ साक्षात्कार, पदोन्नति, आरामपसन्द और परिवार के साथ सम्बन्ध।

चन्द्रमा—जातक बहुत साहसी बन जाता है, भाई का जन्म होगा वे सम्पन्न होंगे। धन या भू-सम्पत्ति प्राप्त होगी।

मंगल—जातक स्वास्थ्य से कमजोर हो जाता है, प्रसिद्धि बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा। यदि मंगल पीड़ित हो तो भाई की मृत्यु हो सकती है।

राहु—समग्र रूप में उत्तम फल प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा किन्तु परिवार में कुछ मतभेद होगा। प्रसिद्धि आदर बढ़ेगा।

वृहस्पति—भाई बहन का जन्म होगा। जातक युद्ध समान हो जाएगा। उसे सभी प्रयासों में सफलता मिलेगी।

शनि—भाई के साथ विवाद बढ़ेगा। आर्थिक रूप से यह समय अनुकूल रहेगा। यदि नौकरी में है तो पदोन्नति होगी। बच्चों का जन्म, जवाहरात, नए कपड़ों में वृद्धि और सभी प्रकार से उत्तम रहेगा।

बुध—शुभ समारोह, ऋण से मुक्ति, शत्रुओं का दमन, दूसरों से आदर, भाईयों का विवाह और जवाहरात की खरीद।

केतु—शत्रुओं का नाश होगा, संगीत और नृत्य में प्रवीण होगा। सामान्यतः यह अवधि अनुकूल रहेगी।

शुक्र—सभी अनिश्चितताएं समाप्त हो जाएंगी। वह संगीत में रुचि लेगा और जीवन सुखी होगा।

उपरोक्त से यह देखने में आएगा कि तृतीय भाव में स्थित ग्रह साधरणतः उत्तम फल देते हैं। फिर भी यह स्पष्ट है कि तीसरे भाव में इस प्रकार की स्थिति किसी अन्य मारक प्रभाव रहित है।

साधारणतः तृतीयेश की दशा में निम्नलिखित फल की आशा की जाती है किन्तु अन्य स्वामित्व, युक्ति, दृष्टि आदि के कारण इसमें संशोधन करना पड़ता है।

यदि तृतीयेश तीसरे भाव में हो तो छोटा भाई (बहन) का जन्म होता है। जो भाई हैं उनकी सम्पन्नता बढ़ती है, बड़ा भाई उसकी शादी कराएगा।

जब तृतीयेश चतुर्थेश के साथ चौथे भाव में पड़ा हो तो भाइयों की उन्नति होगी। जातक किसी राजनैतिक या वैज्ञानिक संस्थान का प्रधान होगा। और वह नई गाड़ी खरीदेगा। यदि विद्यार्थी है तो वह परीक्षा में पास करेगा। जब चतुर्थेश कमजोर हो तो माँ पीड़ित होगी, धन की हानि होगी, फसल का विनाश होगा (यदि जातक एक किसान है)। यदि तृतीयेश कमजोर हो तो भाई के कारण अप्रसन्नता और हानि होगी। परिवार टूट जाएगा और अलग हो जाएंगे जातक की गाड़ी से गिरने के कारण दुर्घटना होगी। यदि नवांश में तृतीयेश चतुर्थेश ६, ८, या १२ वें भाव में हो तो या तो तृतीयेश की भुक्ति में अथवा चतुर्थेश की भुक्ति में (तृतीयेश की दशा के भीतर) भाई की मृत्यु होगी, उस व्यक्ति की गाड़ी नहीं रहेगी और बहुत ही दुःखी होगा।

जब तृतीयेश पंचमेश के साथ पंचम भाव में पूर्ण बली हो तो जातक मंत्री बनता है यदि अन्य राज योग भी उस समय काम कर रहे हों। अन्यथा उसके भाई को प्रशासनिक पद मिलेगा। अथवा जातक को भाग्य की प्राप्ति ईश्वरीय शक्ति से

होगी। यदि तृतीयेश कमजोर हो तो जातक आश्रित या नौकर के रूप में रहता है। यदि जातक संगीतज्ञ है तो शासकों की कृपा से भाग्य में पर्याप्त वृद्धि होगी। उसकी आशाएँ पूरी नहीं होंगी यदि तृतीयेश उतने अंश पर हो जो पंचमेश के नवांश से ६, ८, या १२ वें भाव में पड़ते हों।

यदि तृतीयेश षष्ठेश के साथ छठे भाव में हो तो जातक का भाई उसका कट्टर दुश्मन होगा। अथवा दोनों ही सख्त बीमार होंगे। यदि इस योग में कारक ग्रह शामिल हों तो जातक सेना में भर्ती होता है। उसे अपने मामा या नाना से धन की प्राप्ति होगी। यदि तृतीयेश पीड़ित हो तो स्थिति पूर्ववत् बनी रहेगी। यदि तृतीयेश छठे भाव में हो और प्रभावित हो (युवित या दृष्टि हो) तो इस दशा में राजयोग का फल मिलता है। सम्पत्ति, धन और प्रसिद्धि की प्राप्ति होगी। यदि षष्ठेश अकेला ही युक्त हो या दृष्टि डाल रहा हो तो जातक कान के कष्ट से पीड़ित होगा।

यदि तृतीयेश सप्तमेश के साथ सातवें भाव में हो तो उसका भाई सुदूर देश को जाएगा। जब दोनों ही स्वामी अच्छी स्थिति में हों तो भाई विदेश की यात्रा करेगा। यदि सप्तम भाव चर राशि हो तो विदेश की यात्रा करेगा। यदि सप्तम भाव कमजोर हो तो भाई यात्रा में दुखी होगा और वहीं पर उसकी मृत्यु हो जाएगी, जिस समय उसके भाई के साथ ऐसा दुर्भाग्य होगा उस समय माता पिता के साथ जातक का संबंध सद्भावपूर्ण हो जाएगा। सप्तम भाव का सावधानी पूर्वक विश्लेषण करने के बाद इस दशा (या भुक्ति) में जातक के दूसरे विवाह की भविष्य वाणी की जा सकती है। यदि नवांश में तृतीयेश सप्तमेश से ६, ८ या १२ वें भाव में हो तो भाई की ऊपर बताई गई यात्रा नहीं होगी और न ही भाई पर किसी प्रकार की दूर्भाग्यपूर्ण स्थिति आएगी। जब सप्तमेश कमजोर हो तो भाई दूर देश में घूमता रहेगा और पाप का जीवन व्यतीत करेगा।

जब तृतीयेश अष्टम भाव के स्वामी के साथ अष्टम भाव में हो तो जातक कान के रोग से ग्रस्त होगा। उसके शत्रुओं की जीत होगी तथा जातक दयनीय और दुःखी हो जाएगा। भाइयों के साथ दुश्मनी होगी और एक भाई की मृत्यु हो जाएगी। तथापि यदि तृतीयेश अष्टमेश के साथ अष्टम भाव में हो और दृष्टि या युक्ति द्वारा षष्ठेश के साथ संबंध हो तो जातक को धन लाभ होगा। ऐसे ही परिणाम की आशा तब की जा सकती है यदि नवांश में तृतीयेश अष्टमाधिपति से ६, ८, १२ वें भाव में हो।

यदि तृतीयेश नवम भाव में नवमेश के साथ हो तो तृतीयेश की दशा में जातक का भाई भाग्यशाली और सम्पन्न होता है। पिता की सम्पत्ति में वृद्धि होगी और

जातक धार्मिक बन जाता है। जब नवमेश कमजोर हो तो पिता के साथ मतभेद उत्पन्न होगा। जब तृतीयेश कमजोर हो तो बुरे परिणाम कम हो जाते हैं।

जब तृतीयेश दसमाधिपति के साथ दसम भाव में हो तो जातक को उत्पीड़न और असफलता मिलती है। उसके जीवन के उद्देश्य में उलटाव आ जाता है। जब दसमाधिपति पीड़ित होता है तो वह अनैतिक बन जाता है और पाप करता है और उसका भाई अनैतिक ढंग से धन कमाता है। जब दसमाधिपति बली हो तो एक भाई को राजनैतिक क्षेत्र में ख्याति मिलती है।

जब तृतीयेश एकादश भाव में एकादशेश के साथ हो तो बड़े और छोटे दोनों भाइयों के लिए प्रबल राजयोग बनता है। यदि भाइयों की कुण्डली में खराब अवधि हो तो बुरे प्रभाव हल्के पड़ जाते हैं। भाई अपने जन्म नक्षत्र से सम्बन्धित व्यापार आरम्भ कर सकते हैं। जब तृतीयेश कमजोर हो तो बड़े भाई की सम्पन्नता बढ़ती है और छोटा भाई दुर्भाग्य में फंस जाता है।

जब तृतीयेश कमजोर हो और १२ वें अधिपति के साथ बारहवें भाव में हों तो जातक के बाद वाले भाई की मृत्यु हो जाती है। उसके सामने कई दुर्भाग्य पूर्ण स्थितियाँ आती हैं, शत्रुओं से भय होगा और अपनी सारी जवाहरात को बेच देता है। या बंधक रख देता है। मानसिक उत्पीड़न भी होता है। यदि १२ वें भाव में चर राशि हो तो भाई की मृत्यु विदेश में होती है। यदि तृतीयेश लग्न में लग्नेश के साथ हो तो सम्पन्नता में वृद्धि होती है। वह संगीत में प्रवीण होता है, आत्म-विश्वासी तथा शत्रुओं का दमन करने वाला होता है। जब लग्न स्त्री राशि हो तो जातक बुरे आचरण वाली स्त्रियों का साथ करता है और उनके माध्यम से धन कमाता है। जब लग्नाधिपति कमजोर हो या किसी प्रकार से पीड़ित हो तो उस व्यक्ति का आचरण लोगों की नजर में कलंकित होता है। जब तृतीयेश दूसरे भाव में द्वितीयेश के साथ हो तो जातक के भाई की मृत्यु होगी। मां शारीरिक और मानसिक रूप से पीड़ित होगी। यदि द्वितीयेश और तृतीयेश दोनों ही बली हों तो भाइयों की सम्पन्नता की भविष्यवाणी करनी चाहिए।

दशा या भुक्ति के फल की भविष्यवाणी करते समय किसी विशेष भाव से सम्बन्धित सभी प्रभावों पर विचार कर लेना चाहिए। एक अधिपति केवल अपने भाव के सम्बन्ध में फल देने में ही सक्षम नहीं है बल्कि उस भाव पर दृष्टि या युक्ति करने वाले ग्रहों के कारक स्वभाव के कारण भी फल देता है।

कुंडली सं० ५२—जन्म तारीख १२–२–१८५६, समय १२-२१ बजे संध्या (स्था० स०) (अक्षांश १८° उत्तर, देशा० ८४ पूर्व)

राशि

नवांश

शुक्र की दशा शेष ७–६–२७ वर्ष

तीसरा भाव—तीसरे भाव में कर्क राशि है और इसमें न तो कोई ग्रह है और न ही इस पर किसी ग्रह की दृष्टि है। अतः यह बली है।

तृतीयेश—तृतीयेश चन्द्रमा है और यह बारहवें भाव में राहु के साथ है तथा इस पर मंगल और केतु की दृष्टि है। यह स्थिति खराब है। चन्द्रमा कारक नवांश में है।

भाई का कारक—मंगल छठे भाव में केतु के साथ है। बृहस्पति मंगल को देख रहा है। नवांश में उसकी स्थिति अच्छी नहीं है।

निष्कर्ष—इस प्रकार तृतीय भाव उत्तम है, मंगल साधारण है और तृतीयेश कमजोर है। तृतीयेश चन्द्रमा छठे नवांश में है। जातक के छः भाई थे जिनमें से तीन की पहले ही मृत्यु हो गई। यह व्यक्ति काफी साधन वाला, साहसी, कुशल राजनयिक था।

कुण्डली सं० ५३—जन्म तारीख २४–८–१८९०, समय ८-४४ बजे सन्ध्या (स्था० स०) (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० २० से० पूर्व)

राशि

नवांश

बुध की दशा शेष ५–१०–२५ वर्ष

तीसरा भाव—तीसरे भाव में वृषभ राशि है। यहाँ पर राहु है। तीसरे भाव पर चन्द्र मंगल और केतु की दृष्टि है। वहाँ पर राहु का होना अधिक शुभ नहीं है।

तृतीयेश—तृतीयेश शुक्र सप्तम भाव में उच्च के बुध के साथ है। शुक्र का नीच भंग हो रहा है। शुक्र पर वृहस्पति की नवम दृष्टि है। भाई का कारक मंगल नवम भाव में अपनी ही राशि में है।

इस प्रकार जबकि तीसरा भाव उत्तम नहीं है, तृतीयेश और मंगल उत्तम स्थिति में हैं। इसके परिणाम स्वरूप जातक के कई भाई बहन हैं। तृतीयेश शुक्र तृतीय भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों से अधिक वली है। शुक्र आठवें नवांश में है जिससे यह संकेत मिलता है कि जातक के आठ भाई बहन होंगे जिनमें से पाँच (जातक सहित) जीवित हैं। चूंकि स्त्री ग्रहों का तीसरे भाव के साथ बहुत सहयोग होता है। अतः जातक की बहनें होंगी। शुक्र आठवें नवांश (मकर से) में है। पहले और आठवें नवांश के बीच मंगल, वृहस्पति और सूर्य तीन पुरुष ग्रह पाए जाते हैं। अतः भाइयों की संख्या तीन होगी और शेष बहनें होंगी।

कुण्डली सं० ५४—जन्म समय ७-८-१८८७, समय १-३५ बजे सन्ध्या (स्था० स०) (अक्षांश ११° उत्तर, देशा० ५ घं० ८ मिनट पूर्व)
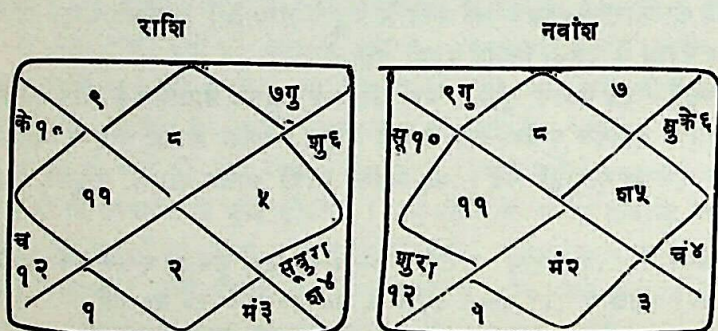
वृहस्पति की दशा शेष ०-२-१२ वर्ष

तीसरा भाव—तीसरे भाव में मकर राशि है और वहाँ पर केतु स्थित है। इस पर सूर्य, बुध, राहु, शनि और मंगल सभी मारक ग्रहों की दृष्टि है।

तृतीयेश—तीसरे भाव पर शनि की दृष्टि है और सूर्य, बुध, राहु के साथ उसकी युति है। मंगल आठवें भाव में है और उसपर वृहस्पति की दृष्टि है। तीनों में से तीसरे भाव या मंगल की अपेक्षा तृतीयेश अधिक बली है। जातक के भाई होंगे। तृतीयेश शनि दूसरे नवांश में है अतः जातक के केवल दो भाई होंगे (जातक सहित)।

कुण्डली सं० ५५—जन्म तारीख १०–९–१८८९, समय लगभग सूर्योदय काल (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० २० से० पूर्व)
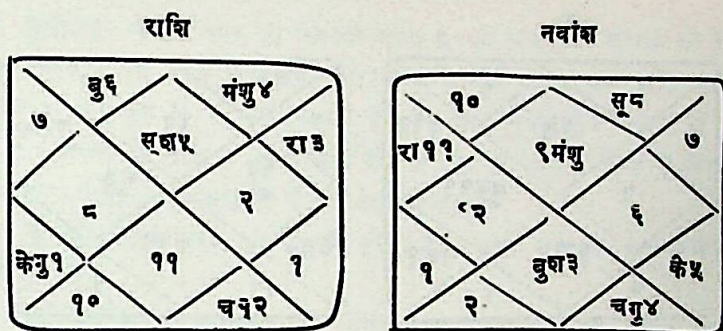
बृहस्पति की दशा शेष ३–०–६ वर्ष

तृतीयेश शुक्र मंगल के साथ १२वें भाव में है जिसकी तीसरे भाव पर दृष्टि है। मंगल और शुक्र पाप कर्तरी योग बना रहे हैं। जातक बहरा है। कुण्डली सं० ५६ में तीसरे भाव पर शनि की दृष्टि है और तृतीयेश छठे भाव में नीच का है। जातक आंशिक रूप से बहरा है।

कुण्डली सं० ५६—जन्म तारीख १–६–१८८५, समय ११-४२ बजे रात्रि (स्था० स०) (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ८५° ३५′ पूर्व)
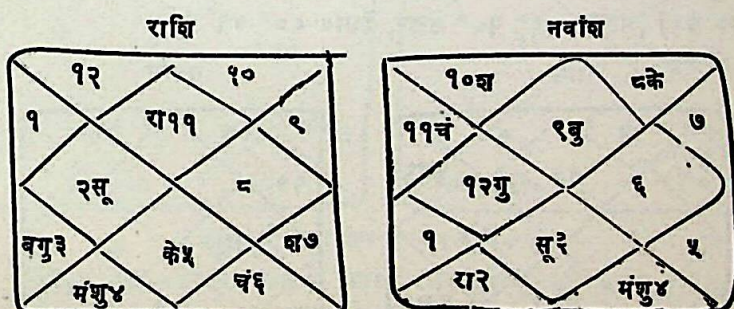
सूर्य की दशा शेष १–६–१३ वर्ष

कुण्डली सं० ५६ में तृतीय भाव पर मंगल और शुक्र की दृष्टि है जो क्रमशः १२वें और छठे भाव के स्वामी हैं। तृयीयेश चन्द्रमा पर शनि की दृष्टि है। चन्द्रमा से तीसरे भाव में केतु है। जातक आंशिक रूप से बहरा है।

कुण्डली सं० ५७—जन्म तारीख ९-३-१८६४, समय ११-२७ बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७७° ३५' पूर्व)
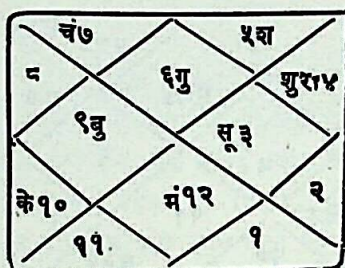
शनि की दशा शेष ७–०–२२ वर्ष

इस प्रकार यह देखने में आएगा कि विभिन्न भावों का विश्लेषण करते समय अति सावधानी रखनी होती है। आपका निष्कर्ष गलत हो सकता है। ऊपर के उदाहरणों में उनमें विद्यमान योगों की हमने जानबूझकर चर्चा नहीं की है क्योंकि मैं नहीं चाहता कि पाठक उलझन में पड़ जाएँ। ज्योतिषी की याददास्त अच्छी होनी चाहिए, उसमें विश्लेषण करने की शक्ति होनी चाहिए और उसके दिमाग में आये विभिन्न विरोधी साक्ष्यों को समझने की शक्ति होनी चाहिए, ताकि वह उपयुक्त निष्कर्ष निकाल सके।

कुण्डली सं० ५८—जन्म तारीख २८-८-१९०१, समय ४.३० बजे सन्ध्या (स्था० स०) (अक्षांश १६° १८° उत्तर, देशा० ८०° ४१' पूर्व)
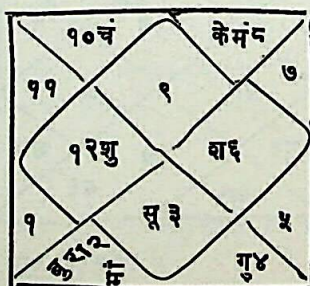
बुध की दशा शेष १२–०–२५ वर्ष

तीसरा भाव—तीसरे भाव मे मारक राशि मेष है और वहाँ पर केतु स्थित है एक उत्तेजक ग्रह है। इस पर दूसरे मारक मंगल की दृष्टि जो उस राशि का

स्वामी है और उस पर बृहस्पति की भी दृष्टि है जो अपनी राशि से कारक है। पहला खराब है और दूसरा अच्छा है।

तृतीयेश—तीसरे भाव का स्वामी मंगल है जो भाई का कारक भी है। वह नवम भाव में एक उत्तम भाव तथा कारक राशि में है किन्तु उस राशि का स्वामी मंगल का शत्रु शुक्र है जो उत्तेजक ग्रह राहु के साथ स्थित है। नवांश में वह केतु के साथ अपनी ही राशि में १२वें भाव में है। इस पर लग्न से केन्द्र में स्थित शनि की दृष्टि भी है। अतः कुण्डली में तृतीयेश क्षीण है।

कारक—मंगल भाई का कारक होता है। अतः वह भी स्वामी की तरह प्रभावित है।

बृहस्पति का एक कारक प्रभाव छोड़कर भाव तथा भाई का स्वामी बुरी तरह प्रभावित है। अतः इस भाव के संकेत पीड़ित हैं। इस कुण्डली के जातक को कोई भाई नहीं है।

कुण्डली सं० ५९—जन्म तारीख ९-७-१९२८, समय ८.५० बजे प्रातः (आइ एस टी) (अक्षांश ९° २५′ उत्तर, देशा० ७७°-४५′ पूर्व)

राशि

नवांश
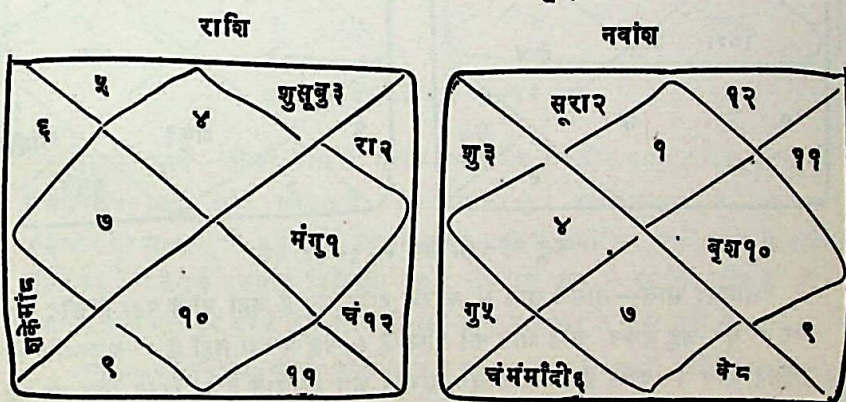
शनि की दशा शेष १२-१०-१४ वर्ष

तीसरा भाव—तीसरे भाव में कारक राशि शुक्र है और इसमें कोई ग्रह नहीं है। इस पर बृहस्पति और मंगल की दृष्टि है। इन दोनों में मंगल की दृष्टि अधिक प्रबल है क्योंकि यह ग्रह अपनी ही राशि में स्थित है। यह भाव इसलिए पीड़ित है कि मंगल एक नैसर्गिक क्रूर ग्रह है।

तृतीयेश—तृतीयेश शुक्र अपनी मित्र राशि मिथुन में है और वह कुण्डली में वर्गोत्तम में है। यह उत्तम है। किन्तु राशि में वह अपने शत्रु सूर्य के साथ है और दबा हुआ है। इससे वह कुण्डली में कमजोर है।

भाई का कारक—भाई का कारक मंगल लग्न से नवम भाव में है जो उसकी अपनी राशि है और नैसर्गिक कारक बृहस्पति के साथ है। नवांश में वह कारक है किन्तु शत्रु राशि में है और छठे भाव में चन्द्रमा और मांदी के साथ पड़ा है। कुल मिलाकर इस कुण्डली में मंगल की स्थिति ठीक है।

निष्कर्ष—यद्यपि कारक मंगल अच्छी स्थिति में है, तीसरे भाव का स्वामी दबा हुआ है अतः वह निर्बल है जिससे तीसरा भाव कमजोर हो गया। इस कारण उसका कोई भाई नहीं है।

कुण्डली सं० ६०—जन्म तारीख २१-१०-१८९५, समय ६.० बजे प्रातः (स्था० स०) अक्षांश ९°-५८′ उत्तर, देशा० ७८°-२′ पूर्व)

राशि

नवांश
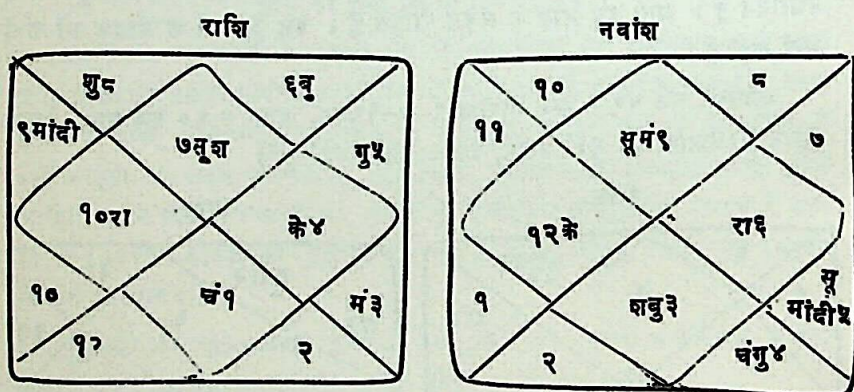
केतु की दशा शेष ०-९-१४ वर्ष

तीसरा भाव—तीसरे भाव में कारक राशि धनु है जहाँ मांदी पड़ा है और उस पर दो बुरे ग्रह मंगल और शनि की दृष्टि है। यह अच्छा नहीं है। बृहस्पति की तीसरे भाव पर दृष्टि है। इससे बुरे प्रभाव कम हो जाते हैं। किन्तु फिर भी यह भाव पूर्णतः बली नहीं है।

तृतीयेश—तृतीय भाव का स्वामी बृहस्पति है और वह कुंडली में लग्न से ११वें भाव में स्थित है और नवांश में उच्च का है। यह उत्तम स्थिति है। किन्तु भाव में बृहस्पति और केतु की युक्ति है और इस प्रकार बृहस्पति कमजोर है। फिर भी नवांश में उस पर बली मंगल की दृष्टि है। अतः तृतीयेश पूर्ण रूप से बली नहीं है।

भाई का कारक—भाई का कारक मंगल उत्तम भाव नवम में स्थित है किन्तु यह शत्रु राशि में है, यद्यपि नवांश में वह सूर्य के साथ है तथापि उसपर शनि की दृष्टि है जो खराब स्थिति है। कुंडली में उसकी स्थिति उत्तम नहीं है।

निष्कर्ष—यद्यपि कुण्डली में वृहस्पति की स्थिति उत्तम है, कारक और तृतीय भाव पीड़ित हैं, जातक का कोई भाई नहीं है।

कुण्डली सं० ६१—जन्म तारीख २९-१२-१८८०, समय १०.१० बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश २२° ३५′ देशा० ८८° २३′ पूर्व)

राशि

नवांश
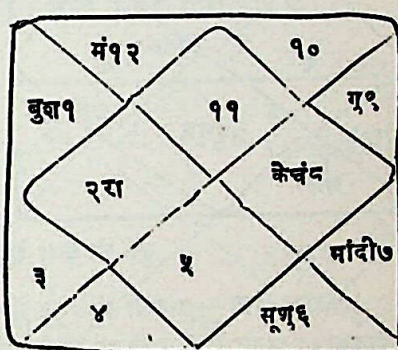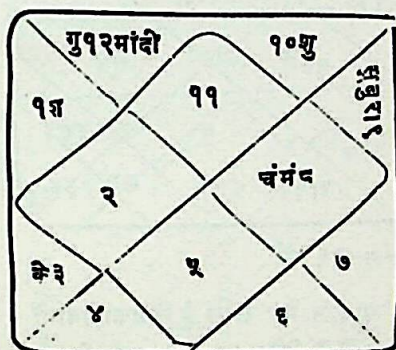
शनि की दशा शेष ४-७-१९ वर्ष

तीसरा भाव—तीसरे भाव में मारक राशि मेष है और इसमें कारक ग्रह शनि स्थित है। यद्यपि शनि लग्नेश है, वह नीच का है। इससे कुण्डली में यह भाव कमजोर हो जाता है। नवांश में बेहतर संकेत नहीं है क्योंकि तीसरे भाव में शनि नीच का है। केवल एकमात्र विशेषता यह है कि इस भाव में बुध्र की युक्ति है और उस पर वृहस्पति की दृष्टि है। फिर भी यह भाव पूर्ण रूप से बली नहीं है।

तृतीयेश—तृतीयेश कारक ग्रह मंगल है। वह केन्द्र में अपनी राशि में है किन्तु तीसरे भाव से अष्टम में षष्ठेश चन्द्रमा के साथ उसकी स्थिति उसे कमजोर कर देती है। इस ग्रह पर वृहस्पति अपनी राशि से दृष्टि डाल रहा है किन्तु यहाँ भी यह नाममात्र है क्योंकि वृहस्पति तीसरे भाव से १२वें भाव में है। इस प्रकार कुण्डली में तृतीयेश की स्थिति बहुत उत्तम नहीं है।

भाई का कारक—कारक होने के कारण मंगल भी उसी प्रकार से प्रभावित है जैसा कि तृतीयेश।

निष्कर्ष—नवांश में अन्य प्रभावों के अतिरिक्त तीसरे भाव पर पापकर्तरी योग का प्रभाव है। कारक का बल अधिक नहीं है। ये विपरीत संकेत हैं जिससे भाई नहीं होता।

कुण्डली सं० ६२—जन्म तारीख २४–८–१८८३, समय ५.४१ बजे सन्ध्या (स्था० स०) (अक्षांश १६° ४′ उत्तर, देशा० ८२° २३′ पूर्व)
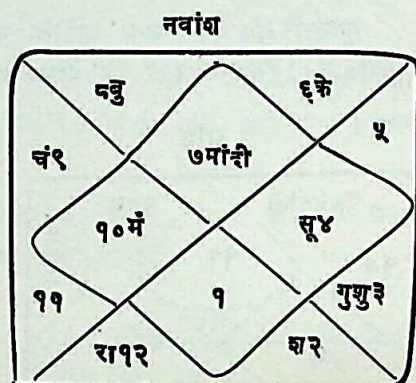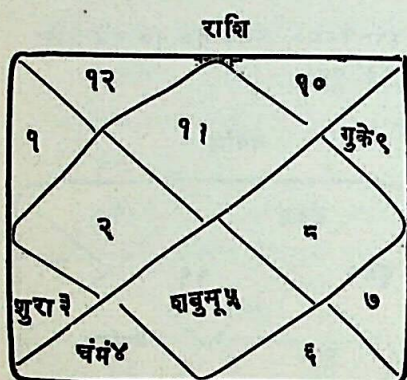
बुध की दशा शेष १६–८–२९ वर्ष

तीसरा भाव—कुण्डली सं० ६२ में तीसरे भाव में मेष राशि है जिसका स्वामी भ्रातृकारक मंगल है। यहाँ पर कोई और ग्रह नहीं है किन्तु इस पर वृहस्पति की दृष्टि है। यद्यपि वृहस्पति की दृष्टि अच्छी होती है किन्तु केतु की युक्ति के कारण वह कमजोर हो गया है।

तृतीयेश—तृतीयेश मंगल बुरे भाव में पड़ा है जहाँ वह न केवल नीच का है बल्कि षष्ठेश चन्द्रमा की युक्ति भी है। अतः तृतीयेश पर्याप्त रूप से पीड़ित है। केवल एकमात्र विशेषता यह है कि नवांश में मंगल उच्च का है, यहाँ भी उसपर सूर्य की दृष्टि है। ये सभी विपरीत संकेत देते हैं।

भाई का कारक—भ्रातृकारक मंगल तृतीयेश के रूप में काफी पीड़ित है।

निष्कर्ष—यद्यपि तीसरा भाव कुछ सीमा तक अनुकूल है, क्योंकि स्वामी और कारक मंगल बुरी तरह प्रभावित है अतः जातक का कोई भाई नहीं है।

व्यावहारिक अनुभव

जन्म कुण्डली के बारह भावों में जन्म से लेकर मृत्यु तक के मानव के समस्त क्रियाकलापों का समावेश होता है। इनमें अन्तर्ग्रस्त निर्णय मिश्रित हैं। सभी ग्रहों के प्रभावों का सावधानी पूर्वक और व्यवस्थित ढंग से अध्ययन करना तथा विभिन्न ग्रहों द्वारा अंशदत्त कारक और मारक तत्वों का पता लगाना एक ज्योतिषी के लिए बहुत ही कठिन काम है। इसके अतिरिक्त ज्योतिषी को मानव प्राणी की कुण्डली देखनी होती है जो मात्र भौतिक तत्वों का मिश्रण नहीं है। मानव स्वभाव ऐसा

भ्रान्तिजनक है कि यह शायद ही मनुष्य के सीमित मस्तिष्क द्वारा बोधगम्य होने में सक्षम हो। तथापि ज्योतिष हमें सिद्धान्त देता है जिससे हम व्यक्ति की सामान्य स्थिति और सम्पन्नता तथा उसकी जीवनयात्रा में आने वाले गत्यवरोध का अनुमान लगाने में सक्षम होते हैं। विभिन्न प्रभावों का सावधानी पूर्वक अध्ययन करने के बाद ज्योतिषी को अवश्य ही अन्तर्ज्ञान के क्षेत्र में न आने वाले प्रभावों और कारणों को समझ लेना चाहिए।

कुण्डली सं० ६३—जन्म का विवरण कुछ कारणों से नहीं दिया गया है।

राशि

नवांश
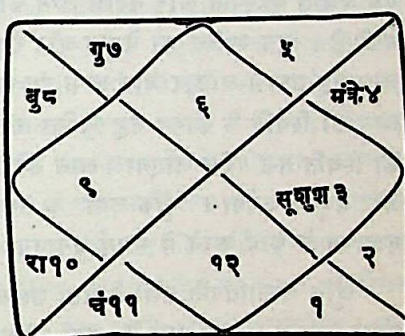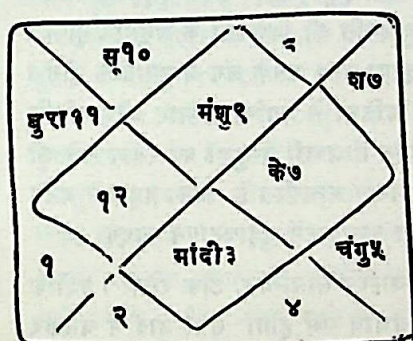
बुध की दशा शेष ५–१–१६ वर्ष

प्रथम भाव

प्रथम भाव शरीर, सामान्य स्वास्थ्य, व्यक्तित्व और आचरण से सम्बन्धित होता है। लग्न वास्तविक आधार होता है और लग्न के बलाबल पर कुण्डली का आधार निर्भर करता है। यदि लग्न बली हो भले ही अन्य मारक योग विद्यमान हों तो जातक अपने जीवन में लगभग निर्बाध रूप से चलता है। इस कुण्डली में लग्न धनु है और इसके अधिपति वृहस्पति ९-५९ रूपा का अन्तर्निहित बल है। कुल मिलाकर कुण्डली में यह सबसे प्रबल ग्रह है और चूंकि यह लग्नाधिपति भी है अतः कुण्डली का आधार मजबूत है। लग्न में मंगल और शुक्र स्थित है तथा उनपर शनि की दृष्टि है। इस प्रकार लग्न भाव के लिए वृहस्पति, मंगल, शुक्र और शनि पर विचार करना है—मुख्य ग्रह वृहस्पति है, मंगल और शुक्र गौण हैं जबकि तीसरे स्थान पर शनि है। ये चार ग्रह तथा चन्द्रमा दशानाथ या भुक्ति नाथ के रूप में प्रथम भाव के कारक हैं। नवांश लग्न कन्या है और इसका स्वामी बुध मंगल की राशि में है जिस पर कोई प्रभाव नहीं है। नवांश में भी लग्न पर किसी मारक ग्रह की दृष्टि या युक्ति नहीं है। इस प्रकार कुल मिलाकर लग्न और लग्नाधिपति बली हैं। राशि में लग्नाधिपति पर ५वें और १२वें भाव के स्वामी मंगल

और दूसरे तथा तीसरे भाव के स्वामी शनि की दृष्टि है। ये दृष्टियां हल्के धब्बे का काम करती हैं।

लग्ननवांशपतुल्यतनुः स्याद्वीर्ययुतो ग्रहतुल्यतनुर्वा।
चन्द्रसमेन नवांशपवर्णः कादिविलग्नविभक्तभगात्रः॥

इसके अनुसार जातक देखने में नवांश लग्न के स्वामी के समान होगा; या उसका चेहरा बली ग्रह के स्वभाव के अनुसार होगा। उसका रंग नवांश में चन्द्रमा जिस राशि में है उसके स्वामी के रंग जैसा होगा। इस मामले में कुण्डली में बली ग्रह अर्थात् बृहस्पति और नवांश लग्न का स्वामी (बुध) हैं। इनमें बृहस्पति अधिक बली है। इस व्यक्ति का चेहरा और रंग बृहस्पति की विशेषता के अनुसार होगा। अतः वह मध्यम आकार और साफ रंग का होगा तथा उसके अंग आनुपातिक होंगे। लग्न की स्थिति के कारण वह व्यक्ति अपनी प्रतिभा से पर्याप्त सम्मान और प्रसिद्धि की स्थिति तक पहुंच जाएगा। लग्न उसे जीवन में अच्छी वस्तुओं का स्वाद लेने की ओर प्रवृत्त करेगा। चूंकि लग्न के साथ मंगल अन्तर्ग्रस्त है अतः वह उसे बगैर रूखापन के कार्य करने में समर्थ बनाएगा तथा व्यवहारमें सुहावनापन लाएगा।

चूंकि लग्नाधिपति बली है अतः उसका स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक रहेगा। क्योंकि मंगल लग्न में शुक्र के साथ है अतः उसका स्वभाव गर्म होगा तथा बाद में चलकर जीवन में उसे बवासीर या खून से सम्बन्धित अन्य रोग होगा। मंगल की यही स्थिति उसे मानसिक और नैतिक रूप से साहसी बनाती है। मंगल के यहां होने की अन्य विशेषताएं ये हैं कि वह हंसमुख, दोस्तों का शौकीन, कामुक, अपने विचारों में ओछा और ज्ञान प्राप्त करने की बजाय उसका प्रदर्शन करने वाला होगा। इस स्थिति में शुक्र उसे हमदर्द, आरामदेह और कृतज्ञ स्वभाव का बनाता है। यद्यपि लग्न में मंगल की स्थिति अपने आप में काफी अनुकूल है, इस मामले में शारीरिक अपंगता से पीड़ित होता है। ज्योतिष सम्बन्धी अभ्युक्ति के अनुसार यदि मंगल लग्न में हो तो जातक लोहा से घायल होगा और सिर तथा आंख सम्बन्धी रोग से पीड़ित होगा। विशेष रूप से जब कि मंगल एक नेत्रकारक चन्द्रमा को देख रहा है, मंगल की स्थिति पर सावधानीपूर्वक ध्यान देना चाहिए। जातक को रक्तचाप, सिर चकराने तथा इससे सम्बन्धित रोग की सम्भावना है।

सामान्य अभ्युक्तियाँ

जन्म कुण्डली का सही मूल्यांकन करने में लग्न, सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। सूर्य अहं का कारक या द्योतक है, चन्द्रमा मस्तिष्क का कारक है और लग्न शरीर का कारक होता हैं। वास्तव में ये तीनों जीवन के त्रिपाद हैं। इस मामले में सूर्य मकर में है जो एक चर और शत्रु राशि है और जो लग्न से दूसरे

भाव में है। नवांश में वह द्विस्वभाव राशि में है तथा दो मारक ग्रहों की युक्ति है। सूर्य को अपने कुल शाद बल के रूप में ४.५८ रूपा प्राप्त है अतः वह बली है। साधारणतः सूर्य की स्थिति आवेश को चंचल बनाती है। सूर्य उसे एक चुम्बकीय व्यक्तित्व प्रदान करता है। अच्छी जीवन शक्ति होगी। उस व्यक्ति में एक विचित्र आकर्षण होता है जिससे जो भी व्यक्ति उसके सम्पर्क में आता है वह उसका आदर और सम्मान करने लगता है। वह दयालु, प्रिय और नर्म दिल का होगा। वह उदार स्वभाव का होगा क्योंकि सूर्य पर बृहस्पति की दृष्टि है। नवांश में सूर्य शनि और शुक्र के साथ है किन्तु यहाँ भी उसपर बृहस्पति की दृष्टि है। इससे उसके आध्यात्मिक जीवन में सम्पत्ति से लगाव हो जाता है। वह स्वतन्त्र होता है और दूसरों के कहने पर चलना पसन्द नहीं करता। नवांश में सूर्य की स्थिति से यह संकेत है कि आदर्श और व्यवहार के बीच विवाद होगा। इसमें सन्देह नहीं कि वह कुछ आदर्शों को ध्यान में रखकर जीवन के क्रियाकलापों की योजना बनाएगा किन्तु वातावरण के कारण वह उन्हें व्यवहार में नहीं ला सकेगा जो उसके आध्यात्मिक जीवन में उसे प्रिय है। चूंकि सूर्य पर बृहस्पति की दृष्टि है अतः आत्मा अपना अस्तित्व बनाने की कोशिश करेगी किन्तु यह आसक्ति के कवच को हिला नहीं सकेगी। फिर आयु बढ़ने के साथ-साथ वह अपने आदर्शों पर चलेगा। उसे विरासत में विश्वास मिला है। वह अपने स्नेह में ज्वलन्त और सच्चा है। राशि और नवांश दोनों में बृहस्पति की दृष्टि उसें आदर्श और वास्तविकता को एक साथ जोड़ने तथा वास्तविक को दार्शनिकता के साथ जोड़ने में समर्थ बनाती है। चूंकि मंगल और शुक्र की युक्ति है अतः उसका निजी जीवन काफी कामुक होगा। चर राशि में चन्द्रमा की स्थिति मस्तिष्क को तरंगित और अस्थिर बनाती है। चन्द्रमा के साथ बृहस्पति की युक्ति जो शनि की दृष्टि से आंशिक रूप से कलंकित है काफी महत्त्वपूर्ण है। इससे वह तटस्थ, न्यायी, न्याय संगत तथा दृढ़, सावधान और मिहनती होगा। इस योग से क्षमा करने वाला होगा। उसके मस्तिष्क में प्रतिशोध की भावना नहीं रहेगी। इस योग की अन्य विशेषता यह है कि वह अपनी स्थिति के बारे में जागृत रहता है। उच्च का शनि चन्द्रमा को देख रहा है।

अतः अपने उत्तम पद के बावजूद कभी कभी शनि उसे निराश, सन्देहात्मक और संशयी बना देता है किन्तु बृहस्पति सन्तुलन कायम रखता है। उसे वस्तुओं के बारे में व्यावहारिक धारणा रहेगी और चन्द्रमा के साथ बृहस्पति की युक्ति से वह शान्त, उत्तेजनाहीन रहेगा और दैविक वस्तुओं में ध्यान लगाएगा। पुनः नवांश में चन्द्रमा कुम्भ में है और उस पर मंगल और बृहस्पति की दृष्टि है, मंगल नीच का है। इससे वह घरेलू होगा तथा परिवार के प्रति उसका आकर्षण रहेगा। मंगल के प्रभाव से वह अधिक स्वीकारात्मक और स्वतन्त्र होगा।

यह देखने में आएगा कि सूर्य और चन्द्रमा दोनों चर राशि में हैं। यह सत्य है कि चन्द्रमा की स्थिति अच्छी है और उसकी वृहस्पति के साथ युक्ति है। किन्तु कुण्डली में उस पर मंगल, सूर्य और शनि की दृष्टि है जो सभी क्रूर ग्रह हैं। इससे वह निराशावादी है। इसका अर्थ यह नहीं है कि उसमें आत्मविश्वास का अभाव है। वास्तव में वह साहसी होगा किन्तु चन्द्रमा से दूसरे भाव में केतु के स्थित होने के कारण और लग्न से दूसरे भाव में सूर्य के स्थित होने के कारण वह कभी कभी चिड़चिड़ा हो जायेगा। पुनः चन्द्रमा की स्थिति यह बताती है कि अब बोधात्मक वस्तुओं तथा नए विचारों को अपनाने में उसका मस्तिष्क स्पष्ट और तीव्र है। धनु लग्न से मानव स्वभाव में अत्यधिक विश्वास होता है। वह निष्कपट और उदार होगा तथा परिणाम की अपेक्षा कार्य में अधिक विश्वास करेगा। धनु एक द्विस्वभाव राशि है और उसमें मंगल तथा उस पर शनि की दृष्टि से उसका स्वभाव कुछ कुछ दोहरा है। वह न्यायी है और सरों के प्रति रूखेपन के कारण उसे व्यक्तिगत चोट पहुँचती है। लग्न, सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति के परिणामों का सारांश यह है कि हमें देखना है कि वह व्यक्ति इमानदार, उदार और महात्मा, कुछ-कुछ महत्त्वाकांक्षी और बाहरी आडम्बर का शौकीन नहीं होगा। जातक संवेदनशील और प्रचलित परिस्थितियों द्वारा आसानी से प्रभावित होने वाला है। आवेग का बहुत बड़ा हाथ होता है। उसके स्वभाव में न्याय की भावना, साधना, दया और गहरा स्नेह उस क स्वभाव की विशेषताएँ हैं। कुण्डली की सामान्य स्थिति जो भी हो एक कमी यह दिखती है कि मस्तिष्क में चिन्ता रहती है। तर्क और जाँच करने की शक्ति बली होती है। प्रेरणा की प्रवृत्ति विद्यमान होती है। उसमें विचारों की स्वतन्त्रता होगी जिसपर कभी कभी गहरे विचारों का प्रभाव होता है। मानसिक और शारीरिक क्षमता में सन्तुलन होता है। वह स्वयं जागृत व्यक्तित्व वाला, आशा से पूर्ण, अधिक मिहनती है। यह देखने में आएगा कि चार ग्रह चर राशि में हैं। वह अपने विचारों को शीघ्र ही कार्य में परिणत कर देता है।

दूसरा भाव

दूसरा भाव परिवार, चेहरा, दायीं आँख, साहित्यिक क्षमता, स्व अधिग्रहण, आशावाद के लिए होता है। वास्तव में इस भाव का महत्त्वपूर्ण पक्ष धन होता है। धन सम्बन्धी निर्णय मुख्यतः दूसरे भाव से किया जाता है किन्तु धन के लिए केवल यही भाव नहीं होता। जबकि धन के लिए दूसरा भाव होता है, धन अर्जित करने का साधन दसवें भाव से आता है। और समस्त योग पर वृहस्पति और चन्द्रमा की दृष्टि है। धन कारक वृहस्पति पर दूसरे भाव के अधिपति शनि की दृष्टि है। इस प्रकार यह देखने में आएगा कि दूसरे भाव पर उच्च के वृहस्पति

और शनि तथा दशमेश और नवमेश का प्रभाव है। वृहस्पति लग्नेश भी है। इस पर यह देखने में आएगा कि २, ९, और १० वें भाव बली हैं। वास्तव में दूसरे भाव का मूल निर्धारक शनि है जबकि उपनिर्धारक वृहस्पति, सूर्य, बुध और कुछ सीमा तक चन्द्रमा है। इस मामले में धन कारक लग्नाधिपति है जो संगणना करने में एक बल है। चन्द्रमा से देखने पर द्वितीयेश सूर्य सातवें भाव में है जबकि नवमेश अर्थात वृहस्पति चन्द्र लग्न में उच्च का है। पुनः चन्द्रमा से दूसरे भाव पर बुध और राहु की दृष्टि है जबकि केतु दूसरे भाव में है। नवांश में लग्न से द्वितीयेश दशम भाव में है (द्वादशेश सूर्य के साथ) दूसरे भाव वृहस्पति की स्थिति अपने आप में एक प्रबल योग है। पुनः चन्द्रमा से द्वितीयेश वृहस्पति है जबकि दूसरे भाव पर शनि की दृष्टि है।

ये सभी स्थितियां वास्तव में धन और वित्तीय सम्पन्नता देने के लिए बली हैं। इस व्यक्ति के वित्तीय मामलों पर प्रभाव डालने के लिए शनि प्रधान है। द्वितीयेश के माध्यम से प्राप्ति की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। चूंकि द्वितीयेश ११ वें भाव में है अतः यह सहयोग से प्राप्ति दर्शाता है। इस व्यक्ति में धन प्राप्त करने और जमा करने की प्रबल इच्छा है। यह इच्छा स्वार्थी विचार से उस सीमा तक पूरी नहीं होगी किन्तु अच्छे रहन-सहन का स्तर कायम रखने और उत्तम कार्यों के लिए व्यय करने की स्थिति में रहेगा। चूंकि शनि बली है अतः परिश्रम से धन की प्राप्ति, उत्तरदायित्व, काला व्यापार या सफेद धातु भण्डारण, निवेश और खनिज का भी संकेत है। शनि श्रम के लिए प्रबल है और वह ११ वें भाव में है अतः अधिक संख्या में श्रमिकों के माध्यम से धन प्राप्ति होगी। चूंकि वृहस्पति भी उतना ही प्रबल है। अतः प्रबन्ध के माध्यम से धन की प्राप्ति होगी। न्यास और बैंकिंग की भी आशा की जा सकती है। अपने ही भाव में चन्द्र की स्थिति और दूसरे भाव पर दृष्टि फैक्ट्री और कारोबार से आय का कारक है। जहाँ काफी संख्या में श्रमिक काम करते हों। बुध भी निःसन्देह रूप से उतना ही प्रबल है क्योंकि वह नवमेश सूर्य के साथ दूसरे भाव में है। किन्तु वह कुण्डली में राहु के साथ है अतः सट्टा में अधिक सफलता नहीं है। विवेकपूर्ण निवेश द्वारा जुआ से भी कुछ धन की आशा की जाती है। द्वितीयेश की दशम भाव में स्थिति (नवांश में) अपने आप में उत्तम है। १२ वें भाव के स्वामी सूर्य की युक्ति से अचानक धन की हानि का पता लगता है। इस मामले में दूसरों द्वारा जालसाजी किए जाने के कारण भी हानि हो सकती है। बिल्कुल अप्रत्याशित साधनों से भी आय की सम्भावना है। कोयला, जहाज और इसी प्रकार की वस्तुओं में निवेश लाभप्रद सिद्ध होगा। नवांश में द्वादशेश की युक्ति से नाश, कभी कभी अति उदार प्रवृत्ति और असावधानी के

कारण हानि का विशेषकर मंगल की महादशा में संकेत मिलता है। चूंकि बुध राहु के साथ है और इसे कोई युक्त नहीं कर रहा है अतः सट्टा के कारण हानि हो सकती है।

आइए धन के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण योग की जांच करें। हमने पहले ही देखा है कि द्वितीयेश और लग्नेश दोनों ही बढ़ चढ़कर प्रबल हैं। हमने शब्द बढ़ चढ़कर का प्रयोग उसके महत्त्व पर बल देने के लिए किया है। लग्नेश और द्वितीयेश की इस स्थिति से आजीवन आर्थिक सम्पन्नता का आश्वासन मिलता हैं और वह जीवन में कभी अभाव महसूस नहीं करेगा। सप्तमेश निस्सन्देह रूप से दूसरे भाव में है किन्तु यह पत्नी से धन प्राप्ति का संकेत नहीं देता। लग्नेश का धन भाव में, द्वितीयेश का एकादश भाव में और एकादशेश का लग्न में होना एक प्रबल धन योग है। इस मामले में थोड़ा परिवर्तन के साथ यह योग लागू है। लग्नेश की दृष्टि दूसरे भाव पर है, द्वितीयेश ११ वें भाव (उच्च) में है और एकादशेश शुक्र लग्न में है। यह एक प्रबल योग है जिससे जातक की ऊँची आर्थिक स्थिति का अनुमान लगाना चाहिए।

उसका अधिकतर धन उसकी अपनी मिहनत से आएगा जो इस तथ्य से स्पष्ट है कि नवांश स्वामी जिस राशि में है उसका स्वामी ग्रह जहाँ है उसी राशि में लग्नाधिपति है जो उच्च का है या अपनी राशि में है। लग्नेश वृहस्पति तुला के नवांश में है। इसका स्वामी शुक्र धनु में है और उसका स्वामी उच्च का है और वह स्वयं ही लग्नाधिपति है। इस योग से शुक्र को भी बल मिलता है जो धन से सम्बन्धित फल देने में सक्षम हो जाता है। आरुढ़ लग्न से शुक्र ग्यारहवें भाव में है और सिद्धान्त के अनुसार यह भी धन में वृद्धि करेगा।

लाभे दैत्येन्द्रपूज्यस्य बहुद्रव्यस्य ना यकः।

इस शुक्र की मंगल के साथ युक्ति है और इससे वह अपना कुछ बल मंगल को देता है धन के लिए दूसरा महत्त्वपूर्ण योग यह है कि वृहस्पति को अवश्य ही दूसरे भाव में स्थित होना चाहिए या दूसरे भाव का स्वामी होना चाहिए या द्वितीयेश पर इसकी दृष्टि होनी चाहिए। नवांश में दूसरे भाव में वृहस्पति है और चन्द्रमा से द्वितीयेश वृहस्पति है। इससे भी वित्तीय स्थिति में काफी योगदान मिलता है।

सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण स्थिति यह है कि इस कुण्डली के दो महत्वपूर्ण ग्रह बृहस्पति और शनि की परस्पर दृष्टि परिवर्तन है। यह देखने में आएगा कि वृहस्पति शनि के नक्षत्र पुष्य में है जबकि शनि वृहस्पति के नक्षत्र विशाखा में स्थित है। प्रथम और दूसरे भाव के स्वामी ग्रहों के बीच नक्षत्र का परस्पर परिवर्तन विचित्र रूप से महत्त्वपूर्ण है और इससे यह पता लगता है कि यह व्यक्ति बिना अधिक प्रयास के धन अर्जित करेगा।

संक्षेप में हमने यह पाया कि धन भाव काफी उत्तम है ग्यारहवें भाव में शनि की स्थिति से भाग्य में स्थिर प्रवाह का पता लगता है। जहाँ तक आर्थिक सम्पन्नता का सम्बन्ध है, मंगल की दशा काफी उत्तम रहेगी।

सर्वार्थ चिन्तामणि में कहते हैं कि यदि लग्नेश अन्य सभी ग्रहों से अधिक प्रबल हो और उसके साथ बृहस्पति की युक्ति हो तो उसके पास काफी स्वअर्जित धन होगा। जातक तत्त्व के अनुसार खजाने की प्राप्ति की सम्भावना तब होती है यदि एकादशेश प्रथम भाव में हो, लग्नेश दूसरे भाव में और द्वितीयेश ग्यारहवें भाव में हो। यह योग व्यावहारिक रूप से यहाँ लागू है और इसलिए जातक को कुछ खजाने की प्राप्ति की भी आशा है।

जातक को अपनी आँखों से सावधान रहना चाहिए। इसमें सन्देह नहीं कि चन्द्रमा उच्च के बृहस्पति के साथ अपनी राशि में है और इसमें भी सन्देह नहीं है कि उसी बृहस्पति की दृष्टि सूर्य पर भी है। फिर भी इस सिद्धान्त के अनुसार कि यदि चन्द्रमा और बृहस्पति ६, ८ और १२ वें भाव में एक साथ हों तो जातक शुक्र के अधिक निस्सरण के कारण अन्धा हो जाएगा। ऐसी सम्भावना है कि उम्र बढ़ने के साथ साथ आँख की ज्योति कम हो जाएगी।

तीसरा भाव

तीसरा भाव भाई बहन, बुद्धि, चचेरे भाई और अन्य निकट सम्बन्धियों के लिए होता है।

तीसरा भाव स्थिर राशि कुम्भ है जिसमें बुध (सप्तमेश और दशमेश) तथा राहु स्थित है और उस पर किसी अन्य ग्रह की दृष्टि नहीं है। भाव के अनुसार बुध दूसरे भाव में आता है यद्यपि फल को कुण्डली की स्थिति पर भी आधारित होना है। तृतीयेश शनि ग्यारहवें भाव में उच्च का है और उस पर कोई दृष्टि नहीं है। भाई का कारक मंगल लग्न में है जिस पर भाइयों के स्वामी की दृष्टि है और बड़े भाई के भाव के स्वामी की युक्ति है।

यदि लग्नेश और धनेश भाइयों के भाव स्वामी के साथ किसी भी तरह सम्बन्धित हों तो भाइयों के बीच सम्बन्ध सद्भावपूर्ण रहता है। और एक दूसरे से लाभ होगा। दूसरे शब्दों में जातक की वित्तीय स्थिति में भाइयों के कारण सुधार होगा। चन्द्रमा से तीसरे भाव का स्वामी बुध अष्टम भाव में है जबकि नवांश में तृतीयेश मंगल है और वह लग्न से ग्यारहवें भाव में है। लग्न, भाइयों का कारक और तृतीयेश किसी न किसी प्रकार से आपस में एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। इन सभी स्थितियों से यह संकेत मिलता है कि जातक और उसके भाइयों के बीच सम्बन्ध सद्भावपूर्ण रहेगा और एक दूसरे से परस्पर लाभ होगा। उसकी अपनी

वित्तीय स्थिति में भाइयों के कारण सुधार होगा। किन्तु चन्द्रमा से तृतीयेश की स्थिति के कारण विशेषकर राहु की दशा में बुध की भुक्ति के दौरान आपस में अविश्वास और मतभेद की सम्भावना है। परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा डोरी खींचे जाने के कारण मुख्यतः मतभेद होगा। चूंकि लग्नेश उच्च का है अतः जातक उनके प्रति महान और उदार होगा परन्तु वे लोग उस पर स्वार्थी होने का आरोप लगाएंगे और उसकी उदारता से लाभ उठायेंगे। यह देखने में आएगा कि राहु तीसरे भाव में है। यह उत्तम है। इससे जातक को खराब स्थिति का सामना करने और विरोधी पर विजय पाने का साहस और उत्साह मिलता है। इससे सम्बन्धियों के साथ व्यवहार के सम्बन्ध में उसकी प्रवृत्ति में चिड़चिड़ापन और विकृति आएगी। राहु की यह स्थिति धार्मिक और दार्शनिक मस्तिष्क, दयालु और सहानुभूतिपूर्ण मानसिकता भी दर्शाती है। मंगल की अनुकूल स्थिति के कारण भाई जीवन में सामान्यतः अच्छी स्थिति में होंगे। चूंकि तीसरा भाव स्थिर राशि है। अतः एक नियत और निर्धारित प्रवृत्ति होगी। राहु इस विशिष्ट स्थिति में मानसिक तथा जीवन के बौद्धिक विचारों को विस्तृत करता है। इससे उच्च विचारों के लिए मस्तिष्क का उत्थान होता है और परोपकार के आदर्शों तथा मानसिक सुधार के लिए मस्तिष्क को तैयार करता है। यह किसी व्यक्ति को भिन्न और विचित्र स्वभाव विशेषकर मानसिक अभिव्यक्ति की ओर प्रवृत्त करता है। राहु अचानक अप्रत्याशित यात्रा भी कराता है और उस यात्रा से लाभ भी कराता है। संक्षेप में भाइयों के साथ सामान्यतः सद्भावपूर्ण सम्बन्ध रहेगा और कारोबार के विचार से भाइयों के सहयोग से लाभ होगा।

चौथे भाव के सम्बन्ध में

पहले के अध्यायों में हमने जन्म कुण्डली के बारह भावों में से प्रथम तीन भावों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की है। ज्योतिष में हम कुछ निश्चित कार्य के कारक के रूप में प्रत्येक भाव का प्रयोग करते हैं। अक्सर किसी भाव को सौंपी गई घटना कुछ अस्त व्यस्त हो जाती है, वहाँ पर ज्योतिष के विद्यार्थी इस स्पष्ट असंगति से गुमराह हो जाते हैं।

चतुर्थ भाव माँ, अचल सम्पत्ति, शिक्षा, सवारी और सामान्य सुख से सम्बन्धित होता है। इससे यह स्पष्ट है कि चौथे भाव के पीड़ित होने पर वह व्यक्ति मानसिक शान्ति से वंचित रह सकता है जिससे उसकी माँ को कष्ट हो सकता है, सम्पत्ति के सम्बन्ध में परेशानी हो सकती है आदि। किन्तु वास्तव में कोई व्यक्ति शिक्षित हो सकता है या कम आयु में उसकी माँ की मृत्यु हो सकती है। उसके पास अच्छी अचल सम्पत्ति हो सकती है किन्तु सुखी नहीं हो सकता। हममें से

अधिकतर लोग व्यावहारिक ढंग से ज्योतिष का प्रयोग करना चाहते हैं। हमने भावों के महत्व पर अलग-अलग विचार करने का प्रयास किया है। ज्योतिष में सबसे बड़ी कठिनाई यह आती है कि किसी भाव से सम्बन्धित विभिन्न घटनाओं को किस प्रकार अलग किया जाए। और हमारे द्वारा अपनाई गई विधि से इस कठिनाई का कुछ सीमा तक निराकरण हो जाता है।

प्राथमिक उद्देश्य

चौथे भाव का विश्लेषण करने से पहले ज्योतिषी को निम्नलिखित के सामान्य बल का अध्ययन कर लेना चाहिए (क) भाव (ख) कारक (ग) उसके स्वामी और वहाँ स्थित ग्रह। कुण्डली में विद्यमान विभिन्न योगों में से जिनका सम्बन्ध चौथे भाव से है उन्हें सावधानी पूर्वक नोट कर लेना चाहिए।

सर्व प्रथम हम सामान्य योगों पर विचार करेंगे और उसके बाद ग्रहों के प्रभावों पर। चौथा भाव दसवें भाव की तरह अति महत्त्वपूर्ण भाव है और वास्तव में यह वह धुरी है जिस पर किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाली सभी घटनाएँ घूमती हैं।

विभिन्न भावों में चतुर्थेश की स्थिति के अनुसार फल

प्रथम भाव—वह व्यक्ति बहुत विद्वान होता है किन्तु लोगों की भीड़ में बोलने से डरता है। वह पैत्रिक सम्पत्ति से वंचित हो सकता है। लग्न में स्थित चतुर्थेश के बली होने, मध्यम या क्षीण होने के अनुसार यह पता लगता है कि जातक अमीर मध्यम या गरीब परिवार में जन्म लेगा।

दूसरा भाव—वह बहुत ही भाग्यशाली, साहसी और सुखी होगा। उसका स्वभाव व्ययप्रिय होगा। उसे माँ के पूर्वजों से धन की प्राप्ति होगी।

तीसरा भाव—वह व्यक्ति रोगी, उदार और चरित्रवान होगा तथा अपने प्रयासों से धन अर्जित करेगा। वह सौतेले भाइयों तथा सौतेली माँ से दुखी होगा।

चौथाभाव—धार्मिक होगा तथा परम्पराओं का आदर करेगा। वह अमीर, सम्मानित, सुखी और सांसारिक होगा।

पाचवाँ भाव—अन्य व्यक्तियों द्वारा प्यार पाएगा तथा सम्मानित होगा। विष्णु का उपासक तथा अपने प्रयासों से धनी होगा। मां सम्मानित परिवार की होगी। जातक के पास अपनी सवारी होगी।

छठा भाव—चिड़चिड़ा तथा कमीना, उसकी आदतें पाखण्डी होंगी तथा उसके विचार एवं इच्छाएँ दुष्टतापूर्ण होंगी। वह हमेशा घूमता रहेगा।

सातवाँ भाव—साधारणत: सुखी होगा; उसके पास मकान और भूमि होगी; यदि सातवां भाव चर राशि में हो तो उसे जीविका दूर स्थान पर मिलेगी और यदि स्थिर राशि हो तो जन्म स्थान के पास वृत्ति मिलेगी।

आठवां भाव—ऐसा व्यक्ति दुखी होता है। पिता की शीघ्र मृत्यु हो जाती है। वह या तो नपुंसक होगा या सेक्स की शक्ति खो देगा। भूसम्पत्ति का नाश या मुकदमेबाजी में पड़ने की सम्भावना है।

नौवां भाव—पिता और सम्पत्ति के मामले में यह एक भाग्यशाली योग है जिससे जातक को सुख प्राप्त होता है।

दसम भाव—उसको राजनीति में सफलता मिलेगी। वह एक निपुण रसायनज्ञ होगा। वह अपने शत्रुओं का नाश करेगा और वह संसार का महान व्यक्तित्व वाला होगा। यदि चतुर्थेश पीड़ित हो तो प्रसिद्धि का विनाश हो सकता है।

ग्यारहवां भाव—स्वनिर्मित, उदार, रोगी, मां भाग्यशाली किन्तु सौतेली मां भी हो सकती है। पशु और भूमि की खरीद विक्री में सफलता मिलेगी।

बारहवां भाव—सुख और सम्पत्ति से वंचित रहेगा। मां की शीघ्र मृत्यु हो जाएगी आर्थिक स्थिति खराब रहेगी तथा दुःखी रहेगा।

यह ध्यान में रखना चाहिए कि ये योग सामान्य हैं और इन्हें ज्यों का त्यों लागू नहीं करना चाहिए। कतिपय भाव में स्थित चतुर्थेश से होने वाले परिणामों के अच्छे या बुरे स्वरूप में चतुर्थेश के बलाबल के अनुसार घटाबढ़ी होती है। उदाहरणस्वरूप महान् सत्याचार्य कहते हैं कि जब चतुर्थेश शुभ वर्ग में हो और उस पर शुभ दृष्टि हो और तीसरे भाव में हो तो उसके पास बहुत थोड़ी अचल सम्पत्ति होगी और इस प्रकार का चतुर्थेश उस व्यक्ति को अपनी सम्पत्ति से वंचित कर देगा साथ ही सौतेले भाइयों और सौतेली मां के कारण उसे कष्ट में डाल देगा। यदि चतुर्थेश पीड़ित हो तो वह दुष्ट प्रकृति का हो जाएगा। यदि चतुर्थेश बुरी तरह से पीड़ित हो तो उससे होने वाले बुरे परिणाम और गहन हो जाएंगे।

किसी भाव पर निर्णय करने में ज्योतिषी की व्याख्या बुद्धिसंगत और कुशल होनी चाहिए न कि मूलार्थक।

महत्त्वपूर्ण योग

नीचे चौथे भाव से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण योग दिए जाते हैं :

यदि चतुर्थेश ६, ८, और १२ वें भाव में हो और उस पर कोई शुभ दृष्टि न हो तो मां की शीघ्र मृत्यु हो जाएगी। चतुर्थेश लग्न भाव में हो और शुक्र चौथे भाव में बली हो तो सवारी, जवाहरात और धन देता है। यदि चतुर्थेश दुःस्थान में हो या यदि चौथे भाव में मंगल या शनि हो तो वह व्यक्ति अपनी सम्पत्ति और धन खो देगा। यदि वृहस्पति चौथे भाव में हो और चतुर्थेश शुभ ग्रहों के साथ हो तो उस व्यक्ति के अच्छे दोस्त होंगे। यदि चौथा भाव या चतुर्थेश पापकर्तरी योग में हो तो जातक बुरे लोगों के साथ में रहता है। २, ४, और १२ वें भाव के स्वामी यदि केन्द्र या त्रिकोण में हों तो सम्पत्ति और मकान के

सम्बन्ध में उत्तम होता है। यदि चतुर्थेश लग्न में या सातवें भाव में हो तो जातक को बिना कठिनाई के मकान मिलता है। चतुर्थेश अष्टम भाव में पीड़ित या नीच का हो तो जातक अपनी भूमि या मकान से वंचित हो जाता है। यदि चतुर्थेश और दशमेश के बीच परिवर्तन योग हो तो जातक को भूमि मिलती है। यदि परिवर्तन योग बनाने वाले स्वामी अति प्रबल हों और गोपुरांश में हों तो वह व्यक्ति शासक भी बन सकता है। चतुर्थेश और षष्ठेश के बीच परिवर्तन योग से शत्रुओं से भूमि मिलती है। क्षीण बृहस्पति और चौथे भाव में बुरे ग्रह होने पर जातक के पास धन नहीं होता। जातक सरकारी आदेशों से भूमि खो देता है। यदि चतुर्थेश सूर्य के साथ नीच का हो, चौथे भाव में कई दुष्ट ग्रह हों और चतुर्थेश शत्रु के भाव में हो तो वह व्यक्ति महापापी होता है। यदि चतुर्थेश कमजोर हो, नीच का हो, दुष्ट ग्रहों की युक्ति में हो और लग्न जलीय राशि में हो तो वह व्यक्ति पानी में गिरता है। वह व्यक्ति डूबकर मरेगा यदि क्षीण लग्नेश लग्न में हो जो जलीय राशि हो। चौथे भाव में सूर्य और मंगल में पत्थर से घाव लगता है। चन्द्रमा चौथे भाव में हो और उस पर दुष्ट ग्रहों की दृष्टि या युक्ति हो तो मां की जल्दी मृत्यु हो जाती है। यदि चौथे भाव में दुष्ट ग्रह हों या यदि मंगल, शनि या राहु चौथे भाव में हो और किसी शुभ ग्रह की युक्ति न हो तो वह व्यक्ति आरक्षित होगा। जातक का हृदय साफ होगा यदि बृहस्पति चौथे भाव में हो या उस पर दृष्टि डाल रहा हो। यदि राहु चौथे भाव में हो और दुष्ट ग्रहों की दृष्टि या युक्ति हो तो वह व्यक्ति मिथ्याचारी, मृदुभाषी, किन्तु कलुषित हृदय वाला होगा। यदि लग्नेश और चतुर्थेश मित्र हों और शुभ स्थिति में हों तो उसे मां का स्नेह मिलेगा। यदि चतुर्थेश लग्न से या लग्नेश से अष्टम भाव में हो तो मां के साथ दुश्मनी होगी। यदि बली चतुर्थेश और नवमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो और उन पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो रायल्टी मिलेगी। यदि चतुर्थेश मंगल के साथ अनुकूल स्थिति में हो तो सेना में कमीशन प्राप्त होगा।

चौथे भाव में ग्रह

सूर्य—इस योग से जातक सामान्यतः अप्रसन्न और मानसिक रूप से दुःखी रहता है। वह घूमता रहेगा। इस स्थिति में कुछ पैत्रिक सम्पत्ति मिलती है। जादू टोना और दार्शनिक अध्ययन में उसकी रुचि रहेगी। राजनैतिक क्षेत्र में सफलता कठिनाई से आएगी। यदि सूर्य पर शनि या मंगल की दृष्टि हो तो जीवन में रुकावटें आएंगी।

चन्द्रमा—उसका अपना मकान होगा, सम्बन्धियों से सुख मिलेगा, हमेशा खुश और सन्तुष्ट रहेगा; नेता या शासक के रूप में महत्त्वपूर्ण होगा; अभिमानी और कुछ झगड़ालू होगा। ऐसी स्थिति में मां से शीघ्र ही अलग हो जाता है यदि

चन्द्रमा पीड़ित हों; ऐन्द्रिय आनन्द का शौकीन होगा यदि उस पर वृहस्पति की दृष्टि न हो ।

मंगल—साधारणतः यह एक खराब योग है। जातक मां, मित्रों और सम्बन्धियों के सुख से वंचित रहेगा किन्तु राजनीति क्षेत्र में सफल रहेगा । मां के साथ झगड़ा होगा और पारिवारिक जीवन समाप्त हो जाएगा । यदि मंगल के साथ राहु या केतु की युक्ति हो तो उस व्यक्ति के आत्महत्या करने की प्रवृत्ति होगी । उस व्यक्ति का अपना मकान होगा किन्तु उससे वह खुश नहीं रहेगा ।

बुध—जातक शिक्षा शास्त्री या राजनयिक होगा । वह सरकार की आलोचना करेगा । वह महान व्यक्ति बनेगा । उसके पिता स्वनिर्मित व्यक्ति होंगे । उसके पास सवारी होगी । उसे संगीत और अन्य ललित कला का शौक होगा और देश में दूर-दूर यात्रा करेगा । वह बोलने में मधुर होगा ।

वृहस्पति—दार्शनिक, विद्वान, शासक वर्ग की अनुकम्पा, शत्रुओं का भय, धार्मिक, सम्मानित और भाग्यशाली, पारिवारिक वातावरण शान्तिपूर्ण आध्यात्मिक होगा ।

शुक्र—संगीत में निपुण, अच्छे स्वभाव वाला, मां के साथ विशेष स्नेह, अनेक मित्र, सवारी और मकान, धार्मिक इच्छाओं की सफलतापूर्वक उपलब्धि । घरेलू प्रकार के कार्य, मन्त्री और सुख के लिए यह अनुकूल योग है ।

शनि—आरम्भ के वर्षों में बीमार, मां के सुख से वंचित और दुखी, वायु और कफ की शिकायत, सुस्त प्रवृत्ति; पैत्रिक सम्पत्ति नहीं मिलेगी, मकान और सवारी से कष्ट मिलेगा, सम्बन्धी पसन्द नहीं करेंगे, एकान्त जीवन बिताने की इच्छा, यदि शुभ दृष्टि या युक्ति न हो तो घरेलू और पारिवारिक जीवन अनुकूल नहीं होगा ।

राहु—व्यवहार में मूर्ख, नए मित्र, कपटी होगा/या कपट के कार्य में दोषी ठहराया जाएगा ।

केतु—मां, सम्पत्ति, सुख से वंचित रहेगा । विदेश में जीवन बिताएगा । जीवन के अन्त में कटु अनुभव होंगे । जीवन में गति अवरोध और अचानक परिवर्तन आएगा ।

यह देखने में आएगा कि सूर्य का अन्य ग्रहों के चौथे भाव में स्थित होने के कारण होने वाले परिणामों के स्वरूप में अन्य ग्रहों की दृष्टि या युक्ति से परिवर्तन हो जाता है । यदि सूर्य बली हो तो उत्तराधिकार द्वारा धन लाभ होता है; यदि पीड़ित हो तो राजनैतिक स्रोतों से कष्ट होगा । यदि चन्द्रमा पर शुभ दृष्टि या युक्ति हो और वह बली हो तो उस व्यक्ति को मानसिक शान्ति रहती है । यदि पीड़ित हो तो विपरीत परिवर्तन का संकेत मिलता है । यदि पीड़ित ग्रह शनि हो

तो मां शीघ्र मर जाएगी। यदि पीड़ित ग्रह मंगल हो तो चोरी, धोखा और मुकदमे बाजी से हानि होगी। मंगल के पीड़ित होने पर निजी जीवन में दुख, झगड़ा, संघर्ष, मतभेद का संकेत मिलता है। यदि मंगल पर शुभ ग्रहों की युक्ति या दृष्टि हो तो बुरे फल कम हो जाएंगे। बुध के पीड़ित होने पर मानसिक पीड़ा, कपट और दुख का संकेत मिलता है। यदि बुध यहाँ पर उत्तम स्थिति में हो तो यह बुद्धिजीवी और साहित्यिक उपलब्धि के लिए अच्छी स्थिति है। पीड़ित बृहस्पति के कारण आर्थिक कठिनाई और रुकावट आती है। यदि बृहस्पति बली हो तो चौथे भाव से सम्बन्धित सभी घटनाओं के सम्बन्ध में सम्पन्नता होती है। उस व्यक्ति का जीवन शान्तिपूर्ण होगा। शुक्र पीड़ित होने पर नैतिक पतन होता है। चौथे भाव में शुक्र का बली होना कुण्डली वाले के लिए एक परिसम्पत्ति है। इससे एक बड़ा कलाकार बनने का संकेत मिलता है। शनि यदि लग्नाधिपति न हो तो उसका चौथे भाव में स्थित होना अनुकूल नहीं है। यह उस व्यक्ति की मानसिक शान्ति भंग कर देता है और माँ का सुख छीन लेता है। ऐसा व्यक्ति एकान्त जीवन पसन्द करता हैं। मंगल द्वारा पीड़ित होने पर अचानक पतन होता है। यह उन्माद का भी योग है। राहु–मंगल या केतु मंगल से पीड़ित होने पर दुख और तोड़ फोड़ होता है। राहु-शनि और केतु-शनि से पीड़ित होने पर मानसिक अव्यवस्था, हिस्टीरिया या पागलपन का भी संकेत मिलता है। इन सभी मामलों में बुरे और अच्छे प्रभावों की सावधानी पूर्वक जांच आवश्यक है। अव्यवस्थित व्याख्या नहीं करनी चाहिए और अपरिपक्व निष्कर्ष पर नहीं पहुँचना चाहिए।

चौथे भाव के निष्कर्षों के फलित होने का समय

प्रत्येक भाव का अध्ययन अलग अलग नहीं बल्कि कुण्डली के प्रत्येक अन्य भाग पर उनके प्रभाव के साथ करना चाहिए। यदि हमें किसी भाव के सही महत्त्व को समझना है तो मिला जुला अध्ययन अति आवश्यक है। चौथे भाव को नियन्त्रित करने वाली बातें निम्नलिखित हैं—(क) अधिपति (ख) चौथे भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (ग) चौथे भाव में स्थित ग्रह (घ) चौथे भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (ङ) चौथे भाव के साथ युक्ति करने वाले ग्रह (च) चन्द्रमा से चतुर्थेश और चौथे भाव का कारक।

ऊपर दी गई बातों का चौथे भाव पर प्रभाव पड़ सकता है अर्थात् चौथे भाव के फल दे सकते हैं (क) दशानाथ के रूप में, युक्ति नाथ के रूप में, दशा के और लघु विभाजन के स्वामी के रूप में। यह अवश्य ध्यान में रखें कि चौथे भाव को प्रभावित करने में सक्षम ग्रह की महादशा में चौथे भाव को प्रभावित करने में सक्षम ग्रह की भुक्ति चौथे भाव से सम्बन्धित फल देते हैं (२) जो ग्रह चौथे भाव से सम्बन्धित नहीं हैं उनकी मुख्य दशा में जो ग्रह चौथे भाव से सम्बन्धित हैं उनकी

भुक्ति चौथे भाव के सम्बन्ध में सीमित फल देते हैं। इसी प्रकार जो ग्रह चौथे भाव से सम्बन्धित हैं उनकी मुख्य दशा में जो ग्रह चौथे भाव से सम्बन्धित नहीं हैं उनकी अन्तर्दशा में चौथे भाव के सम्बन्ध में सीमित या नाममात्र का फल मिलता है। यह अवश्य ध्यान में रखें कि इस पुस्तक में युक्ति शब्द का प्रयोग दृष्टि और युक्ति दोनों के लिए किया गया है।

जहाँ कोई अधिपति राजयोग या अरिष्ट योग बनाता है वहाँ वह अधिपति अपनी दशा या भुक्ति में राजयोग या अरिष्ट योग का फल देने में सक्षम है, जहाँ तक उसका चौथे भाव से सम्बन्ध है। यह मान लें कि चतुर्थेश द्वारा राजभंग नीच योग बना। जहाँ तक चौथे भाव के संकेतों का सम्बन्ध है वह अपनी दशा या भुक्ति के दौरान राजयोग का नाश कर सकता है। यदि किसी व्यक्ति के पास मकान या गाड़ी है तो वह उसे खो सकता है। यदि उसके पास सम्पत्ति है तो उसकी नीलामी हो सकती है।

परिणामों का स्वरूप

तीन भावों के सम्बन्ध में वर्णित सामान्य सिद्धान्त जिनकी पिछले अध्यायों में चर्चा की गई है, चौथे भाव के सम्बन्ध में भी लागू होते हैं। साधारणतः अलग अलग कुण्डलियों की विशेषताओं के अध्यधीन ऊपर उल्लिखित विभिन्न क्षमता में चौथे भाव पर प्रभाव डालने वाले ग्रहों की दशा और भुक्ति में निम्नलिखित परिणाम की आशा की जा सकती है—

जब चतुर्थेश केन्द्र या त्रिकोण में बली होकर स्थित हो तो ज्ञान, भूमि, मकान और सुख की प्राप्ति। जातक कृषि भूमि पर कुएँ खुदवायेगा और बगीचा का निर्माण करेगा। यदि चतुर्थेश पंचमेश के साथ पंचम भाव में हों या चतुर्थ तथा पंचम अधिपति के साथ परिवर्तन हो तो जातक को राजनैतिक प्रसिद्धि प्राप्त होती है। वह संसद में प्रवेश पायेगा और वहाँ अध्यक्ष बनेगा; काफी धन कमाएगा और उत्तराधिकार में सम्पत्ति मिलेगी। चतुर्थेश की युक्ति में पुत्र का जन्म होगा। जब कारक और अधिपति दोनों ही बली हों तो उसे निश्चित ही राजा की कृपा प्राप्त होगी। यदि चतुर्थेश ६, ८ या १२वें भाव में हो तो चतुर्थेश की युक्ति में जातक को विपरीत परिणाम मिलेंगे। यदि लग्नाधिपति पीड़ित हो तो अधिकारियों से कष्ट मिलेगा। वह अपनी सम्पत्ति गँवा देगा और राजा के क्रोध का शिकार होगा। जहाँ चतुर्थेश और पंचमेश दोनों ही कमजोर हों तो ऊपर दिए गए परिणाम नाम-मात्र के फलीभूत होंगे।

जब चतुर्थेश षष्ठेश के साथ छठे भाव में हो और कारक बली हो तो चतुर्थेश की दशा के दौरान जातक भूमि प्राप्त करेगा। उसे माँ का सुख प्राप्त होगा, ज्ञान

प्राप्त करेगा। जब चतुर्थेश सप्तम भाव में सप्तमेश के साथ हो तो जातक कुछ समय विदेश में रहेगा और भूमि तथा धन प्राप्त करेगा। यदि चतुर्थेश ऐसे नवांश में हो जो सप्तमेश के नवांश से ६, ८ या १२वां हो तो मृत्यु की भी सम्भावना हो सकती है। जातक निश्चित ही अपनी सम्पत्ति, सवारी, पशु गंवा देगा और चतुर्थेश की दशा में मुकदमेबाजी में फंस जाएगा। यदि चतुर्थेश अष्टमेश से आठवें भाव में हो। मां बीमार पड़ेगी या मर जाएगी। शिक्षा समाप्त हो जाएगी। यदि चतुर्थेश नवांश में अष्टमेश से ६, ८ या १२वें भाव में हो तो बुरे फल-कम हो जाते हैं।

जब चतुर्थेश नवम भाव में नवमेश के साथ हो और कारक समान रूप से उत्तम स्थिति में हो तो चतुर्थेश की दशा में जातक को अचानक भाग्य और धन की प्राप्ति होती है। नवांश में यदि चतुर्थेश नवमेश से ६, ८ या १२वें भाव में हों तो उल्टा फल प्राप्त होगा। यदि चतुर्थेश दशमेश के साथ दशम भाव में हो और अन्यथा बली हो तो जातक मन्त्री या उच्च पदाधिकारी बनता है। यदि चतुर्थेश या पंचमेश बुध हो तो व्यापार या कारोबार से अधिक धन प्राप्त होगा। यदि चतुर्थेश एकादशेश के साथ ग्यारहवें भाव में हो तो वह व्यक्ति व्यापार या वाणिज्य से धन अर्जित करेगा। यदि नवांश में चतुर्थेश एकादशेश से ६, ८ या १२वें भाव में हो तो हानि होगी। सम्बन्धित ग्रहों के स्वभावों से मिलते जुलते साधनों से आय या हानि होगी। यदि चतुर्थेश १२वें में द्वादशेश के साथ हो तो जातक को मानसिक चिन्ता, पशु की हानि, मां के लिए बुरे दिन और कष्ट में फंस जाएगा। यदि चतुर्थेश द्वादशेश से बली हो तो बुरे फल कम हो जाएंगे।

लग्नाधिपति या नवांश अधिपति के साथ युक्ति वाले चतुर्थेश की दशा में स्वास्थ्य, आध्यात्मिक प्रगति, पिता से सुख, नए मित्र, पसन्द का भोजन मिलता है।

जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं कि चौथा भाव मां, सुख, अध्ययन और सवारी तथा अचल सम्पत्ति से सम्बन्धित होता है। उदाहरण वाली कुण्डलियों के अध्ययन के लिए हम इनमें से प्रत्येक पर विचार करेंगे।

वैद्यनाथ दीक्षितार चाहते हैं कि हम सुख के लिए चतुर्थ भाव और बृहस्पति को देखें; मां के लिए चन्द्रमा और चतुर्थ; वाहन के लिए शुक्र और चतुर्थ भाव को देखें। अनेक उदाहरणों का अध्ययन करने के बाद ज्योतिष के विद्यार्थी के लिए यह सम्भव हो सकेगा कि वह सभी विवरणों के अनुसार चौथे भाव के विश्लेषण के लिए ज्योतिष सम्बन्धी सिद्धान्त का प्रतिपादन कर सके।

माँ

मां के दीर्घ जीवन का अनुमान चौथे भाव के बल के अनुसार तथा चन्द्रमा की केन्द्र में शुभ राशि में स्थिति तथा उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि से लगाना चाहिए। मां के लग्न के रूप में चौथे भाव या मातृकारक को मानकर और वहाँ से

अष्टम भाव के बलाबल का अध्ययन करके भी मां के दीर्घ जीवन का अनुमान लगाया जा सकता है। सामान्यतः जब चतुर्थेश ६ या १२वें भाव में हो, क्षीण हो और लग्न के साथ मारक ग्रह की युक्ति हो तो मां की शीघ्र मृत्यु हो जायेगी। निम्नलिखित योगों पर भी ध्यान दें—

(१) क्षीण चन्द्रमा जो छः या बारहवें भाव में मारक ग्रह के साथ युक्त हो,
(२) शनि चन्द्रमा के साथ चौथे भाव में

कुण्डली सं० ६४—जन्म तारीख ८-८-१९१२, समय ७-३५ बजे संध्या (आई एस टी) (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० २० से०)

राशि नवांश

११
९
१२
८
१०सूरा
शशु१
गुमं७
के४
२
६
३
बुचं५
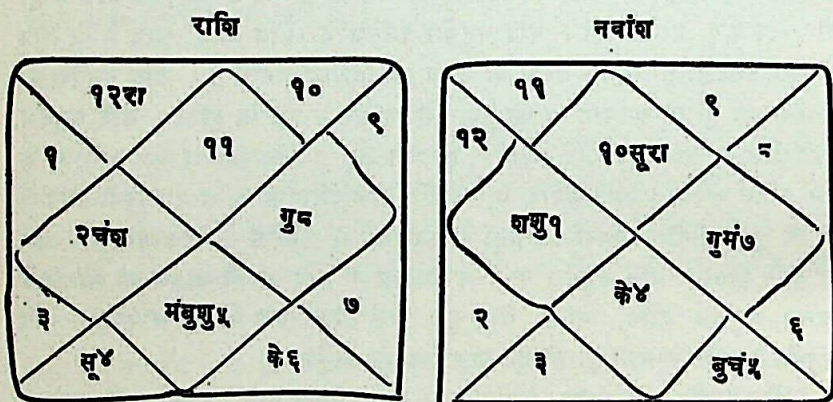
मंगल की दशा शेष ५-८-६ वर्ष

कुण्डली संख्या ६४ में चौथे भाव में शनि और चन्द्रमा दो ग्रह हैं। लग्न का स्वामी होकर शनि का चौथे भाव में जाना उत्तम है और नैसर्गिक मारक के रूप में खराब है। षष्ठेश चन्द्रमा की युक्ति के कारण काफी पीड़ित है। चौथे भाव पर वृहस्पति की दृष्टि है। यह दृष्टि उत्तम है क्योंकि वृहस्पति नैसर्गिक कारक है और खराब इसलिए है कि वृहस्पति कुम्भ लग्न के लिए मारक है। चौथा भाव बली है।

मातृकारक (मां का स्वामी)—चन्द्रमा छठे भाव का स्वामी है अतः पीड़ित है। शनि के साथ मातृकारक की युक्ति है अतः वह पीड़ित है यद्यपि वृहस्पति की दृष्टि के कारण थोड़ा बल मिला है। इन सब के बावजूद मां के कारक का उचित भाव में होना एक अच्छा योग नहीं है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश शुक्र चौथे भाव से चतुर्थ में है और उसके साथ दो मारक मंगल और बुध हैं तथा सूर्य और केतु के बीच में पड़ा है। नवांश में भी चतुर्थेश शुक्र नीच के शनि के साथ युक्त होने के कारण पर्याप्त रूप से पीड़ित है।

चन्द्रमा से निर्णय—चतुर्थेश सूर्य अपनी राशि से बारहवें भाव में है और उस पर शनि और बृहस्पति की दृष्टि है, बृहस्पति चन्द्र लग्न से ४ वें और ११ वें भाव का स्वामी होने के कारण मारक है। चौथा भाव मारक के बीच में है तथा वहां तीन ग्रह हैं। सारांश यह है कि चौथा भाव कमजोर नहीं है किन्तु मातृकारक निश्चित ही पीड़ित है जिससे मां की शीघ्र मृत्यु का संकेत मिलता है।

मां के सम्बन्ध में निम्नलिखित ग्रह चौथे भाव का फल दे सकते हैं।

१. चन्द्रमा—मातृकारक के रूप में

२. शनि—मातृकारक के साथ युक्ति के रूप में

३. बृहस्पति—मातृकारक पर दृष्टि के रूप में

४. शुक्र—चौथे भाव के स्वामी के रूप में

५. मंगल और बुध—चतुर्थेश के साथ युक्ति के रूप में

कुण्डली संख्या ६४ में उपरोक्त सभी ग्रह अपनी दशा या भुक्ति में चौथे भाव को प्रभावित कर सकते हैं। चूंकि जातक की आयु लगभग ७५ वर्ष है, मंगल, बृहस्पति, शनि और बुध अपनी दशा या भुक्ति में प्रभावित कर सकते हैं जबकि चन्द्रमा और शुक्र केवल भुक्तिनाथ के रूप में चौथे भाव को प्रभावित कर सकते हैं। सैद्धान्तिक रूप से जब जातक की शनि की दशा होगी तो मां को राज योग का फल प्राप्त होगा क्योंकि शनि चौथे भाव के लिए योगकारक है। जब जातक की बुध की दशा चल रही होगी तब भी मां के लिए इसी प्रकार के फल की आशा की जा सकती है क्योंकि मां के दीर्घ जीवन के लिए कोई योग नहीं है, दशानाथ के रूप में चौथे भाव पर प्रभाव डालने वाले शनि और बुध को रद्द कर दिया गया। वे भुक्तिनाथ के रूप में भी मां को शुभ फल नहीं दे सकते। यह देखने में आएगा कि मंगल मातृकारक से मारक स्थान का स्वामी है और बुध की युक्ति है जो मातृकारक जिस राशि में है उस राशि के लिए मारक ग्रह है। परिणामस्वरूप मां की मृत्यु की आशा की जा सकती है। मातृकारक के साथ युक्ति करने वाला शनि मां का नाश कर सकता है। इसके अतिरिक्त जन्म समय जातक साढ़े साती से गुजर रहा था। इन सभी कारणों से मंगल की दशा में और शनि की भुक्ति में मां की मृत्यु हो गई।

कुण्डली संख्या ६५—जन्म तारीख १६-११-१९१४, समय ५-० बजे संध्या (अक्षांश २७°-५५' उत्तर, देशा० ६४° ४५' पूर्व)

नवांश
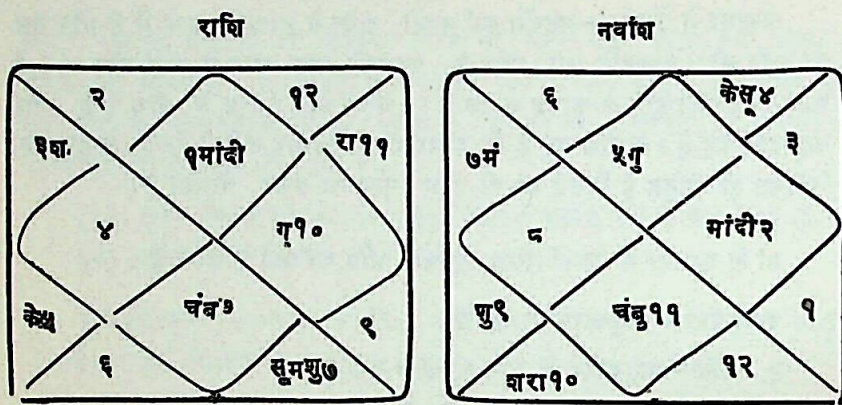
राहु की दशा शेष ६–७–२८ वर्ष

चौथा भाव—चौथे भाव में चरराशि कर्क है और वहाँ किसी शुभ या अशुभ ग्रह की युक्ति नहीं है। चौथे भाव पर नीच के बृहस्पति की दृष्टि है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश चन्द्रमा तृतीयेश और षष्ठेश बुध के साथ सप्तम भाव में है अतः कलंकित है।

मातृकारक—इस कुण्डली में चतुर्थेश मातृकारक भी है। चतुर्थेश का कलंक मातृकारक पर भी लागू होता है।

राहु मातृकारक चन्द्रमा से पांचवें भाव में है। छाया ग्रह होने के कारण राहु मंगल का फल देगा जिसके नक्षत्र में वह स्थित है। मंगल न केवल दूसरे और सातवें मारक का स्वामी है बल्कि वह वास्तव में मातृकारक से दूसरे भाव में स्थित है और मातृ स्थान से दूसरे भाव के स्वामी सूर्य तथा मातृकारक के अष्टम भाव के स्वामी शुक्र के साथ युक्त है। शुक्र मातृकारक से अष्टम भाव का स्वामी हैं और मातृकारक से दूसरे स्थान में स्थित है। अतः राहु की दशा, शुक्र की भुक्ति तथा शुक्र के प्रत्यन्तर में मां की मृत्यु हुई।

निष्कर्ष—चौथा भाव बली है परन्तु स्वामी और कारक पर्याप्त रूप से पीड़ित हैं। बहुत कम उम्र में जातक की मां की मृत्यु हो गई।

कुण्डली संख्या ६६—जन्म तारीख २५/२६–८–१८९२, समय २–३० बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश १२°–५२′ उत्तर, देशा० ७४° ५४′ पूर्व)

राशि

४मांदी
२
सूबु५
३शु
रागु१
चंश६
१२
के७
९
११
८
मं१०

नवांश
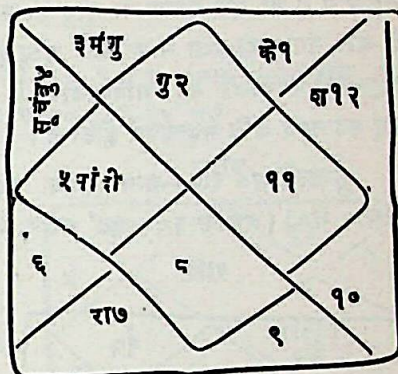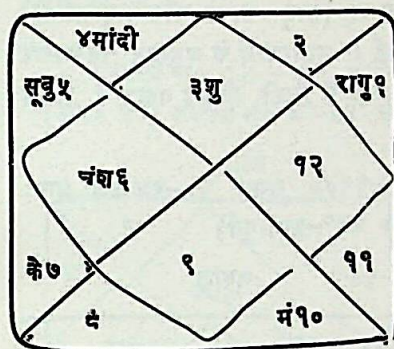
चन्द्रमा की दशा शेष १–५–२७ वर्ष

चौथाभाव—चौथे भाव में द्विस्वभाव राशि कन्या है। इस राशि में द्वितीयेश चन्द्रमा और अष्टमेश तथा नवमेश शनि स्थित है। इसके दोनों ओर मारक ग्रह पड़े हैं। चन्द्र लग्न से चतुर्थेश वृहस्पति राहु के साथ अष्टम भाव में पड़ा है। चौथा भाव संयत रूप से बली है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश बुध चौथे भाव से १२ वें भाव में है तथा सूर्य की युक्ति है। इसके अतिरिक्त बुध पर छठे और ग्यारहवें भाव के स्वामी उच्च के मंगल की की दृष्टि है और सप्तमेश तथा अष्टमेश वृहस्पति की दृष्टि है। अतः चतुर्थेश कमजोर है।

मातृकारक—चन्द्रमा मातृभाव (४ वें भाव) में है। यह निश्चित ही मां के लिए कष्टदायक है। उसकी शनि के साथ युक्ति है और पाप कर्तरी योग बना रहा है।

निष्कर्ष—मां के दीर्घ जीवन के योग अच्छे नहीं थे। राहु मातृकारक से आठवें भाव में है और मातृकारक से मारक वृहस्पति के साथ युक्ति है। परिणाम-स्वरूप राहु की दशा वृहस्पति की युक्ति में मां की मृत्यु हो गई।

यह देखने में आएगा कि कुण्डली संख्या ६४ में जातक के दूसरे वर्ष में मंगल की दशा और वृहस्पति की युक्ति में उसकी मां की मृत्यु हुई जबकि कुंडली संख्या ६६ में जातक के १३ वें वर्ष तक मां जीवित रही। इसमें चन्द्रमा पर बुरे प्रभाव को ध्यान में रखते हुए यदि कुण्डली संख्या ६४ की सीमा तक नहीं तो कम से कम चन्द्रमा की दशा में मां की मृत्यु की आशा की जा सकती थी। क्योंकि इस कुण्डली में चन्द्रमा अपने ही नक्षत्र में है अतः वह अपनी दशा में मां की मृत्यु का

कारण नहीं बन सका। कुण्डली संख्या ६४ में दूसरी ओर चन्द्रमा मंगल के नक्षत्र में है जो एक मारक या मृत्यु का कारक ग्रह (मातृ कारक और मातृभाव से) है और मंगल की दशा में मां की मृत्यु हो गई। सत्याचार्य के अनुसार विशेषकर महत्वपूर्ण घटनाओं की भविष्यवाणी के मामले में किसी विशेष नक्षत्र में स्थित ग्रह का तथ्य अति महत्त्वपूर्ण होता है।

कुण्डली सं० ६७—जन्म समय १९-२-१९००, समय १०-२४ बजे प्रातः (स्था० सं०) (अक्षांश १८°-१७′ उत्तर, देशा० ८३°-५७′ पूर्व)

राशि

के२ १२
मांदी३ १ शु११
सूमंबु१०
४
श९
५ ७
चं६ गुरा८

नवांश
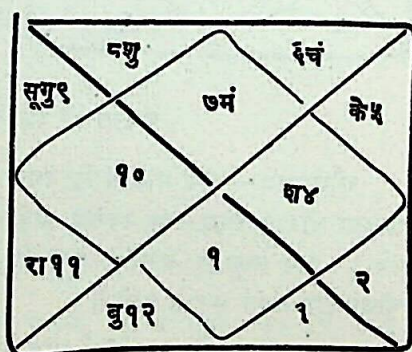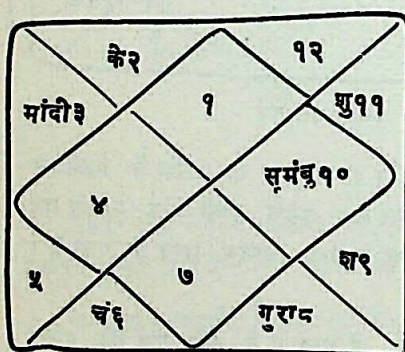
मंगल की दशा शेष ३-९-८ वर्ष

चौथा भाव—चौथे भाव में चर राशि कर्क है। इस पर ९ वें और १२ वें भाव के स्वामी बृहस्पति की दृष्टि है। चौथे भाव में कोई ग्रह नहीं है। चन्द्र लग्न से चौथे भाव में शनि स्थित है। नवांश में चौथे भाव पर शनि और मंगल की दृष्टि है। चौथा भाव बली नहीं है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश चन्द्रमा छठे भाव में है। उस पर शुक्र (दूसरे और सातवें भाव का स्वामी) मंगल और शनि दोनों ही मारक की दृष्टि है। चन्द्र लग्न से चतुर्थेश चौथे भाव से १२ वें स्थान में है। नवांश में चन्द्रमा पाप कर्तरी योग और राशि में है और उस पर शनि तथा मंगल की दृष्टि है। चतुर्थेश समग्र रूप से निर्बल है।

मातृकारक—चतुर्थेस मातृकारक भी है। अतः मातृकारक में स्वामी की सभी निर्बलता है।

निष्कर्ष—चूंकि कारक और स्वामी दोनों ही निर्बल हैं अतः मां की आयु कम है। राहु मातृकारक से तीसरे स्थान पर है और मातृकारक से मारक ग्रह बृहस्पति

की मुक्ति है, परिणामस्वरूप राहु की दशा और वृहस्पति की भुक्ति में मां की मृत्यु हो गई।

कुण्डली सं० ६८—जन्म तारीख १३-१०-१८९६, समय ७-५६ बजे प्रातः (स्था० सं०) अक्षांश सं० ८°-२३′ उत्तर, देशा० ७६°-३९′ पूर्व

राशि
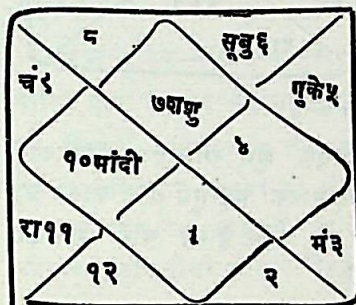
नवांश
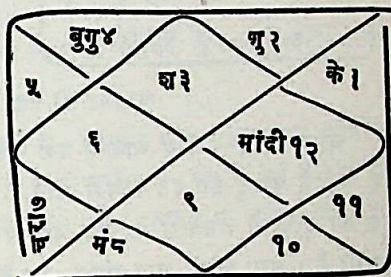
शुक्र की दशा शेष ५-२-१२ वर्ष

चौथा भाव—चौथा भाव मकर राशि है जो एक मारक राशि है और वहाँ पर किसी ग्रह की युक्ति नहीं है। फिर चौथे भाव पर मंगल की दृष्टि है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश शनि लग्न में उच्च का है। वह लग्नेश शुक्र के साथ युक्त है तथा वह किसी भी प्रकार के प्रभाव से मुक्त है।

मातृकारक—चन्द्रमा तीसरे भाव में है जो एक शुभ राशि है तथा वह किसी ग्रह से युक्त नहीं है परन्तु तृतीयेश वृहस्पति की दृष्टि है दो नैसर्गिक मारक शनि और मंगल की मिली जुली दृष्टि के कारण इस शुभ स्थिति का संतुलन हो गया। पुनः नवांश में चन्द्रमा राहु के साथ युक्त है तथा पाप कर्तरी योग है। इसके अतिरिक्त मातृकारक उस स्थान पर है जो मातृ स्थान से १२ वां भाव है। परिणामस्वरूप मातृकारक पर्याप्त रूप से पीड़ित है। मातृकारक चन्द्रमा पर चतुर्थेश के रूप में शनि की दृष्टि शुभ हो सकती थी किन्तु शनि एक नैसर्गिक मारक ग्रह है। चौथा भाव संयत रूप से बली है। मातृकारक क्षीण रूप से बली है। चौथे भाव पर पर्याप्त रूप से बुरे प्रभाव हैं। परिणामस्वरूप जातक के १८ वें वर्ष की आयु में चन्द्रमा की दशा और शनि की भुक्ति में मां की मृत्यु हो गई।

कुण्डली सं० ६९—जन्म तारीख १०-२-१९०९, समय१०-३३ बजे प्रातः (आई एस टी) (अक्षांश १२° २०′ उत्तर, देशा. ७६°-३८ पूर्व)

राशि
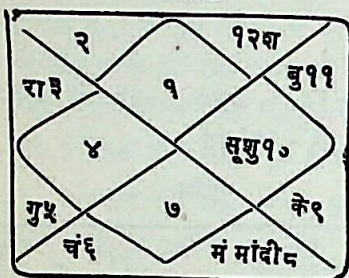
नवांश

चन्द्रमा की दशा शेष ०–०–११ वर्ष

चौथा भाव—चौथे भाव में कर्क राशि है जो एक शुभ राशि है। इसमें कोई ग्रह नहीं है परन्तु इस पर पांच वें भाव के स्वामी मारक ग्रह सूर्य और कारक ग्रह शुक्र की दृष्टि है। नवांश में चौथे भाव पर शनि की दृष्टि है जो चौथे भाव का स्वामी है। अतः चौथा भाव संयत रूप से बली है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश चन्द्रमा छठे भाव में शुभ राशि है किन्तु इस पर शनि की दृष्टि है। अतः यह कलंकित है।

मातृकारक—चूंकि चतुर्थेश मातृकारक भी है। अतः चतुर्थेश पर लगा कलंक मातृकारक के लिए भी लागू है।

निष्कर्ष—चौथा भाव संयत रूप से बली है। किन्तु स्वामी तथा कारक पर्याप्त रूप से पीड़ित हैं। राहु की दशा और राहु की युक्ति में ९ वर्ष की आयु में उसकी मां की मृत्यु हो गई। राहु १२ वें भाव में अथवा मातृ स्थान से हानि वाले भाव में स्थित है।

कुण्डली सं० ७०—जन्म तारीख २५–९–१८९८ समय ७.३० बजे प्रातः (स्था० सं०) (अक्षांश २३°–२′ उत्तर, देशा० ७२°–१९′ पूर्व)

राशि
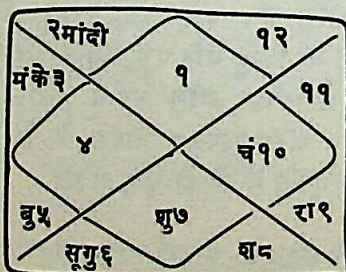
नवांश
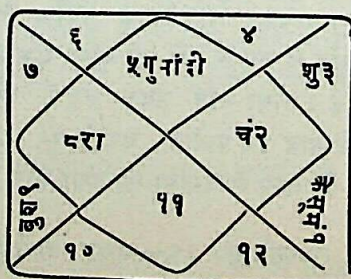
चन्द्रमा की दशा शेष ६–८–२ वर्ष

चौथा भाव—चौथे भाव कर्क में कोई शुभ या अशुभ ग्रह नहीं है। इस पर चतुर्थेश चन्द्रमा की दृष्टि है। जहाँ तक चौथे भाव के सामान्य संकेतों का सम्बन्ध है, यह उत्तम है। नवांश में चतुर्थ भाव शनि की स्थिति और मंगल की दृष्टि के कारण पीड़ित है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश चन्द्रमा अशुभ राशि मकर में है। उस पर बली शनि और मंगल की दृष्टि है जो प्रथम श्रेणी के मारक हैं। वृहस्पति की दृष्टि से थोड़ा राहत है।

मातृ कारक—चूंकि मातृकारक चन्द्रमा स्वयं ही चतुर्थेश है अतः चतुर्थेश का पीड़ित होना इस पर भी लागू होता है।

निष्कर्ष—चौथा भाव संयत रूप से बली है। चतुर्थेश और मातृकारक पर्याप्त रूप से पीड़ित हैं। चन्द्रमा की दशा और सूर्य की भुक्ति में १८ वें वर्ष में मां की मृत्यु हो गई। यह ध्यान दें कि भुक्तिनाथ सूर्य मातृ स्थान से दूसरे भाव का स्वामी है और तीसरे भाव में स्थित है।

कुण्डली संख्या ७१—जन्म तारीख ५-७-१८८७, समय ९०.३२ बजे संध्या (स्था० स०) (अक्षांश १४° १२', देशा० ८७° ५७' पूर्व)

राशि

१२	११के	१०मांदी
१	२शु	९
	८	
शसू ३	रा५चं	७
बु४		मगु६
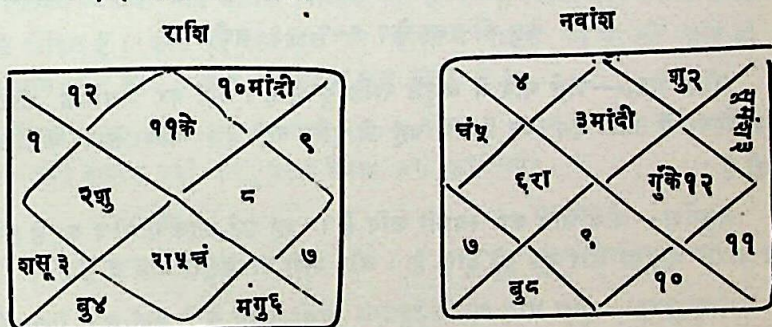
शुक्र की दशा शेष १७-८-वर्ष

चौथा भाव—चौथे भाव में शुभ राशि वृषभ का स्वामी शुक्र स्थित है तथा शुभ ग्रह वृहस्पति की दृष्टि है। नवांश में चौथे भाव में राहु स्थित है किन्तु उस पर वृहस्पति की दृष्टि है। अतः चौथा भाव उचित रूप से बली है।

चतुर्थेश—चूंकि चतुर्थेश चौथे भाव में है अतः उस पर चौथे भाव का सभी शुभ प्रभाव है।

मातृ कारक—चन्द्रमा सिंह राशि में राहु के साथ है। उस पर शनि की दृष्टि है और पर्याप्त रूप से पीड़ित है।

निष्कर्ष—चौथे भाव और चतुर्थेश के साधारण बल के कारण जातक की मां उसकी ३६ वर्ष की आयु तक जीवित रही। मातृ कारक चन्द्रमा जो मां का मूल कारक होता है, पर्याप्त रूप से पीड़ित है। मंगल की दशा शनि की भुक्ति में उसकी मां की मृत्यु हुई। ध्यान दें कि मंगल चौथे भाव से मारक है और चन्द्रमा से मारक स्थान में स्थित है और शनि चौथे भाव से मारक स्थान में स्थित है।

कुण्डली संख्या ७२—जन्म तारीख १०-४-१९१०, समय ८-३८ बजे संध्या (आई०एस०टी०) (अक्षांश १६° २०', देशा० ८०° १५' पूर्व)।

राशि

नवांश
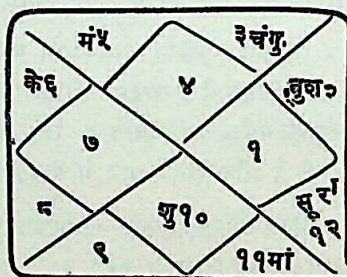
केतु की दशा शेष २-१-२५ वर्ष।

चौथा भाव—चौथे भाव में अशुभ राशि कुम्भ है। यहाँ पर नैसर्गिक कारक शुक्र स्थित है तथा इस पर किसी ग्रह की दृष्टि नहीं है। चौथा भाव कलंकित नहीं है।

चतुर्थेश—चौथे भाव का स्वामी शनि है। वह छठे भाव में नीच का है तथा दो मारक चन्द्रमा और बुध की युक्ति है। और बली पापकर्तरी योग में है।

मातृकारक—चूंकि मातृ कारक चन्द्रमा उसी राशि में है जहाँ शनि स्थित है, अतः चन्द्रमा भी शनि के जैसे पीड़ित है। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा मारक ग्रह शनि के साथ है।

निष्कर्ष—चौथा भाव कलंकित नहीं है। चतुर्थेश और मातृकारक दोनों ही पीड़ित हैं जिसके परिणामस्वरूप जब जातक तीन वर्ष का था तो शुक्र की दशा की भुक्ति में उसकी मां की मृत्यु हो गई। मातृकारक और चतुर्थेश जिस राशि में हैं उस राशि के लिए शुक्र मारक होता है।

कुण्डली संख्या ७३—जन्म तारीख ५-१-१८९१, समय १२.३० बजे संध्या (स्था० सं०) (अक्षांश १८° ५४', देशा० ७२° ४९' पूर्व)।

राशि

२रा १२
३मां. १ मं११
४ बुगु१०
श५ चं७ सू९
६ केशु८

नवांश

रा४ मं२
शु५ ३ १
६ बु१२
७ ९ चं११
शसूगुमां८ के१०

राहु की दशा शेष ६-०-२७ वर्ष

चौथा भाव—कर्क जो चौथे भाव में है वहां पर कोई शुभ या अशुभ ग्रह नहीं है। दूसरी ओर इस पर नीच के बृहस्पति और बुध की दृष्टि है। नवांश में भी चौथे भाव पर बुध की दृष्टि है जो नीच भाव में है। परिणामस्वरूप चौथा भाव उचित रूप से बली है।

चतुर्थेश—चौथे भाव का स्वामी चन्द्रमा मातृ कारक भी है। वह तुला में है जो एक शुभ राशि है किन्तु उस पर बली शनि की दृष्टि है।

निष्कर्ष—चौथा भाव अधिक पीड़ित नहीं है किन्तु स्वामी और कारक संयत रूप से पीड़ित हैं। शनि की दशा शुक्र की भुक्ति में जातक की मां की मृत्यु हो गई। शनि चौथे भाव से और चन्द्रमा से शुक्र मारक है।

कुंडली संख्या ७४—जन्म तारीख २१-७-१९००, समय १०-३८ बजे प्रातः (स्था० सं०) अक्षांश २३° ११', उत्तर देशा० ७९° ५३' वर्ष)।

राशि

१मांदी ११
२ १२ १०
गु३ श९
सूबु४ ६ गुरा८
५ ७

नवांश

सूर्य की दशा शेष ०-४-२ वर्ष।

चौथा भाव—चौथे भाव में शुभ राशि मिथुन है। यहां पर शुक्र स्थित है। जो तृतीयेश और अष्टमेश होने के बावजूद नैसर्गिक सौम्य ग्रह है। इसके अतिरिक्त चौथे भाव पर शनि की दृष्टि है और पापकर्तरी योग में है।

चतुर्थेश—चौथे भाव का स्वामी बुध सूर्य के साथ पांचवें भाव में है और उस पर वृहस्पति की दृष्टि है। कुल मिलाकर वह हल्का कलंकित है।

मातृकारक—चन्द्रमा उच्च का है किन्तु केतु और मंगल की युक्ति है। यह वृहस्पति की दृष्टि से अति सन्तुलित हो जाता है। नवांश में चन्द्रमा उच्च के शुक्र के साथ शुभ राशि में है।

निष्कर्ष—तीनों ही पहलू हल्का पीड़ित हैं। जब जातक की उम्र ४६ वर्ष की थी तो उसकी मां की मृत्यु हुई।

कुण्डली सं० ७५—जन्म तारीख १७-७-१८९५ समय १२-३० वजे संध्या (स्था० सं०) (अक्षांश ११°-०', उत्तर देशा० ७८° ४०' पूर्व)।

राशि

७श, मंकेशु५, ८, ६मांदी, सू४, ९, बुगु३, १०, १२, २, रा११, चं१

नवांश

शु६मांदी, ४, ७, सू५, गु३, ८के, रा२, चंश९, बृ११, मं१, १०, १२

सूर्य की दशा शेष ५-१-६ वर्ष

चौथा भाव—चौथे भाव में शुभ राशि धनु है यहां कोई ग्रह नहीं है किन्तु इस पर चौथे भाव के स्वामी वृहस्पति और लग्नाधिपति बुध की दृष्टि है। अतः यह पर्याप्त रूप से बली है। नवांश में चौथा भाव हल्का पीड़ित है। यह नगण्य है क्योंकि चतुर्थेश अपनी स्वराशि मेष से चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश लग्नाधिपति बुध के साथ केन्द्र में है। नवांश में वृहस्पति संयत रूप से पीड़ित है किन्तु राशि में बली होकर स्थित होने से यह प्रतिसंतुलित हो जाता है।

मातृकारक—चन्द्रमा मेष राशि में है जो चौथे भाव से त्रिकोण में है और उस पर उच्च के शनि की दृष्टि है। अतः चन्द्रमा भी हल्का ही पीड़ित है।

निष्कर्ष—इस प्रकार चौथा भाव पर्याप्त रूप से बली है। जिससे जातक की मां उसकी ५२ वर्ष की आयु तक उसके साथ रही।

शिक्षा और अध्ययन

अब हम इस प्रकार के योगों पर विचार करेंगे जो किसी व्यक्ति को विद्वान बनाते हैं। अध्ययन को चौथे भाव और वृहस्पति पर विचार करके सुनिश्चित

करना चाहिए। इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि ज्योतिष जैसा कि वर्तमान में ज्ञात है, की सहायता से कुण्डली की जाँच करने के वाद यह बताना असम्भव नहीं है कि जातक की प्रवृत्ति भौतिक या रसायन, इंजीनियरी या मौसम विज्ञान में रहेगी।

वास्तव में ज्योतिष में कमी नहीं है। यह हमारी अज्ञानता दर्शाता है और यह दर्शाता है कि ज्योतिष के ज्ञान के मूल स्रोत का उचित अध्ययन करने में हमने कितनी असावधानी की है और उन योगों पर ध्यान नहीं दिया जिनसे निस्सन्देह रूप से शिक्षा का वह स्वरूप बताना सम्भव हो सकता है जिसका जातक जीविका या ज्ञान के लिए अध्ययन कर सकता है। हम सामान्य योगों की चर्चा कर रहे हैं और कुछ उदाहरण दे रहे हैं और अन्तिम निर्णय पर पहुँचने के लिए अपना विचार और तर्क देने का काम पाठक पर छोड़ देते हैं। प्राचीन शास्त्रीय पुस्तकों से निम्नलिखित योगों को छांटकर निकाला गया है जो अध्ययन की विभिन्न शाखाओं की ओर जातक की प्रवृत्ति को खींचकर ले जाते हैं।

चौथे भाव में शुक्र स्थित होने पर जातक संगीत विद्या में निपुण होता है। चौथे भाव में बुध के स्थित होने पर जातक ज्योतिष में दक्ष होता है। सूर्य और चन्द्रमा की इस प्रकार की स्थिति में जातक राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान और तत्त्व मीमांसा का अध्ययन करता है। सूर्य और बुध की युक्ति से गणित शास्त्र में निपुण होता है। चौथे भाव में शुक्र हो और बुध या सूर्य की युक्ति हो तो उस व्यक्ति में कविता करने का गुण आता है।

यदि बुध के साथ सूर्य और मंगल का किसी प्रकार सहयोग हो तो वह व्यक्ति तार्किक होता है वृहस्पति की इस प्रकार की स्थिति में होने पर वह व्यक्ति वेद और वेदांग में निपुण होता है। यहाँ पर उन्हीं ग्रहों पर विचार करना चाहिए जिनका चौथे भाव से सहयोग है न कि केवल भाव और उसका स्वामी। इस प्रकार यदि चौथे भाव का स्वामी शुक्र है और वह सातवें भाव में बुध और मंगल के साथ है और चौथे भाव में शनि और चन्द्रमा है तो वह व्यक्ति विभिन्न शाखाओं का अध्ययन करेगा। मुख्य रूप से चौथे भाव से स्वामी, स्थिति या युक्ति के रूप में सम्बन्धित ग्रह के नैसर्गिक स्वभाव और संकेतों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालना होता है कि कौन व्यक्ति किस प्रकार की शिक्षा ग्रहण करेगा। सूर्य राजा और शासक है। चन्द्रमा तरगित मस्तिष्क का द्योतक है। मंगल योद्धा और व्यावहारिक आदमी है। बुध चिन्तक और विशेषज्ञ है। वृहस्पति पादरी, आध्यात्मिक और न्यायाधीश है। शुक्र कवि और दार्शनिक है। शनि राजनेता और नेता है। राहु राजनयिक तथा केतु पैगम्बर है। यदि हमें ज्योतिष की सत्यता प्राप्त करनी है तो

हमें इन संकेतों के आधार पर कुण्डली की व्याख्या करनी होगी जो साधारण ज्ञान के तथ्यों पर आधारित है। ज्योतिष एक विज्ञान है। यदि सत्यनिष्ठा से इसका अध्ययन किया जाए और इसे अत्यधिक सावधानी से लागू किया जाए तो ज्योतिष मानव के लिए वास्तविक वरदान बन सकता है। ग्रहों और राशियों को आवंटित गुण और प्रभावकारिता को ज्यों का त्यों नहीं लेना चाहिए। उदाहरणतः जब हम कहते हैं कि शुक्र कविता का कारक है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि कोई व्यक्ति स्वर्ग के माध्यम से कवितागान को दृष्टिगत करता है। इसका साधारण अर्थ यह है कि उस व्यक्ति का जन्म ऐसे समय पर हुआ कि जब शुक्र स्वर्ग के उस भाग में स्थित था जो शिक्षा को प्रतीकात्मक रूप से नियन्त्रित करता है, जो कविता संगीत और ललित कला की ओर ले जाता है। इस पुस्तक के दूसरे खण्ड में दसवें भाव पर विचार करते समय विभिन्न ग्रहों द्वारा दर्शित व्यवसाय और वृत्ति के सम्बन्ध में हम पर्याप्त आँकड़े देंगे। शैक्षिक और साहित्यिक उपलब्धि का पता लगाने के लिए भी ये आंकड़े काफी सहायक होंगे। कुण्डली की व्याख्या की विधि काफी उत्तम है क्योंकि वे विभिन्न युगों में ज्योतिष के चिन्तकों के विशाल अनुभव पर आधारित हैं।

कुंडली सं० ७६—जन्म तारीख १२-२-१८५७ समय लगभग १२-२१ बजे संध्या (स्था० स०) अक्षांश १८° उत्तर, देशा० ८४° पूर्व)

राशि
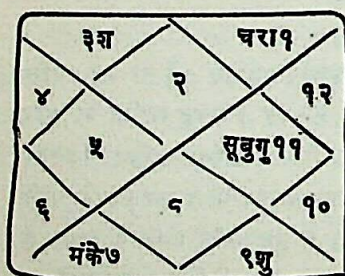
नवांश
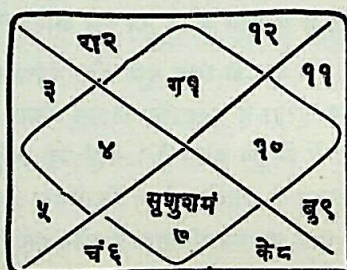
शुक्र की दशा शेष १२-३-९ वर्ष

चौथा भाव—चौथे भाव में सिंह राशि है। यहाँ पर कोई ग्रह नहीं है। चौथे भाव पर शनि, सूर्य, बुध और बृहस्पति की दृष्टि है। चौथे भाव में स्वामी के रूप में सूर्य और दूसरे तथा पाँचवें भाव के स्वामी के रूप में बुध की दृष्टि से चौथा भाव पर्याप्त रूप से बली है। योग कारक शनि की दृष्टि भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। अत. चौथा भाव काफी बली है।

चतुर्थेश—सूर्य चतुर्थेश है। वह दसवें भाव में है और बुध तथा बृहस्पति की

युक्ति है जो क्रमशः २ और ५ तथा ८ और ११ भाव के स्वामी हैं। सूर्य की दृष्टि चौथे भाव पर है। चतुर्थेश के साथ बुध की युक्ति काफी महत्त्वपूर्ण है।

विद्याकारक—विद्या कारक बृहस्पति विद्यास्थान (चतुर्थ) को देख रहा है और पूर्णतः बली है किन्तु ११ और ८वें भाव का स्वामी होने के कारण विद्याभाव का निर्धारण करने के लिए उसे छोड़ा जा सकता है।

निष्कर्ष—भाव, स्वामी कारक की प्रबल स्थिति से जातक की उच्च शिक्षा का संकेत मिलता है—बृहस्पति और बुध ज्योतिष में प्रवीणता के द्योतक हैं, बृहस्पति कानून में छात्रवृत्ति को दर्शाता है तथा यह वैदिक अध्ययन का भी द्योतक है और शनि की दृष्टि से अंग्रेजी भाषा और साहित्य में प्रवीणता का संकेत मिलता है। यहाँ पर यह अध्ययन किया जा सकता है। शुक्र संगीत का कारक है। वह चन्द्रमा से नवम तथा विद्याकारक से एकादश भाव में है। इससे यह संकेत मिलता है कि जातक की संगीत में रुचि है। इस विषय में उपलब्धि किसी विशेष क्षेत्र में निहित नहीं है। वह इतिहासकार, ज्योतिषी, अधिक भाषा जानने वाला, साहित्यकार और उच्च कोटि का वकील था। अध्ययन के क्षेत्र में उसकी उपलब्धियां विद्याभाव और कारक की स्थिति और बल के कारण थी।

कुण्डली सं० ७७—जन्म तारीख २६–७–१८५६, डबलीन—अर्द्धरात्रि

राशि

नवांश
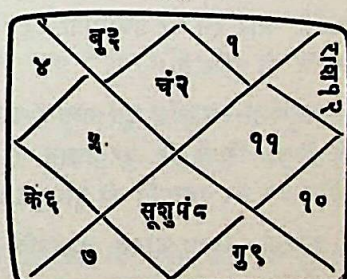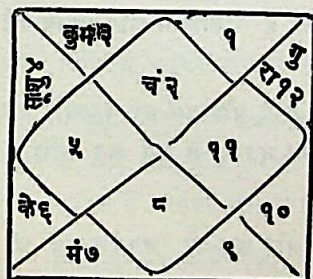
चन्द्रमा की दशा शेष ६–६–१८ वर्ष

चौथाभाव—चौथे भाव में सिंह राशि है। वहाँ पर कोई भी ग्रह नहीं है किन्तु उस पर शनि की दृष्टि है। नवांश में चौथे भाव पर बृहस्पति की दृष्टि है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश सूर्य लग्नाधिपति सूर्य के साथ कर्क में है और उस पर विद्या के कारक बृहस्पति की दृष्टि है। नवांश में भी सूर्य लग्न से सातवें भाव में शुक्र और मंगल के साथ है।

विद्याकारक—विद्या कारक बृहस्पति उच्च स्थिति में लग्न और चन्द्र लग्न से

क्रमशः ८वें और ११वें भाव का स्वामी होकर ग्यारहवें भाव में अपनी राशि में है। तथा उसपर योग कारक शनि की दृष्टि है।

निष्कर्ष—चूंकि भाव, स्वामी और कारक उत्तम स्थिति में हैं अतः जातक पर्याप्त प्रतिभा वाला है। विद्या कारक वृहस्पति ११वें तथा बुद्धि का ग्रह बुध दूसरे में होने से लेखन के माध्यम से वित्तीय लाभ और जनता का प्यार प्राप्त होने का संकेत मिलता है।

कुण्डली सं० ७८—जन्म तारीख ३०-११-१९५८, समय ४.२५ बजे संध्या (स्था० स०) (अक्षांस २३°३३' देशा० १०°८' पूर्व)

राशि

नवांश
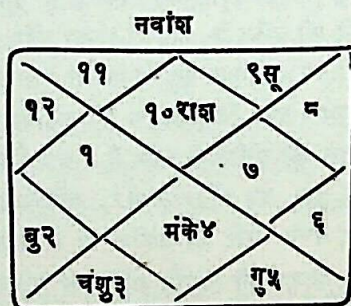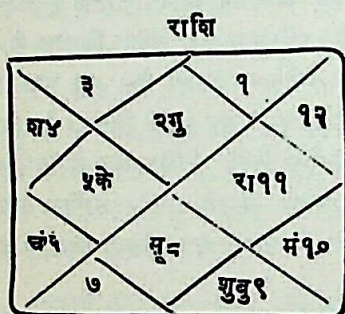
चन्द्रमा की दशा शेष २-३-० वर्ष

चौथा भाव—चौथे भाव में सिंह राशि है। इस राशि में रहस्यवादी ग्रह केतु स्थित है और इस पर तथ्यवादी ग्रह मंगल की दृष्टि है नवांश में चौथे भाव पर वृहस्पति की दृष्टि है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश सूर्य सप्तम भाव गुप्त राशि में है और इस पर वृहस्पति की दृष्टि है जो किसी भी बुरे प्रभाव से मुक्त है। पुनः नवांश में सूर्य धनु राशि में है और उस पर वृहस्पति की दृष्टि है।

कारक—विद्या कारक वृहस्पति लग्न में है और उस पर चतुर्थेश सूर्य की दृष्टि है।

निष्कर्ष—शिक्षा और अध्ययन को नियन्त्रित करने के तीनों ही तथ्य पर्याप्त रूप से बली हैं। चूंकि चौथे भाव में केतु स्थित है और उस पर मंगल की दृष्टि है। इससे यह संकेत मिलता है कि जातक दिव्यदर्शी है फिर भी तथ्य विज्ञान का ज्ञाता जातक भौतिक विज्ञान का ज्ञाता है परन्तु उसने जीव विज्ञान में भी कार्य किया।

कुण्डली सं० ७९—जन्म समय २८-८-१७४९, समय १२/७ बजे संध्या (स्था० स०) (देशा० ८°-४१' पूर्व, अक्षांश ५०°३' उत्तर)

राशि

नवांश
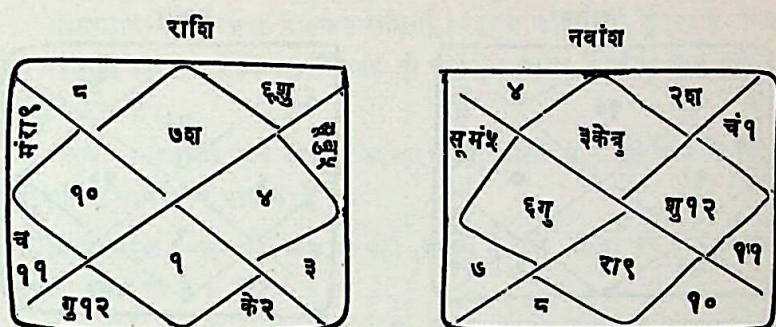
बृहस्पति की दशा शेष १२-४-२४ वर्ष

चौथाभाव--चौथे भाव में मकर राशि है और यह युक्ति या दृष्टि द्वारा किसी प्रकार के प्रभाव से मुक्त है। नवांश में चौथे भाव में बृहस्पति स्थित है और इस पर शुक्र की दृष्टि है।

चतुर्थेश—चौथे भाव का स्वामी शनि जो योग कारक है और उच्च का होकर लग्न में स्थित है। चन्द्र लग्न से चतुर्थेश शुक्र (शुक्र भी इस कुण्डली में योग कारक है) चन्द्रमा से अष्टम भाव में है और नीच भाग्य में है तथा अधि योग बना रहा है। पुनः नवांश में चतुर्थेश बुध अपनी ही राशि में लग्न में स्थित है।

कारक—बृहस्पति लग्न से उपचय में अपनी ही राशि में स्थित है। वह चन्द्र लग्न से दूसरे भाव में है तथा उस पर शुक्र की दृष्टि है। नवांश में चतुर्थेश और विद्याकारक में परस्पर केन्द्र का दृष्टि परिवर्तन है।

निष्कर्ष--कुण्डली संख्या ७९ अठारहवीं शताब्दी के यूरोप के एक बहुत बड़े कवि की हैं। यह ध्यान दें कि अध्ययन के भाव के संबंध में शुक्र, बृहस्पति और शनि के प्रभाव आपस में किस प्रकार मिश्रित हो रहे हैं और ये तीनों ग्रह युक्ति या स्थिति द्वारा किस प्रकार बल प्राप्त कर रहे हैं। इस कुण्डली का जातक ज्योतिष, दर्शन, कला और तत्वमीमांसा तथा रहस्यवादी लेखों में रुचि रखता था। नवांश में बृहस्पति की चौथे भाव में स्थिति और उस पर शुक्र की दृष्टि एक महत्वपूर्ण योग है जिससे जातक के कवि होने का संकेत मिलता है।

कुण्डली सं० ८० -- जन्म तारीख ७-८-१८५६, समय ४-० बजे संध्या (स्था० स०) (देशा० ५ घ० १० मि० २० से०, अक्षांश १३° उत्तर)

राशि

नवांश
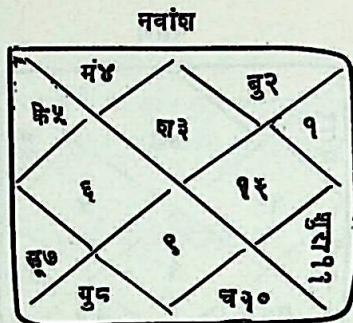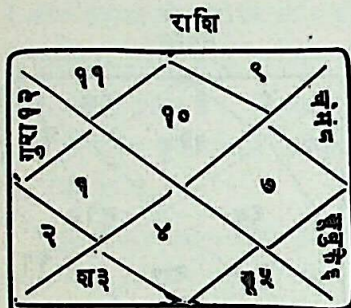
बुध की दशा शेष १०–१–१७ वर्ष

चौथाभाव—चौथे भाव में मेष राशि है और यह पीड़ित नहीं है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश मंगल नीच के चन्द्रमा के साथ ग्यारहवें भाव (चौथे से अष्टम) में है और उस पर बृहस्पति की दृष्टि है। नवांश में चतुर्थेश बुध १२वें भाव में है और उस पर बृहस्पति की दृष्टि है।

विद्याकारक—यद्यपि विद्याकारक बृहस्पति अपनी ही राशि में है, उस पर राहु का पर्याप्त प्रभाव है तथा शनि और नीच के शुक्र की दृष्टि है।

निष्कर्ष—विद्या कारक के पीड़ित होने के परिणाम स्वरूप जातक की शिक्षा बहुत ही साधारण विद्यालय में हुई। परन्तु चौथे भाव और स्वामी की प्रबल स्थिति के कारण जातक ने मानव और तत्त्व के बारे में ज्ञान प्राप्त किया और जातक ने जीवन में बहुत उच्च पद प्राप्त किया। वास्तव में इस कुंडली में अनेक राज योग हैं और यह वर्तमान अभ्युक्ति के क्षेत्र से बाहर है।

साधारणतः शिक्षा का अर्थ मान्यता प्राप्त संस्थाओं में अध्ययन का आवश्यक पाठ्यक्रम पूरा करके कुछ विशिष्टता प्राप्त करना है न कि स्व अध्ययय से ज्ञान प्राप्त करना।

कुंडली सं० ८१—जन्म तारीख २३–११–१९०२, समय ५–१६ बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश २३° ८, उत्तर देशा० ७२°४०′ पूर्व)

राशि

नवांश
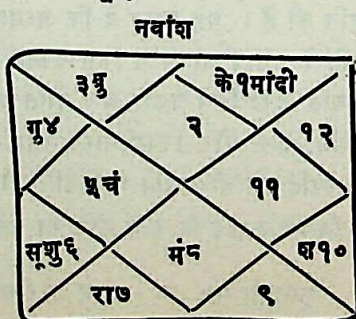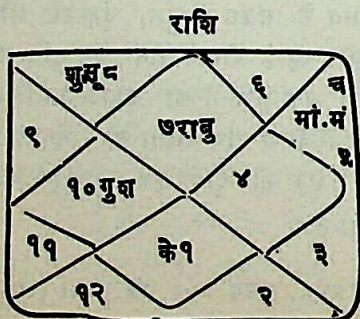
शुक्र की दशा शेष १३–११–१२ वर्ष

चौथाभाव—चौथे भाव में मकर राशि है। इसमें शनि और बृहस्पति स्थित है। बृहस्पति नीच का है किन्तु नीच भंग हो रहा है। नवांश में चौथा भाव युक्ति या दृष्टि से मुक्त है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश शनि जो योग कारक भी है, तीसरे और छठे भाव के स्वामी बृहस्पति के साथ चौथे भाव में है।

विद्याकारक—बृहस्पति पर भी वही प्रभाव हैं जो शनि पर हैं, नवांश में बृहस्पति उच्च का है।

निष्कर्ष—तीनों ही तथ्यों की प्रबल स्थिति पर ध्यान दें और विशेषकर स्वामी और कारक दोनों की उत्तम स्थिति पर ध्यान दें। चन्द्र लग्न से चौथा भाव शुक्र और सूर्य (चन्द्र लग्न का स्वामी) की स्थिति द्वारा प्रबल हो गया है इसके अतिरिक्त उस पर चतुर्थेश मंगल की दृष्टि है। मंगल और शनि की प्रमुख स्थिति के कारण जातक प्रोफेसर है। बृहस्पति की प्रबल स्थिति से वह पावर इंजीनियरी में विशेषज्ञ है।

कुण्डली सं० ८२—जन्म तारीख १६-३-१९०८, समय १०-५६ बजे प्रातः (आई एस टी) (अक्षांश १२°२', उत्तर देशा० ७५°३९' पूर्व)

राशि

रा३
मंशु१
गुरुमांदी
२
५चं
बु११
१०
६
८
७
के९

नवांश
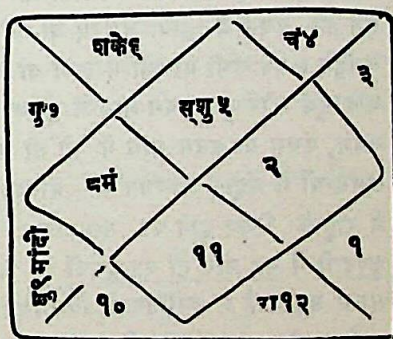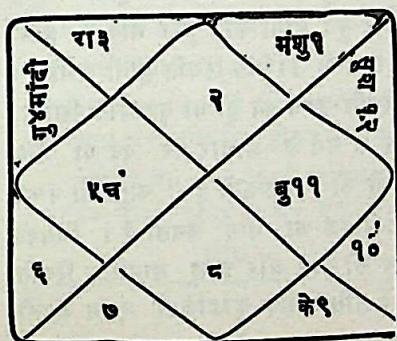
केतु की दशा शेष ०-०-१३ वर्ष

चौथा भाव—चौथे भाव में स्थिर राशि सिंह है और यहाँ चन्द्रमा स्थिर है जो तीसरे भाव का स्वामी है। अतः वह कलंकित है। इस पर पंचमेश बुध की दृष्टि है। नवांश में चौथे भाव में वृश्चिक राशि है। यहाँ पर इसका स्वामी मंगल स्थिर है। तथा उस पर मारक ग्रह शनि की दृष्टि है।

चतुर्थेश—चतुर्थेश सूर्य शुभ राशि में स्थित है तथा शनि की युक्ति एवं उच्च के बृहस्पति की दृष्टि है।

विद्याकारक—बृहस्पति तीसरे भाव में उच्च का है जबकि नवांश में वह तीसरे भाव में है।

निष्कर्ष—केवल विद्याकारक ही वास्तव में बली है। विद्यालय ज्ञान के अर्थ में जातक की सामान्य शिक्षा कम रही। अंग्रेजी में उसका ज्ञान लगभग शून्य था। इसका संकेत सूर्य और शनि की युक्ति से मिलता है। तथापि वर्तमान राजनीति, सामाजिक और राजनैतिक समस्याओं के सम्बन्ध में उसकी समझ विचित्र है। इस अर्थ में वह शिक्षित है कि उसने स्वयं अध्ययन किया है, उसने किसी कालेज या विद्यालय में शिक्षा प्राप्त नहीं की।

ऊपर हमने शिक्षा और अध्ययन से संबंधित चार कुण्डलियों पर विचार किया है, स्थायित्व,नैसर्गिक और प्राप्त स्वभाव और युक्ति वाले ग्रहों की संगति के आधार पर प्रत्येक योग भिन्न-भिन्न प्रभाव देने में सक्षम हैं। किसी विशेष महत्त्व या घटना को सुनिश्चित करने के विचार से योग के विश्लेषण में भाव पर प्रभाव डालने वाले सभी तथ्यों पर विचार करना चाहिए।

हमारा अनुभव यह बताता है कि संगीत में प्रवीणता के लिए शुक्र को चौथे या नवम या पंचम भाव में होना चाहिए। या इन भावों पर उसकी दृष्टि होनी चाहिए। संगीत में रुचि की भविष्य वाणी की जा सकती है यदि शुक्र चन्द्रमा से चौथे भाव में हो। ज्योतिष में प्रवीणता के लिए बुध को चौथे भाव में होनी चहिए, सूर्य को पंचम में होना चाहिए या सूर्य और बुध दोनों को दूसरे भाव में होना चाहिए। इन सभी मामलों में लग्न या चन्द्र लग्न से उपरोक्त स्थिति होनी चाहिए। यदि सूर्य और बुध पंचम भाव में हो या वृहस्पति उच्च का हो या वृहस्पति द्वितीय, नवम, पंचम या दसम भाव में हो तो जातक के धर्म के आधार पर वेद या अन्य धर्मग्रन्थों में महान् अध्ययन की भविष्य वाणी की जा सकती है। चतुर्थ या पंचम में राहु के स्थित होने पर साधारणतः कूटनीतिज्ञ का योग बनता है। जिसकी कुण्डली में यह योग हो वह दूसरों के दिमाग की बातें और चालू मानसिक स्थिति समझ सकता है। ज्योतिष के विद्यार्थियों को अधिकाधिक कुण्डलियाँ एकत्र करनी चाहिए और वास्तविक परिणाम को ध्यान में रखते हुए योगों का अध्ययन करना चाहिए।

सवारी और जायदाद

चौथा भाव वाहन और सवारी के लिए होता है। हमें सवारी के कारक पर भी ध्यान देना चाहिए अर्थात् शुक्र। वाहन की प्राप्ति के लिए महत्त्वपूर्ण योग एक यह होता है कि चतुर्थ और नवम भाव के स्वामियों की लग्न या लग्न से सप्तम भाव में युक्ति हो। यदि चौथे भाव के अधिपति के साथ शुक्र चौथे या ग्यारहवें भाव में हो तो साधारण वाहन का मालिक होता है। यदि एकादश, दशम

या नवम भाव में चतुर्थेश के रूप में शुक्र (यदि लग्न कुम्भ या कर्क हो तो यह सम्भव है) या चन्द्रमा के साथ चतुर्थेश की युक्ति हो तो वाहनों पर कब्जा का संकेत मिलता है। वाहन कारक शुक्र है और वाहन स्थान चतुर्थ भाव है। इन तथ्यों और चतुर्थेश पर विचार करने के वाद हम वाहन योग की भविष्य वाणी कर सकते हैं। वाहनों की प्राप्ति के भी अलग-अलग ग्रह हैं। बन्द मोटर गाड़ी और साइकल या बैलगाड़ी को एक बरावर नहीं किया जा सकता जबकि ये सभी वाहन की श्रेणी में आते हैं। चौथे भाव में वृहस्पति की स्थिति या दृष्टि और शुक्र की सप्तमभाव में स्थिति से फिटिंग गाड़ी की प्राप्ति का निश्चित संकेत मिलता है। इस सम्बन्ध में भावरथ रत्नाकर के मेरे अंग्रेजी अनुवाद के अध्याय IV की ओर पाठकों का ध्यान दिलाया जाता है। जिसमें वाहन या गाड़ी की अधिप्राप्ति के अनेक योग दिए गए हैं।

मकान की प्राप्ति के सम्वन्ध में झोपड़ी और आलीशान भवन दोनों एक ही श्रेणी में आते हैं। इनमें सिर्फ अंश का अन्तर होता है। कारक और समुचित अधिपति के नैसर्गिक बल, बुरे प्रभाव, प्रबल स्थिति से यह पता लगता है कि जातक के पास झोपड़ी होगी या महल। निम्नलिखित योग से मकान की प्राप्ति का संकेत मिलता है। यदि लग्नेश या सप्तमेश लग्न या चौथे भाव में हों, चतुर्थेश लग्न या केन्द्र में वली होकर स्थित हो, चतुर्थेश गोपुर, मृद्व या सिंहासन के षष्ठ्यंश में हो, वाहन कारक अपने ही त्रिशांश में हो, चतुर्थेश और दशमेश की केन्द्र में युक्ति हो और शुक्र बली होकर चौथे भाव में स्थित हो। उपरोक्त योगों को लागू करते समय ज्योतिषी को अपने कौशल का प्रयोग करना चाहिए। और प्रो० बी० सूर्य नारायण राव कहते हैं कि 'ज्योतिषी का कौशल' इन मिनारों की व्याख्या और व्यापकता पर आधारित होना चाहिए।

कुंडली सं० ८३— जन्म तारीख १२–३–१८६३, समय २–३ बजे प्रातः (अक्षांस २२°२० उत्तर, देशा० ४ घं० ५३ मि० पूर्व)

राशि

नवांश
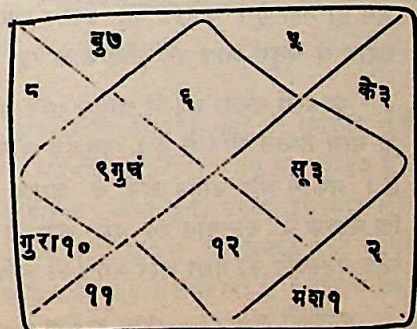
बुध की दशा शेप १४–७–६ वर्ष

उपरोक्त कुण्डली साधारण है। चतुर्थेश वृहस्पति एकादश में है जबकि चौथे भाव में उच्च का शुक्र स्थित है। पुनः 'चन्द्र लग्न से चतुर्थेश शनि एकादश भाव में है और चौथे भाव पर पंचमेश वृहस्पति की दृष्टि है और वहाँ पर दशमेश स्थित है। जातक ने अपने जीवन काल में अनेक आरामदेह सवारियां तथा आलीशान भवन प्राप्त किये।

कुण्डली सं० ८४—जन्म तारीख ३०-७-१८६३, समय २-० बजे प्रातः (अक्षांश ४२°५ उत्तर, देशा० ८३°५' पश्चिम)

राशि

९ | ७
च१० | ८रा | शगुशु६
११ | मं५
१२ | के२ | सूबु४
१ | ३

नवांश
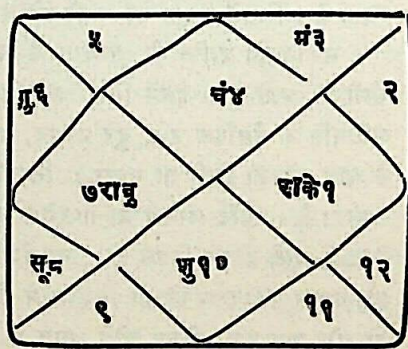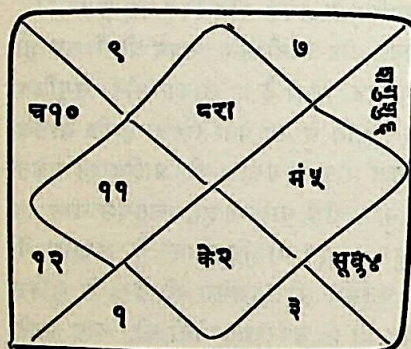
चन्द्रमा की दशा शेष २-४-२९ वर्ष

ऊपर एक विशिष्ट कुण्डली दी गई है जिसमें जातक के कब्जे में अनेक मकान और वाहन थे। इस तथ्य पर ध्यान दें कि चतुर्थेश शनि द्वितीयेश और पंचमेश वृहस्पति और सप्तमेश शुक्र के साथ ११वें भाव में हैं। वाहन कारक शुक्र का नीच भंग हो रहा है। जबकि गृह कारक मंगल न केवल लग्नाधिपति है बल्कि दसम स्थान से चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है।

कुण्डली संख्या ८५ में लग्नेश शनि चौथे भाव में है। चतुर्थेश शुक्र पंचमेश बुध के साथ सप्तम भाव में है। चतुर्थेश और दसमेश की सप्तम भाव में युक्ति हो रही है। मकान और वाहन दोनों के कारक चन्द्रमा से चौथे भाव में हैं। यह ध्यान दें कि जातक ने वृहस्पति की दशा शुक्र की भुक्ति में एक आलीशान कार प्राप्त की और वृहस्पति की दशा और मंगल की भुक्ति में एक आलीशान मकान प्राप्त किया।

कुण्डली सं० ८५—जन्म तारीख ८-८-१९१२, समय ७-३५ बजे संध्या (आई एस टी) (अ० १३° देशा०, ५ घं० २० से० पूर्व)
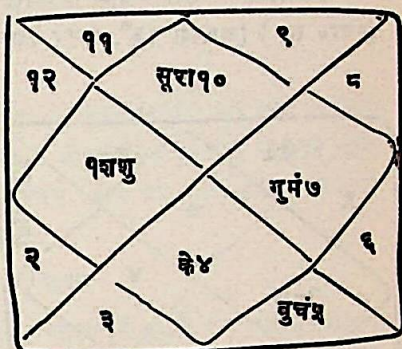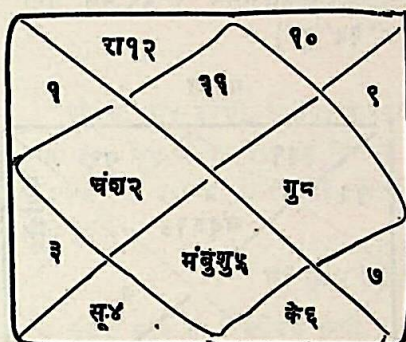
मंगल की दशा शेष ५-८-६ वर्ष

कुण्डली सं० ८६—जन्म तारीख २६-९-१९०१, समय १२-२० बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश १०°२५', उत्तर देशा० ५ घं० ५४ मि० पूर्व)
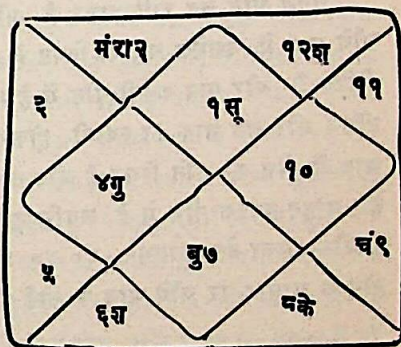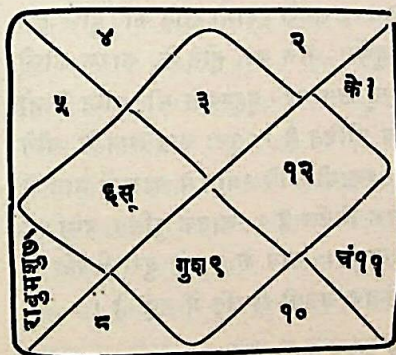
राहु की दशा शेष १६-१-१८ वर्ष

कुण्डली सं० ८६ में चौथे भाव में कन्या राशि है और यहाँ पर तृतीयेश सूर्य स्थित है तथा अष्टमेश शनि की दृष्टि है। चतुर्थेश बुध समान रूप से पीड़ित है। जातक को आराम देह कार का आनन्द थोड़े दिन प्राप्त हुआ परन्तु उसे कार और नौकरी दोनों से वंचित होना पड़ा क्योंकि कर्ज और सट्टा से वह अनन्त कष्ट में पड़ गया और उसके लेनदार दिनरात उससे मांग करने लगे। लेनदारों से बचने के लिए इधर उधर घूमने लगा और अपने परिवार तथा बच्चों से दूर चला गया मंगल के साथ बुध की युक्ति—राहु के कारण उसे सट्टा की प्रवृत्ति हुई और हानि हुई।

कुंडली सं० ८७—जन्म तारीख २८-८-१९०९, समय ९-५२ बजे प्रात: (स्था० स०) (अक्षांश १३°, उत्तर देशा० ७७°३५' पूर्व)

राशि

नवांश
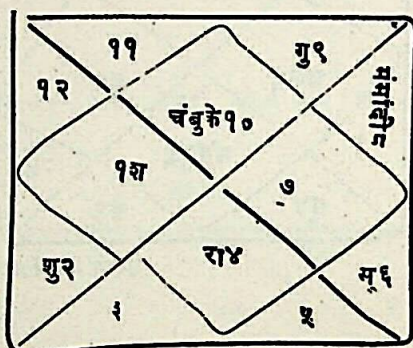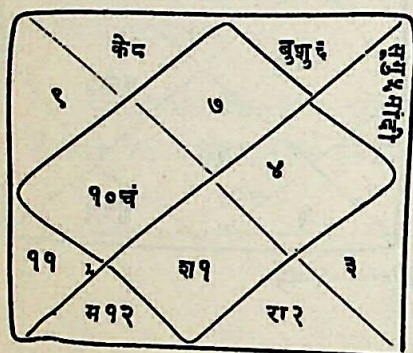
सूर्य की दशा शेष ३-७-२० वर्ष

चतुर्थ भाव चर राशि मकर है और उसपर उसके स्वामी शनि की दृष्टि है। चौथे भाव में दशमेश चन्द्रमा स्थित है। चतुर्थेश नीच का होने के कारण काफी पीड़ित है और पाप कर्तरी योग में है। किन्तु उस पर वृहस्पति की दृष्टि है जो तीसरे और छठे भाव का स्वामी होकर स्वयं पीड़ित है। पुन: चन्द्र लग्न से चौथे भाव में नीच का शनि स्थित है और वहां का स्वामी चौथे स्थान से बारहवें भाव में है। वाहन कारक नीच में है जबकि गृह कारक निर्बल है। जातक पुलिस जमादार है और उसका वेतन लगभग ६० रु० प्रतिमाह है। भाव के काफी बुरी स्थिति में होने के आधार पर चौथे भाव के कोई भी संकेतक अच्छी स्थिति में नहीं हैं।

ज्योतिष संबंधी इस सिद्धान्त को साबित करने के लिए सैकड़ों उदाहरण दिए जा सकते हैं कि कारकों का अधिकतम फल प्राप्त करने के लिए चौथे भाव और समुचित कारक को उत्तम स्थिति में होना आवश्यक है।

●

पंचम भाव के सम्बन्ध में

पाँचवां भाव बच्चों, आवेग, भावना, ईश्वर में विश्वास और पूर्व पुण्य के लिए होता है। कुछ सीमा तक यह चिन्तन प्रवृत्ति से भी संबंधित होता है। चौथे भाव के संबंध में प्रारम्भ में दी गई टिप्पणियां पंचम भाव पर भी समान रूप से लागू होंगी।

मुख्य विचारणीय तथ्य

पंचम भाव का विश्लेषण करते समय तीन महत्त्वपूर्ण बातों पर अवश्य विचार करना चाहिए अर्थात् (क) भाव (ख) स्वामी और (ग) कारक जो इस मामले में वृहस्पति होता है। विचार करने की दूसरी चीजें भी होती हैं अर्थात् पंचम भाव में स्थित ग्रह, पंचमेश और कारक के साथ युक्ति करने वाले ग्रह तथा योग कारक अर्थात् पंचम भाव के संबंध में विभिन्न योग का कारक ग्रह।

सामान्य योगों पर विचार करने से पूर्व आवे से सम्बन्धित कुछ बातों पर विचार करेंगे जिसका पंचम भाव से पता चलता है। राशि चक्र के कुछ राशि पंचम भाव के भाव मध्य में होंगे। इस राशि के स्वरूप और उस राशि में स्थित ग्रह या ग्रहों के स्वरूप तथा इस राशि पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों के स्वरूप के आधार पर जातक में आवेग के स्वरूप का विकास होता है। जब पंचम भाव में अग्नि तत्त्व की राशि हो तो जबतक कुण्डली में कोई अन्यथा प्रभाव न हो तबतक जातक दुराचारी नहीं हो सकता। जातक जीवन्त विलक्षण होता है। वह सांसारिक वस्तुओं को गंभीरता से लेता है और अपने महत्त्व को ध्यान में रखता है। अधिक होने पर जोश की स्वतन्त्रता,इस तत्त्व की विशिष्टता है। वह अन्य लोगों के लिए आक्रामक हो सकता है। ऐसा तब होता है यदि भाव मध्य ठीक-ठीक अग्नि तत्त्व के नक्षत्र में हो या पंचम भाव में मंगल स्थित हो। यदि पीड़ित न हो तो वह व्यक्ति जीवन में साहस के साथ मुकाबला करता है और मस्तिष्क चिन्तन के सागर में गोता लगाता रहता है। जबतक इस योग से चन्द्रमा दूर न हो तब तक उस व्यक्ति का आवेग ही जीवन होता है। उसकी यह विशेषता होगी कि वह मूर्ख को छोड़कर सबको माफ कर सकता है। दुष्टता के गुण से वह क्रोधित हो जाता है। तथापि इस केन्द्रीय विशेषता में नम्रता रहती है। एक साहित्यिक लेखक जिसमें इस गुण की अधिकता होती है, किसी विचार के विकास में उत्कृष्ट होता है। मस्तिष्क अपने क्षेत्र से दूर जाकर यात्रा करता है। विचारों में तालमेल बहुत कम होता है और

सामान्य प्रभाव तर्क विरुद्ध हो जाता है। जिसकी कुण्डली में पंचम भाव में सिंह राशि हो उस जातक में भविष्य के संबंध में दैवी दूरदर्शिता होगी। वह काफी उदार होगा। इस स्थिति में उत्पन्न महिला आदर्श पत्नी बनने में दक्ष होगी। वह अपने कार्य से प्रभावित करती है। सक्षेप में पंचम भाव में अग्नि राशि होने पर जातक, उग्र, अग्नि प्रकृति का होता है जो उसमें कार्य करने के लिए शक्ति को संचारित करता है। यह सक्रिय और सशक्त है, यह महत्त्वाकांक्षी और प्रेरक है। यह हमें आवेग के सागर में डूबने या दुर्बोध चिन्तन की हवाई किला में खोने से बचाता है।

यदि पंचम भाव में भूतत्त्व राशि (वृषभ, मकर और कन्या) हो तो वह व्यक्ति तीव्र स्मरण शक्ति वाला, काल्पनिक और गहन चिन्तन वाला होता है। उसे छिपी हुई वस्तुओं के प्रति आकर्षण होता है। उसे काबू में करना कठिन होता है क्योंकि वह दुर्ग्राह्य, कपटी, नास्तिक, हठी और कुछ कुछ चिड़चिड़ा होता है। यदि पंचम भाव वृषभ में हो तो वह व्यक्ति बहुत ही आशावादी होता है और जीवन को आसानी से लेता है। मकर में विपरीत स्थिति होती है। वह बहुत ही निराशा-वादी होता है और जीवन को काफी गंभीरता से लेता है। यदि यह राशि कन्या हो तो वृषभ और मकर की विशेषताएं मिली जुली होंगी। भू तत्त्व के कारण वह प्रत्यक्ष जीवन को रहस्यंमय मानता है। यह तत्त्व अन्तर्ज्ञान देने वाला तथा आत्मिक होता है। दूसरा गुण स्वभाव के फार्म और उद्देश्य के भीतर आन्तरिक जीवन में पश्चावलोकन है और कभी कभी रहस्य के विश्वास का हृदय से निराकरण कर देता है। सक्रिय दयालुता के निकट आलोचना और गणना तथा सहयोग, हठ, चिड़चिड़ापन, धन और ईर्ष्या के समीप, प्रेमी इस ग्रुप के कुछ महत्त्वपूर्ण गुण हैं।

पंचम भाव में वायु तत्त्व राशि अर्थात् मिथुन, तुला और कुंभ विभिन्न आवेग में समग्र उन्नति देते हैं। वायुतत्त्व का सम्बन्ध प्रयोजन की अपेक्षा आचरण चिन्तन की अपेक्षा कार्य करने से होता है। इस राशि में उत्पन्न व्यक्ति की यह विशेषता होती है कि वह साधारण और प्रसिद्ध—जीवन की गौण वस्तुओं को पसन्द करता है। वह लोगों के प्रति नम्र और गरीबों के प्रति इतिवृत होता है। तुला अति व्यावहारिक है जबकि कुंभ कम तथ्यवादी है। मिथुन सुनहरे मौके पर प्रहार करता है। हमें पंचम भाव पर मिले जुले-प्रभावों पर विचार करना है। सामान्यतः दुष्ट और दूरदर्शी होता है। पंचम भाव में वायुतत्त्व राशि में उत्पन्न व्यक्ति एक प्रसिद्ध दार्शनिक होता है। तथापि काफी उलझन होती है। उसमें शान्त रहने की क्षमता होती है। साधारण रूप से देखने में वह निश्चयवादी होता है और भाग्य द्वारा कभी कभी कार्य में रुकावट आ जाती है। तथ्य के रूप में अपने बीते हुए दिनों को याद करता है न कि पवित्र याददाश्त के लिए। वह परम्परा की छानबीन

करता है। वह धर्म और दर्शन में विद्यमान विधि और शर्तों को मानता है। अपनी चोटी पर पहुंचने पर वह मानव जीवन देने वाली शक्ति को स्वीकार करता है, विश्वव्यापी विधि के कार्य को अपरिहार्य मानता है। इस ग्रुप का गुण अनुशासन और रोक थाम है। आज्ञाकारिता और संयम इसका आदर्श होता है। कभी कभी कुम्भ के मामले में गंभीरता और बातों की गहनता होती है। संक्षेप में पंचम भाव में वायुतत्व राशि में उत्पन्न व्यक्ति में विश्व पर शासन करने के लिए आवश्यक साधारण ज्ञान होता है। वह वास्तविकता के प्रति जागृत होता है। उसके अपने गुण होते हैं जो किसी और तत्व से प्राप्त नहीं हो सकता। वह हमें यह महसूस करने पर बाध्य करता है कि तथ्य वास्तविक है जिसका हमें अवश्य मुकाबला करना चाहिए तथा स्वीकार करते हैं—हमें उससे भागने या उसे तोड़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

यदि पंचम भाव जलतत्व राशि (कर्क, वृश्चिक और मीन) हो तो मस्तिष्क की प्रवृत्ति में संतुलन की प्रधानता होती है। वह व्यक्ति निष्पक्ष होता है, उसमें मध्य शक्ति और दार्शनिकता होती है तथा उसमें संतुलन की भावना होती है। उसमें व्यंग और प्रहसन तथा गंभीरता के मिश्रित गुण होते हैं। मानसिक स्थिति शान्त रहती है परन्तु दृढ़ प्रयास करता है। वृश्चिक के पूंछ में कांटा होता है और इस पर निगरानी रखनी है।

वह व्यक्ति अटल, यथार्थ और त्रुटि निकालने वाला होता है। फिर भी वह न्यायी और तटस्थ आलोचना की शक्ति का प्रदर्शन करता है। कपट पूर्ण विवेक छिपा रहता है। उसकी मुख्य विशेषता हठी होना है। वह सहानुभूति, दृढ़ता और आवेग का प्रदर्शन करेगा और वह कुछ कुछ आत्म विश्वासी होता है।

जब पंचम भाव में मीन राशि हो तो वह व्यक्ति परेशान रहता है किन्तु उसका मस्तिष्क सृजनकारी तथा काल्पनिक विचारक होता है। वह जिज्ञासु कल्पना के साथ घिरा रहता है। इस राशि में उत्पन्न व्यक्ति के लिए स्पष्ट रूप से व्याख्या करना कठिन होता है। वह हमेशा अपनी असलियत छिपाने की कोशिश करता है और आत्मसम्मान तथा अनुमोदन की अति प्रचुरता होगी। संक्षेप में कल्पना उर्वरक होती है और स्वभाव साधन सम्पन्न होता है। मानसिक स्थिति में अधिक अभिमान होता है।

यह ध्यान देने योग्य है कि उपरोक्त विशेषताएं तब पाई जाती हैं यदि कतिपय तत्व की राशि पंचम भाव में हो। वास्तविक मानसिक स्थिति राशि और ग्रह तथा नक्षत्र के वास्तविक मिले जुले प्रभावों पर निर्भर करती है। यद्यपि कर्क, वृश्चिक और मीन राशि एक ही श्रेणी में आती हैं फिर भी प्रत्येक की अपनी अपनी विशेषताएं हैं। यहाँ पर ज्योतिषी को अपनी निर्णय शक्ति का प्रयोग करना है।

पंचमेश के विभिन्न भावों में स्थित होने पर क्या फल होता है

प्रथम भाव में—यदि पंचमेश के साथ अनुकूल युक्ति हो तो वह व्यक्ति कई नौकरों का स्वामी होता है, न्यायाधीश या मंत्री होता है जिसे दुष्टों को सजा देने की शक्ति होती है। उसे ईश्वर की कृपा प्राप्त होगी; बच्चे कम होंगे; दूसरों को खुशी प्रदान करेगा। यदि पंचमेश पीड़ित हो तो सन्तान नहीं होगी; वह क्षुद्र देवता की प्रार्थना करेगा; दुष्ट प्रकृति का होगा और दुष्ट लोगों के दल का नेता बनेगा; वह पुंछ वाले जीव की तरह डंक मारने वाला होगा। यदि अधिपति संयत रूप से उत्तम हो तो मिले जुले परिणाम होंगे।

दूसरे भाव में—यदि पंचमेश अनुकूल स्थिति में हो तो उस व्यक्ति को सुन्दर पत्नी मिलती है और बच्चे उत्तम आचरण वाले होते हैं। सरकार या राजा से धन प्राप्त होता है। वह विद्वान तथा उत्तम ज्योतिषी बनेगा। यदि अधिपति कम-जोर और पीड़ित हो तो गरीब; सरकार की अप्रसन्नता से धन की हानि; अपने परिवार के भरण पोषण में असमर्थ होगा; परिवार में कष्ट तथा मतभेद रहेगा; किसी शिव मन्दिर में पुजारी बनेगा।

तीसरे भाव में—अनुकूल स्थिति में हो तो अनेक बच्चों और भाई वाला होगा। यदि अनुकूल स्थिति में न हो तो बच्चे नहीं रहेंगे, भाइयों में मतभेद रहेगा और व्यवसाय में निरन्तर कष्ट रहेगा। वह कृपण होगा।

चौथे भाव में—यदि अनुकूल स्थिति में हो तो उस व्यक्ति के कम पुत्र होंगे, उनमें से एक खेती करेगा। माँ दीर्घ जीवी होगी। वह किसी शासक का सलाहकार बन सकता है या उसका अध्यापक बन सकता है। यदि अधिपति पीड़ित हो तो बच्चे की मृत्यु का कारण बनता है। स्वामी संयत रूप से बली होने पर पुत्री देता है और कोई पुत्र नहीं होता।

पांचवें भाव में—यदि स्वामी अनुकूल स्थिति में हो तो अनेक पुत्र होते हैं, वह अपने कार्य में महान होता है; अन्यथा वह मन्त्रशास्त्र में निपुण होता है तथा शक्ति वाले लोगों के साथ मित्रता होती है। वह गणित में भी निपुण हो सकता है या किसी धार्मिक संस्था का प्रधान हो सकता है। यदि अधिपति पीड़ित हो तो विपरीत परिणाम की आशा करनी चाहिए। बच्चों की मृत्यु हो जाएगी; वह अपना वचन नहीं निभाएगा; अस्थिर मस्तिष्क तथा कठोर होगा।

छठे भाव में—यदि पंचमेश अनुकूल स्थिति में हो तो जातक के मामा प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे। उसे अपने ही पुत्र के साथ दुश्मनी होगी। यदि स्वामी पीड़ित हो तो सन्तान नहीं होगा और उसे मामा की ओर से गोद लेना पड़ेगा।

सातवें भाव में—जब अधिपति अनकूल स्थिति में हो तो जातक के पुत्र विदेश

में रहते हैं और धन तथा प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। अथवा उसके अनेक बच्चे होंगे। वह भी प्रसिद्ध, विद्वान, सम्पन्न, स्वामीभक्त तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जब अधिपति पीड़ित हो तो बच्चे नहीं रहेंगे, उनमें एक की नाम और प्रसिद्धि प्राप्त करने के बाद विदेश में मृत्यु हो जाएगी।

आठवें भाव में—कर्ज के कारण पैत्रिक सम्पत्ति का नाश हो जाएगा। परिवार का विनाश हो जाएगा। वह फेफड़े के रोग से पीड़ित रहेगा। वह चिड़चिड़ा, अप्रसन्न रहेगा किन्तु गरीब नहीं रहेगा।

नवम भाव में—वह अध्यापक या गुरु बनेगा। प्राचीन मन्दिरों, कुओं, धर्मशालाओं और बगीचों की मरम्मत कराएगा। एक पुत्र वक्ता या लेखक के काम में विशिष्टता प्राप्त करेगा। यदि अधिपति पीड़ित हो तो उस पर दैवी प्रकोप होगा और परिणाम स्वरूप उसके भाग्य का विनाश होगा।

दशवें भाव में—यदि अधिपति अनुकूल स्थिति में हो तो राजयोग बनता है। भू सम्पत्ति प्राप्त होती है, शासकों की शुभ इच्छा अर्जित करता है; एक पुत्र परिवार के लिए रत्न बनता है। यदि सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सी आई डी में जाता है। यदि अधिपति पीड़ित हो तो शासकों के प्रकोप का सामना करना पड़ता है और विपरीत परिणाम होते हैं।

११वें भाव में—पुत्रों के माध्यम से लाभ और सभी उपक्रमों में सफलता; अमीर और विद्वान बनता है तथा दूसरों की मदद करता है; अनेक पुत्र होंगे; वह लेखक बनेगा।

बारहवें भाव में—अन्तिम वास्तविकता जानने की इच्छा होगी। वह वैराग्य का जीवन व्यतीत करेगा; आध्यात्मिक बनेगा तथा एक स्थान से दूसरे स्थान का भ्रमण करेगा और अन्त में मोक्ष प्राप्त करेगा।

यह देखने में आएगा कि उपरोक्त योग सामान्य हैं और अधिपति के कारक मारक या संयत स्वरूप अथवा अन्य ग्रहों या स्वामियों की युक्ति और दृष्टि पर विशेष विचार करने के बाद सावधानीपूर्वक इनका प्रयोग किया जाना चाहिए।

महत्वपूर्ण योग

पंचम भाव से सम्बन्धित निम्नलिखित योग महत्त्वपूर्ण स्रोतों से चुने गए हैं और ये सामान्य स्वरूप के हैं। इनकी सही व्याख्या और स्पष्टीकरण ज्योतिषी के कौशल और बुद्धि पर आधारित है।

यदि पंचम भाव पर शुभ युक्ति या दृष्टि हो तो बच्चे होंगे। लग्नेश पंचम भाव में हो और पंचमेश बली हो या लग्नाधिपति और पंचमाधिपति के बीच

स्थान परिवर्तन हो तो बच्चे होते हैं। यदि पंचमेश के रूप में बृहस्पति बली हो और उस पर लग्नेश की दृष्टि हो तो जातक के अनेक बच्चे होते हैं। द्वितीयेश पंचम भाव में बली और उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो बच्चों के जन्म का संकेत मिलता है। बच्चों के जन्म का संकेत तब भी मिलता है जब पंचमेश जिस नवांश में है उसका स्वामी शुभ ग्रह के साथ हों या उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो अथवा जब पंचमेश शुभ नवांश में हो अथवा पंचमेश जिस नवांश में है उसका स्वामी लग्न में हो।

यदि पंचमेश ३, ६, या १२ वें भाव में हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो; जब पंचमेश अशुभ ग्रहों के बीच में पड़ा हो; जब पंचम भाव पर अशुभ ग्रह की दृष्टि हो; पंचमेश अनिष्ट ग्रह के साथ हो; जब पंचमेश क्रूर और नीच नवांश में हो; जब द्रेष्काण या नवांश का स्वामी द्वादशेश के साथ हो और पंचमेश पर दृष्टि डाल रहा हो; जब राहु पंचम भाव में हो और उस पर मंगल की दृष्टि हो;जब चन्द्रमा द्वारा दृष्ट शनि पंचम भाव में हो पंचमेश राहु के साथ हो; जब राहु और लग्नेश की पंचमेश के साथ युक्ति हो या पंचम भाव में स्थित हो तो बच्चों की शीघ्र मृत्यु हो जाती है।

जब लग्नेश पंचम भाव में हो और लग्न तथा चन्द्रमा की अनिष्ट ग्रहों के साथ युक्ति हो; यदि पंचम भाव में बुध हो और लग्न में मारक ग्रह हों; जब मारक ग्रह ४, ८ और १२ वें भाव में हों या विशेष रूप से पंचम भाव में हों और मंगल, शनि और सूर्य क्रमशः १, ८ और ५ वें भाव में हो या मंगल, शुक्र और चन्द्रमा द्विस्वभाव राशि (धनु को छोड़कर) में हों तो पुत्र का जन्म होता है। यदि शुक्र सप्तम में, चन्द्रमा दशम में और पंचमेश से पंचम भाव में अनिष्ट ग्रह हों तो जातक को कोई सन्तान नहीं होता। यदि चन्द्रमा या शुक्र की राशि में हो और उनकी युक्ति या दृष्टि हो तो पुत्रों का जन्म होता है। यदि पंचम भाव में मंगल हो और उस पर बृहस्पति या शुक्र की दृष्टि हो तो पहले बच्चे की मृत्यु हो जाती है। यदि बृहस्पति पंचम भाव में हो और पंचमेश शुक्र के साथ हों तो जातक कों ३२ वर्ष की आयु में बच्चा होता है।

यदि पंचमेश लग्न में हो या उस पर दृष्टि हो और लग्नेश भी पंचम के साथ इसी स्थिति में हो तो आज्ञाकारी बच्चों का जन्म होता है। यदि पंचमेश पीड़ित हो और उस पर लग्नाधिपति की दृष्टि न हो किन्तु मंगल और राहु की दृष्टि हो तो आज्ञाकारी बच्चों का जन्म होता है। लग्न में मेष या धनु राशि हो और सूर्य तथा शनि क्रमशः ५ और ८ वें भाव में हों और उन पर शुभ ग्रह का प्रभाव हो तो उस जातक के जीवन में काफी देर बाद बच्चा होता है। यदि पंचम भाव

में मिथुन, कन्या, मकर या कुम्भ राशि हो और शनि या मांदी की युक्ति हो तो जातक का दत्तक पुत्र होगा। जब मारक ग्रह ग्यारहवें भाव में हो और चन्द्रमा तथा शुक्र पंचम में स्थित हों तो पहली सन्तान लड़की होगी। यदि शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट सूर्य पंचम भाव में हो या कन्या लग्न में हो तथा शनि पंचम भाव में हो तो जातक के तीन बच्चे होंगे; यदि लग्न में तुला हो और शनि पंचम भाव में हो तो जातक के पाँच बच्चे हों। यदि लग्नेश और पंचमेश की आपस में दृष्टि परिवर्तन हो तो पुत्र अपने पिता का आज्ञाकारी होगा। यदि पंचम भाव में शनि, बुध और चन्द्रमा हो तो जातक परिवार को आगे चलाने के लिए पुत्र खरीदता है।

पंचम भाव में वृहस्पति होने पर पुत्र अच्छी बुद्धि और दिमाग वाला होता है और पंचम भाव में शनि होने पर पुत्र आलसी और दुष्ट होता है।

पंचम भाव में ग्रह

सूर्य—इस योग में जातक को कोई बच्चा नहीं होता, वह अमीर तथा सुखी होता है। उसकी आयु कम होती है। वह हृदय रोग से पीड़ित होगा वन क्षेत्रों में घुमता रहेगा; पर्वतारोही होगा। इस स्थिति से कठिनाई से बच्चे के जन्म का संकेत मिलता है।

चन्द्रमा—दिमाग की स्पष्टता, बच्चों से सुख, भूमि, रत्न और कीमती पत्थर की प्राप्ति, राज्य की सेवा करने के अवसर का संकेत मिलता है यदि चन्द्रमा पंचम भाव में हो। वह जातक इमानदार, विश्वासी, विद्वान, नम्र पुरुष, ईश्वर से डरने वाला और शत्रुहीन होगा। चिन्तन के प्रति प्रबल इच्छा का भी संकेत है। एक बच्चा प्रसिद्ध व्यक्ति बनेगा।

मंगल—अपनी पत्नी, मित्रों और बच्चों के लिए दयनीय, चिन्तन में हमेशा विचलन; प्रभावी, उद्दण्ड, कमजोर दिमाग वाला, चुगली करने वाला तथा अप्रसन्न होगा। वह उदरशूल से पीड़ित रहेगा और बच्चों की ओर से दुर्भाग्य रहेगा। सेक्स के आनन्द में रत रहेगा जिससे स्वास्थ्य बिगड़ेगा। स्त्री की कुण्डली में कष्टपूर्वक बच्चे के जन्म की भविष्यवाणी की जा सकती है।

बुध—विद्वान और सुखी; अनेक बच्चे होंगे। वह जातक सलाहकार या मन्त्री बन सकता है। मन्त्रशास्त्र में काफी तेज और विद्वान होगा। सेक्स के आनन्द में अधिक रत रहेगा जिससे जीवन शक्ति का अभाव हो जाएगा।

वृहस्पति—तर्क और कानून, मन्त्रशास्त्र में विद्वान, काफी तेज बुद्धिवाला, किसी राजा या महान व्यक्ति का गुरु या सलाहकार होगा। उसके मित्र अच्छे होंगे, उसके पास वाहन होगा तथा शालीन व्यक्ति होगा। अनेक बच्चे होंगे, वह ईश्वर से डरने वाला होगा और अपने बच्चों तथा मित्रों के साथ सुखी रहेगा।

शुक्र—कवि; अनेक मित्र और सुन्दर बच्चे होंगे, संतति से सुख; होशियार, धन प्राप्त करेगा, राज्य से आदर मिलेगा इस स्थिति से अधिक पुत्री और सट्टा में सफलता का भी संकेत मिलता है।

शनि—दुष्ट मस्तिष्क वाला और दुष्ट, रोजी और कमजोर, गरीब और दूसरों द्वारा घृणित। इस योग से बच्चों से दुख का संकेत मिलता है। भाग्य परिवर्तनशील होगा न कि स्थिर तथा उसका स्वभाव काफी कपटी होगा। मित्र तथा सम्बन्धियों के साथ झगड़ा और पारिवारिक जीवन में दुख।

राहु—उदरशूल से पीड़ित; दूसरों द्वारा गलत समझा जाना और मित्र का न होना; अनेक बच्चों की मृत्यु हो जाएगी, कठोर हृदय वाला तथा अपारम्परिक और हृदय रोग से पीड़ित होगा।

केतु—बच्चों की मृत्यु हो जाएगी, पेट में तकलीफ रहेगी, आवेग और भावना के सम्बन्ध में अनुपम अनुभव होंगे। जीवन में आगे चलकर अध्यात्म की ओर झुकाव होगा।

उपरोक्त परिणामों में अन्य स्वामियों की दृष्टि और युक्ति द्वारा परिवर्तन किया जा सकता है। यदि सूर्य पीड़ित हो तो सट्टा से हानि होगी और चचेरे भाइयों से मतभेद होगा। यदि चन्द्रमा मारक ग्रहों के साथ हो या उस पर उनकी दृष्टि हो तो बच्चों और अनैतिक लैंगिक सम्बन्धों से हानि होगी। यदि पीड़ित मंगल हो तो कुछ समय बाद बच्चों की मृत्यु हो जाती है। यदि पीड़ित ग्रह शनि हो तो दिमाग बिगड़ जाता है। पंचम भाव निम्न भावनाओं का द्योतक है। इस स्थिति में मंगल द्वारा पीड़ित चन्द्रमा अनैतिक लैंगिक सम्बन्धों को दर्शाता है। मंगल पीड़ित होने पर विपरीत सेक्स द्वारा बर्बादी और बदनामी होती है। यदि मंगल बली हो तो भूमि, साधन और फैक्ट्री से प्राप्ति होती। बच्चों से कष्ट और खतरा दर्शाता है। सट्टा में जाने की प्रवृत्ति होगी। पीड़ित मंगल बच्चों की ओर से चिन्ता देता है। यदि मंगल द्वारा पीड़ित हो तो प्रेम के सम्बन्ध में बदनामी होगी। आवेगी स्वभाव कारण पर विजय पाता है। यदि बृहस्पति की उत्तम दृष्टि हो तो सट्टा और लेखन से लाभ होता है।

यदि बृहस्पति बली हो तो जीवन सुचारु रूप से चलेगा। यदि पीड़ित हो तो पीड़ित करने वाले ग्रह के स्वभाव के अनुसार कष्ट होगा। बली शुक्र स्त्रियों से लाभ तथा अभिनेत्रियों या गायिकाओं के साथ अतिरिक्त वैवाहिक सम्बन्ध दर्शाता है। यदि पीड़ित हो तो अधिकरत रहने के कारण स्वास्थ्य की हानि होती है। यदि पीड़ित करने वाला ग्रह मंगल हो तो बच्चों पर स्नेह कम होगा। पीड़ित करने वाला राहु हो तो प्रेमालाप देता है। यदि शनि मंगल द्वारा पीड़ित हो तो

विशेषकर अधिक उम्र वालों के लिए अप्राकृतिक सम्बन्ध का खतरा होता है। बच्चों की मृत्यु होगी, डूबने या हृदय रोग का खतरा होगा। यदि शनि की स्थिति वृहस्पति द्वारा मजबूत हो तो खान से लाभ होता है।

राहु द्वारा पीड़ित होना बहुत खराब योग है। इससे बच्चों द्वारा बदनामी होती है। यदि शुक्र की राहु के साथ युक्ति हो तो समलैंगिक सम्बन्ध की प्रवृत्ति होती है। केतु द्वारा पीड़ित होने पर खूनी की प्रवृत्ति होंती है। जब उसे उत्तेजित किया जाता है और उसके अन्दर प्रतिशोध की भावना आती है तो वह व्यक्ति बेशर्म हो जाता है। एक या दो सन्तान के लिए जातक में मानवता के व्यवहार का अभाव रहता है। यदि शुक्र और केतु एक साथ हों तो वह व्यक्ति निष्काम प्रेम को चुनता है। यदि पीड़ित करने वाला ग्रह मंगल हो तो अनेक खतरा होंता है और परिवार समाप्त हो जाता है। पंचम भाव पर निर्णय करने तथा विभिन्न योगों की व्याख्या करने में अधिक कौशल की आवश्यकता होती है।

पंचम भाव के परिणामों के फलित होने का समय

पहले के अध्यायों में दिए गए भावों के परिणामों के फलित होने की व्याख्या के समय के बारे में जो पद्धति दी गई है उस पर सावधानीपूर्वक ध्यान देने पर कोई भी तीव्र बुद्धि वाला व्यक्ति उस सम्भावित अवधि का अनुमान लगा सकता है जब पंचम भाव से सम्बन्धित घटना फलीभूत होगी। किसी भाव का विश्लेषण करने के लिए और घटनाओं के फलीभूत होने की सम्भावित अवधि का पता लगाने के लिए ज्योतिष के विद्यार्थी को चाहिए कि अनुपात और उनमें अन्तर का सही अर्थ निकाले। काफी अनुभव पर आधारित व्याख्या की विधि का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना चाहिए और उन्हें समझना चाहिए। पहले प्रयास में असफलता मिल सकती है किन्तु बाद के प्रयासों में निश्चित ही सफलता मिलेगी। असफलता का कारण कुछ बातों की अनदेखी करना हो सकता है। जैसाकि हमने ऊपर कहा है, पंचम भाव मुख्यत: सन्तान के लिए होता है और बुद्धि आवेग और प्रसिद्धि भी पंचम भाव से देखी जाती है। हमें यह देखना होता है कि क्या जातक को अपने जीवन काल में पंचमेश की दशा मिलेगी। यदि पंचमेश की दशा जीवनकाल मे आने की सम्भावना नहीं है तो हम उन ग्रहों का पता लगाने की कोशिश करते हैं जो स्थिति या दृष्टि द्वारा पंचम भाव को प्रभावित करेंगे। क्या जातक के जीवन काल में उस ग्रह की दशा आएगी।

पंचम भाव से सम्बन्धित अवधि के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान देना चाहिए।

(क) अधिपति (ख) पंचम भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (ग) पंचम भाव

में स्थित ग्रह (घ) पंचमेश पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (ङ) पंचमेश के साथ युक्त ग्रह (च) चन्द्रमा से पंचमेश और पांचवें भाव का कारक ग्रह।

ऊपर दिए गए तथ्य पांचवें भाव पर प्रभाव डालने में सक्षम होते हैं। ये दशानाथ, भुक्तिनाथ या प्रत्यन्तर के स्वामी के रूप में ५ वें भाव पर अपना प्रभाव डालते हैं।

पंचम भाव को प्रभावित करने में सक्षम ग्रहों की दशा में उस भाव को प्रभावित करने में सक्षम ग्रहों की भुक्ति ५ वें भाव के सम्बन्ध में उत्तम फल देती है। ५ वें भाव से जो ग्रह सम्बन्धित नहीं हैं उनकी दशा में ५ वें भाव से सम्बन्धित ग्रहों की भुक्ति ५ वें भाव के सम्बन्ध में सीमित फल देती है। इसी प्रकार ५ वें भाव से सम्बन्धित ग्रह की दशा में उन ग्रहों की भुक्ति जिनका ५ वें भाव से सम्बन्ध नहीं है, में ५ वें भाव के सम्बन्ध में सीमित सीमा तक फल होता है।

परिणामों का स्वरूप

साधारणतः पंचम भाव को प्रभावित करने में सक्षम ग्रहों की दशा और भुक्ति में निम्नलिखित परिणाम की आशा की जा सकती है। परन्तु यह अलग-अलग कुण्डली की अपनी विशेषता पर आधारित होगा।

पंचमेश अपनी राशि में हो या अन्य प्रकार से बली हो। पुत्रों का जन्म होगा और अधिकारियों की कृपा प्राप्त होगी। यदि पंचमेश लग्न में विपरीत नवांश में हो तो पुत्रों के साथ मतभेद होगा। यदि पंचमेश छठे भाव में षष्ठेश के साथ युक्त हो तो जातक के मामा को सम्पन्नता होगी या जातक को मामा से लाभ प्राप्त होगा। यदि राजनीति में हो तो उसे राजनैतिक शक्ति प्राप्त होगी। यदि पंचमेश उपरोक्त स्थिति में हो और नवांश में ६, ८ या १२ वें भाव में हो तो सम्पन्नता का नाश होगा और वह नाशक के कोप का शिकार होगा। यदि मिले जुले प्रभाव हों तो परिणाम भी मिले जुले होंगे।

जब पंचमेश सप्तमेश के साथ सप्तम भाव में हो तो अपने पुत्र की विदेश यात्रा या आवास से जातक को लाभ होगा। आर्थिक लाभ होगा और जातक विद्वान तथा धार्मिक लोगों के साथ का लाभ उठाएगा। यदि विवाहित न हो तो शादी होगी और नया परिवार बनेगा। यदि पंचमेश पीड़ित हो तो बच्चों को कष्ट होगा।

जब पंचमेश अष्टमेश के साथ अष्टम भाव में हो तो बच्चों की मृत्यु होगी या पत्नी का गर्भपात होगा, अपने लोगों के बीच मतभेद होगा, अधिकारी और शासक की अप्रसन्नता प्राप्त होगी तथा कारबार में हानि होगी। उस व्यक्ति का पिता के साथ झगड़ा होगा और अपने परिवार से नफरत करेगा। जब अष्टमेश

पीड़ित हो या जब पंचमेश नवांश में अष्टमेश से ६, ८, १२ वें भाव में हो तो बुरे प्रभाव पर्याप्त रूप से कम हो जाते हैं।

जब पंचमेश नवमेश के साथ नवम भाव में हो और लग्नाधिपति कमजोर हो तथा नवमेश के साथ हो तो जातक को बचपन में पिता से सुख प्राप्त होता है और पंचमेश की दशा के दौरान पिता से सुख मिलता है। पैत्रिक सम्पत्ति मिलती है प्रशासनिक या अवैतनिक पद प्राप्त होता है। पिता को शासक वर्ग की कृपा प्राप्त होती है। जब पंचमेश बहुत प्रबल हो तो काफी सम्पन्नता की आशा होगी। ऐसा तभी होगा यदि पंचमेश मंगल हो या ५ वें भाव में मंगल की राशि हो। यदि पंचमेश सूर्य हो या ९ वें भाव में सिंह राशि हो तो जातक धार्मिक पुस्तकों का लेखक होगा। नए प्रशासनिक कार्य या अपने व्यवसाय या स्त्री के साधन से धन की प्राप्ति होगी, यदि पंचमेश क्रमशः चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र हो या नवम भाव का स्वामी उपरोक्त तीनों ग्रहों में से कोई एक हो।

जब पंचमेश दशमेश के साथ दशम भाव में हो या लग्नेश के साथ लग्न भाव में हो या लग्न के नवांश में हो या पंचमेश और दशमेश दोनों ही लग्न में हों तो पंचमेश की दशा और दशमेश की भुक्ति के दौरान या पंचमेश की दशा में लग्नाधिपति की भुक्ति में उस व्यक्ति को राज्य प्राप्त होता है या किसी राज्य का प्रधान बनता है या सम्बन्धित स्वामी के बल के आधार पर मन्त्री बनता है। जब स्वामी वर्गोत्तम में हो तो राजा बनेगा या किसी राज्य का प्रधान बनेगा। जब पंचमेश बली है जैसा कि ऊपर बताया गया है, किन्तु लग्नाधिपति कमजोर हो तो पंचमेश की दशा के दौरान पुत्र को राजयोग का फल मिलेगा।

उपरोक्त योग के निर्धारण में सम्बन्धित व्यक्ति के व्यवसाय पर सावधानी पूर्वक विचार करना चाहिए। एक राजनीतिज्ञ किसी राज्य का प्रधान या मन्त्री बन सकता है। जो सरकारी सेवा में है वह पदोन्नति पाकर ऊँची स्थिति में पहुँच सकता है। एक व्यापारी को भरपूर लाभ हो सकता है जबकि एक कृषक को अपने उक्त व्यवसाय में काफी लाभ होगा। कुण्डली की व्याख्या करते समय विभिन्न संकेतों को एक साथ मिलाने के लिए अपने साधारण ज्ञान का प्रयोग करना चाहिए।

जब पंचमेश एकादशेश के साथ एकादश भाव में हो तो वह आदमी अमीर होगा और व्यापार में लाभ होगा। यदि पंचमेश की उपरोक्त स्थिति के अतिरिक्त द्वितीयेश राशि या नवांश से काफी उच्च का हो तो प्रचुर धन और भाग्य का प्रवाह होता है। वह समुद्री उत्पादों से या जहाज निर्माण से धन अर्जित करेगा, यदि पंचम भाव चर और जलीय राशि में हो। इसमें अन्तर्ग्रस्त ग्रहों और राशियों क स्वभाव और विशेषताओं के आधार पर प्रचुर धन का प्रवाह होगा।

जब पंचमेश एकादशेश के साथ एकादश भाव में हो तो उसे पुत्रों या सरकारी साधनों या बड़े भाई से लाभ होगा या उसे नया कार्य मिलेगा। पंचमेश की दशा में जब वह एकादश भाव में एकादशेश के साथ हो तो यह योग दशा है, यह काफी लाभप्रद फल देने में सक्षम है। यदि पंचमेश विपरीत नवांश में हो तो उल्टे परिणाम की आशा की जा सकती है। कारोबार में हानि होगी, सरकारी जीवन में गतिरोध आएगा। उदासी, मतभेद और वित्तीय कष्ट होगा।

जब पंचमेश द्वादशेश (षष्ठेश युक्त) के साथ द्वादश भाव में हो तो मानसिक उत्पीड़न होगा। पिता और पुत्र के बीच मतभेद होगा, शासक क्रोधित होंगे। उपरोक्त योग में षष्ठेश के न रहने पर जातक होशियार होता है और अच्छे कामों में खर्च करता है।

जब पंचमेश लग्न में लग्नेश के साथ हो तो संबंधित ग्रहों के स्वभाव के अनुसार जातक अपने समुदाय या राजनैतिक पार्टी का नेता बनता है। वह अमीर होगा और उसके पास सवारियाँ होंगी। यदि दशा बाल्य काल में आती है तो वह धनी परिवार में गोद लिया जाएगा। यदि यह दशा मध्य आयु में आती है तो जातक को उत्तम सन्तान होगी। यदि पंचमेश नवांश में लग्नाधिपति से ६, ८ या १२ वें भाव में हो तो उल्टे परिणाम की आशा करनी चाहिए। यदि उपरोक्त योग में पंचमेश प्रबल स्थिति में हो तो वह अपनी दशा में मन्त्रसिद्धि करने में सक्षम होता है। जातक किसी धार्मिक स्थल या संन्यास में जाता है।

जब पंचमेश तृतीयेश के साथ तीसरे भाव में हो तो पंचमेश की दशा के भीतर तृतीयेश की भुक्ति में बच्चों के जन्म की भविष्य वाणी करनी चाहिए। छोटा भाई प्रसिद्ध होता है या अच्छी राजनैतिक या सामाजिक स्थिति प्राप्त करता है। इस दशा में जो महत्त्वपूर्ण परिणाम हो सकते हैं वे मनोबल, साहस और व्यक्तित्व की प्राप्ति है।

जब पंचमेश चौथे भाव में चतुर्थेश के साथ हो तो जातक को नई गाड़ी प्राप्त होती है और शासक वर्ग से सुख प्राप्त होता है। उस पर सरकार का कोप हो सकता है और उसकी अप्रसन्नता प्राप्त हो सकती है। जब पंचमेश और चतुर्थेश बली हों तो जातक के पास प्रसिद्ध लोग आएंगे और उसे अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। यदि ये दोनों स्वामी प्रबल हों तो उसे राजनैतिक शक्ति प्राप्त होती है और वह अपने देश की नियति का नियन्त्रण करता है।

इस प्रकार पंचमेश की दशा के दौरान प्रत्याशित परिणामों से संबंधित ग्रह जिस बलाबल के अधीन हैं उन पर विचार करने के बाद सावधानी पूर्वक भविष्य वाणी करनी चाहिए।

चूंकि पंचम भाव मुख्यतः उपजाऊपन, बच्चों के जन्म, उनकी सम्पन्नता और सुख या उनसे दुख से संबंधित होता है अतः बच्चों से संबंधित योगों पर अनेक जन्म कुण्डलियों का अध्ययन करेंगे। पंचम भाव का अध्ययन करने में यह आवश्यक है कि उर्वरकता या बंध्यता को ध्यान में रखते हुए पति और पत्नी दोनों की कुण्डली पर विचार करना चाहिए।

विज्ञान में यह प्रमाणित किया जा चुका है कि शारीरिक तथ्यों द्वारा यदा कदा पुरुष की शक्ति विहीनता का अवधारण किया जाता है, यद्यपि प्रतिमास के रूप में शारीरिक विशेषता का। यह माना जाता है कि पुरुष की ओर से लिंग संबंधी रोगभ्रम हो सकता है कि उसके जननेन्द्रिय में कुछ दोष है। इस प्रकार का भ्रम अधिकतर मामलों में होता है। इससे गंभीर शारीरिक अव्यवस्था हो सकती है। अतः बन्ध्यता का एक कारण पुरुष शक्ति विहीनता भी है, यद्यपि अक्सर बंध्यता का संबंध संभोग के लिए सामान्य क्षमता के साथ होता है। बंध्यता के मामले में लैंगिक कार्य प्रत्यक्ष रूप से सामान्य होता है किन्तु वीर्य में या तो शुक्राणु नहीं होते अथवा बहुत कम होते हैं। शुक्राणु के अभाव को विज्ञान की भाषा में ऐजोस्फार्मिया कहा ाता है जबकि शुक्राणु की अपर्याप्तता को आलिगेस्फार्मिया कहा जाता है। अधिकतर मामलों में इसका कारण सुजाक का संक्रामक रोग या पूर्व प्रदाह माना जाता है। यह कहना है कि यह आवश्यक नहीं है क्योंकि जब संबंधित व्यक्ति के पिता, दादा और परदादा नैतिक पतन के कभी दोषी नहीं थे और उन्हें कभी सुजाक का संक्रामक रोग नहीं लगा तो उस व्यक्ति में शुक्राणु के अभाव का कारण सुजाक का मूल में होना कैसे हो सकता है। जब सामान्य ज्ञान के तर्क के आधार पर विज्ञान इसे स्पष्ट नहीं कर सकता है तो वे जटिल और अप्राकृतिक कारणों का सहारा लेते हैं। दूसरी ओर हमारे पास ऐसे लोगों के नमूने हैं जो वर्णतः स्वस्थ हैं किन्तु उन्हें सन्तान नहीं है। पुरुष बंध्यता का यह रूप अक्सर स्पष्ट होता है। पुनः डाक्टर स्त्री बंध्यता का कारण उनकी जननेन्द्रिय में दोष बताते हैं। पंचम भाव के संबंध में अनेक लोगों ने हमसे परामर्श किया है और अनेक जोड़ों ने हमारे सामने यह स्वीकार किया है कि उनका लैंगिक जीवन पूर्णतः सामान्य है। अतः स्त्री की ओर से लैंगिक असमता भोजन के कारण स्त्री में बंध्यता नहीं आ सकती है और इसका कारण कुछ और हो सकता है। यह अनुमान लगाया गया है कि वर्तमान में संयुक्त राज्य अमरिका में दस में से एक विवाह अनुत्पादक है। परिवार में बच्चे का न होना एक बहुत ही गहरा मामला है। यह इतना दुर्भाग्यपूर्ण है कि अधिकतर युगल वर्षानुवर्ष उदासीन होते हैं और वे अपनी उदासी के कारण का पता लगाने का प्रयास नहीं करते। ज्योतिष के ज्ञान से बंध्यता के कारणों का पता लगाया जा सकता है। कुण्डली की जांच से उन स्थितियों का पता लग

सकता है। जिससे गर्भाधान नहीं होता और उसमें सुधार लाया जा सकता है। जैसा कि हमने ऊपर बताया है कि डाक्टरों के पास तैयार उत्तर है जो प्रमाणित नहीं है अर्थात् सुजाक का डाक्टरी इतिहास जिसने पुरुष में बंध्यता आती है।

यही सुजाक जो डिंबवाहिनी नली या अंडाशय में प्रदाह का कारण बताया जाता है स्त्री में भी बंध्यता का अक्सर कारण माना जाता है। रेशेदार ट्यूमर स्त्री में बंध्यता का दूसरा कारण होता है। इसमें संदेह नहीं कि डाक्टर कहते है कि जब तक घातक स्थिति मौजूद है तब तक पुरुष या स्त्री में बंध्यता की स्थिति रहती है और कुशल विशेषज्ञ के उपचार से उपजाऊपन वापस आ जाता है। अन्य शब्दों में सभी बातें कष्ट के कारण पर निर्भर करती है जो उर्वरकता लाने का कारण है और जिसे डाक्टर समझ नहीं पाते। यही कारण है कि सही कारण स्पष्ट करने तथा उसमें सुधार बताने के लिए ज्योतिष में यह बातें विकसित हुई है।

व्यावहारिक रूप से इन्हें देखने के बाद बिना किसी भय के यह कहा जा सकता है कि बंध्यता वैवाहिक जीवन में एक बाधा है। इस प्रकार के मामलों में पर्याप्त कठिनाई आती है। विवाह से पूर्व डाक्टरी जांच द्वारा यह नियत करना असंभव है कि कोई विशेष महिला बच्चा पैदा कर सकेगी या नहीं। यद्यपि उर्वरकता के लिए नियमानुसार मासिक धर्म के चक्र की नियमितता और सामान्यता को हिसाब में लिया जा सकता है फिर नियमित मासिक चक्र के बावजूद बांझपन के अनेक मामले ध्यान में आए हैं। विज्ञान स्त्री में उर्वरकता के मापदण्ड को कभी नहीं जान सकता क्योंकि इसने ज्योतिष द्वारा दिए गए ज्ञान को अपनाने से इनकार कर दिया है। उर्वरकता का जीव रूपायन विज्ञान के लिए अब भी एक बन्द किताब है। उर्वरकता के संबंध में अन्तःस्रावी स्रवण का कार्य अब भी समान रूप से अस्पष्ट है। विज्ञान यह भी नहीं जानता कि सामान्य बंध्यता के रूप में इस प्रकार की कोई चीज होती है या नहीं।

हमने उसकी अस्पष्टता पर विशेष कारण से जोर दिया है। अक्सर ऐसा होता कि विशेषकर हिन्दू समाज में जहाँ शादी के बाद बच्चा नहीं होता जिसे अति महत्वपूर्ण माना जाता है, वहां इसके लिए केवल पत्नी को ही दोषी माना जाता है और कभी-कभी उस पर यह आरोप लगाया जाता है कि वह जान बूझकर अपनी कमजोरी छिपा रही है। ऐसा भी हो सकता है कि पति ही बंध्यता के लिए जिम्मे दार हो। इस प्रकार के मामलों में ज्योतिष के लेखकों ने कुछ उपायों का सुझाव दिया है।

ज्योतिष की पुस्तकों में ऐसे अनेक नियम दिए गए हैं जो हमें पंचम भाव से

संबंधित विवरण का पता लगाने में सहायक होते हैं। पंचम भाव की जाँच करने से पूर्व यह आवश्यक होता है कि विवाहित जोड़ों या पति और पत्नी वंध्यता का पता लगाया जाए। यद्यपि पंचम भाव बली है और बच्चों के जन्म के लिए सभी संकेत मौजूद हैं, फिर भी यदि बीज और क्षेत्र के लिए बल या उर्वरकता न हो तो सन्तान नहीं होगा। बीज पुरुष का बीज होता है और क्षेत्र स्त्री की क्यारी होती है। दूसरे शब्दों में बीज और क्षेत्र ठीक-ठीक शुक्राणु और अंडाणु नहीं हैं बल्कि ये वे तत्व हैं जो पुरुष और स्त्री को उर्वरक बनाते हैं। पति-पत्नी मानसिक रूप से सामान्य हो सकते हैं। उनका लैंगिक सम्बन्ध खुशहाल हो सकता है। परन्तु फिर भी यदि उनकी कुण्डली में बीज और क्षेत्र बली न हो और यदि इस की ज्योतिष के नियमों के अनुसार जांच की जाए, तो उन्हें कोई सन्तान नहीं होगा। जब बीज (पुरुष) कमजोर हो और क्षेत्र (स्त्री) बली हो तो आवश्यक सुधार उपाय के बाद काफी देर से बच्चा होगा। उर्वरकता के स्वामी सूर्य द्वारा गर्भाधान का बल मिलता है। शुक्र प्रजनन का स्वामी होता है। जन्म कुण्डली में दोनों की स्थिति विशेषकर विषम राशि में अनुकूल होनी चाहिए। इसी प्रकार स्त्री के मामले में रक्त के स्वरूप का स्वामी मंगल है और चन्द्रमा बच्चा धारण करने की शक्ति देता है। इन दोनों ग्रहों की अधिमान्यता सम राशि में होनी चाहिए। निम्नलिखित साधारण नियम की अधिकाधिक मामलों में जांच की जा सकती है जबतक कि कुण्डली में कोई अन्य भ्रांति जनक योग न हों।

पुरुष के मामले में सूर्य, शुक्र और बृहस्पति का अंश (देशान्तर) जोड़ें। उसमें से ३६०° निकाल दें और जो राशि प्राप्त होती है उसे बीज स्फुट या बीज का देशान्तर कहते हैं। इसी प्रकार स्त्री की कुण्डली में मंगल, चन्द्रमा और बृहस्पति के अंश (देशान्तर) को जोड़ें और उसमें से ३६०° निकाल दें। इसके बाद जो राशि प्राप्त हुई उसे प्रजनन (क्षेत्र स्फुट) कहते हैं। यदि बीज स्फुट विषम राशि, विषम नवांश में हो और उस पर योग कारक की दृष्टि हो तो बीज में बल होता है और वह व्यक्ति प्रजनन में सक्षम होता है। इसी प्रकार क्षेत्र स्फुट सम राशि में होना चाहिए और सम नवांश में होना चाहिए तथा उस पर किसी योग कारक ग्रह की दृष्टि या युक्ति होनी चाहिए तभी उस स्त्री में प्रजनन शक्ति होगी। बीज और क्षेत्र स्फुट पर न तो बुरे ग्रहों की दृष्टि होनी चाहिए और न ही उनकी युक्ति होनी चाहिए। क्षेत्र और बीज मारक राशि में नहीं पड़ना चाहिए भले ही वे आपस में मित्र हों। इन दो स्थानों में राहु को कभी नहीं होना चाहिए।

कुंडली सं० ८८—(पुरुष) जन्म तारीख ८-८-१९१२, समय ७-३५ बजे संध्या (आई० एस० टी०) (अक्षांश 1° उत्तर, देशा० ५ घं० १० मि० पूर्व)
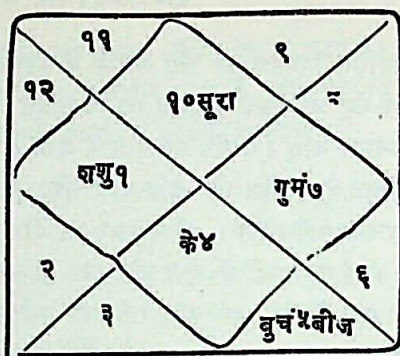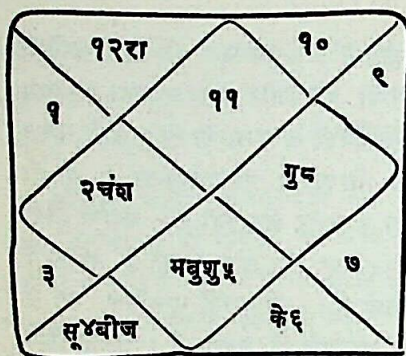
मंगल की दशा शेष ५–८–६ वर्ष

बीज स्फुट

	अंश	कला
सूर्य	११२	४३
शुक्र	१२१	४८
वृहस्पति	२२१	११
	४५५	४२

३६०° घटाने पर शेष ९५°४२′ बचा जिससे बीज स्फुट राशि में कर्क और नवांश में सिंह आया। यद्यपि बीज जन्म कुंडली में सम राशि में है फिर भी उस स्थान पर उर्वरकता का स्वामी सूर्य स्थित है और बीज न केवल शुभ राशि में है बल्कि उस पर वृहस्पति और शनि की दृष्टि भी है बीज से पंचम भाव में वृहस्पति स्थित है। नवांश में बीज विषम राशि में है और पंचम भाव बुरे ग्रहों से मुक्त है। इससे बीज के बल का संकेत मिलता है।

कुण्डली सं० ८९—(स्त्री) जन्म तारीख १६–१०–१९१८, समय २.२० बजे संध्या (आई०एस०टी०) (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ५घं० १०मि० २०से० पूर्व)
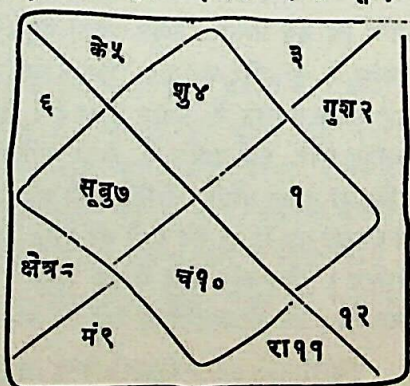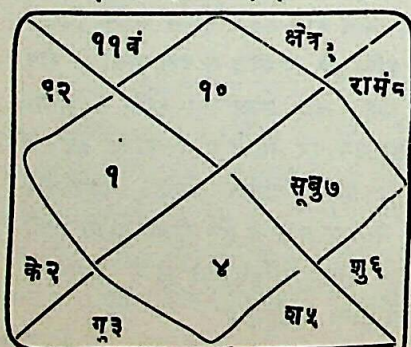
राहु की दशा शेष ११–८–२० वर्ष

क्षेत्र स्फुट

	अंश	कला
वृहस्पति	८३	३५
मंगल	२२९	४९
चन्द्रमा	३११	४३
	६२५	४

३६०° घटाने पर शेष २६५° ४′ बचा क्षेत्र स्फुट राशि में धनु आया, क्षेत्र का स्वामी एक कारक ग्रह है (यद्यपि विषम राशि है) और उस पर वृहस्पति की दृष्टि है। नवांश में क्षेत्र विषम राशि में है जिस पर वृहस्पति और शनि की दृष्टि है। इस प्रकार क्षेत्र उर्वरक है जिससे बच्चों के जन्म का संकेत मिलता है। ऊपर दिए गए दोनों ही मामलों में इस तथ्य के कारण कि बीज सम राशि में है (पुरुष की कुण्डली में राशि में) और क्षेत्र विषम राशि में है (स्त्री की कुण्डली में राशि में), उर्वरकता ऊपर बताए गए ढंग से नहीं हो सकती। अतः बच्चों की संख्या अधिक नहीं होगी। इसमें संदेह नहीं कि ऊपर की दोनों कुण्डलियों के जातक स्वस्थ हैं किन्तु लग्न पर शनि के प्रभाव के अनुसार शरीर कमजोर है किन्तु बच्चे पूरी तरह से स्वस्थ हैं।

निम्नलिखित कुण्डली का जातक काफी भला चंगा और स्वस्थ है। सभी प्रकार की डाक्टरी जांच में कोई कमी नहीं पाई गई। डाक्टरों ने कहा है कि प्रजनन की पूरी शक्ति विद्यमान है किन्तु उनके कोई बच्चे नहीं हैं।

कुण्डली सं० ९०—कुछ कारणों से जन्म का विवरण नहीं दिया जा रहा है

राशि

६
४
के३
गु७
५मं
८श
सूबु२
रा९
११
चंशु१
१२
बीज१०

नवांश
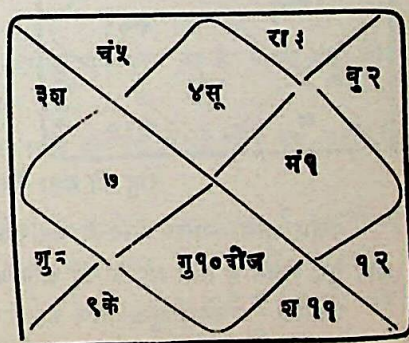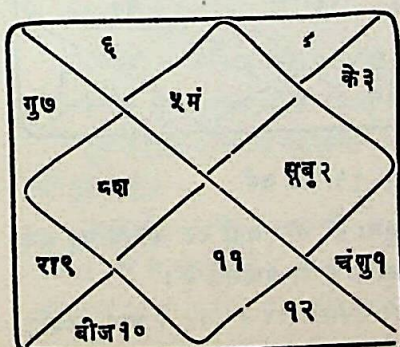
पंचम भाव पर ध्यान न देकर बीज की स्थिति निकालें

	अंश
सूर्य	५३
वृहस्पति	१९२
शुक्र	२६
	२७१ मकर १°

बीज राशि और नवांश दोनों में ही सम राशि में पड़ा है। राशि में बीज पर शनि की दृष्टि है जबकि नवांश में नीच का वृहस्पति बीज स्थान में स्थित है।

इन सबसे बंध्यता का संकेत मिलता है। बंध्यता अवधारित करने के लिए अन्य अनेक नियमों का पता लगाना है या कतिपय ग्रह योगों के अधीन कतिपय नियम लागू किए जाने हैं। यदि बीज और क्षेत्र में अधिक संख्या में मारक सप्त वर्ग हैं तो उर्वरकता पूरी तरह समाप्त हो जाती है। बध्यता समाप्त करने के उपाय पर हम बाद में चर्चा करेंगे। इस प्रकार अधिकतर विषमताओं का विवाह से पूर्व जोड़ों की कुण्डली की ज्योतिषीय जांच द्वारा पता लगाया जा सकता है या निर्धारण किया जा सकता है। और अधिकतर मामलों में बच्चा पैदा करने या वहन करने की क्षमता के बारे में स्पष्ट रूप से निश्चित पूर्वानुमान किया जा सकता है।

कुण्डली सं० ९१—जन्म तारीख ३०-१०-१९०३ समय ९.३० बजे संध्या (स्था० स०) (अक्षांश १७°४०' उत्तर, देशा० ७५°५' पूर्व)

राशि

नवांश
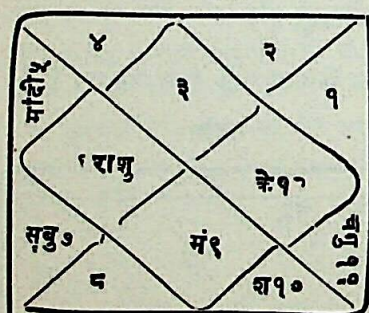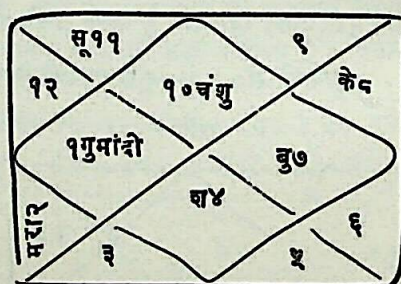
राहु की दशा शेष १२-११-२४ वर्ष

पंचम भाव—पंचम भाव में चर राशि तुला है और वहाँ पर मारक ग्रह सूर्य और बुध स्थित है तथा मारक ग्रह शनि की दृष्टि है जो अष्टमेश है।

पंचमेश—पंचमेश शुक्र नीच का है और पचम भाव से १२ वें भाव अर्थात् हानि भाव में स्थित है और उसकी प्रथम श्रेणी के मारक राहु से युक्ति है तथा मंगल से केन्द्र में है।

पुत्र कारक—इसमें सन्देह नहीं कि बच्चों का कारक वृहस्पति नवम भाव में चन्द्रमा के साथ है किन्तु वह पाप कर्तरी योग में है और कारक राशि में स्थित है, अतः वह कलंकित है।

निष्कर्ष—तीनों ही बातें अर्थात् भाव, स्वामी और कारक पर्याप्त रूप से पीड़ित हैं। पुनः चन्द्र लग्न से पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि है जबकि पंचमेश उतना ही पीड़ित है जितना लग्न से पंचम भाव। अतः जातक को कोई सन्तान नहीं हुआ यद्यपि उसने चार शादियां की। पिछले पृष्ठ पर दिए गए सिद्धान्तों को लागू करके पाठक वीज के वल की भी जांच करें।

कुण्डली सं० ९२—जन्म तारीख ३०-९-१९१२ समय ५-१५ बजे संध्या (आई० एस० टी०) (अक्षांश ३०°१९ 'उत्तर, देशा० ७५°२५' पूर्व)

राशि

नवांश

११
९गुशु
१२
१०राचंमांदी
८
१शबु
७
सू२
के४
मं६
३
५
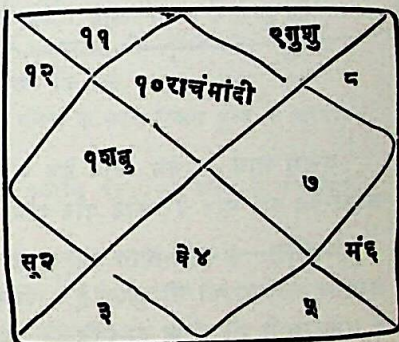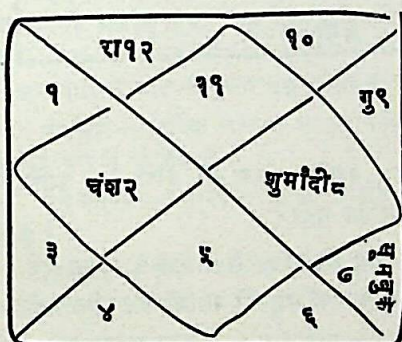
सूर्य की दशा शेष ३-९-१६ वर्ष

पंचम भाव—पंचम भाव द्विस्वभाव राशि मिथुन है और यह दृष्टि या युक्ति से पीड़ित नहीं है।

पंचमेश—निस्सदेह रूप से वहां का स्वामी बुध-उच्च का है किन्तु वह तीन ग्रहों अर्थात् सूर्य, मगल और राहु से पीड़ित है।

पुत्र कारक—कारक वृहस्पति मारक राशि वृश्चिक में है और उस पर शनि की दृष्टि है।

निष्कर्ष—जबकि कारक और भाव दोनों ही संयत रूप से पीड़ित हैं स्वामी भी पर्याप्त रूप से पीड़ित है। चन्द्र लग्न से पंचम भाव और पंचमेश भी पीड़ित है। परिणाम स्वरूप जातक को कोई सन्तान नहीं है। राहु दशा होने से पहले उसकी मृत्यु हो गई। यदि जातक की दीर्घायु होती तो शायद वृहस्पति की दशा में उसे सन्तान प्राप्ति हो जाती।

कुण्डली सं० ९३—जन्म तारीख ३–६–१९०३, समय ४ ४५ बजे संध्या (स्था० स०) (अक्षांश ११°६ 'उत्तर, देशा० ७९°४४' पूर्व)

राशि

नवांश
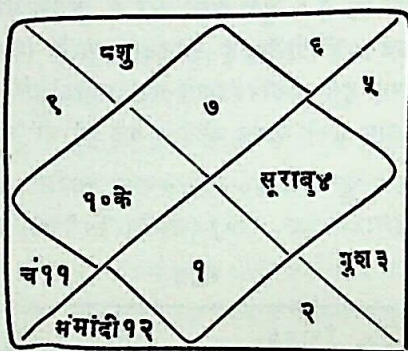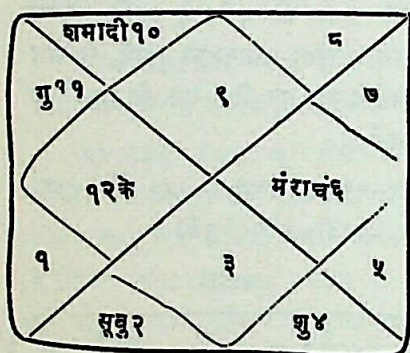
सूर्य की दशा शेष २–५–२९

पंचम भाव—पंचम भाव मेष राशि पर पचमेश मंगल की दृष्टि है। इसके अतिरिक्त इस भाव पर कोई और दृष्टि या युक्ति नहीं है।

पंचमेश—पंचमेश मंगल पर्याप्त रूप से राहु की युक्ति से पीड़ित है। इस पर अष्टमेश चन्द्रमा की भी युक्ति है। किसी भी कारक ग्रह की स्वामी पर दृष्टि नहीं है। नवांश में भी मंगल पर शनि की दृष्टि है।

पुत्र कारक—बृहस्पति पाप कर्तरी योग में है। अन्यथा वह उत्तम स्थिति में है।

निष्कर्ष—जहाँ तक पंचम भाव (बच्चे) और सप्तम भाव (पत्नी) का संबंध है यह कुण्डली विचित्र है। इस तथ्य पर ध्यान दें कि सप्तमेश बुध मारक सूर्य के साथ १२ वें भाव (सप्तम से) में है। चन्द्र लग्न से पंचम भाव में वहां का स्वामी शनि स्थित है जबकि नवांश में चन्द्रमा से पंचम भाव पुत्र कारक, शनि की स्थिति और उस पर मंगल की दृष्टि से पूरी तरह पीड़ित है। जातक की पत्नी अलग हो गई और उसे कोई बच्चा नहीं हुआ।

कुण्डली सं० ९४—जन्म तारीख १६–७–१८८८, समय ११–६ बजे संध्या (स्था० स०) (अक्षांश १८°५४ 'उत्तर, देशा० ७२°४९' पूर्व)

राशि नवांश
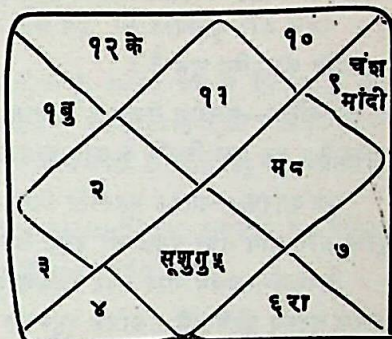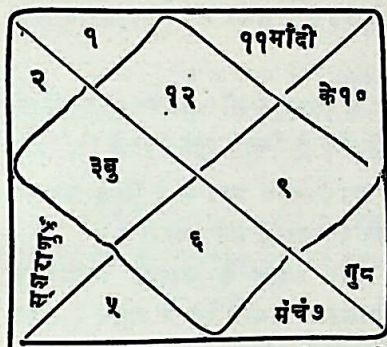
राहु की दशा शेष १७–५–२४ वर्ष

पंचम भाव—इसमें पंचम भाव में कर्क राशि है और यह तीन प्रथम श्रेणी के मारक ग्रह अर्थात् सूर्य, राहु और शनि की विद्यमानता के कारण बुरी तरह पीड़ित है। तीन मारक ग्रहों से स्थित होने के कारण वृहस्पति की दृष्टि और शुक्र की विद्यमानता से प्रति सन्तुलन नहीं होता।

पंचमेश—पंचमेश चन्द्रमा अष्टम भाव में मंगल के साथ स्थित होने के कारण समान रूप से पीड़ित है।

पुत्र कारक—वृहस्पति उचित स्थिति में है क्योंकि वह पंचम भाव से त्रिकोण में है।

निष्कर्ष—चूंकि पंचमेश और पंचम भाव दोनों ही पर्याप्त रूप से पीड़ित हैं अतः जातक को कोई सन्तान नहीं था। चन्द्र लग्न से पंचमेश पर बुरे प्रभाव को देखें और नवांश लग्न से पंचम भाव को देखें। ज्योतिष का कोई भी ज्ञाता इस कुण्डली को देखकर कह सकता है कि पंचम भाव सतति के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है।

कुंडली सं० ९५—जन्म तारीख २–६–१९१४ समय, ७.५ बजे प्रातः (आई एस टी) (अक्षांश २२°४५ 'उत्तर, देशा० ७२°४१' पूर्व)

राशि नवांश
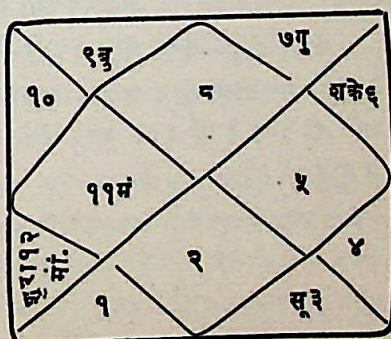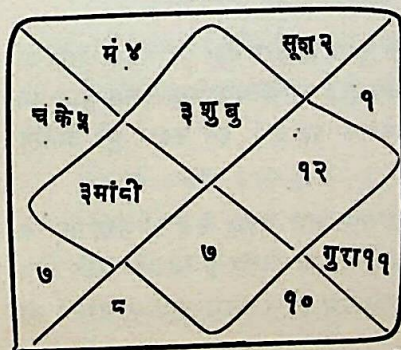
शुक्र की दशा शेष १–४–२४ वर्ष

पंचम भाव---पंचम भाव में तुला राशि है और यहां पर कोई भी ग्रह नहीं है। मंगल और बृहस्पति की इस भाव पर दृष्टि है। मंगल की दृष्टि खराब और बृहस्पति की दृष्टि शुभ है।

पंचमेश---पंचमेश शुक्र बुध के साथ लग्न में स्थित है और उसपर बृहस्पति की दृष्टि है। इस शुभ स्थिति के प्रति पाप कर्तरी योग है जिसमें शुक्र पड़ा है।

पुत्र कारक---कारक बृहस्पति निस्सन्देह रूप से नवम भाव में है किन्तु राहु की युक्ति और शनि तथा मंगल की दृष्टि के कारण वह मारक बन गया है।

निष्कर्ष---पंचम भाव और पंचमेश शुभ और अशुभ के बराबर वितरण के कारण तटस्थ हो गए हैं। कारक बृहस्पति विनाशकारी प्रभाव देने में सक्षम है। इस तथ्य पर ध्यान दें कि बृहस्पति चन्द्रलग्न से भी पंचमेश है।

उसके शादी के ३० वर्ष हो गए किन्तु जातक का कोई भी सन्तान नहीं है।

कुण्डली सं० ९६--जन्म तारीख २८-३-१९१३, समय ८.३५ संध्या (आई० एस० टी०) (अक्षांश २९° 'उत्तर, देशा० ७७° :०' पूर्व)

राशि

नवांश
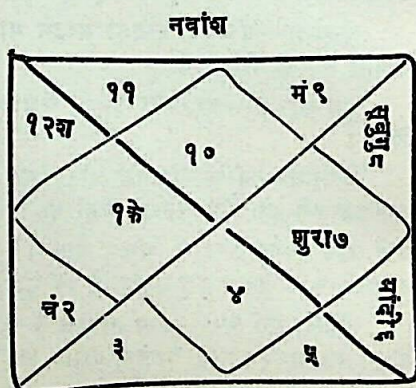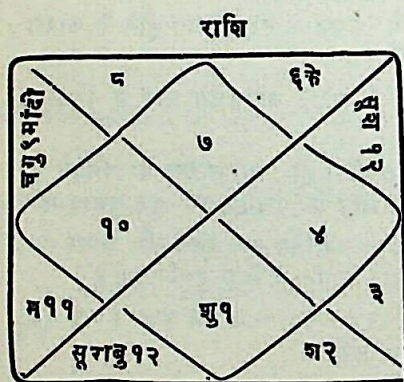
केतु की दशा शेष ४-०-२२ वर्ष

पंचम भाव---पंचम भाव में अचर राशि कुम्भ है और वहां पर प्रथम श्रेणी का मारक मगल स्थित है। यह एक खराब स्थिति है। इसके अतिरिक्त पंचम भाव पर शनि की दृष्टि है जो दूसरा प्रथम श्रेणी का मारक ग्रह है। इस प्रकार बुरे प्रभाव में वृद्धि हो गई।

पंचमेश---इसमें सन्देह नहीं कि पंचमेश शनि शुभ राशि में है। और वहां से पंचम भाव को देख रहा है। किन्तु शनि पर मंगल की दृष्टि है जिससे शनि और मंगल की परस्पर दृष्टि, जिसमें पंचम भाव अन्तर्ग्रस्त है, से पंचम भाव के संकेतों को नष्ट करने की क्षमता मिलती है।

पुत्र कारक—कारक वृहस्पति चन्द्रमा के साथ अपनी राशि में है और वह पीड़ित नहीं है।

निष्कर्ष—चूंकि भाव और अधिपति दोनों ही पर्याप्त रूप से पीड़ित हैं, कारक की शुभ स्थिति को अनदेखी कर देना चाहिए। यद्यपि जातक की १९३० में शादी हुई उसे कोई बच्चा नहीं हुआ। चन्द्र लग्न से पंचमेश को देखें वह भी पीड़ित है।

कुण्डली सं० ९७—जन्म तारीख २५/२४-१२-१९१४, समय २.३० बजे प्रातः (आई एस टी) (अक्षांश २२°४३ 'उत्तर, देशा० ७१°४३' पूर्व)

राशि

नवांश
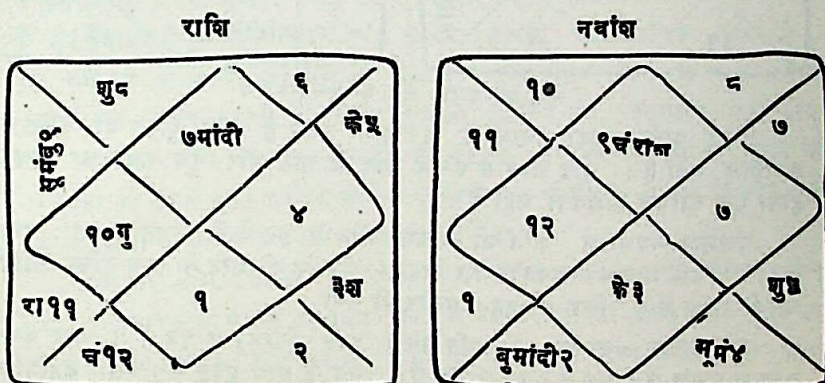
बुध की दशा शेष १६-९-२९ वर्ष

पंचम भाव—पांचवें भाव में कुम्भ राशि है। वहाँ पर राहु की विद्यमानता और वृहस्पति का कारक ग्रहों के घेरे में होना एक खराब योग है। पंचम भाव पर किसी शुभ या अशुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है।

पंचमेश—पंचमेश शनि मिथुन राशि में है और उस पर मारक ग्रह सूर्य, मंगल और बुध की दृष्टि है। अतः पंचमेश पर्याप्त रूप से पीड़ित है।

पुत्र कारक—पुत्रकारक वृहस्पति पर वे सभी बुरे प्रभाव हैं जो पांचवें भाव पर हैं।

निष्कर्ष—चूंकि सभी तीनों तथ्य अर्थात् भाव स्वामी और कारक पर्याप्त रूप से पीड़ित हैं अतः पचम भाव का नाश हो गया। जातक को अब तक कोई बच्चा नहीं है यद्यपि उसकी शादी ३० वर्ष पूर्व हो चुकी थी।

कुण्डली संख्या ९८—जन्म तारीख २४-५-१९०१, समय १-३६ बजे संध्या (स्था. स०) (अक्षांश १७° ०' उत्तर, देशा० ८१° ५०' पूर्व)

राशि

नवांश

१२ | १०के | सूचं१ | ११ | ९ | सूचं२ | श८ | शु३ | मं५ | गु७ | राबुमांदी४ | ६
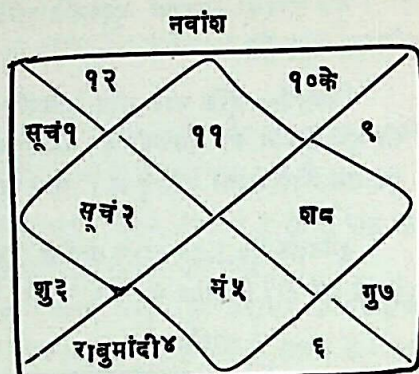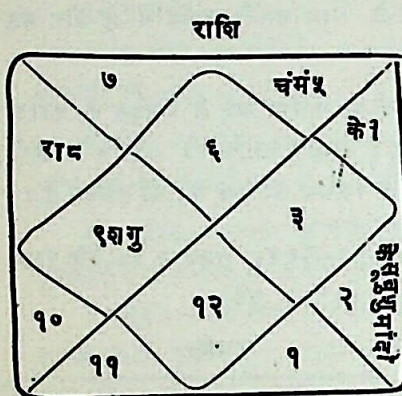
केतु की दशा शेष ६–५–२७ वर्ष

पंचम भाव—पंचम भाव में चरराशि मकर है और युक्ति या दृष्टि से प्रभावित नहीं है। चन्द्र लग्न से पंचम भाव में शनि और पुत्र करक का स्थित होना एक वांछित विशेषता नहीं है।

पंचमेश—पंचमेश शनि जो पंचम भाव से १२ वें में स्थित है अतः चन्द्र लग्न से पंचम भाव को कमजोर कर दिया। पंचमेश की शनि के साथ युक्ति यद्यपि अपनी राशि में है, फिर भी वह कमजोर हो गया।

पुत्र कारक—कारक वृहस्पति पंचम भाव (लग्न) से १२ वें में और चन्द्र लग्न से पंचम में स्थित है। वह मारक ग्रह शनि के साथ युक्त है। अतः वृहस्पति कमजोर है।

निष्कर्ष—स्वामी और कारक के बुरे प्रभाव को ध्यान में रखते हुए पंचम भाव कमजोर हो गया जिसके परिणामस्वरूप पहली या दूसरी पत्नी से उसे कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ।

कुण्डली सं० ९९—जन्म तारीख १२–४–१८९२, समय १२-४५ बजे संध्या (स्था० स०) अक्षांश ११° २६′ उत्तर, देशा० ७१° ५′ पूर्व।

राशि

नवांश
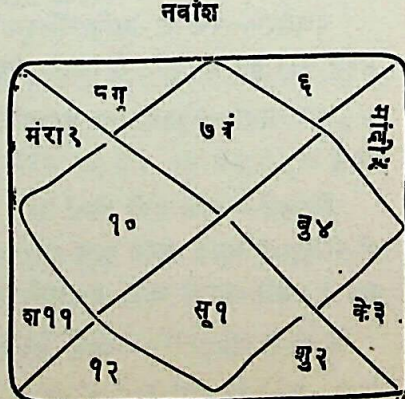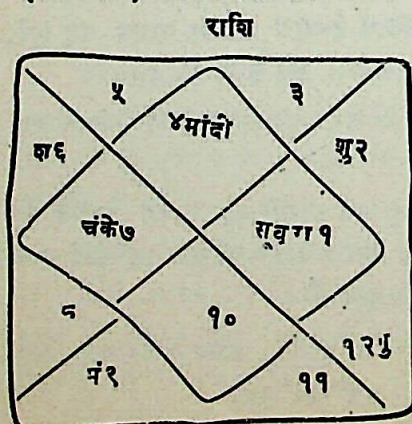
मंगल की दशा शेष २–३–२ वर्ष

पंचम भाव—पंचम भाव अचर राशि और पापकर्तरी योग में है। इस पर दो शुभ ग्रह अर्थात् वृहस्पति और शुक्र तथा प्रथम श्रेणी के मारक ग्रह शनि की दृष्टि है।

पंचमेश—पंचमेश मंगल लग्न से छठे भाव में शुभ राशि में है और पीड़ित भी नहीं है। उसका शनि से केन्द्र में होना वांछित नहीं है।

पुत्र कारक—कारक वृहस्पति अपनी ही राशि में है और वहाँ पंचम भाव दृष्टि डाल रहा है तथा मंगल और शनि से दृष्ट है।

निष्कर्ष—योगों की व्याख्या करने में अन्तर्ग्रस्त ग्रहों द्वारा दोहरे कार्य पर उचित विचार करना चाहिए। यह देखना चाहिए कि वे नैसर्गिक कारक या मारक हैं और स्वामी हैं या मारक। उदाहरण स्वरूप वृहस्पति एक नैसर्गिक कारक है। वह कतिपय भावों के स्वामित्व के कारण मारक स्वामी बन सकता है (देखें कुण्डली पर विचार करने की विधि पिछले पृष्ठों में)। वृहस्पति वाले योग की व्याख्या करते समय वृहस्पति के कारण प्रभावों की तुलना करने में ज्योतिषी को समर्थ होना चाहिए क्योंकि वृहस्पति एक नैसर्गिक कारक है और वह मारक स्वामी के रूप में प्रतिकूल परिणाम क्या देगा।

पंचम भाव और पंचमेश की स्थिति से बच्चों के जन्म का संकेत मिलता है। परन्तु पुत्र कारक के रूप में दो प्रथम श्रेणी के मारक ग्रहों का प्रभाव है। यहाँ पर मंगल पंचमेश है और रक्त का कारक है और दुख का कारक शनि पंचम भाव को देख रहा है, जातक को पंचम भाव के सम्बन्ध में दुख का सामना करना होगा। जिस राशि से मंगल पंचम भाव को देख रहा है वह अग्नितत्त्व है। जातक की पत्नी का चार या पाँच गर्भपात हो गया और पूरी तरह स्वस्थ बच्चों का जन्म नहीं हुआ।

कुण्डली संख्या १००—जन्म तारीख ३/२-६-१८१७ समय, ५.३० बजे प्रातः (स्था० ९०) (अक्षांश १६° ८′ उत्तर, देशा० ८०° ४′ पूर्व)
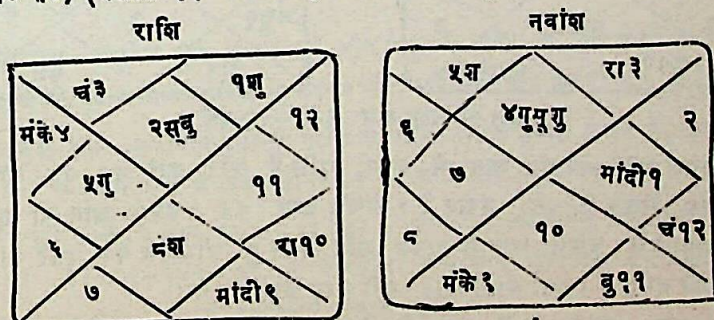
राहु की दशा शेष ०-११-२६ वर्ष

पंचम भाव—पांचवें भाव में कन्या राशि है। यह प्रभाव से मुक्त है। चन्द्र लग्न से पंचम भाव में तुला है और इस पर मंगल की दृष्टि है। नवांश में पंचम भाव पर वृहस्पति की दृष्टि है। अतः पंचम भाव साधारण रूप से बली है।

पंचमेश—पंचमेश बुध मारक सूर्य के साथ लग्न में स्थित है और इस पर अन्य मारक शनि की दृष्टि है अतः पीड़ित है। चन्द्र लग्न से पंचमेश शुक्र पंचम भाव को देख रहा है और शुक्र पर वृहस्पति की दृष्टि है। नवांश में पंचमेश मंगल है और वह केतु के साथ धनु में स्थित है। अतः पंचमेश कमजोर है।

पुत्र कारक—पुत्र कारक वृहस्पति एक मारक राशि में स्थित है और उस पर अन्य मारक राशि वृश्चिक से शनि की दृष्टि है। नवांश में वृहस्पति उच्च का है परन्तु उसकी सूर्य की युक्ति और मंगल की दृष्टि उत्तम विशेषता नहीं है।

निष्कर्ष—पंचम भाव साधारण रूप से बली है, स्वामी कमजोर है और कारक शक्तिहीन। बच्चों के जन्म से बिल्कुल इनकार नहीं किया जा सकता। किन्तु पंचम भाव से यह संकेत मिलता है कि जातक दुखी होगा। १९२२ में एक लड़के का जन्म हुआ और शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई। उसके बाद दो बार गर्भपात हुआ।

कुण्डली संख्या १०१—जन्म तारीख ६-५-१८९१, समय ५-१० बजे संध्या (स्था० स०) (अक्षांश १८° ५४′ उत्तर, देशा० ७२° ४९′ पूर्व)

राशि

नवांश
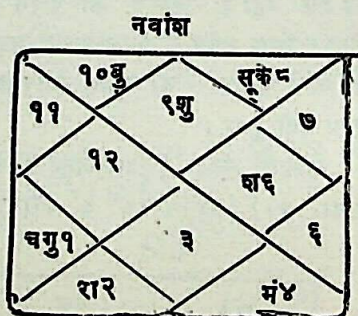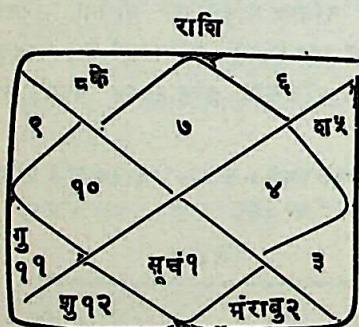
केतु की दशा शेष ६-३-१२ वर्ष

पंचम भाव—पंचम भाव में कुम्भ राशि है और यहां पर पुत्र कारक वृहस्पति स्थित है अतः खराब है। पंचम भाव पर पंचमेश शनि की दृष्टि है। चन्द्रमा से पंचम भाव में मारक शनि स्थित है और उस पर दूसरे मारक मंगल की दृष्टि है। अतः पंचम भाव बुरी तरह कलंकित है।

पंचमेश—पंचमेश शनि शत्रु राशि में स्थित है परन्तु उस पर वृहस्पति और मंगल की दृष्टि है। अतः वह न तो अच्छा है और न ही खराब।

पुत्रकारक—बृहस्पति पुत्र कारक है और उसका पंचम भाव में होना एक अच्छी स्थिति नहीं है। उस पर शनि की दृष्टि (यदि शनि का पंचमेश होना अनदेखी कर दिया जाए) वांछित नहीं है।

निष्कर्ष—पंचमेश के रूप में पंचम भाव और पुत्रकारक पर दृष्टि से सन्तान के जन्म का संकेत मिलता है। किन्तु चूंकि पंचम भाव पीड़ित है और पंचमेश लगभग कमजोर है अतः वे जीवित नहीं रहेंगे। जातक की पत्नी के पांच् गर्भपात हुए और एक को अभी जन्म देना था। एक पूर्ण स्वस्थ बच्चे का जन्म १-६-१९३७ में हुआ किन्तु वह १३-४-१९३८ को मर गया। अभी एक भी जीवित सन्तान नहीं है।

कुण्डली सं० १०२—जन्म तारीख २९-१२-१८८०, समय १०-१० बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश २२°३५' उत्तर, देशा० ८८°२३' पूर्व)

राशि

गु १२ मां
शु १०
श १
११
२
चं मं ८
के ३
५
७
४
६

नवांश

१२ म
१०
१ श बु
११
९ गु
२ रा
के चं ८
३
५
७
४
सू शु ६
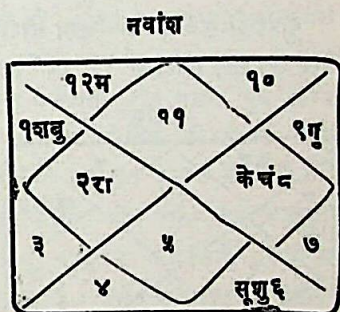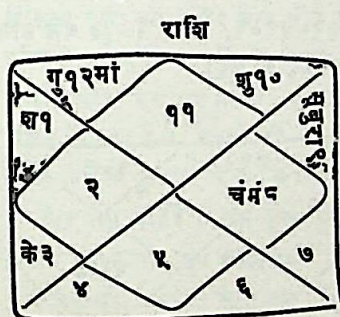
शनि की दशा शेष ४-७-९ वर्ष

पंचम भाव—पंचम भाव अर्थात् मिथुन में केतु स्थित है और उस पर सूर्य, मगल तथा बुध की दृष्टि है। अतः पंचम भाव पूरी तरह पीड़ित है। चन्द्र लग्न से पंचम भाव में बृहस्पति स्थित है। जो न केवल पुत्र कारक है बल्कि चन्द्रमा से पंचमेश भी है।

पंचमेश—पंचमेश बुध मारक सूर्य और राहु की युक्ति के कारण पीड़ित है। नवांश में भी बुध शनि की युक्ति के कारण पीड़ित है और पाप कर्तरी योग में है।

पुत्र कारक—जबकि अपनी ही राशि में उसका स्थित होना उत्तम है, उसका चन्द्र लग्न से पंचम भाव में स्थित होना पुत्र कारक के रूप में हानिकर है।

निष्कर्ष—पंचम भाव का नाश हो रहा है और यह जातक के लिए दुःख का साधन है। १५-१०-१८९८ को एक लड़के ने जन्म लिया और वह एक महीने के भीतर ही मर गया। उसके बाद कोई सन्तान नहीं हुआ।

अब हम केवल एक सन्तान वाली कुछ कुण्डलियों और अनेक बच्चों वाली

कुण्डलियों का उदाहरण देंगे—पंचम भाव से सम्बन्धित सभी योगों का पाठक सावधानी पूर्वक अध्ययन करें और उनमें से जो समुचित हो उनका प्रयोग करें। ज्योतिष की मानक पुस्तकों में हजारों योग दिए गए हैं और उनको इस प्रकार की पुस्तक में एकत्र करना असंभव होगा। साधारण योगों के अतिरिक्त बच्चों से सम्बन्धित विशेष योग हैं और इनमें से कुछ योगों का हमारी "तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग" नाम की पुस्तक में वर्णन किया गया है। पाठक इस पुस्तक को भी पढ़कर लाभ उठाएँ। किसी भाव पर विचार करने की कला दो भागों में बांटी जा सकती है, विश्लेषण और मिश्रण। विश्लेषण की प्रक्रिया में प्रत्येक संबंध और दृष्टि का सही प्रभाव सुनिश्चित करने के लिए योगों, किसी भाव पर प्रभाव या घटना को अलग किया जाता है जबकि मिश्रण में एक मात्र सूचना के अंश को समन्वित रूप में तैयार किया जाता है।

कुण्डली सं० १०३—जन्म तारीख ५/६-१२-१९०६, समय १-१० बजे प्रातः (आई एस टी) (अक्षांश १०°४४′ उत्तर, देशा० ७९°६′ पूर्व)

शनि की दशा शेष ३-१-१९ वर्ष

पंचम भाव में केतु है और उस पर मंगल की दृष्टि है। सौम्य स्रोतों से किसी राहत के अभाव में यह योग बच्चों के भाव पर विपरीत प्रभाव देने के लिए काफी भयानक है। तथापि पंचमेश शनि पर वृहस्पति की दृष्टि है और पुत्रकारक वृहस्पति किसी प्रकार के बुरे प्रभाव से मुक्त है, बच्चों के जन्म से इनकार नहीं किया जा सकता। चन्द्र लग्न से पंचम भाव पर कारक प्रभाव कम है और शुक्र सूर्य और बुध स्थित होने के कारण इस पर मारक बल अधिक है तथा उस पर शनि की दृष्टि भी है। केतु दशा के आरम्भ में केवल एक लड़की का जन्म हुआ। इसके अतिरिक्त जातक का कोई बच्चा नहीं है।

कुण्डली सं० १०४—जन्म तारीख ११-४-१९०७, समय ५.५० बजे संध्या (स्था० स०) (अक्षांश ११°१५′ उत्तर, देशा० ७५°४५′ पूर्व)

राशि

नवांश
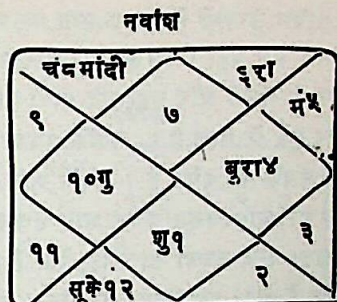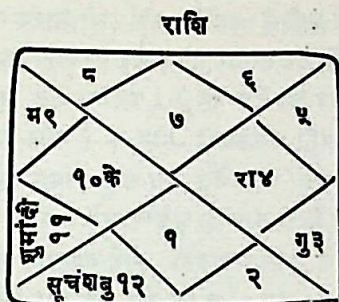
शनि की दशा शेष ३–२–६ वर्ष

जातक को केवल एक पुत्री थी। ध्यान दें जबकि पंचम भाव पूर्ण रूप से उत्तम स्थिति में है, पंचमेश शनि और पुत्र कारक वृहस्पति पर्याप्त रूप से पीड़ित है। शनि के साथ सूर्य, बुध और चन्द्र तीन मारक ग्रहों की युक्ति है तथा उस पर मंगल की दृष्टि है वृहस्पति पर भी मंगल की दृष्टि है। चन्द्र लग्न से पंचम भाव में राहु की स्थिति और उस पर मंगल की दृष्टि से कुछ गर्भपात और समय पूर्व जन्म का संकेत मिलता है। बच्चों की संख्या और मृत तथा जीवित की संख्या बताने के लिए प्राचीन पुस्तकों में अनेक नियम दिए गए हैं। हम इस पुस्तक में उन्हें विस्तार से देना नहीं चाहते। हम कुछ चुने हुए उदाहरण देंगे और पाठक इन सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर इस प्रकार की कुण्डलियों का अध्ययन करें जिन्हें किसी मानक ज्योतिष की पुस्तकों से एकत्र किया जा सकता है। और साधारणतः पंचम भाव और पंचमेश के नवांश के आधार पर पैदा होने वाले बच्चों की संख्या का अनुमान लगाया जाता है। यदि पंचमेश पर वृहस्पति या शुक्र की दृष्टि हो तो संख्या दोहरी हो जाती है। मध्य के नवांश में यदि मारक ग्रह पड़े हों तो वे संभावित हानि बताते हैं।

कुण्डली सं० १०५—जन्म तारीख ६–१–१९०६, समय ५–२४ बजे संध्या (आई एच टी) (अक्षांश ३०° उत्तर, देशा० ७८° पूर्व)

राशि

नवांश
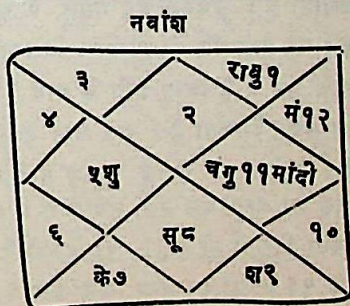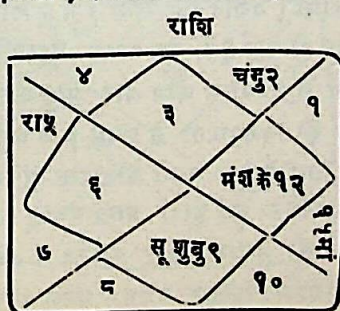
सूर्य की दशा शेष १–७–२१ वर्ष

इस कुण्डली में पंचम भाव पर कोई प्रभाव नहीं है क्योंकि कोई भी कारक या मारक ग्रह वहाँ स्थित नहीं है और न ही किसी की उसपर दृष्टि है। तथापि चन्द्र लग्न से मंगल और वृहस्पति दोनों ही पंचम भाव को देख रहे हैं। पंचमेश शुक्र सूर्य और बुध के साथ है। जबकि पुत्रकारक बृहस्पति गजकेशरी योग में है और उस पर मंगल की दृष्टि है। पंचम भाव के साथ राहु और केतु का कोई संबंध नहीं है। परिणामस्वरूप पंचम भाव उत्तम स्थिति में है। पंचमेश शुक्र पांचवें नवांश में है अतः पांच बच्चों का संकेत देता है। नवांश में उसपर चन्द्रमा और वृहस्पति की दृष्टि है अतः इस संख्या को दोंहरा कर दें तो १० हुए। चूंकि राहु मेष और शुक्र के बीच (नवांश में) में है अतः बच्चों की संख्या लगभग ९ होनी चाहिए। जातक के ९ बच्चे थे जिनमें से एक की मृत्यु हो गई।

कुण्डली सं० १०६—जन्म तारीख ३०|२९-५-१९०२ समय ३-१९ बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश १७° उत्तर, देशा० ८१° ४६ पूर्व)
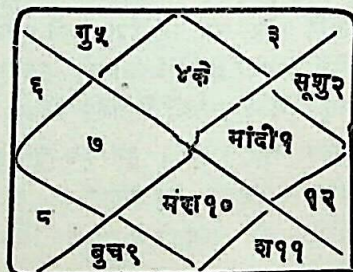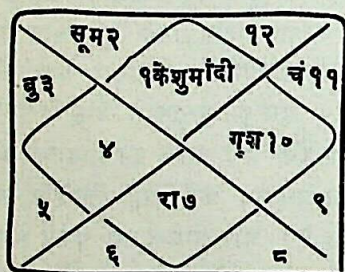
राहु की दशा शेष १४-१-१ वर्ष

पंचम भाव अति महत्त्वपूर्ण है। लग्न से पंचम भाव लग्नाधिपति मंगल और चन्द्रमा द्वारा दृष्ट है। नैसर्गिक मारक मंगल की दृष्टि खराब है किन्तु लग्नाधिपति के रूप में यह उत्तम है। चन्द्रमा की दृष्टि शुभ है जो अधिक पुत्री के जन्म को दर्शाता है। पंचमेश सूर्य मंगल के साथ शुभ राशि (यद्यपि शत्रु राशि) में है और इस पर वृहस्पति की दृष्टि है जिसका नीच भंग हो रहा है। पुत्र कारक बृहस्पति नीच भंग में है किन्तु शनि के साथ है। इस योग से बच्चों के जन्म और मृत्यु दोनों का संकेत मिलता है। चन्द्र लग्न से पंचमेश बुध की विद्यमानता से पंचम भाव वली है। पंचमेश सूर्य पांचवें नवांश में है। वह वर्गोत्तम में है। इसके अतिरिक्त पंचम भाव का मध्यस्थल उसी नवांश में है। परिणामस्वरूप सूर्य द्वारा प्राप्त नवांश की संख्या तिगुनी हो गई। १५ बच्चों के पैदा होने की संभावना है। वास्तव में अब तक १२ बच्चों का जन्म हुआ जिनमें पंचमेश तथा पुत्र कारक क्रमशः मंगल और शनि से पीड़ित होने के कारण तीन बच्चों की मृत्यु हो गई।

कुंडली सं० १०७—जन्म तारीख २४/२३-१०-१९०७, समय २.० बजे प्रातः (आई एस टी) (अक्षांश २३° २' उत्तर, देशा० ७२° १९' पूर्व)

राशि

नवांश
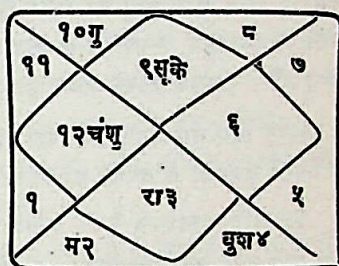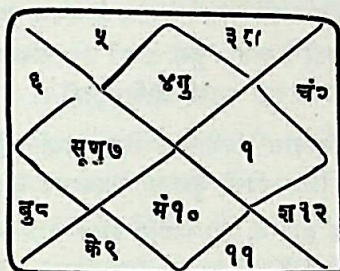
सूर्य की दशा शेष १-०-७ वर्ष

यह कुण्डली इस अर्थ में विचित्र है कि जातक को कोई पुत्र नहीं है बल्कि केवल लड़कियाँ है। लग्न से पञ्चम भाव में सम राशि है और उसमें हानिकर ग्रह बुध स्थित है और वह पापकर्तरी योग में है। पञ्चमेश मंगल है। चन्द्र लग्न से पञ्चम भाव में सम राशि है और वह स्त्री राशि है और उसका स्वामी हानिकर ग्रह है। पन्चम भाव पर स्त्री ग्रह शनि की दृष्टि है। पुत्र कारक की उच्च स्थिति और पञ्चमेश की उच्च स्थिति से पञ्चम भाव से बली हो गया जबकि लग्न और चन्द्र लग्न से पञ्चम में स्त्री तत्वों की प्रधानता से पुत्रियों के जन्म का संकेत मिलता है। मंगल पाँचवें नवांश में है। मंगल शुभ नवांश में है और वह कारक बृहस्पति द्वारा दृष्ट है।

कुण्डली संख्या १०८—जन्म तारीख २९/२८-१-१९०५ समय ५० बजे प्रातः (आई एस टी) (अक्षांश ९° ४३' उत्तर देशा० ७६° १३' पूर्व)।

राशि

नवांश
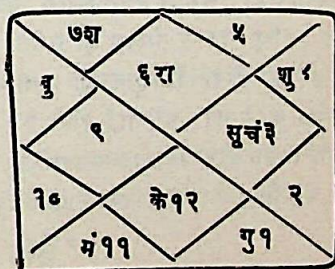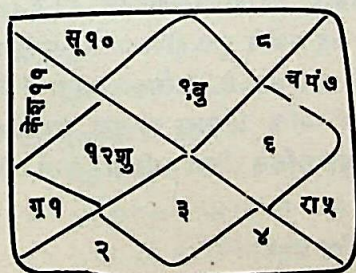
बृहस्पति की दशा शेष ४-४-२४ वर्ष

अनेक बच्चों के जन्म का दूसरा विशेष उदाहरण है जिनमें से सबकी मृत्यु हो गई

केवल एक बचा । पुत्र कारक पंचम भाव में मंगल से दृष्ट है और चन्द्रमा से पंचम भाव में शनि स्थित है । केतु की युक्ति से पंचम भाव की बर्बादी का स्पष्ट संकेत मिलता है । चूंकि मंगल पञ्चमेश है और पञ्चम भाव पर दृष्टि डाल रहा है अतः बच्चों के जन्म और मृत्यु का संकेत है । पन्चमेश मंगल पांचवें नवांश में मंगल पुत्र कारक से ग्यारहवें भाव में है और पीड़ित नहीं है अतः कुल बच्चों की संख्या १० होगी । वास्तव में दस बच्चे हुए जिनमें से केवल एक लड़की जीवित रही ।

ऊपर दिए गए उदाहरण पाठकों को यह विश्वास दिलाने के लिए पर्याप्त हैं कि किसी कुण्डली से बच्चों का विचार करने के लिए काफी कुशलता आवश्यक है ।

यह अति आवश्यक है कि सन्तान के जन्म के बारे में सही स्थिति प्राप्त करने के लिए पति और पत्नी दोनों की कुण्डली की जांच की जाए । ऐसा अक्सर होता है कि पति के मामले में यदि पंचम भाव पीड़ित हो तो पत्नी की कुण्डली में अनुकूल होने से वह दोष समाप्त हो जाता है । पञ्चम भाव में पड़ने वाली राशि और लग्न के स्वरूप और पञ्चम भाव में स्थित या दृष्टि डालने वाले ग्रहों के स्वरूप से परिवार के आकार का संकेत मिलता है । बच्चों के लिंग का निर्णय पञ्चम भाव से सम्बन्धित राशि और ग्रह तथा विशेष योग के आधार पर करना चाहिए । कुण्डलियों की सावधानीपूर्वक जांच करनी चाहिए और उनके संकेतों को होशियारी के साथ तोलना चाहिए । बुद्धिमत्ता से और वैज्ञानिक ढंग से लागू किए गए नियमों से प्राप्त परिणाम संतोषप्रद होंगे । इस पुस्तक में संकेत मात्र दिया गया है । शेष बातें पाठकों के ऊपर छोड़ दी गई हैं ।

छठे भाव के सम्बन्ध में

छठा भाव दुर्घटना, रोग, शत्रु, मानसिक उत्पीड़न, मामा और दुर्भाग्य का कारक होता है । यदि छठा भाव पीड़ित हो तो इसके फलस्वरूप जातक रोगी या कमजोर हो सकता है या उसके शत्रु हो सकते हैं तथापि वास्तविकता यह है कि एक व्यक्ति रोग से पीड़ित हो सकता है किन्तु वह कर्ज से मुक्त होगा या वह पूर्णरूप से स्वस्थ होगा किन्तु काफी कर्ज में होगा । एक भाव से विभिन्न घटनाओं में विभेद करने की कठिनाई होती है । यदि कोई व्यक्ति सिद्धान्त का पूरा अध्ययन किए बिना और पर्याप्त व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किए बिना भविष्य करने लगे तो वह बिल्कुल गलत निष्कर्ष निकालेगा ।

मुख्य विचारणीय बातें

छठे भाव के विश्लेषण में निम्नलिखित के बल का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना चाहिए (क) भाव (ख) कारक (ग) स्वामी (घ) वहाँ स्थित ग्रह । भाव पर

दृष्टि डालने वाले और उसके अधिपति महत्त्वपूर्ण होते हैं। छठे भाव से सम्बन्धित अनेक अनिष्ट योगों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

विभिन्न भावों में षष्ठेश की स्थिति के अनुसार फल

प्रथम भाव में—यदि उत्तम दृष्टि हो तो बल या स्थिति के अनुसार वह व्यक्ति सिपाही या कमाण्डर के रूप में सेना में भर्ती हो सकता है। अथवा वह व्यक्ति युद्ध का मन्त्री या कर्मचारी या जेल से सम्बन्धित अधिकारी बन सकता है। वह अपने मामा के घर में रहेगा। यदि षष्ठेश कमजोर हो और अन्यथा पीड़ित हो तो वह डाकू या चोर या अपराधी दल का नेता बनेगा।

दूसरे भाव में—यदि कारक ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो जातक के पारिवारिक जीवन में कष्ट तथा दुख होगा। शत्रुओं से धन की हानि, कमजोर दृष्टि, दांत समान नहीं होंगे और हकला होगा। यदि षष्ठेश कमजोर या अन्यथा दूसरे भाव में पीड़ित हो तो मारक अधिपति की दशा और भुक्ति में उसकी पत्नी नहीं रहेगी। यदि शुक्र कमजोर हो तो जातक गरीब और दरिद्र होगा तथा एक समय का खाना मुश्किल से जुटा पाएगा।

तीसरे भाव में—षष्ठेश बली होने पर भाइयों के साथ शत्रुता होती है। अथवा उसका मामा उसके हित के विरुद्ध जातक के भाई को उकसाता है या जातक का भाई सदा बीमार रहता है। षष्ठेश कमजोर और पीड़ित होने पर जातक का कोई छोटा भाई नहीं होगा।

चौथे भाव में—षष्ठेश के बली होने पर जातक ध्वस्त भवन में रहता है। शिक्षा में रुकावट आएगी और वह अपनी माँ को अलग कर देगा। सामान्यतः उसका मामा किसान होगा। यदि कमजोर और पीड़ित हो तो अपनी मां के साथ झगड़ा होगा और पैत्रिक सम्पत्ति कर्ज में चली जाएगी। वह नौकरी करेगा और दयनीय जीवन व्यतीत करेगा। घर तथा घरेलू कार्य में कष्ट और नौकरों से कष्ट।

पाँचवें भाव में—बच्चे बीमार रहेंगे। जातक को उनका मामा गोद लेगा और वह भाग्यशाली रहेगा।

छठे भाव में—चचेरे भाई बहनों में वृद्धि। जातक का मामा प्रसिद्ध बनेगा। यदि कमजोर लग्नाधिपति के साथ युक्त हो तो वह असाध्य रोग से पीड़ित होगा और अपने सगे सम्बन्धियों के साथ शत्रुता बढ़ेगी।

सातवें भाव में—सामान्यतः वह मामा की लड़की या अपनी फूफी की लड़की से शादी करता है। मामा दूरस्थ स्थान पर रहता है (या विदेश में रहता है)। पत्नी का आचरण सन्देहात्मक होगा। यदि षष्ठेश पीड़ित हो तो वह या तो अपनी

पत्नी को आरम्भ काल में ही तलाक दे देगा या वह मर जाएगी। यदि अन्तग्रस्त राशि और नवांश हानिकर हो तो उसे बीमार बांझ पत्नी मिलेगी। जब लग्नाधिपति षष्ठेश के साथ सप्तम भाव में हो, जो मार्केश राशि होती है, तो जातक नपुसक होगा और लैंगिक सम्बन्ध में अक्षम होगा। असम्मानित स्त्रियों से भी कष्ट होगा।

आठवें भाव में—जब षष्ठेश बली हो तो उसकी आयु मध्यम होगी। यदि पीड़ित हो तो उस पर काफी कर्ज होगा और घृणास्पद रोग से पीड़ित होगा। वह अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों के पीछे रहेगा और दूसरों को कष्ट पहुंचा कर खुश होगा।

नवें भाव में—यदि षष्ठेश बली हो तो उसका पिता न्यायाधीश बनता है। उसका मामा काफी भाग्यशाली बनता है। पिता के साथ मतभेद रहेगा। चचेरे भाइयों से लाभ होगा। यदि पीड़ित हो तो गरीबी, पापकर्म, सम्बन्धियों से दुर्भाग्य, गुरुओं के प्रति कृतघ्न और कदाचार कार्यों में संलग्न रहेगा। यदि संयत हो तो वह राजगीर, लकड़ी का व्यापारी या पत्थर काटने वाला बनता है।

दशम भाव में—यदि बली हो तो पापी और विनाशकारी स्वभाव, दकियानूसी बनने का दिखावा करेगा तथा पवित्र आदमी किन्तु धार्मिक मामलों में वास्तव में नास्तिक होगा। यदि अधिपति कमजोर हो तो बर्खास्तगी, भयानक शत्रु, निम्न स्तर का जीवन या भिखारी।

ग्यारहवें भाव में—यदि शुभ हो तो बड़ा भाई न्यायाधीश होगा। यदि साधारण हो तो बड़ा भाई कुछ समय के लिए न्यायाधीश बनता है परन्तु उसकी नौकरी चली जाती है। यदि अशुभ हो तो गरीब, भाग्यहीन जीवन; जेल के कारण उत्पीड़न।

बारहवें भाव में—यदि उत्तम स्थिति में हो तो विनाशकारी स्वभाव के कारण कठिनाई और दुख। दूसरों को कष्ट पहुंचाने वाला। यदि पीड़ित हो तो दयनीय, दुष्कर और भाग्यहीन जीवन बिताएगा।

महत्त्वपूर्ण योग

अब हम छठे भाव के सम्बन्ध में कुछ महत्त्वपूर्ण योगों का वर्णन करेंगे जो मानक पुस्तकों से चुने गए हैं।

यदि छठे भाव पर बुरे ग्रह की दृष्टि हो या वहां बुरे ग्रह स्थित हों तो जातक के कुछ शत्रु होंगे। यदि शुभ ग्रह स्थित हों या देख रहे हों तो शत्रुओं की संख्या अधिक होगी। यदि अशुभ षष्ठेश लग्न, ८ या १० वें भाव में स्थित हो तो वह

फोड़ा फुंसी से पीड़ित होगा। यदि षष्टेश सूर्य के साथ छठे या आठवें भाव में हो तो उसे सिर में फोड़े होंगे; यदि चन्द्रमा के साथ हो तो चेहरे पर यदि मंगल या बुध के साथ हो तो अग्रभाग में; बृहस्पति के साथ हो तो नाक में; शुक्र के साथ हों तो आंख में; शनि, राहु या केतु के साथ हो तो हाथ में फोड़े होंगे। यदि षष्ठेश और अष्टमेश क्रमश: सप्तम और अष्टम भाव में हों तो बवासीर होता है। यदि षष्ठेश के साथ लग्न में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि हो तो क्रमशः ज्वर से, जलीय रोग या ग्लांड में सूजन या अल्सर, बिलियस की शिकायत, उपभोग, लैंगिक कष्ट, उत्तेजना, फोड़े से खतरा होगा। छठे भाव में बुरे ग्रह या षष्ठेश शनि या राहु के साथ हों तो जातक हमेशा दुखी रहेगा। यदि मंगल छठे भाव में हो और षष्ठेश आठवें में हो तो जातक छठे और ग्यारहवें वर्ष में बुखार से पीड़ित होता है। यदि चन्द्रमा और बृहस्पति छठे भाव में हो तो उसे २० वर्ष की आयु में कुष्ठ रोग होगा; यदि राहु छठे भाव में हो और लग्नेश आठवें भाव में हो तो २७ वर्ष की आयु में जलीय रोग होगा; यदि षष्ठेश और द्वादशेश के बीच परिवर्तन (परस्पर भाव परिवर्तन) हो तो ३० वर्ष की आयु में कालिक रोग होगा।

यदि लग्नेश अष्टमेश के साथ लग्न भाव में हो तो र्‍यूमेटिक रोग होता है। यदि शनि अष्टमेश के साथ छठे भाव में हो और द्वादशेश लग्न में हो तो जंगली जानवरों से भय होगा। यदि सूर्य छठे या आठवें भाव में हो और चन्द्रमा सूर्य से १२ वें भाव में हो तो ५ या ९ वर्ष की आयु में जल से खतरा होगा। षष्ठेश और द्वादशेश के बीच परिवर्तन से ३१ या ४० वर्ष की आयु में धन की हानि का संकेत मिलता है। यदि षष्ठेश बृहस्पति के साथ छठे भाव में हो और द्वादशेश लग्न में हो तो पुत्र शत्रु बन जाता है। मंगल के साथ चन्द्रमा के छठे भाव में होने से पीलिया रोग का संकेत मिलता है। यदि शनि या मंगल छठे भाव में हों और उन पर राहु या सूर्य की दृष्टि हो तथा लग्नाधिपति कमजोर हो तो चिरकालिक रोग का संकेत मिलता है। यदि शनि मान्दि के साथ छठे भाव में हो और उस पर सूर्य, मंगल या राहु की दृष्टि हो तो हृदय या फेफड़े का रोग होता है।

यदि लग्नेश और षष्ठेश शनि के साथ केन्द्र में स्थित हों तो वह व्यक्ति जेल जाएगा। यदि राहु या केतु के साथ हो तो हथकड़ी लगेगी। यदि चन्द्रमा ६, ८, या १२ वे भाव से शनि राहु या केतु के साथ हो और उनपर लग्नेश की दृष्टि हो तो उस व्यक्ति का अन्त दुख भरा होगा। यदि षष्ठेश या अष्टमेश या मंगल कठोर नवांश में शनि या राहु के साथ तृतीयेश से युक्त हो तो जातक की मृत्यु युद्ध क्षेत्र में होगी। राशि या नवांश में मंगल और सूर्य के बीच परस्पर दृष्टि परिवर्तन हो तो जातक की मृत्यु दो के बीच लड़ाई में होती है।

यदि षष्ठेश केन्द्र में हो और उस पर बुरे ग्रहों की दृष्टि हो या अनेक बुरे ग्रह

छठे भाव में हों तो वह व्यक्ति शत्रुओं से परेशान रहेगा। यदि षष्ठेश किसी शुभ ग्रह के भाव में हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो उसके अनेक मित्र होंगे।

यदि लग्नेश छठे भाव में हो और षष्ठेश से दृष्ट हो यदि दोनों ही लग्न या चौथे भाव में हों तो वह व्यक्ति अपने सम्बन्धियों से बराबर तंग रहेगा। यदि वृहस्पति या शुक्र षष्ठेश के साथ लग्न में हो और शनि, राहु या मंगल से दृष्ट हो तो उसके सम्बन्धी उसे कठिनाई में डालेंगे। यदि नवमेश छठे भाव में हो और षष्ठेश से दृष्ट हो तो वह चोर या अग्नि से कष्ट पाएगा। यदि षष्ठेश छठे भाव में मंगल के साथ हो और राहु या केतु से दृष्ट हो तो उसकी सम्पदा की नीलामी होगी।

छठे भाव में ग्रह

सूर्य—वह बहुत अच्छा राजनीतिज्ञ,प्रसिद्ध और सफल व्यक्ति होता है। स्वास्थ्य के लिए बहुत उत्तम नहीं है। यदि सूर्य पीड़ित हो तो लम्बा और कष्टदायक रोग। यदि सूर्य बली हो तो उत्तम प्रशासक, कम शत्रु, धनी और सभी प्रयासों में सफल होता है। शनि द्वारा पीड़ित होना वांछित नहीं है क्योंकि यदि इस भाव पर वृहस्पति की दृष्टि न हो तो हृदय रोग या वक्ष में दर्द का संकेत मिलता है।

चन्द्रमा—इससे बालारिष्ट या बचपन में खराब स्वास्थ्य का संकेत मिलता है। यदि मंगल और शनि से प्रभावित हो तो उत्सुक और असाध्य रोग तथा प्रतिशोधी शत्रु। चन्द्रमा अधीनस्थ स्थितियों में सक्षमता और सफलता का द्योतक है। यदि छठे भाव में अचर राशि हो तो उस व्यक्ति के मूत्राशय में पथरी होती है; वह स्त्रियों के साथ घुल मिलकर रहेगा; लैंगिक सम्बन्ध में कमजोर और पेट की तकलीफ। स्वभाव राशि में पीड़ित होने पर फेफड़े के रोग से खतरा। वह खान पान के प्रबन्ध में सफल होगा।

मंगल—काफी कामुक, विजयी और शासक या राजनीतिज्ञ के रूप में सफलता। उसे निकट सम्बन्धियों से कष्ट होगा। यदि मंगल पीड़ित हो तो दुर्घटना, हानि और कर्मचारियों से कष्ट। यदि पीड़ित करने वाला ग्रह शनि हो तो आपरेशन या जानवरों से चोट लगने से मृत्यु होती है। यदि मंगल को राहु पीड़ित करता है तो आत्म हत्या के कारण मृत्यु होती है। यदि केतु पीड़ित करने वाला ग्रह हो तो वह जहर खाकर मरेगा।

बुध—झगड़ालू और दिखावटी परन्तु सम्मान पाने वाला; शिक्षा में बीच बीच में रुकावट। यदि पीड़ित हो तो मानसिक कष्ट और उत्तेजना की खराबी से खतरा। यदि मंगल और राहु या शनि और राहु द्वारा पीड़ित हो तो उत्तेजना से पागल पन का खतरा होता है, नौकरों से कष्ट होता है और स्वास्थ्य खराब रहता

है। वह व्यक्ति आलसी और बात चीत में रूखा होता है किन्तु अपने शत्रुओं के लिए आतंक होता है।

बृहस्पति—सुस्त, असम्मानित, काला जादू में रत, शत्रुओं से भयभीत, भाग्यहीन, दुष्पाचन ग्रस्त, स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। यदि पीड़ित हो तो अति आसक्ति के कारण स्वास्थ्य से पीड़ित रहेगा।

शुक्र—कोई शत्रु नहीं, युवा स्त्री द्वारा भ्रष्ट, स्त्रियों का अनुग्रह पाने के लिए अनुकूल स्थिति है। यदि पीड़ित हो तो अधिक लैंगिक आसक्ति अन्य स्त्रियों के शौक तथा कामुक स्वभाव के कारण स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है।

शनि— झगड़ालू, हठी, पेटू, शत्रुविहीन, साहसी। यदि पीड़ित हो तो अभाव या निरादर से बीमार; अधीनस्थों से कष्ट। यदि पीड़ित करने वाला ग्रह मंगल हो तो खतरनाक रोग और आपरेशन। यदि राहु पीड़ित करता हो तो वह व्यक्ति हिस्टीरिया से पीड़ित होता है यदि शनि शुभ दृष्ट हो तो ठेका कार्य, खनन, इमारती काम आदि से लाभ होता है।

राहु—दीर्घायु और धनी, शत्रुओं, प्रेतों से कष्ट और गुप्तांग में रोग। वह किंकर्तव्य विमूढ़ता की बीमारी से भी पीड़ित होगा। यदि चन्द्रमा और शनि राहु से युक्त हों तो मानसिक अव्यवस्था की भी सम्भावना है। उस व्यक्ति के अनेक चचेरे भाई बहन होंगे और उसका निजी जीवन निन्दनीय होगा।

केतु—केतु के लिए कुंडली में यह सर्वोत्तम स्थान है। जातक की प्रसिद्धि होगी। वह शत्रुहीन होगा। फिर भी वह नैतिक रूप से पतित होगा। इस स्थिति में अन्तर्ज्ञान और जादू की शक्ति भी होती है।

कुछ सावधानी आवश्यक है। ज्योतिष के विद्यार्थियों को उपरोक्त योग ज्यों का त्यों लागू नहीं करना चाहिए। सूर्य या अन्य ग्रहों द्वारा छठे भाव में स्थिति होने के कारण दिए जाने वाले फल में अन्य ग्रहों की दृष्टि, युक्ति और सामान्य बल तथा छठे भाव जैसे अनेक कारणों से कमी बेसी हो सकती है। यदि सूर्य छठे भाव में अचर राशि में पीड़ित हो उसके फलस्वरूप हृदय रोग, दमा आदि हो सकता है। यदि चर राशि में पीड़ित हो तो कमजोर वक्ष, पाचनशक्ति हीन हो सकता है। छठे भाव में सूर्य की स्थिति के कारण सभी परिणामों को बृहस्पति की उत्तम दृष्टि कम कर देती है और वह अपनी भुक्ति के दौरान बिल्कुल विपरीत फल देने लगता है। यदि सूर्य पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो सफलता और पदोन्नति होती है। यदि चन्द्रमा बली हो तो चन्द्रमा से सम्बन्धित उपव्यवसाय में सफलता की आशा है।

राहु द्वारा पीड़ित चन्द्रमा चर्मरोग का द्योतक होता है; शनि द्वारा पीड़ित होने पर असाध्य रोग; सूर्य से पीड़ित होने पर पाचन शक्ति की खराबी, राहु या केतु द्वारा

पीड़ित होने पर मानसिक अव्यवस्था, हिस्टीरिया या विचित्र मनःस्थिति। राहु या केतु से मंगल के पीड़ित होने पर आत्महत्या या जहर से मृत्यु का संकेत मिलता है। मंगल की इस भाव में उत्तम स्थिति कुण्डली की बहुत बड़ी सम्पत्ति है। शनि द्वारा मंगल के पीड़ित होने पर भाइयों और चचेरे भाइयों के साथ मुकदमेबाजी, बुध के बली होने पर बुद्धि में तेजी; बृहस्पति युक्त हों तो आध्यात्मिक प्राप्ति की आशा होती है। राहु, केतु या शनि द्वारा पीड़ित होने पर निराशा, उत्तेजनीयता और मानसिक व्यवहार में असामान्यता की आशा की जा सकती है। यदि बृहस्पति से पीड़ित हो तो आर्थिक कठिनाई और खाद्य की आदत में असंयम हो सकता है। यदि शुक्र उत्तम स्थिति में हो तो नर्सिंग, फिल्म या नाटक में सफलता मिलती है। यदि शुक्र पीड़ित हो तो वह व्यक्ति मूत्राशय और लिंग के रोग से ग्रस्त होता है। शनि से पीड़ित होने पर खतरनाक रोग; असाध्य रोग ऐसी मनःस्थिति होती है जिसका उपचार न किया जा सके। राहु और केतु में से छठे भाव में केतु की स्थिति उत्तम होती है। राहु से पीड़ित होना अति भाग्यहीन योग है जिससे अत्यधिक कर्ज, अप्रत्याशित शत्रु और असाध्य रोग का संकेत होता है। शनि और चन्द्रमा दोनों के द्वारा राहु का प्रभाव खतरनाक होता है जब तक शुभ युक्ति या दृष्टि न हो क्योंकि इससे जातक मानसिक रूप से अनुपयुक्त हो जाता है। जातक पर्यावरण में काफी भावुक होगा, शीघ्र ही क्रोध और गुस्सा में आ जाएगा। इन सभी मामलों में अन्तर्ग्रस्त प्रभावों का सावधानी पूर्वक मूल्यांकन अति आवश्यक है।

संक्षेप में, छठे भाव से मुख्यतः तीन अनिष्ट या भाग्यहीनता अर्थात् ऋण, रोग और शत्रु को देखते हैं। रोग से सम्बन्धित योग अनेक हैं और यह चिकित्सा ज्योतिष नाम की पुस्तक का विषय है जिसे लिखने की मेरी योजना है। इस पुस्तक में हम उदाहरण के साथ कुछ महत्त्वपूर्ण योगों पर विचार करेंगे।

कर्म का स्थान शारीरिक,मानसिक और आध्यात्मिक में है। बुरे कर्म का परिणाम रोग हैं और मानव उत्पीड़न के उपशमन के लिए औषधि प्रथम शान्ति का उपाय है।

चिकित्सा ज्योतिष का मूल प्रयोजन ग्रहों के उन प्रभावों को देना है जिनके कारण विभिन्न रोग, उत्पीड़न और दुर्घटना होती है। प्राचीन काल में सभी डाक्टरों को ज्योतिष जानना, और रोग के साथ इसका सम्बन्ध जानना, विभिन्न ग्रह स्थिति में किस प्रकार का रोग होगा, उस रोग का नियत काल, और क्या वह मारने वाला होगा या नहीं यह जानना आवश्यक था। आधुनिक डॉक्टर यदि अपनी पूर्व धारणा बदल दें और उपचार तथा रोग के निदान में ज्योतिष का प्रयोग करें तो उत्तम उपचार कर सकेंगे। ज्योतिष को उचित ढंग से लागू किया जाएगा तो रोगी का रोग शीघ्र निश्चित हो जाएगा। रोग को दो भाग में बांटा जा सकता है—

पैत्रिक और क्रियाशील। जन्म कुंडली के प्रभाव से पैत्रिक रोग की प्रवृत्ति जान पड़ती है। यह प्रवृत्ति काफी समय तक छिपी रह सकती है और जब बुरे ग्रहों का प्रभाव प्रगति पर होगा तो यह रोग सामने आएगा। दूसरी ओर यदि लग्न कमजोर और पीड़ित हो तो प्रत्येक बुरे ग्रह की गति के साथ क्रियाशील रोग उभर कर सामने आता है।

ज्योतिष के प्रत्येक विद्यार्थी को शारीरिक रोग पर मानसिक प्रभाव को पहचानना चाहिए। चन्द्रमा मस्तिष्क पर शासन करता है, लग्न शरीर का द्योतक है और सूर्य आत्मा का। अतः जब चन्द्रमा और सूर्य बली हों और बुरे प्रभाव से मुक्त हों तो उस जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहता है भले ही लग्न पर अननुकूल दृष्टि या युक्ति हो। आजकल यह धारणा है कि सभी प्रकार के रोग औषधि से ठीक हो सकते हैं। दूसरी ओर आयुर्वेद की यह मान्यता है कि शारीरिक रोग का मस्तिष्क के साथ सम्बन्ध होता है और वह इस बात पर बल देता है कि स्वास्थ्य और तन्दुरुस्ती के लिए अनिवार्य शर्त मानसिक सौहार्द है। इसी कारण प्राचीन काल में कुण्डली में चन्द्रमा के बल पर अधिक जोर दिया जाता था। ऐसा बताया जाता है कि कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय में भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर सर वाल्टर लांगडोन ब्राउन, ने यह पता लगाया कि 'औषधि ही समस्त दवा नहीं है'। मनोविज्ञान के चिकित्सकों के आक्रमण से मस्तिष्क और शरीर का द्वैतवाद टूट गया। भविष्य के डॉक्टरों के पास शारीरिक कष्ट के लिए मूर्त सहायता और आत्मा के कष्ट के लिए मनश्चिकित्सा दो हथियार होंगे। दूसरे शब्दों में आधुनिक औषधि उसी स्थान पर आ रही है जो पांच हजार वर्ष पूर्व ऋषियों का मत था कि स्वास्थ्य सौहार्द पर निर्भर करता है और रोग शरीर और मस्तिष्क के बीच असामंजस्य पर।

ज्योतिषी को सर्व प्रथम चन्द्रमा का अध्ययन करना चाहिए उसके बाद रोगी के मानसिक गुण का। उस राशि पर ध्यान दें जहाँ चन्द्रमा स्थित है। वह किस भाव अरिष्ट या योग में है। मानसिक गुण की अवधारणा के लिए बुध को देखें क्योंकि वह स्नायु और स्नायु तन्त्र को नियन्त्रित करता है। किसी राशि में इन दोनों ग्रहों के बुनियादी गुण का सावधानी पूर्वक अध्ययन करना चाहिए। इन दोनों ग्रहों के बीच शुभ सम्बन्ध अति महत्त्वपूर्ण है। यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो और उस पर कोई शुभ दृष्टि न हो मस्तिष्क सख्त, धीमा होता है और उसमें कष्ट हो सकता है। तथापि यदि अधियोग या गजकेशरी योग हो तो सन्तुलित मस्तिष्क का विकास होगा और याददास्त तेज होगी। चन्द्रमा और मंगल की युक्ति और दृष्टि यह दर्शाती है कि वह व्यक्ति बली, भावुक और चिड़चिड़े स्वभाव का है तथा मस्तिष्क पर उसका नियन्त्रण कम रहता है। चन्द्र-चन्डाल योग जो चन्द्रमा और राहु की युक्ति से बनता है, यह संकेत देता है कि हानिकारक और अप्राकृतिक स्थिति, सम्मोह, धार्मिक,

मध्यम, औषधि; मुक्ति आदि की ओर मस्तिष्क का झुकाव होगा। यह भाव और राशि पर निर्भर करता है कि यह प्रवृत्ति किस प्रकार होगी। उदाहरण स्वरूप यदि चन्द्रमा वृश्चिक में हो और शनि या राहु से प्रभावित हो तो जातक काला जादू के प्रयोग में लालायित होता है और वह ऐसे लोगों का शिकार हो सकता है जो दुराचारी ढंग से इन भयानक प्रथाओं का प्रयोग करते हैं। पुनः यदि चन्द्रमा राहु या शनि से बुरी तरह पीड़ित हो तो वह व्यक्ति उन्माद से ग्रस्त होगा क्योंकि अत्यधिक भावुकता के कारण मस्तिष्क में आत्महत्या की प्रवृत्ति होगी। अतः शारीरिक रोग की स्थिति पर विचार करने से पूर्व मनःस्थिति की जांच अति महत्त्व पूर्ण है।

यह स्पष्ट कर लेना चाहिए कि एक या दो योगों के आधार पर मानसिक निदान नहीं करना चाहिए। समस्त कुण्डली की सावधानी पूर्वक जांच करनी चाहिए।

उचित निदान पर विचार करने से पहले कुछ अभ्युक्तियाँ आवश्यक हैं। कुण्डली में जो ग्रह अत्यधिक बली होते हैं वे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्थिति की प्रधानता निर्धारित करते हैं। इस प्रकार यदि सूर्य सबसे बली ग्रह हो तो जातक सन्तुलित स्वास्थ्य का आनन्द उठाता है। नेत्र की दृष्टि कमजोर होती है। वह अग्नि के कारण दुर्घटना ग्रस्त हो सकता है। तथापि यदि सूर्य कमजोर हो तो जातक अन्धा हो सकता है, हृदय खराब स्थिति में होगा। वह यदा कदा हृदय गति से कष्ट पाता है। उसे सूर्य की लू लग सकती है। यदि कुण्डली में मंगल अत्यधिक बली हो तो रक्त विकार होता है। खून अधिक होता है। रक्तघात, चर्मरोग, आन्तरिक अंग में विकार की शिकायत की सम्भावना रहती है। लड़ाई में उसे घाव लग सकता है। जब मंगल अत्यधिक प्रभावित हो तो जातक ऐसा काम कर सकता है जिससे उसे फांसी भी हो सकती है। बुध बली होने पर विलियस प्रवृत्ति होती है। वह उत्तेजना, गुर्दा और पाचन क्रिया से ग्रस्त होता है। वह कभी-कभी दकिया-नूसी बन जाता है और कभी-कभी शीघ्र उपचार के बारे में सोचने लगता है। यदि बृहस्पति बली हो तो रक्त विकार और कफ विकार होता है। जातक अधिक खाने पीने में रत होने के कारण पीड़ित हो सकता है। शुक्र बली होने पर जातक बली, स्वस्थ और सुखी, कामुक, जीवन के उत्तम वस्तुओं का शोकीन होता है। यह स्थिति आनन्द दायक है। वह प्रेम में असफलता, प्रजनन अंगों की अव्यवस्था से पीड़ित हो सकता है। अधिक कामुक होने के कारण वह पीड़ित हो सकता है और उसे इसके लिए भुगतना पड़ेगा। सुज़ाक, रक्त में विष आदि सम्भावना से परे नहीं है। जब शनि प्रबल हो तो जातक स्नायु रोग से पीड़ित हो सकता है। वह काफी चिन्ता

करता है और असाध्य चिन्ता से ग्रस्त होता है। इससे कभी-कभी पागल भी हो जाता है। खराब आदत, देखने में भद्दा, पूरे शरीर पर बाल, दुबला पतला और लम्बा, सुस्त होता है। किसी के पास जाने पर वह उसे अवांछित आगन्तुक मानता है। इस कालम पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

छठे भाव के परिणामों के फलित का समय

छठे भाव से सम्बन्धित घटनाओं के समय के लिए निम्नलिखित बातों पर विचार करना चाहिए—

(क) अधिपति (ख) भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह या ग्रहों (ग) छठे भाव में स्थित ग्रह या ग्रहों (घ) छठे भाव के अधिपति पर दृष्टि डालने वाले ग्रह या ग्रहों (ङ) छठे भाव के स्वामी के साथ युक्ति करने वाले ग्रह या ग्रहों (च) चन्द्रमा से षष्ठेश और छठे भाव का कारक।

ऊपर दिए गए तथ्य दशा नाथ के रूप में, भुक्ति नाथ के रूप में या अपने प्रत्यन्तर में छठे भाव पर प्रभाव डालने में सक्षम हैं।

छठे भाव पर प्रभाव डालने में सक्षम ग्रहों की महादशा काल में छठे भाव को प्रभावित करने वाले ग्रहों की अन्तर्दशा छठे भाव के सम्बन्ध में उत्तम फल देती है। छठे भाव के साथ जिन ग्रहों का सम्बन्ध नहीं है उनकी महादशा में छठे भाव के साथ जिन ग्रहों का सम्बन्ध है उनकी भुक्ति में छठे भाव के सम्बन्ध में सीमित फल प्राप्त हो सकता है। इसी प्रकार छठे भाव के साथ जिन ग्रहों का सम्बन्ध है उनकी दशा काल में जिन ग्रहों का छठे भाव के साथ सम्बन्ध नहीं है उनकी भुक्ति में छठे भाव के सम्बन्ध में सीमित परिणाम प्राप्त हो सकता है।

परिणाम का स्वरूप

साधारणतः सम्बन्धित कुण्डली में अन्य स्थितियों के अध्यधीन छठे भाव को प्रभावित करने में सक्षम ग्रहों की महादशा और अन्तर्दशा में निम्नलिखित परिणाम की सम्भावना होती है।

जब षष्ठेश छठे भाव में बली हो तो साधारणतः उसकी दशा के दौरान उत्तम फल होता है। उपरोक्त योग के साथ युक्त होने वाले ग्रह की भुक्ति में प्राप्त होने वाला फल अननुकूल होगा और युक्त होने वाले ग्रह के स्वामित्व वाले भाव के स्वरूप से सम्बन्धित परिणाम प्राप्त होंगे। इस प्रकार यदि द्वितीयेश की युक्ति होती है तो व्यवसाय में पिछड़ापन होगा। जो छठे भाव में षष्ठेश के साथ युक्त न हों उन ग्रहों की भुक्ति में भुक्ति नाथ के स्वामित्व वाले अनेक भावों से सम्बन्धित शुभ फल प्राप्त होंगे। छठे भाव में षष्ठेश की दशा के दौरान वित्तीय सम्पन्नता की आशा की जा सकती है यदि अष्टमेश और द्वादशेश के साथ उसकी युक्ति हो। सबल दशा काल में उत्तम फल प्राप्त होगा।

जब षष्ठेश सप्तमेश के साथ बली हो तो दशा काल में मिले-जुले फल प्राप्त होंगे; कुछ समय के लिए शत्रुओं से कष्ट होगा और वह व्यक्ति इन कष्टों से मुक्त भी हो जाएगा। यदि यात्रा पर हो तो उसे निराश होना पड़ेगा और बाधाएँ आएँगी। यदि षष्ठेश सप्तम भाव में सप्तमेश के साथ युक्त हो तो जातक या उसकी पत्नी का स्वास्थ्य बिगड़ेगा। अथवा उसकी अपनी भुक्ति में पत्नी के साथ मतभेद होगा। यदि इस योग में मारक ग्रह भुक्त हों और साथ ही लग्नाधिपति कमजोर हो तो जातक गम्भीर बीमार होगा, मतभेद होगा, शत्रुओं से कष्ट होगा, कर्ज में पड़ जाएगा और स्त्रियों के मामले में स्त्रीरोग होगा। यदि षष्ठेश नवांश में ६, ८ या १२ में हो तो पत्नी के साथ मतभेद होगा; यदि षष्ठेश ५, ७, ९ या १० वें नवांश में हो तो पत्नी के आचरण पर सन्देह किया जा सकता है। यदि उपरोक्त प्रभाव के अतिरिक्त छठा भाव द्विस्वभाव राशि हो और स्वामी द्विस्वभाव नवांश में हो तो वह पत्नी को तलाक देगा और दूसरी शादी करेगा। यदि उपरोक्त योग में शुक्र शामिल हो तो पत्नी के साथ मतभेद के कारण वह अन्य स्त्री के साथ सम्बन्ध कायम करेगा। यदि षष्ठेश उपरोक्त स्थिति में हों और द्वितीयेश की युक्ति हो तो षष्ठेश की दशा में उस व्यक्ति की मृत्यु की आशा की जा सकती है।

जब षष्ठेश आठवें भाव में उत्तम स्थिति में हो तो शुभ ग्रहों की भुक्ति में अनुकूल परिणाम प्राप्त होता है। जब लग्नेश छठे भाव में हो और षष्ठेश आठवें भाव में हो तो षष्ठेश के दशा काल में लग्नेश की भुक्ति के दौरान जातक असाध्य रोग, गरीबी से पीड़ित होगा, धन की हानि होगी और मानसिक पीड़ा होगी। तथापि यदि लग्नाधिपति नवांश में ६, ८ या १२ वें भाव में शुभ राशि में हो तो बीमारी से आराम मिलेगा। यदि लग्नेश षष्ठेश या अष्टमेश के साथ हो या वे नवांश में युक्त हों तो उपरोक्त बुरे फल से राहत की आशा नहीं की जा सकती है। जिस भाव का स्वामी ८ वें भाव में षष्ठेश के साथ युक्त हो उस भाव का कारकत्व अष्टमेश की दशा में उसकी भुक्ति के दौरान नष्ट हो जाता है। मान लें कि दसमेश आठवें भाव में षष्ठेश के साथ युक्त है तो षष्ठेश के दशाकाल में दसमेश की भुक्ति में व्यवसाय में पिछड़ापन आएगा या वृत्ति आदि में हानि होगी।

यदि षष्ठेश नवम भाव में हो और मारक की युक्ति हो तथा पितृकारक (सूर्य) बली हो तो पिता का दुर्भाग्य, शत्रुओं से खतरा, मानसिक चिन्ता और भारी हानि होती है। पिता की सम्पत्ति की हानि हो सकती है, आर्थिक कष्ट, मुकदमे-बाजी और कर्ज में पड़ सकता है। यदि सूर्य षष्ठेश के साथ नवम भाव में हो तो षष्ठेश के दशाकाल और सूर्य की भुक्ति में पिता की मृत्यु हो जाएगी। जब षष्ठेश नवम भाव में हो और सूर्य नवमेश के साथ अष्टम में हो या कमजोर हो तो स्वामी (नवम में) अष्टमेश के साथ युक्त या दृष्ट हो तो सूजन और पेट में दाह से पिता

की मृत्यु होगी। जब उपरोक्त योग में सप्तमेश भी युक्त हो तो पिता की मृत्यु नहीं होगी किन्तु पिता और पुत्र के बीच शत्रुता होगी।

जब षष्ठेश दशम भाव में दसमेश के साथ हो तो उसका नित्य प्रतिदिन का व्यावसायिक क्रिया कलाप बिगड़ जाएगा। वह निम्न व्यवसाय में जाएगा और समाज में नीचे रहेगा। सरकार या अधिकारियों की अप्रसन्नता मिलेगी तथा मिथ्या आरोप का शिकार होगा। तथापि यदि दसमेश नवांश में ६, ८ या १२ वें भाव में हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो उपरोक्त बुरे प्रभाव कम हो जायेंगे यदि पीड़ित हो तो बुरे प्रभाव अधिक होंगे।

जब षष्ठेश एकादशेश के साथ ग्यारहवें भाव में हो तो कारोबार, कृषि या उसकी वृत्ति से लाभ कम होगा। यह परिणाम विशेषकर षष्ठेश की भुक्ति के दौरान होगा। जब षष्ठेश बली हो तो मामा से लाभ होगा किन्तु अपने बड़े भाइयों के साथ नहीं बनेगी। यदि एकादशेश षष्ठेश से बली हो तो वह अपने शत्रुओं पर विजय पाएगा और सभी विरोध पर काबू पाएगा।

जब षष्ठेश द्वादशेश के साथ १२ वें भाव में हो तो वह कष्ट, हानि और शत्रुओं के हाथ से विनाश का शिकार होगा। वह अनैतिक बन जाएगा। उपरोक्त योग से युक्त ग्रह के भाव से सम्बन्धित साधन से बुरे प्रभाव होंगे। जब षष्ठेश बली हो तो कोई बुरी घटना नहीं होगी।

जब षष्ठेश लग्नाधिपति के साथ लग्न में हो तो जातक रोग से पीड़ित होता है या इन्द्रिय में विकृति आती है, अपने वरिष्ठों से कष्ट होता है और शत्रुओं के षडयन्त्र का शिकार होता है। जब उपरोक्त में राहु युक्त हो तो चोरी से हानि होगी और गरीबी तथा आर्थिक संकट का सामना करना होगा। यदि षष्ठेश लग्नाधिपति से (नवांश में) ६, ८ या १२ वें भाव में हो तो ऊपर दिए गए परिणाम हल्के हो जाएंगे यदि अष्टमेश नवांश लग्न या नवांश लग्नाधिपति के दोनों तरफ हो तो दुर्भाग्य होगा, स्वास्थ्य बिगड़ेगा और वित्तीय हानि होगी। ये बातें षष्ठेश की दशा में एक के बाद दूसरी आएंगी। उपरोक्त स्थिति में जीवन नरक बन जाता है और जातक की अकाल मृत्यु हो जाती है।

जब षष्ठेश द्वितीयेश के साथ दूसरे भाव में हो तो पारिवारिक जीवन विघटित हो जाता है। सम्बन्धी और मित्र कट्टर शत्रु बन जाते हैं उसे समय पर भोजन नहीं मिलता। शत्रुओं के माध्यम से धन की हानि होती है। वह दांत और आंख या केन्सर की तकलीफ से पीड़ित होता है। यदि उपरोक्त योग में कोई शुभ ग्रह युक्त हों तो कष्ट और शुभ घटनाएं बारी बारी से आती रहेंगी। जब लग्नाधिपति इस योग में युक्त हो और कोई शुभ प्रभाव न हो तो षष्ठेश की दशा और लग्ना-

धिपति की भुक्ति में मृत्यु की भविष्यवाणी की जा सकती है। उपरोक्त योग में अन्तग्रंस्त कुल प्रभावों के स्वरूप के आधार पर मृत्यु होगी या अति विपरीत घटना होगी।

जब षष्ठेश तृतीयेश के साथ तीसरे भाव में हो तो जातक को अपने भाइयों के साथ मतभेद होगा। उसे कान या गले की शिकायत होगी या बहरापन या गले में चोट लगेगी, आत्मविश्वास खो देगा तथा मित्रों से शत्रुता होगी। जब उपरोक्त योग में शुभ ग्रह युक्त हों तो ये बुरे प्रभाव कम हो जाएँगे। जब मंगल कमजोर हो तो भाई बीमार होगा या उसकी मृत्यु होगी।

जब षष्ठेश चौथे भाव में हो और राहु तथा चन्द्रमा एक साथ हों तो षष्ठेश की दशा के दौरान मां का सम्मान जाता रहेगा। यदि यह दशा जीवन में देर से आती है तो जातक का स्वास्थ्य संकट में होगा। जब मंगल कमजोर हो तो जातक की अचल सम्पत्ति की नीलामी होगी या शत्रुओं से हानि होगा। यदि बुध कमजोर हो तो वह परीक्षा में असफल रहेगा या शिक्षा में रुकावट आएगी। यदि शुक्र कमजोर हो तो गाड़ी से गिरकर उसकी दुर्गंघटना होगी। जब चतुर्थेश बली हो तो मां विधवा हो सकती है। जब लग्नेश और चतुर्थेश एक दूसरे से छठे और आठवें भाव में हों तो वह व्यक्ति अपनी माँ से अलग हो जाएगा, अन्य शुभ या अशुभ प्रभाव से ऊपर दिए गए परिणाम में कमी या अधिकता आती है।

जब षष्ठेश पंचमेश के साथ पंचम भाव में हो तो इन स्वामियों के कारकत्व के आधार पर अपने अधिकारी, पुत्र या पिता के साथ शत्रुता होगी। उसके बच्चों का अक्सर स्वास्थ्य बिगड़ेगा। उसके सामने सभी प्रकार की बाधाएँ आएँगी। उसके विचार दूषित हो जाएँगे। इस दशा के दौरान यदि आध्यात्मिक क्रिया की गई तो वह निष्फल हो जाएगी। यदि षष्ठेश पंचम भाव में हो और ४, ५, ७, ९ या ११ डिग्री पर हो और लग्नेश कमजोर और बुरे प्रभाव में हो तो शासकों की अप्रसन्नता प्राप्त होगी तो षष्ठेश की दशा और लग्नेश की भुक्ति या लग्नेश की दशा और षष्ठेश की भुक्ति में जेल होगा।

किसी भाव के दशा फल की व्याख्या करने में ऋषियों ने युक्ति या व्याख्या करने के कौशल पर बल दिया है। यह एक स्वीकृत तथ्य है कि किसी कुण्डली की जांच करने के लिए काफी विवेक की आवश्यकता होती है। ग्रहों के बल, उनकी दृष्टि और अनेक प्रभावों का माप तोल करके कोई निष्कर्ष निकाला जाता है। उदाहरण के लिए किसी विशेष भाव के स्वामी की दशा के दौरान होने वाले परिणामों की भविष्य वाणी के लिए ऊपर दिए गए नियम केवल सन्दर्भ के लिए एक संहिता का काम कर सकते हैं। इनके आधार पर एक पाठक अपने विवेक का

प्रयोग करके एक नियम निर्धारित कर सकता है और वह उनसे सर्वोत्तम फल निकाल सकता है। सबसे बड़ी गलती जो कोई आदमी कर सकता है वह वास्तविक कुण्डली पर इन सिद्धान्तों का ज्यों का त्यों प्रयोग करना है।

ऊपर यह लिखा गया है कि जब षष्ठेश पंचमेश के साथ पंचम भाव में होंता है तो उस व्यक्ति की पुत्र या पिता के साथ शत्रुता होगी। मान लें कि लग्न मीन है तो षष्ठेश सूर्य होगा जो पितृ कारक और पंचमेश चन्द्रमा होगा जो मातृ कारक है। पंचमेश चन्द्रमा युक्ति के कारण बली है। अतः सूर्य की दशा के दौरान जिस व्यक्ति के साथ शत्रुता होगी वह अवश्य ही पिता होगा।

मान लें कि उपरोक्त मामले में सूर्य ४, ५ या ७, ९ या १० डिग्री पर है तो इस योग के साथ दृष्ट या युक्त कारक ग्रहों से सम्बन्धित अपराध के लिए सूर्य की दशा और चन्द्रमा की भुक्ति में वह व्यक्ति जेल जाएगा।

जैसा कि हमने ऊपर कहा है छठा भाव मुख्य रूप से रोग ऋण और शत्रुओं से सम्बन्धित होता है। हम चिकित्सा ज्योतिष के कुछ विशेष सिद्धान्तों पर विचार करेंगे और कुछ महत्त्वपूर्ण रोगों, ऋणों तथा शत्रुओं के सम्बन्ध में अनेक कुण्डलियों पर विचार करेंगे। रोगों के निदान की पद्धति, रोग होने के समय और रोग समाप्त होने के समय पर हम अपना चिकित्सा ज्योतिष नामक पुस्तक में विस्तार पूर्वक विचार करेंगे जो अभी लिखी जा रही है।

रोग के तीन नितंबों का पता लगाया जाता है अर्थात् यदि लग्न चर राशि में हो और वह ऊर्ध्वमुख राशि हो तो रोग गर्दन से ऊपर देखने में आता है; यदि अचर राशि हो और तिर्यग्मुख हो तो रोग गर्दन से नीचे और छाती से ऊपर होगा, यदि यह द्विस्वभाव राशि और अधोमुख हो तो रोग छाती से नीचे होगा। निम्नलिखित ग्रह उनके सामने दिए गए अंगों को नियन्त्रित करते हैं।

सूर्य—पेट, चन्द्रमा–हृदय, मंगल–सिर, बुध–छाती; वृहस्पति जंघा-पैर, हड्डी अन्तर्जंघिका और बहिर्जंघिका और राहु—पैर का तलवा। ग्रहों को अंगों का आबटन बराह मिहिर द्वारा अपनाई गई पद्धति के अनुसार है अर्थात् लग्न सिर के लिए होता है और उसके बाद इसी के अनुसार।

त्रिदोष विभिन्न ग्रहों द्वारा निम्न प्रकार नियन्त्रित होता है—

सूर्य—पित्त और बात

चन्द्रमा—वात और कफ

मंगल—पित्त

बुध—वात, पित्त और कफ

वृहस्पति—कफ और वात

शुक्र—वात और कफ

शनि—वात और पित्त

कुण्डली की सावधानी पूर्वक जांच करें। यदि सूर्य और मंगल बुरे स्थान पर हों तो पित्त रोग देखा जा सकता है। चन्द्रमा और शुक्र यदि बुरी स्थिति में हों तो जलीय रोग अर्थात् सूजन, जलोदर, सिर में पानी का रोग आदि हो सकता है। शनि के कारण बात सम्बन्धी रोग होता है। बुध के कारण मस्तिष्क ज्वर,टायफायड जैसी बीमारी होती है। ये रोग ग्रहों से सम्बन्धित मौसम में होंगे जो नीचे दिया जाता है—

ग्रह	मौसम	ग्रह	मौसम
शुक्र	वसन्त	बुध	शरद
सूर्य और मंगल	ग्रीष्म	वृहस्पति	हेमन्त
चन्द्रमा	वर्षा	शनि	शिशिर

निम्नलिखित से रोग का पता लगाया जा सकता है—

(क) ६, ४ और १२ वें भाव में स्थिर ग्रह (ख) लग्नेश के साथ युक्त ग्रह (ग) लग्नेश द्वारा दृष्ट ग्रह (घ) लग्न में स्थित या दृष्टि डालने वाले ग्रह।

विभिन्न ग्रहों के रोगों का विवरण निम्न प्रकार है—

सूर्य अत्यधिक गर्मी और आन्तरिक ज्वर का द्योतक है। चन्द्रमा यदि ऊर्ध्वमुख राशि में हो तो उल्टी का कारण होता है; यदि वह तिर्यग्मुख में हो तो गुर्दा और मूत्रमार्ग सम्बन्धी रोग; यदि अधोमुख राशि में हो तो दस्त और प्यास।

मंगल के कारण शरीर में गर्मी या अस्वस्थ रक्त में अधिक गर्मी द्वारा रोग होता है। बुध–हल्का ज्वर, टायफायड, पागलपन।

वृहस्पति—सोचने या याददास्त में अक्षमता।

शुक्र—अपच, शरीर में पानी, शरीर में अत्यधिक गर्मी,मूर्छा और बेहोशी;शनि–प्यास, खाने पीने में रुचि नहीं रखना शरीर के सभी अंगों में दर्द; राहु–सांस लेने में कष्ट; गुलिका–नसों का खिचाव और केतु–जो राहु का है। रोग को अनेक भागों में बांटा जा सकता है जैसे शारीरिक और मानसिक, तीन दोषों के कारण अलग अलग रोग और तीन दोषों के क्रमपरिवर्तन या मिश्रण द्वारा रोग,

प्रसिद्ध पुस्तक प्रश्नमार्ग के अनुसार निम्नलिखित द्वारा शारीरिक रोग सुनिश्चित किया जा सकता है (क) अष्टम भाव (ख) अष्टमेश (ग) अष्टम भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (घ) अष्टम भाव में जो ग्रह स्थित है। इनमें जो बली होगा

वह अपने निमन्त्रणाधीन दोष से सम्बन्धित रोग का कारण बनेगा और उस विशेष अंग में रोग होगा जिसे ग्रह चक्र प्रभावित करता है।

प्रश्नमार्ग में आगे कहा गया है कि यदि सूर्य किसी अनिष्ट स्थान पर स्थित हो तो पित्त से कष्ट, दर्द के साथ ज्वर, अचानक गिर जाना, आंख में रोग, शत्रुओं से भय, चर्म रोग, हड्डी सम्बन्धी रोग, विष से खतरा, पत्नी की मृत्यु, पुत्र को खतरा, चौपाया से खतरा, चोरों से कष्ट, राजा से भय, पारिवारिक देवता का कोप, नागदेवता का कोप, भूत का बुरा प्रभाव होगा।

यदि चन्द्रमा अनिष्ट स्थिति में हो तो अधिक निद्रा, किसी काम में फुर्ती का अभाव, कफ में वृद्धि और निरन्तर कष्ट जैसे दमा, फेफड़ा आदि में तकलीफ, दस्त, फोड़ा फूंसी, अति ज्वर, जानवरों के सींग से घाव, जलीय पशु से कष्ट, दुष्पाचन-ग्रस्त, दुर्बलता, पत्नी से दुख, शरीर में रक्त का अभाव, याददास्त की कमजोरी, रक्त विष और उससे सम्बन्धित रोग, जल से भय, बालग्रह से कष्ट, दुर्गा का कोप, पारिवारिक देवता का कोप, नागदेवता आदि का कोप।

यदि मंगल बुरा हो तो प्यास, रक्त चाप, पित्त, ज्वर, गर्मी के कारण रोग, अग्नि, जहर और हथियार; कुष्ठ रोग, आंख, गुल्म (पेट को बीमारी), अधसमारा (हड्डी में मज्जा की कमी), चमड़े की चमक समाप्त हो जाना, शरीर में खुजली, शरीर मीच जाना, राजा से कष्ट, शत्रु और चोर, भाई से शत्रुता, पुत्र और सम्बन्धियों से शत्रता और नाक से ऊपर के रोग।

यदि बुध अननुकूल हो तो पागलपन, अक्सर अपशब्द पूर्ण बातें करने की प्रवृत्ति होती है। आंख में रोग, गले और नाक में रोग, सभी दोषों के कारण उच्च ज्वर, नागदेवता से भय, विष से भय, चर्म रोग, पांडु रोग, खराब स्वप्न, खुजली, अचानक गिरने का भय, कठोर बातें करने की प्रवृत्ति—जेल से भय, शारीरिक थकान, पक्षी पीड़ा आदि जैसे बुरे प्रभाव।

यदि वृहस्पति पीड़ित हो तो गुल्म (पेट का रोग), ज्वर, दुख, मूर्छा, कफ दोष के कारण कान का रोग, प्रमेह ब्राह्मणों के कारण और मन्दिरों के खजाना हटाने के कारण रोग।

अशुभ शुक्र के कारण पांडु रोग, कफ और बात के कारण रोग, आंख में रोग, आलस, शरीर के लिए काफी थकान और उस कारण कमजोरी, गुप्त अंगों में रोग, चेहरे पर रोग, मूत्राशय में रोग, धन और लड़कियों के लिए अत्यधिक विरुचि के कारण खतरा, वीर्यपात, कपड़े और पोशाक की क्षति, कृषि में हानि, शरीर में भव्यता का अभाव, शरीर में सूजन, बुरी आत्मा से भय, निकट सम्बन्धियों की मृत्यु।

यदि शनि पीड़ित हो तो बात और कफ के कारण रोग, पैर में रोग, अप्रत्याशित खतरा, सुस्ती, अधिक थकान के कारण कमजोरी, पेट में दर्द, नौकरों की क्षति, चौपायों की क्षति—पत्नी और बच्चों की मृत्यु, शरीर के एक पैर में दुर्घटना, अंधापन, बहरापन, मानसिक चिन्ता, पेड़ से गिरने या शरीर पर पत्थर गिरने के कारण घाव, बुरी आत्मा से कष्ट, पिशाच आदि से कष्ट।

यदि राहु अननुकूल भाव में हो तो शरीर में अति ताप, कुष्ठ, एक साथ अनेक रोग, दूसरे द्वारा विष दिया जाना, पैर में रोग, पिशाच से कष्ट, नागदेवता से भय, पत्नी और बच्चों से भय, क्षत्रिय और ब्राह्मण से झगड़ा, शत्रुओं से कष्ट, प्रेत से कष्ट।

राहु और केतु के कारण होने वाले सभी कष्ट गुलिका से होते हैं और इसके अतिरिक्त सबके क्रोध का केन्द्र बनता है। निकट सम्बन्धियों की मृत्यु, विष से भय (पागल कुत्ता भी शामिल है)।

यदि शनि दशम भाव में हो तो पिशाच और पक्षी पीड़ा से कष्ट की भविष्यवाणी करें। यदि गुलिका लग्न या ८ वें भाव में हो और उस पर राहु की दृष्टि हो तो सूजन या बुरी नजर के कारण शरीर में विष की भविष्यवाणी करें। यदि छठे भाव में बुरे ग्रह हों तो पेट के रोग की भविष्यवाणी करें। ८ वें भाव का मंगल ज्वर का कारण, लग्न में अपच और सप्तम भाव में दोनों का कारण बनता है।

मानसिक रोग क्रोध, भय, दुख और इच्छा के कारण होता है। पंचमेश और अष्टमेश दोनों के परिवर्तन द्वारा इन्हें नियत करना होता है,

इसके बाद आत्माओं, महान व्यक्तियों के श्राप और शत्रुओं के यान्त्रिक प्रयोग जैसे अन्य अगोचर कारणों से होने वाले रोगों की एक अन्य श्रेणी है :

छठे भाव या उसके स्वामी या छठे भाव पर दृष्टि डालने वाले या छठे भाव में स्थित ग्रहों की जांच करके उपरोक्त रोगों का पता लगाया जाता है।

यदि षष्ठेश और अष्टमेश युक्त हों या एक दूसरे को देख रहे हों तो यह भविष्यवाणी कर दें कि रोग मजबूत और गहरा है।

ज्योतिष सम्बन्धी निम्नलिखित योगों से पागलपन के विभिन्न रूपों का पता लगता है।

१. वातोन्माद—निम्नलिखित लक्षणों से इसका पता लगाया जा सकता है:—अर्थात हमेशा हंसते रहना, अक्सर ताली बजाते रहना, जोर से बोलना, नाचते रहना, चिखना, पैर हिलाते रहना और हाथ मरोड़ना। शरीर ताम्बा के रंग का, नरम और रक्तिम हो जाता है। खाया हुआ खाना पच जाने के बाद वह अशान्त हो जाता है।

२. पित्तोन्माद का लक्षण—सभी से घृणा करता है, धृष्ट, हमेशा गुस्सा में

रहना, गाली गलौज करना, खाने और पानी पीने में हमेशा आगे, बहुत क्रोधित। शरीर पीला पड़ जाता है। और जब दौरा पड़ता है तो शरीर गर्म हो जाता है।

३. कफोन्माद का लक्षण—एकान्त और स्त्री पसन्द, प्रत्येक चीज के लिए विरक्ति, थोड़ा सोना, मुँह से हमेशा कफ निकलना, उंगलियों के नाखून पीले और सफेद पड़ जाते हैं।

४. सन्निपातोन्माद—ऊपर बताए गए लक्षण मिले जुले पाए जाते हैं। उत्पीड़न से मुक्ति के लिए सन्निपात असंभव है। निम्नलिखित ८ ग्रह योगों द्वारा ऊपर के सभी प्रकार के पागलपन को सुनिश्चित किया जा सकता है—

(१) लग्न में बृहस्पति और सप्तम में शनि; (२) लग्न में बृहस्पति और सप्तम में मंगल (३) लग्न में शनि और सप्तम, पंचम या नवम में मंगल (४) चन्द्रमा और बुध दोनों एक साथ लग्न में स्थित हों (५) क्षीण चन्द्रमा और शनि १२ वें भाव में (६) बुरे ग्रह से युक्त क्षीण चन्द्रमा ५, ८ या ९ में स्थित हो (७) बुरे ग्रह के साथ युक्त गुलिका सप्तम भाव में हो और (८) बुरे ग्रह के साथ बुध ३, ६, ८ या १२ वें भाव में स्थित हो।

ऐसा कहा जाता है कि वात, पित्त और कफोन्माद उचित मात्रा में औषधि के प्रयोग से ठीक हो सकता है परन्तु सन्निपातोन्माद के बारे में यह कहा जाता है कि मांत्रिक उपचार, जप, होम, यन्त्र पहनने के सिवाए यह ठीक होने योग्य नहीं है।

यदि चन्द्रमा, शुक्र और अष्टमेश बुरे स्थान में स्थित हों तो यह अनुमान लगाया जाता है कि भोजन के अनियमित प्रयोग के कारण उन्माद है। यदि उपरोक्त ग्रह राहु, केतु या गुलिका के साथ हों तो पागलपन अस्वास्थ्य कर भोजन के कारण है। यदि मंगल पाँचवें भाव में हो तो पागलपन का कारण अधिक क्रोध होता है; किसी अन्य बुरे ग्रह से अधिक भय का पता लगता है। यदि नवम भाव में बुरे ग्रह हों तो गुरु या महान लोगों के अभिशाप के कारण पागलपन होता है।

कुंडली सं० १०९—जन्म तारीख २८-१-१९१९ समय ३.५८ बजे संध्या (आई एस टी) (अक्षांश २५°४१' उत्तर, देशा० ८८°३०' पूर्व

केतु की दशा शेष ५-५-० वर्ष

टिप्पणी—शुक्र की दशा, शुक्र की भुक्ति, शनि के प्रत्यन्तर में टायफायड से पीड़ित हुआ। यह ध्यान दें कि शुक्र षष्ठेश मंगल के साथ है और उस पर अष्टमेश शनि की दृष्टि है। उस समय शनि वृश्चिक में चल रहा था। चन्द्रमा से शुक्र षष्ठेश है और नवांश में ८ वें भाव में स्थित है। शुक्र की दशा और शनि की भुक्ति में जब शनि कुम्भ राशि में था तो वह निमोनिया से पीड़ित हुआ और उसका वजन घट गया तथा क्षयरोग का सन्देह हुआ। पुनः सूर्य की दशा में (ध्यान दें कि सूर्य तृतीयेश होकर अष्टम भाव में है जो छठे भाव के कारक मंगल से १२ वें भाव में है) जातक मलेरिया, निमोनिया से पीड़ित हुआ और खून की उल्टी हुई।

कुण्डली सं० ११०—जन्म तारीख २/३-९-१९२१ समय ३.० बजे प्रातः (आई एस टी) (अक्षांश ८°४५' उत्तर, देशा० ७३°४५' पूर्व)

राशि

सूचं५बुमां. ४मंशु ३ २ गु रा६ श ७ १ ८ १० के१२ ९ ११

नवांश

५ ३ ४ २ सूरा६ ७शु १ मंके १० ८ १२ ९चबुमां. गुश११

सूर्य की दशा शेष ४-११-९ वर्ष

उपरोक्त कुण्डली एक कड़ी मेहनत करने वाली एम० ए० बी० टी० महिला की है जो अविवाहित रही और २७ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। राहु की दशा, वृहस्पति की भुक्ति, सूर्य के प्रत्यन्तर में १९४७ में क्षय रोग का सन्देह हुआ, दशानाथ लग्न से षष्ठेश वृहस्पति और चन्द्र लग्न से षष्ठेश शनि के साथ युक्त है। वृहस्पति भुक्ति नाथ के रूप में रोग का कारण बनने में पूर्णतः सक्षम है जो उसने किया है। सूर्य चन्द्रलग्न का स्वामी है और दशा नाथ भुक्ति नाथ से १२ वें भाव में स्थित है। उम समय शनि कर्क राशि में था। ज्योंही शनि की भुक्ति आरम्भ हुई, उसकी मृत्यु हो गई। इस तथ्य पर ध्यान दें कि शनि चन्द्रमा से सप्तमेश है और आयुष्कारक है। उसकी मृत्यु के समय शनि सिंह राशि में था और राहु मेष में था जो जन्म राशि से अष्टम भाव है।

कुण्डली सं० १११—जन्म तारीख २६-७-१९१४ समय ५.२४ बजे संध्या (आई एस टी) (अक्षांश २९° उत्तर, देशा० ७७° ४०' पूर्व)

राशि

नवांश

शुक्र की दशा शेष २–३–१९

जातक को चन्द्रमा की दशा, शुक्र की भुक्ति, सूर्य के प्रत्यन्तर में क्षय रोग हुआ। दशा नाथ चन्द्रमा अष्टमेश है और भुक्ति नाथ शुक्र के साथ नवम भाव में स्थित है जो छठे भाव का स्वामी है और मंगल (छठे भाव का कारक) और केतु भी नवम भाव में स्थित है। सूर्य लग्न से अष्टम भाव में है और दशानाथ तथा भुक्ति नाथ से द्विर्द्वादश भाव में है। इस योग पर चन्द्र लग्न से षष्ठेश शनि की दृष्टि है।

१९३० से १९३४ के बीच राजनीतिक हड़तालों के सम्बन्ध में वह पांच बार जेल गया। पहली बार वह चन्द्रमा की दशा और बुध की भुक्ति में जेल गया। ध्यान दें बुध भी पीड़ित है। षष्ठेश और एकादशेश के रूप में चन्द्रमा और शुक्र की युक्ति के कारण जातक को जेल जाना पड़ा। इसमें मंगल और राहु भी अन्तर्ग्रस्त है। परिणाम स्वरूप वह मंगल की दशा और मगल तथा राहु की भुक्ति में भी जेल में रहा।

कुण्डली सं० ११२—जन्म तारीख १५–६–१९१२ जन्म तारीख ५.२३ बजे प्रातः (आई एस टी) (अक्षांश २५°–२३′ उत्तर, देशा० ८६° ३१′ पूर्व)

राशि

नवांश

मगल की दशा शेष ४–३–२९ वर्ष

षष्ठेश मगल दूसरे भाव (दृष्टि) में है और द्वितीयेश चन्द्रमा अष्टमेश शनि के साथ १२ वें भाव में है। जातक निकट दृष्टि (माचोपिया) से पीड़ित है, छठे भाव

की स्थिति पर ध्यान दें। षष्ठेश मंगल जो रोग कारक है, मारक शनि, केतु और सूर्य के ११ वें भाव में स्थित है। हल्की राहत है क्योंकि वृहस्पति इस योग पर दृष्टि डाल रहा है। सूर्य की दशा और चन्द्रमा की भुक्ति में जातक को चेचक हुआ। षष्ठेश के साथ सूर्य की भुक्ति उस पर अन्य प्रभावों पर ध्यान दें।

कुण्डली सं० ११३—जन्म तारीख ७–१०–१८९३ समय ८.४० बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश १६° ५७′ उत्तर, देशा० ८२° १३′ पूर्व)

राशि
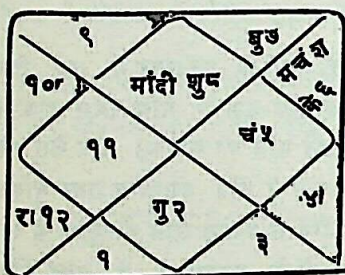
नवांश
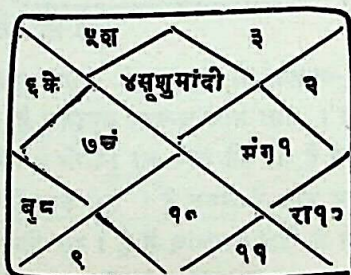
शुक्र की दशा शेष ९–२–२१ वर्ष

कुण्डली सं० ११४—जन्म तारीख १–१–१९११ समय ११.१८ बजे संध्या (आई० एस० टी०) (अक्षांश २५° ५३′ उत्तर, देशा० ८८° २७ पूर्व)

राशि
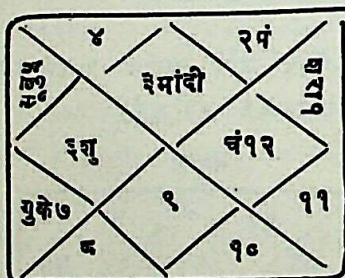
नवांश
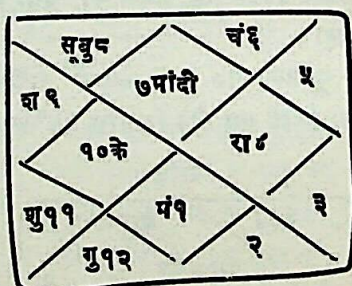
शनि की दशा शेष १२–५–२७

षष्ठेश मंगल जो रोग कारक भी है। १२ वें भाव में स्थित होकर छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है। चन्द्रमा से छठे भाव और षष्ठेश पर मंगल की दृष्टि है, लग्नेश बुध और सूर्य दोनों पर मंगल की दृष्टि है। समस्त शनि की दशा (प्रथम १२ वर्ष) में जातक लीवर और प्लीहा के कष्ट से पीड़ित रहा। इस तथ्य पर ध्यान दें कि शनि अष्टमेश है और राहु के साथ स्थित है। यह और बात है कि उस पर वृहस्पति की दृष्टि है। चन्द्रमा से अष्टमेश शुक्र नीच का है और पाप कर्तरी योग में है। स्नायु का ग्रह बुध पीड़ित है। समस्त बुध की दशा में वह वीर्य स्खलन से पीड़ित

रहा । बुध की दशा और शुक्र की भुक्ति में उसे अण्डकोष की बीमारी हुई इसके लिए बुध की दशा, बृहस्पति की भुक्ति में आपरेशन हुआ। लग्नाधिपति बुध तृतीयेश सूर्य के साथ युक्त होने के कारण पीड़ित है और उस पर षष्ठेश मंगल की दृष्टि है जबकि शनि की दृष्टि के कारण बृहस्पति पीड़ित है । आपरेशन के समय शनि जन्म राशि में था।

कुण्डली सं० ११५—जन्म तारीख १९–५–१९१६ समय ६.१० बजे प्रातः (आई० एस० टी०) (अक्षांश २२° १' उत्तर, देशा० ८२° ४' पूर्व)

राशि

शुश३मांदी
१गु
के४
२सूबु
१२
५मं
११
६
चं८
रा१०
७
९

नवांश
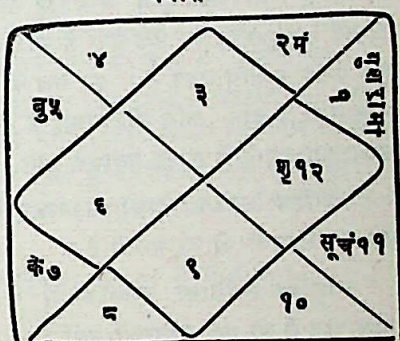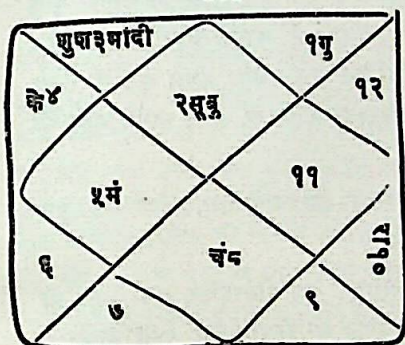
बुध की दशा शेष ४–६–९– वर्ष

शुक्र दशा, राहु की भुक्ति में जातक को गम्भीर टायफायड हुआ था। दशा नाथ शुक्र लग्न और छठे भाव का स्वामी है और शनि से दूसरे भाव में स्थित है। शुक्र और शनि की युक्ति है। उसी दशा में शनि की भुक्ति में उसे खांसी हुई। षष्ठेश और शनि दोनों की वायुतत्त्व राशि मिथुन में स्थिति पर ध्यान दें।

कुण्डली सं० ११६—४/५–५–१८९५ समय ४.० बजे प्रातः (स्थ० स०) (आक्षास १३°२' उत्तर देशा० ७७. ३५' पूर्व)
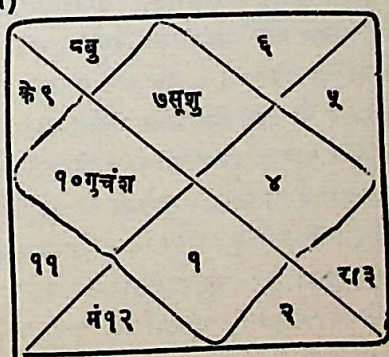
सूर्य की दशा शेष ४–५–१९ वर्ष

छठे भाव में केतु है जबकि चन्द्रमा कन्या में पाप कर्तरी योग में है। षष्ठेश सूर्य चतुर्थेश बुध के साथ दूसरे भाव में हैं। चन्द्रमा से छठे भाव में राहु है और षष्ठेश शनि चन्द्रमा से दूसरे भाव में सूर्य और बुध से दृष्ट है। अतः अपेन्डीसाइटिस से पीड़ित होना निश्चित है।

जैसा कि हमने ऊपर बताया है, पेट का कारक केतु छठे भाव में है। जातक का अगस्त १९२६ में अपेन्डीसाइटिस का आपातकालीन आपरेशन हुआ। चन्द्रमा से छठे भाव में राहु की स्थिति में भी अपेन्डीसाइटिस के लिए समान रूप से संकेत मिलता है। आपरेशन हुआ और राहु की दशा तथा शुक्र की भुक्ति में उसकी मृत्यु हो गई। राहु शनि का फल देता है और शनि चन्द्रमा से मारक भाव में स्थित है। शुक्र मंगल के साथ युक्त है। इन सब के अतिरिक्त उस समय मंगल कर्क में तथा शनि तुला में था। शनि और मंगल के बीच परस्पर दृष्टि से बली प्रभाव मृत्यु की सम्भावना बढ़ाने में काफी सहायक हुआ।

ज्योतिष सम्बन्धी तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अपेन्डीसाइटिस पर कुछ सामान्य टिप्पणी दी जा सकती है।

आधुनिक चिकित्सा स्पष्टीकरणों के अनुसार अपेन्डीसाइटिस एक बहुत ही प्रबल रोग है जो एक कृमिरूपी अपेन्डिक्स के प्रदाह की स्थिति है। ऐसा लगता है कि अपेन्डिक्स एक अवशेषी अंग है जो मनुष्य के वर्तमान जैविक विकास की स्थिति में मानव के शरीर रचना विज्ञान में कोई कार्य नहीं करता। ऐसा प्रतीत होता है कि अपेन्डीसाइटिस छठे भाव और चन्द्रमा के पीड़ित होने के कारण होता है। अपेन्डीसाइटिस और पेट के रोग सूर्य और चन्द्रमा के कन्या में गतिमान होने के कारण होते हैं।

जब छठे भाव में मारक ग्रह विशेष कर मंगल, केतु या राहु स्थित हों तो रोग अप्रकट स्थिति में होता है। सम्बन्धित ग्रह के प्रभाव के अधीन यह बढ़ सकता है या भोजन और आदतों को नियमित करके आरम्भ से ही सावधानी बरतने पर इसे रोका जा सकता है। जब रोग असाध्य और खतरनाक हो जाता है तो मार्गी मंगल द्वारा ५ वां और छठा भाव पीड़ित पाया जाता है और मार्गी मंगल तथा मार्गी शनि के बीच परस्पर दृष्टि परिवर्तन होता है। स्पष्टतः प्रचलित दशा और भुक्ति अपना बुरा प्रभाव डालते हैं। कुण्डली की प्रवृत्ति प्रगतिशील प्रभावों के कारण गम्भीर रोग का रूप ले लेती है। जैसा कि हमने ऊपर बताया है, इस रोग पर मंगल का संहारक प्रभाव होता है। यह एड्रीनल ग्लैंड पर उसके प्रभाव के कारण होता है। एड्रीनल ग्लैंड पर मंगल के प्रभावों का फल रासायनिक सन्तुलन कायम रखता है जो अपेंडिक्स में स्थित रह सकता है और इस द्रव्य के कारण उसमें उत्तेजना पैदा कर

सकता है कि यह कमजोर दिखता है और कुण्डली के संकेतों द्वारा उत्तेजना और प्रदाह की सम्भावना हो सकती है।

मंगल के इस अननुकूल प्रभाव से एड्रीनल ग्लैंड को अत्यधिक कार्य करना पड़ता है और इससे उसके हार्मोन कमजोर और समाप्त हो जाते हैं जिससे एड्रेनलिन तथा इन्टरकोटिनं, रासायनिक एजेन्टों की आपूर्ति अपर्याप्त हो जाती है। उसके बाद अपेन्डिक्स में पीव बनना आरम्भ हो जाता है और यदि यह स्थिति बढ़ती जाती है तो रक्त में जहर फैल जाता है और मृत्यु हो जाती है। यह खतरनाक चरण हैं जब अन्दर सेप्टिक हो जाता है। अपेंडिक्स—एक उदार स्थिति के टिसू के टूटने या क्षय के परिणाम स्वरूप सेप्टिक हो जाता है।

मीन में वृहस्पति या कन्या अथवा मीन में शनि या वृश्चिक में राहु या मिथुन अथवा कन्या में मंगल से पीड़ित होने पर पाँचवें या छठे भाव के पीड़ित होने की सम्भावना होती है जिससे अपेन्डीसाइटिस होता है। यह देखने में आएगा कि छठा भाव एक मात्र रोग का भाव नहीं है बल्कि यह भाव पेट पर विशेष नियन्त्रण रखता है। अतः राहु और मंगल जैसा मारक अनुकूल होता है विशेषकर यदि राशि कन्या हो और चन्द्रमा भी वहीं स्थित हो। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि निम्नलिखित योग अपेन्डीसाइटिस की स्थिति दर्शाते हैं।

(क) २२ वां द्रेष्काण का पीड़ित होंना विशेषकर राहु या मंगल द्वारा।

(ख) छठा भाव प्रबल पाप कर्तरी योग में हो।

(ग) चन्द्रमा कन्या, वृश्चिक या कुम्भ में हो और उस पर अशुभ प्रभाव हों।

(घ) सूर्य सिंह या कुम्भ में हो और उस पर शनि मंगल या राहु की दृष्टि हो या इन तीनों ग्रहों से युक्त हो।

उपरोक्त सिद्धान्तों को भी ध्यान में रखते हुए यह आसानी से पता लगाया जा सकता है कि क्या कुण्डली में अपेण्डीसाइटिस का योग है।

कुण्डली सं० ११७—जन्म का विवरण कुछ कारणों से नहीं दिया गया है।
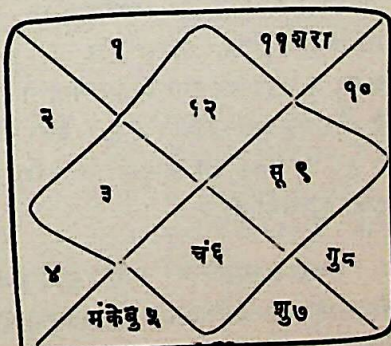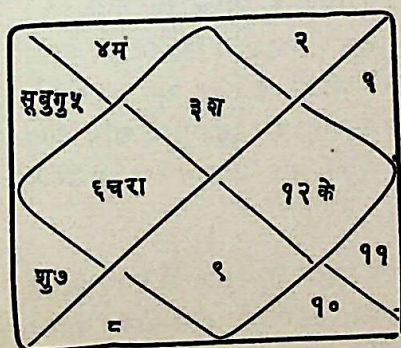
इस विशेष कुण्डली में हम कुछ मूल तथ्यों की व्याख्या करेंगे।

लग्न मिथुन है जबकि नवांश में एक जलीयतत्त्व राशि उदय हो रही है। लग्नेश तीसरे भाव में सूर्य और बृहस्पति के साथ है किन्तु पापकर्तरी योग से पीड़ित है। षष्ठेश (रोग) मंगल जलीयतत्त्व वाली राशि दूसरे भाव में है। यदि ग्रह चक्र के स्वामित्व को स्वीकार करें तो हम यह पाते हैं कि चन्द्रमा और राहु कन्या जैसे भावुक स्थान में स्थित हैं और कर्क में मंगल की स्थिति से पेट और गुर्दों के रोग का संकेत मिलता है। चूंकि शनि एक एनामिक ग्रह है अतः यह शरीर के फ्लूड को शुष्क बना देगा क्योंकि वह लग्न में है। इस तथ्य पर ध्यान दें कि शुक्र मानसिक स्थिति का कारक होकर वर्गोत्तम में है और उस पर मंगल (षष्ठेश) की प्रबल दृष्टि है जबकि लग्न और चन्द्र से ७ वें भाव पर अनुकूल दृष्टि है। कोई भी विवेकशील ज्योतिषी यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि इन प्रभावों से यह पता लगता है कि जातक के कुष्ठ रोग का जिम्मेदार जातक में नैतिक सन्तुलन का अभाव था। बुध पर जिसे थायरायड का कारक बताया जाता है, शनि की दृष्टि है और यह सूर्य के साथ युक्त है (और बृहस्पति से युक्त है) तथा मंगल के घेरे में पड़ा है। पुनः मानसिक आनन्द का ग्रह शुक्र तुला (गुर्दा का कारक) में पड़ा है और उस पर मंगल की दृष्टि है। वीर्य का एक ग्रह चन्द्रमा भावुक स्थान में है और राहु की युक्ति से पीड़ित है। हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि इस व्यक्ति के लैंगिक आनन्द में अत्यधिक लगे रहने के कारण पीयूष काय का कार्य दुर्बल हो गया। 'दुःखम् दिनेशसुतमाजहो' सिद्धान्त के अनुसार शनि दुख का स्वामी होता है जबकि राहु हमेशा वाइस, कचरा और गन्दगी आदि से युक्त होता है। लग्न में शनि और चन्द्रमा के साथ राहु होने पर, सूर्य पर शनि की दृष्टि और नवांश में मगल, केतु, शनि और राहु में परस्पर दृष्टि परिवर्तन होने पर हम यह निर्णय निकाल सकते हैं कि जातक बहुत ही गन्दी आदत वाला है और गन्दे वातावरण पर ध्यान भी नहीं देता। षष्ठेश मंगल सिंह नवांश में है—पहले जैसे पीड़ित है। सम्भवतः वृहदंत्र, चमड़ा और गुर्दा के माध्यम से जहर न निकलने के कारण शरीर में जहर भर गया जिसमें अन्त में फोड़ा फुन्सी हो गई। बुध चमड़े का स्वामी है और वह बुरी स्थिति में है। अतः चमड़ा शुष्क हो गया (बुध शुष्क राशि सिंह में है), मानसिक रूप से सुस्त (चन्द्र-राहु की युक्ति) और मस्तिष्क तथा शरीर में ऊर्जा की कमी हुई।

ऊपर के मामले में जातक कुष्ट रोगी था। होशियार लोगों ने सच कहा है कि लग्न का बली होना आवश्यक है और उस पर अच्छी दृष्टि होनी चाहिए अन्यथा वह व्यक्ति अपनी आदतों में पेटू, अनैतिक और असावधान होता है और इस प्रकार की बीमारियां जड़ कर लेती हैं।

इन सिद्धान्तों को लागू करने में पाठकों को अति सावधान रहना होगा। अन्यथा वे अपर्याप्त ज्ञान या अनुभव के अभाव के आधार पर गलत निष्कर्ष निकाल लेंगे। निर्णय देने से पूर्व विद्यमान प्रतिकारकों की सावधानीपूर्वक संवीक्षा कर लेनी चाहिए।

ज्योतिषीय नामतन्त्र में मंगल कुष्ठ रोग देने वाला माना जाता है। राहु वास्तव में कुष्ठ रोग देने वाला नहीं बल्कि इस गन्दे रोग से मृत्यु का कारण माना जाता है। यद्यपि सूर्य और अन्य ग्रहों का कुष्ठ रोग से कोई सम्बन्ध नहीं होता, ऐसा कहा जाता है कि सूर्य की दशा मंगल की भुक्ति के दौरान यह रोग होता है। प्रत्यक्ष रूप से इसे निश्चित सिद्धान्त नहीं मानना चाहिए कि सूर्य की दशा और बुध की भुक्ति में उस व्यक्ति को कुष्ठ रोग होगा। इस योग से यह पता लगता है कि बुध का भी कुष्ठ रोग के साथ सम्बन्ध होता है। बुध थाइराइड ग्लैंड को नियन्त्रित करता है और थाइराइड ग्लैंड में विकृति के कारण कुष्ठ रोग होता है। पुनः ऐसा कहा जाता है कि बुध की दशा और चन्द्रमा की भुक्ति के दौरान कुष्ठ रोग होता है। यदि गुलिका शनि के साथ युक्त हो तो निश्चित ही यह रोग होगा। हम नीचे कुछ योगों का विवेचन करेंगे जो इस भयानक रोग के कारण होते हैं कि ये इस रोग को दर्शाते हैं—

(१) बुध मेष में, चन्द्रमा दसम भाव में और मंगल तथा शनि की युक्ति (२) शनि, मंगल, चन्द्रमा और शुक्र जल तत्त्व राशि में हों और युक्ति या दृष्टि से पीड़ित हों (३) चन्द्रमा कारकांश से चौथे भाव में हो और मंगल से दृष्ट हो (४) सूर्य, शनि और मंगल की युक्ति (५) चन्द्रमा नवांश में मिथुन, कर्क या मीन राशि में हो और शनि या मंगल से पीड़ित हो (६) बुध, चन्द्रमा और लग्नेश राहु या केतु के साथ युक्त हो (७) मंगल, शनि या सूर्य और षष्ठेश लग्न में हों (८) मंगल लग्न में हो और शनि १, ४ या ८ वें भाव में हो (९) लग्नेश अष्टम भाव में हो और अशुभ ग्रह से पीड़ित हो।

वास्तविक जन्म कुंडलियों पर उपरोक्त सिद्धान्तों को लागू करने में अति सावधान रहना चाहिए क्योंकि किसी योग का प्रभाव कुंडली की सामान्य स्थिति और अन्तर्ग्रस्त तथ्यों के बलाबल के आधार पर होता है। उपरोक्त सूचना से यह स्पष्ट है कि बृहस्पति को छोड़कर लगभग सभी ग्रह इस रोग में शामिल हैं। वास्तव में मंगल, शनि, राहु, बुध, सूर्य और चन्द्रमा पर विशेष बल दिया जाता है। राहु की अपेक्षा केतु कम कष्टदायी है। दूसरे शब्दों में षष्ठेश द्वारा किसी भी प्रकार से पीड़ित लग्न, सूर्य, चन्द्रमा या बुध और अनिष्ट ग्रह राहु, मंगल, शनि या केतु इस के सन्देह पैदा करते हैं जब तक कि कोई अन्य प्रतिकारी योग विद्यमान न हों।

उपरोक्त योगों को मानक पुस्तकों से लिया गया है। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि हमारे काफी दिनों के अध्ययन और अनुभव के आधार पर निम्नलिखित सामान्य कारण सामने आए हैं—(क) चन्द्रमा मेष लग्न में स्थित हो और शनि से पीड़ित हो (ख) शनि या मंगल मिथुन, कर्क या मीन में हो तो प्रथम या सप्तम भाव हो (ग) शनि लग्न में मंगल के साथ युक्त हो जबकि वृश्चिक, धनु या मकर नवांश उदय हो रहा हो (घ) लग्न में बुध षष्ठेश और राहु या मंगल से पीड़ित हों (ङ) चन्द्रमा कन्या, मकर और कुम्भ में हो और मंगल या राहु से पीड़ित हो।

वास्तव में उपरोक्त सिद्धान्तों के विवेचन के लिए अनेक उदाहरण हैं। हमारी अपनी अभियुक्तियों को आवश्यक रूप से सावधानीपूर्वक लेना चाहिए क्योंकि यद्यपि यह अनेक कुंडलियों के अध्ययन पर आधारित है फिर भी इसके और अध्ययन तथा परीक्षण की आवश्यकता है।

कुण्डली सं० ११८—जन्म तारीख २३-८-१८९९ समय १२.१० बजे संध्या (स्था० सं०) (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७७° ३५° पूर्व)

राशि

रा९ ७गु
१० ८श मं६
११ शुबुसू ५
चं१२ २ ४
१ ३के

नवांश
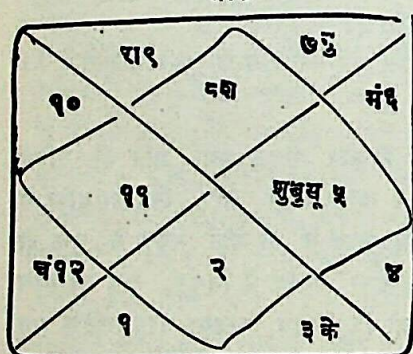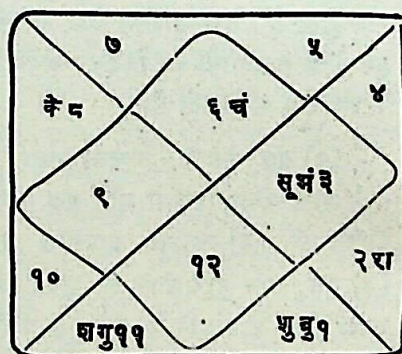
कुंडली संख्या ११८ एक महिला की है और उसे पैरों तथा हाथों में लकवा हुआ था। छठे भाव में मेष राशि है तथा उस पर उस भाव के स्वामी मंगल की दृष्टि है। चन्द्रमा से छठे भाव मे शुक्र (तृतीयेश और अष्टमेश) और बुध (स्नायु का कारक) की युति है और उन पर शनि की दृष्टि है। इससे रोग स्थान की स्थिति पीड़ित होने का संकेत मिलता है। नवम भाव पैरों को नियन्त्रित करता है। यहाँ पर चन्द्रमा से नवम भाव वृश्चिक राशि है और नवमेश मंगल चन्द्रमा पर दृष्टि डाल रहा है। नवम भाव में प्रथम श्रेणी का मारक ग्रह शनि स्थित है। शनि रुकावट डालने वाला ग्रह है। इस प्रकार पैर के निचले भाग का पूरा क्षेत्र पीड़ित है। शनि लग्न से तीसरे भाव और चन्द्रमा से तीसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा है जबकि मंगल लग्न और चन्द्रमा दोनों से दूसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा

है। तीसरा भाव हाथ को नियन्त्रित करता है। जातक को हाथों और पैरों में काफी कष्ट है। जीवन शक्ति का कारक सूर्य ८, ११, ७ और १२ वें भाव के स्वामी के साथ अपनी ही राशि में युक्त है और तीसरे भाव के स्वामी शनि द्वारा दृष्ट है। उसका वास्तविक कष्ट शनि की दशा और राहु की भुक्ति में आरम्भ हुआ। पैरों पर से धीरे-धीरे नियन्त्रण कम हो गया जिससे वह अवसन्न हो गया। षष्ठेश और लग्नेश मंगल कन्या में हैं जिस पर मीन से चन्द्रमा की दृष्टि से जल शोफ सम्बन्धी स्थिति बनती है।

आयुर्वेदिक पुस्तकों के अनुसार मुख सम्बन्धी लकवा कठोर वस्तुओं को चबाने या जोर से हँसने या मुंह फाड़कर जम्हाई लेने या बेतरतीब पड़े रहने के कारण होता है। उत्तेजक कारण अर्थात वथ, पित्त या श्लेष्मा, का पता उसके पीड़ित होने से लगाया जा सकता है जो ग्रह लग्न या छठे भाव को प्रभावित करते हैं।

कुण्डली सं० १९९—जन्म तारीख १२-४-१९१२ समय १२-५ बजे संध्या (आई० एस० टी०) (अक्षांश १३° उत्तर, देशा० ७७° ३५′ पूर्व)

राशि

४ २ ३मं १
५ शु१२
६
के७ ९ चं११
गु८ १०
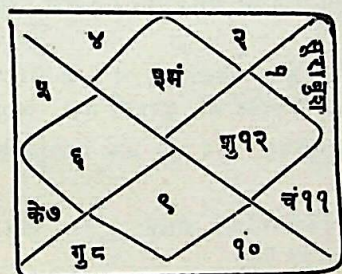
नवांश
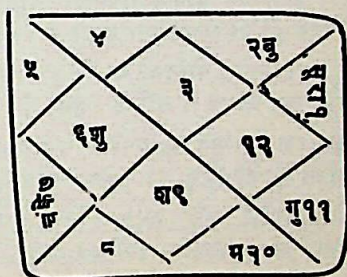
षष्ठेश मंगल की लग्न में स्थिति पर ध्यान दें जो लगभग लग्न के साथ साथ ठीक ठीक युक्त है और नीच के शनि द्वारा दृष्ट है। मंगल मुख्यतः पित्त को नियन्त्रित करता है जबकि शनि मुख्यतः वथ को नियन्त्रित करता है। लग्न में मंगल हमेशा पेटूपन का द्योतक होता है जिससे अपच और कब्जियत होता है। जब गोचर का शनि लग्न से गुजरता है तो चेहरे का लकवा होता है। चूंकि उत्तेजक कारण मंगल* (पित्त) है, लकवा का जोर होने से पूर्व ज्वर, प्यास और बेहोशी

---

* त्रिदोष अर्थात पित्त, वात और श्लेष्मा, को बारह राशियां क्रमवार दर्शाती हैं। अर्थात् मेष पित्त का, वृषभ वात का और मिथुन श्लेष्मा का द्योतक होता है और इसी प्रकार आगे की राशियां भी क्रमवार दर्शाती हैं। विभिन्न ग्रहों द्वारा त्रिदोष निम्न प्रकार नियन्त्रित होता है—

सूर्य—मुख्यत: पित्त और अंशत: वात
चन्द्रमा—मुख्यत: वात और अंशत: कफ

का दौरा पड़ा। यहां पर इस रोग को असाध्य कहा जा सकता है; परन्तु चिकित्सा उपचार (नीचे दिया जाता है) और ज्योतिषीय अनुनय से कुछ राहत प्राप्त किया जा सकता है। प्रसिद्ध टालेमी पद्धति के समर्थक के अनुसार जिन्होंने मुख्यतः भारत से ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त किया था, यदि अशुभ ग्रह कोण में हों और प्रकाश ग्रह की युति हो या विपरीत स्थिति में हो और चन्द्रमा राहु या केतु के साथ हो तो शरीर लंगड़ापन या लकवा से पीड़ित होगा। जिस जातक की कुंडली में वृहस्पति लग्न (कुम्भ) में हो और शनि सप्तम तथा मंगल छठे भाव में हो जातक चौथे वर्ष में लकवा से पीड़ित होता है। उपरोक्त के जैसे अनेक कुंडलिओं के अध्ययन के आधार पर हमने पाया है कि सामान्यतः निम्नलिखित योगों में लकवा होता है।

(१) विशेषकर पित्त वाली राशि में लग्न में सूर्य हो और शनि तथा मंगल द्वारा पीड़ित हो।

(२) शनि और वृहस्पति छठे भाव में युक्त हों जो वायु तत्व राशि हो।

(३) चन्द्रमा और बुध युक्त हों और राहु तथा शनि द्वारा पीड़ित हों।

यदि लग्न भीषण पापकर्तरी योग में हो, इस योग में सम्मिलित ग्रह बुरी तरह पीड़ित हों तो डिप्थेरिया होता है।

तत्पश्चात पोलियो या शिशु में लकवा होता है जो पिछले दो वर्षों के दौरान विशेषकर भारत में अधिक हुआ है। राष्ट्रपति रुजवेल्ट की कुण्डली एक उत्तम उदाहरण है। सूर्य के उत्पीड़न पर ध्यान दें। सामान्यतः जब राहु कर्क में शनि से पीड़ित हो तो शिशु का लकवा होता है।

कुण्डली सं० १२०—जन्म तारीख १०/३-७-१९०२ समय ३-४५ प्रातः (स्था० सं०) (अक्षांश १८°-४० उत्तर, देशा० ८७°-० पूर्व)

राशि

नवांश

चन्द्रमांदी
६
रा८
७मं
गु५
१०
शु४
श११
१
के३
१२
सू२

शुक्र की दशा शेष २-९-२७ वर्ष

मंगल—पित्त
बुध—मुख्यतः वात और अंशतः पित्त और थोड़ा थोड़ा कफ
वृहस्पति—मुख्यतः कफ और अंशतः वात
शुक्र—मुख्यतः वात और अंशतः कफ
शनि—मुख्यतः वात और अंशतः पित्त।

राहु की दशा आरम्भ होते ही उक्त कुण्डली के जातक को अत्यन्त हानि हुई और काफी कष्ट हुआ। शुक्र जिसका फल राहु को देना चाहिए १२ वें भाव में है जबकि राहु स्वयं पाँचवें भाव में शनि द्वारा दृष्ट है जो अष्टमेश है। नवांश में राहु षष्ठेश वृहस्पति से दृष्ट है। षष्ठेश मंगल पर प्रभाव पर ध्यान दें। वह लग्न में लग्नेश बुध और तृतीयेश सूर्य के साथ है। यह व्यक्ति काफी कर्ज में पड़ गया।

कुण्डली सं० १२९ में लग्नेश और षष्ठेश शुक्र मंगल के साथ १२ वें भाव में है। चन्द्र लग्न से चन्द्र लग्न का स्वामी और षष्ठेश ८ वें भाव में युक्त हैं। सूर्य और चन्द्रमा की दशा में जातक राजनैतिक अपराध के लिए कई बार जेल गया। वह एक प्रमुख और सम्मानित कांग्रेसी है तथा वह एक भूमिपति लौर आध्यात्मिक व्यक्ति है।

कुण्डली सं १२१—जन्म तारीख १६-३-१९०८ समय १०.५६ बजे प्रातः (आई० एस० टी०) (अक्षांश १५°२३' उत्तर, देशा० ७५°-३९' पूर्व)
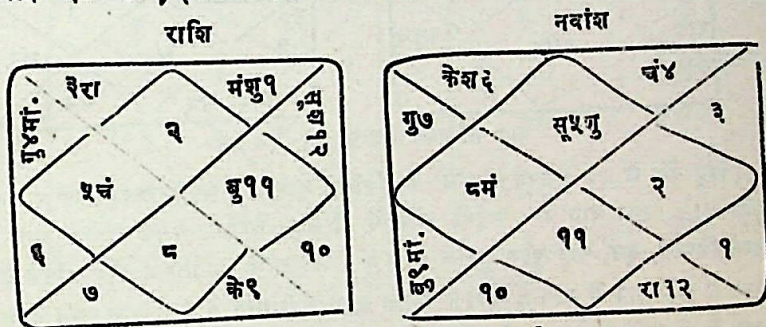
केतु की दशा शेष ०-०-१३ वर्ष

कुण्डली सं० १२२—जन्म तारीख २३-७-१८५६ समय ६.२५ बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश १८°३२' उत्तर, देशा० ७५°-५३' पूर्व)
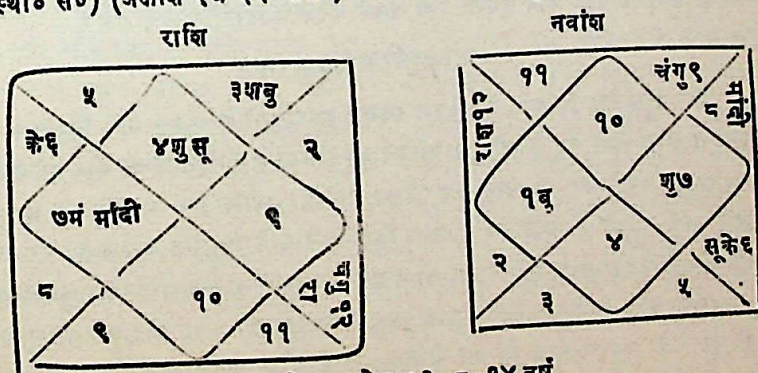
बुध की दशा शेष १३-८-१४ वर्ष

इस कुण्डली में बंधन योग स्पष्ट है। लग्नेश चन्द्रमा षष्ठेश बृहस्पति और राहु से युक्त है और शनि द्वारा दृष्ट है। जातक जो अति सम्मानित भारतीय राजनैतिक नेता है, विशेषकर सूर्य और चन्द्रमा की दिशा में राजद्रोह के जुर्म में काफी अवधि के लिए जेल गया।

कुण्डली सं० १२३—जन्म समय २६/२५–९–१९०१ समय १२.२० बजे प्रातः (स्था० स०) (अक्षांश १०–२५ उत्तर, देशा० ७८°–५० पूर्व)
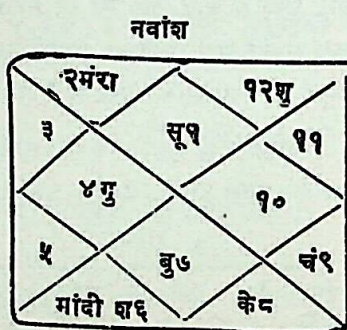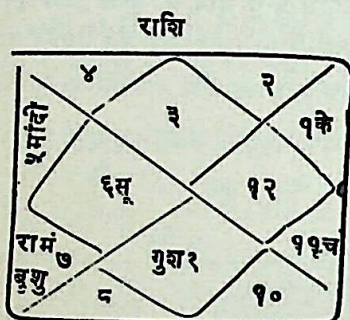
राहु की दशा शेष १६–१–१८ वर्ष

यह बैंक के एक भूतपूर्व खजांची का विचित्र मामला है जो निरन्तर कर्ज में डूबा हुआ था। छठा भाव पाप कर्तरी योग में है और षष्ठेश मंगल पाँचवें भाव में लग्नाधिपति, बुध, राहु और शुक्र के साथ हैं। नवांश में यह प्रभाव और अधिक है। लग्न से छठे भाव में शनि है जबकि षष्ठेश पापकर्तरी योग में है। चन्द्र लग्न से छठे भाव में दो पाप ग्रह मंगल और राहु स्थित हैं जबकि षष्ठेश शुक्र शनि और बृहस्पति से दृष्ट है। यद्यपि उसे अच्छी तनख्वाह मिलती थी, वह काफी कर्ज में पड़ गया और अपने लेनदारों को पुनः भुगतान नहीं कर सका जिसके परिणाम स्वरूप उसे अपनी नौकरी छोड़नी पड़ी और घूमता रहा ताकि अपने लेनदारों से बच सके।

व्यावहारिक उदाहरण

नीचे दिए गए विभिन्न उदाहरण स्वरूप कुण्डलियों में केवल भाव विश्लेषण के सिद्धान्त लागू किए गए हैं और सम्बन्धित कुण्डलियों में निहित अच्छे और बुरे योगों तथा अन्य तथ्यों को अनदेखी कर दिया गया है क्योंकि हम पाठकों को भ्रम में रखना नहीं चाहते। ज्योतिष में लागू किए जाने वाले सिद्धान्त जटिल हैं और यदि इन्हें कौशल्य पूर्वक लागू नहीं किया तो गलती हो सकती है। हमारे समक्ष कुण्डलियाँ हैं—राशि और नवांश कुण्डली, भाव स्फुट और ग्रहों की दृष्टि और बल की सूची। बुरी दृष्टि के कारण भाव या ग्रह पीड़ित होते हैं और हितकारी दृष्टि या युक्ति से इसके विपरीत परिणाम होते हैं। ग्रहों के शुभ और अशुभ स्वभाव को नैसर्गिक और

अस्थायी दोनों प्रकार से लेना चाहिए। भावेश उस भाव पर नियन्त्रण रखने के लिए जिम्मेदार होता है। जो ग्रह दृष्टि, युक्ति या अन्य प्रकार से सम्बन्ध रखते हैं उन अन्य ग्रहों के भावेश के साथ सम्बन्ध का भी प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार के सैकड़ों ऐसे तथ्य होते हैं जिनपर विचार करना होता है और ज्योतिषी को उनके गुणों पर विचार करना चाहिए। निरन्तर प्रयोग करते रहने पर कठिनाइयों पर काबू पाया जा सकता है और सही-सही निष्कर्ष निकाला जा सकता है। उदाहरण द्वारा हम निम्नलिखित कुण्डलियों में ४, ५ और छठे भावों का सामान्य रूप से विश्लेषण करेंगे जन्म का ब्यौरा कुछ कारण वश नहीं दिया गया है—

कुण्डली सं० १२४—
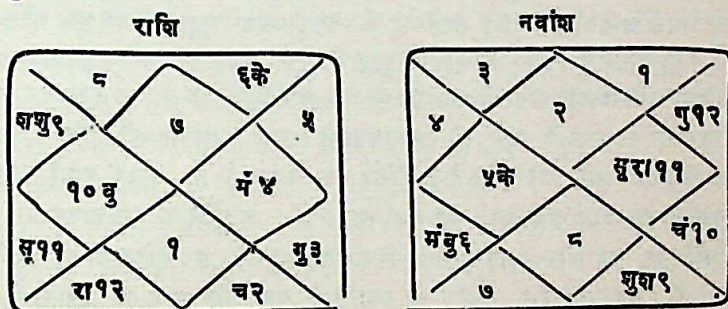
सूर्य की दशा शेष ३–८–२७ वर्ष

माँ—चौथे भाव में मकर राशि है और वहां पर बुध स्थित है। बुध आत्मकारक है और वह उचित रूप से बली है। चतुर्थेश शनि तीसरे भाव में स्थित है और बृहस्पति से दृष्ट है। शनि कारक ग्रह शुक्र के साथ युक्त है। मातृकारक चन्द्रमा उच्च का होकर सप्तम भाव केन्द्र में स्थित है। चन्द्रमा से चतुर्थेश दशम भाव में है और चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है जो अति शुभ है। चन्द्रमा से चौथे भाव पर कोई अशुभ युक्ति या दृष्टि नहीं है। नवांश लग्न से चौथे भाव में केतु स्थित है। किन्तु यहां भी चतुर्थेश चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है। नवांश में चन्द्रमा से चौथे भाव में मेष राशि है। जिसका स्वामी मंगल चन्द्रमा से नवम भाव में स्थित है। वह भी चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है जो उसकी अपनी राशि होने के कारण उत्तम है। चतुर्थेश और चन्द्रमा गोपुरांश में है। ये सभी शुभ हैं और जातक की मां की लम्बी उम्र होगी। चतुर्थेश शनि वर्गोत्तम में है। यदि चन्द्रमा बली हो या शुक्र के साथ युक्त हो या उस पर शुभ दृष्टि हो तो मां दीर्घायु होती है। यहां पर चन्द्रमा बली है क्योंकि वह केन्द्र में उच्च का है और शुक्र पर बृहस्पति की दृष्टि है। अतः दोनों ही तथ्य मौजूद हैं। मारक शनि के साथ शुक्र की

युक्ति के सम्बन्ध में । (१) दोनों ही कारक राशि और कारक वर्ग में हैं; (२) शनि चतुर्थेश है, (३) शनि योगकारक है । जैमिनी पद्धति के अनुसार मातृभाव के परीक्षण के बाद ऐसा ही निष्कर्ष निकाला जा सकता है । जैमिनी के अनुसार जो ग्रह अपनी सुसंगत राशि में चौथे स्थान पर होता है वह मातृकारक होता है । २८° २७′ अंश पर होने के कारण बुध प्रथम स्थान पर है । दूसरे स्थान पर शनि है जो २८° २१′ अंश पर है । उसके बाद शुक्र २८° ९′ अंश पर है । चौथे स्थान पर वृहस्पति है जो १९° १२′ अंश पर है । आरूढ़ लग्न से चौथे भाव को भी हिसाब में लेना चाहिए जो वृषभ है । वृहस्पति कारक ग्रह है आरूढ़ से चौथा भाव भी शुभ राशि है । वृषभ अचर राशि है और सभी चर राशियां और वहां स्थित ग्रह मेष के बाद की राशि को छोड़कर वृषभ पर दृष्टि डाल रहे हैं । अतः शुभ ग्रह बुध और मारक ग्रह मंगल चन्द्रमा पर दृष्टि डाल रहे हैं । मातृकारक वृहस्पति पर शुभ और अशुभ दोनों ही दृष्टि हैं । अतः मां दीर्घायु होगी । चूंकि हम मातृभाव पर विचार कर रहे हैं अतः हमारी भविष्यवाणी का यह भी एक अंग होगा कि मां की मृत्यु कब होगी । राहु दशा के अन्त में मृत्यु की सम्भावना है । राहु वृहस्पति की राशि में है जिस पर चतुर्थेश शनि की दृष्टि है । चूंकि वह स्वभाव से ही मारक ग्रह हैं अतः वह स्वयं ही यह कार्य करेगा । यह कार्य सामान्यतः चतुर्थेश या मातृकारक या उनसे सम्बन्धित ग्रह और मातृभाव में स्थित ग्रह या उस पर दृष्टि डालने वाले ग्रह करते हैं । वृहस्पति उस नवांश का स्वामी है जहां चौथे भाव का स्वामी है । वह मातृकारक चन्द्रमा से दूसरे भाव में है । इस प्रकार वृहस्पति का गुण स्पष्ट है और केवल यह देखना है कि यह कार्य वृहस्पति और राहु में से कौन करेगा । राहु की अधिक सम्भावना है । नवांश में राहु चतुर्थेश के साथ युक्त है और मातृकारक चन्द्रमा से दूसरे भाव में है । चौथे भाव से सम्बन्धित सभी ग्रहों में मंगल सबसे अधिक अनिष्टकारी है जो नीच का भी है । चूंकि वह वास्तव में नवम भाव में है वह चौथे भाव पर सीधी दृष्टि नहीं डाल रहा है बल्कि चौथे भाव पर दूर से अपनी विशेष तथा अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है । राहु की दशा में मंगल की भुक्ति २१-११-१९६९ को आई । गोचर द्वारा मृत्यु नियत करने के भी नियम हैं ताकि इसे निश्चित सीमा के भीतर लाया जा सके । सूर्य के अंक से चन्द्रमा का अंक घटाएं । जो राशि शेष बचती है उसको देखें । जब शनि या वृहस्पति गोचर में उस राशि में हों और नवांश या उससे कोण में हों तो मां की मृत्यु हो सकती है । सूर्य का अंक १०-१३-३८ है । इसमें चन्द्रमा का अंक जो १-४-४१ है घटाने पर शेष ९-११-५७ बचा । यह मकर राशि का द्योतक है । मार्च १९६९ में वृहस्पति गोचर में कोणीय राशि कन्या में होगा । शनि अपनी नीच राशि मेष में होगा जो चन्द्रमा से बारहवीं राशि है जो साढ़े साती का आरम्भ होगा ।

शिक्षा—समस्त जन्म कुण्डली से इसका निर्णय करना चाहिए और चौथा भाव उन शैक्षिक विशिष्टताओं का संकेत देता है जो जातक द्वारा प्राप्त करने की सम्भावना होती है। दूसरा भाव भी विद्या या अध्ययन का संकेत देता है और तीसरा भाव मानसिक विशेषताओं का संकेत देता है। पंचम भाव वास्तविक अध्ययन दर्शाता है। यहाँ बुध आत्मकारक भी है। चतुर्थेश कारक ग्रह से युक्त है और वर्गोत्तम में है तथा वृहस्पति से दृष्ट है। चन्द्रमा से चतुर्थेश मंगल नवांश में बुध से युक्त है और अतः वृहस्पति से भी दृष्ट है। राशि में चौथे भाव पर मंगल की दृष्टि और नवांश के साथ युक्ति से अध्ययन करने में जातक को शक्ति मिलेगी। इस प्रकार जातक की बुद्धि तेज हो या नहीं किन्तु चौथे भाव की दशा प्रधानता और बल के कारण जातक निश्चित ही उच्च शैक्षिक योग्यता प्राप्त कर लेगा। यदि शनि चौथे भाव से सम्बन्धित हो या इसे पीड़ित कर रहा हो तो वह अध्ययन में रुकावट पैदा करेगा किन्तु वह राशि में चतुर्थेश है और नवांश में योगकारक है। वह केवल इस कारण से प्रभावित करेगा कि वह नवांश में विद्याकारक पर दृष्टि डाल रहा है किन्तु चूँकि वृहस्पति भी दृष्टि डाल रहा है और वृहस्पति राशि और नवांश दोनों में शनि का नियन्त्रक ग्रह है, उसकी दृष्टि से अधिक खराबी नहीं होगी। फिर भी समग समय पर हल्की रुकावट और निराशा होगी। लग्नेश शुक्र और चतुर्थेश शनि की राशि और नवांश में युक्ति अधिक उत्तम नहीं है और उस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

शिक्षा की शाखा—चौथे भाव का भाव मध्य मकर राशि में पड़ता है जो भू-तत्त्व राशि है। इसमें विद्याकारक बुध स्थित है। महत्त्वपूर्ण ग्रह चन्द्रमा जिसका मस्तिष्क से सम्बन्ध है, वृषभ राशि में है—यह भी एक भू तत्त्व राशि है। बुध और चन्द्रमा दोनों ही भू तत्त्व नवांश में हैं। विद्याकारक के सम्बन्ध में भू तत्त्व राशि की प्रधानता जातक को अध्ययन में वैज्ञानिक या वाणिज्यिक की ओर ले जाता है और उसके विचार में इसकी उपयोगिता की कम प्रधानता है। इस प्रकार के व्यक्ति जो बहुत कम तेज बुद्धि वाले होते हैं, अक्सर परिश्रमी, अध्यवसायी और जुटे रहते हैं। द्विस्वभाव राशि में तीन ग्रह हैं और दो ग्रह अचर तथा दो ग्रह चर राशि में हैं। इससे जातक प्रतिभाशाली होता है यद्यपि वह किसी लक्ष्य में पूर्ण होने की परवाह नहीं करता। इन सभी विशेषताओं को ध्यान में रखना चाहिए। इस तथ्य को भी अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि मंगल जल तत्व राशि से चौथे भाव पर प्रबल दृष्टि डाल रहा है। इस योग से इंजीनियरी विशेष जल या तेल में तकनीकी ज्ञान या इसकी सहायक शिक्षा का संकेत मिलता है। नवांश में चन्द्रमा से चतुर्थेश मंगल चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है तथा वह बुध से युक्त है एवं उस

पर शनि की दृष्टि है। इससे भारी मशीनरी से सम्बन्धित साधारण इन्जीनियरी का संकेत मिलता है जिसमें आग और बिजली दोनों का प्रयोग किया जाता है। परन्तु यह गौण है और यह जातक का मुख्य लक्ष्य नहीं होगा।

विलासिता और सवारी—यदि चतुर्थेश बली हो और उस पर शुभ दृष्टि या युक्ति हो तो जातक के अधिकार में गाड़ियां होंगी। चतुर्थेश शनि पर न केवल बृहस्पति की शुभ दृष्टि है बल्कि वह अन्य शुभ ग्रह शुक्र के साथ युक्त है। बुध दूसरा शुभ ग्रह चौथे भाव में है। दूसरा विशेष योग जो गाड़ियों की सुविधा प्रदान करता है, विद्यमान है। यदि नवमेश से एकादशेश आत्मकारक ग्रह के नवांश में हो तब भी जातक के पास गाड़ियां होती हैं। यहां नवमेश बुध है और वह मकर राशि में स्थित है, वहां से ग्यारहवां भाव वृश्चिक राशि है। वहां का अधिपति मंगल कन्या राशि में है जो स्वयं ही कारकांश है। अतः यह योग विद्यमान है। यह भी कहा जा सकता है कि चूंकि सभी मुख्य शुभ ग्रह चौथे भाव से सम्बन्धित हैं जातक के पास अनेक गाड़ियां होंगी। चौथे भाव में बुध है और वहां से चौथा भाव में उच्च का चन्द्रमा स्थित है। चतुर्थेश शुक्र के साथ स्थित है और उस पर बृहस्पति की दृष्टि है। गाड़ियों के स्वामित्व के मामले में ग्यारहवां भाव सम्बन्धित होता है और यह पहले ही देखा गया है कि एकादशेश सूर्य अपनी राशि पर दृष्टि डाल रहा है। यह उल्लेखनीय है कि लग्न से ग्यारहवां भाव चन्द्रमा से चौथा भाव भी है। इस सम्बन्ध में एक अद्भुत विशेषता है शुक्र एक शुभ ग्रह ही नहीं बल्कि गाड़ियों आदि के लिए कारक भी है और उसका चतुर्थेश के साथ युक्त होना और उस पर बृहस्पति की दृष्टि इस सम्बन्ध में विशेष महत्त्व रखती है। इस सम्बन्ध में नवांश के संकेत भी पक्ष में हैं।

पैतृक सम्पत्ति—हमने यह देखा है कि चौथा भाव विशेष रूप से बली है। इसके लिए विपरीत संकेत नहीं हैं। अतः जातक को काफी मात्रा में सम्पत्ति प्राप्त होगी।

कुण्डली सं० १२५—
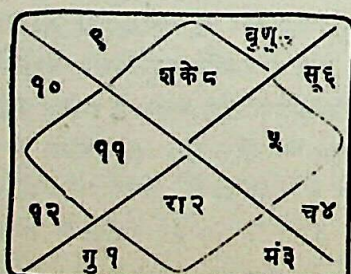
बुध की दशा शेष १४-११-० वर्ष

बच्चे—कुण्डली संख्या १२५ में पंचम भाव में लाभप्रद राशि मीन है किन्तु इसका अधिपति छठे भाव दुःस्थान में है। इसकी पूर्ति के लिए पंचमेश जो पुत्रकारक भी है, पर दो नैसर्गिक शुभ ग्रहों बुध और शुक्र की दृष्टि है। तथापि बुध ८ वें और ग्यारहवें भाव का स्वामी है अतः कुण्डली के लिए यह बुरा है। यद्यपि पंचम भाव में कोई भी ग्रह स्थित नहीं है, इस पर मारक ग्रह सूर्य की दृष्टि है जो केन्द्र का स्वामी होने के कारण पूर्णतः कारक बन गया है। इस प्रकार शुभ और अशुभ प्रभावों का सन्तुलन हो गया है। चन्द्रमा से पचमेश मंगल १२ वें भाव में स्थित है। पांचवें भाव में प्रथम श्रेणी का मारक ग्रह शनि स्थित है जो चन्द्रमा से ७ वें और ८ वें भाव का स्वामी है। जबकि सप्तम भाव अति उत्तम होता है, अष्टम भाव का स्वामित्व बहुत खराब होता है। चन्द्रमा से पंचम भाव या चन्द्रमा से पंचमेश या कारक बृहस्पति से ५ वें भाव पर किसी भी ग्रह की दृष्टि नहीं है। अतः चन्द्रमा से जिसको इस मामले में अनदेखी नहीं किया जा सकता क्योंकि वह बली है, बच्चों के लिए प्रमाण उत्तम नहीं हैं। नवांश में लग्न और चन्द्रमा से पंचम भाव में राहु स्थित है और इसका अधिपति यद्यपि उच्च का है शनि के साथ दूसरे भाव में है। तथापि एक विशेषता पक्ष में यह है कि बृहस्पति पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और चन्द्रमा बृहस्पति से पंचम भाव में स्थित है। परन्तु पंचम भाव पर मंगल की भी दृष्टि है। पुनः यहाँ पर राशि में स्थिति संतुलित है। इन सब से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जातक के बच्चे अनेक होंगे किन्तु परिवार बड़ा नहीं होगा।

जैमिनी के अनुसार भी यही निष्कर्ष निकलता है। इसके लिए पहले उपपद का पता लगाना होता है क्योंकि यह लगभग मध्य बिन्दु होगा जहाँ के इस मामले पर विचार करना है। १२ वें भाव से द्वादशेश जहाँ पर है वहाँ से उतनी ही राशियों को गिनकर उपपद निकाला जाता है। इस कुण्डली में द्वादशेश १२ वें भाव में है अतः द्वादश भाव अर्थात तुला उपपद है। हमें उपपद से पंचम भाव पर विचार करना है और चूंकि यह एक विषम राशि है और उपपद के स्वामी से पंचम भाव एक लाभ प्रद राशि है अतः बच्चे अनेक होंगे। उपपद से पंचमेश पर बृहस्पति और चन्द्रमा दोनों की दृष्टि है तथा उपपद से पंचम भाव पर भी। किन्तु राहु की दृष्टि उपपद पर भी है और मंगल तथा सूर्य उपपद से पंचमेश से पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहे हैं। ये संकेत विपरीत हैं अतः शुभ और अशुभ बलों के बीच वही संतुलन दिख रहा है।

बच्चों की संख्या—पंचम भाव ३५०° ४७' पर है। अतः छः नवांश पार कर गया है। पंचमेश पुत्र कारक भी है और उसने उस राशि में ५ नवांश पूरा कर

लिया है। सूर्य पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसने भी ६ नवांश पूरा कर लिया है। शनि चन्द्रमा से पंचम भाव में है और उसने भी छः नवांश पूरा कर लिया है। सूर्य पुत्रकारक से पंचम भाव का स्वामी भी है। अतः बच्चों की संख्या छः होने का संकेत मिलता है और चार लड़के तथा शेष लड़कियाँ होंगी। एक या दो बच्चों के मरने की संभावना है क्योंकि पंचमेश छठे भाव में है और चन्द्रमा से पंचमेश १२ वें भाव में है। लग्न से पंचम भाव पर अशुभ दृष्टि है और चन्द्रमा से पंचम भाव में अशुभ ग्रह स्थित है।

चिन्तन, सट्टा आदि—बच्चों के लिए पंचम भाव के बल पर की गई चर्चा इस सम्बन्ध में भी लागू होगी। सट्टा में लाभ और हानि दोनों होगी। उचित अवसर का चुनाव करके अधिक हानि से बचा जा सकता है और सट्टा कार्य के लिए उस अवधि के भीतर ही अपने आप को रखना होगा। बृहस्पति पर शुक्र की दृष्टि शुभ ग्रह के रूप में एक अर्थ में उत्तम है किन्तु वह १२ वें भाव का स्वामी भी है और हानि का द्योतक है। इस दृष्टि से यह भी संकेत मिलता है कि एक ही समय दो व्यवसायों पर विभाजित हितों के माध्यम से या व्यवसायों को बार-बार बदलने के कारण हानि होगी।

चूंकि पंचम भाव जलीय तत्व राशि है और उस पर दसमेश की दृष्टि है अतः जातक व्यापार और विनोद दोनों ही प्रयोजनों से अनेक बार जल यात्रा करेगा।

कुंडली सं० १२६—

राशि

नवांश
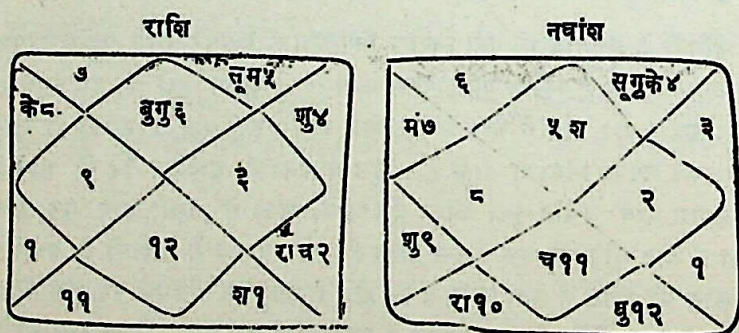
सूर्य की दशा शेष १-९-१८ वर्ष

छठा भाव शत्रु, रोग, ऋण आदि के लिए होता है। यह कनिष्ठों, सभी प्रकार के नौकरों और सेवा का भी द्योतक होता है। जब हम अपने आप को किसी चीज के अधीन करते हैं भले ही यह कोई आदर्श हो या कोई व्यक्ति तो हम अपने कार्यों का इस भाव से पता लगाते हैं। राशि में लग्न से या चन्द्रमा से छठे भाव में कोई ग्रह नहीं है किन्तु नवांश में लग्न से छठे भाव में राहु तथा चन्द्रमा से छठे भाव में

सूर्य, केतु तथा वृहस्पति स्थित हैं। राशि से छठे भाव का स्वामी अष्टम भाव में नीच का पड़ा है। जातक के सिर या चेहरे पर घाव का चिह्न होगा क्योंकि छठे भाव का स्वामी अष्टम भाव में है और चन्द्रमा तथा राहु के साथ मिला हुआ है। स्वास्थ्य और रोग के सम्बन्ध में इस भाव के फल पर लग्न भाव में चर्चा की जाएगी। किसी भी भाव सम्बन्ध में ग्रह की तीन श्रेणियाँ प्रभावित करती हैं—भावेश, भाव में स्थित ग्रह और इन पर दृष्टि डालने वाले ग्रह। इस कुण्डली में छठे भाव में कोई ग्रह नहीं है। षष्ठेश कमजोर अशुभ ग्रह है। किन्तु इस भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों सूर्य और मंगल में से सूर्य अधिक बली है क्योंकि वह अपनी राशि सिंह में स्थित है। मंगल भी गोपुरांश में है। अतः कमजोर भावेश से इस भाव पर होने वाले बुरे प्रभाव शुभ प्रभाव के कारण न केवल समाप्त हो जाएंगे बल्कि प्रतिस्थापित भी हो जाएंगे। अतः बुढ़ापे तक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और रोग तथा स्वास्थ्य और जैविकशक्ति कायम रखने के लिए किए गए उपायों से काफी सीमा तक लाभ होगा।

शत्रु, ऋण आदि—इन साधनों से कष्ट काफी कम होगा और इससे कोई प्रमुख हानि नहीं होगी। इस सम्बन्ध में शनि की १९ वर्षों का दशा काल (१९६३-१९८२) में कष्ट युक्त नहीं रहेगा। शनि के सम्बन्ध में भी उद्धार के तथ्य हैं। षष्ठेश अष्टम भाव में स्थित होकर एक योग बना रहा है। उसका नीच का होना उसके वक्री होने से काफी उत्तम है।

ओम् तत्सत्

प्रथमखण्ड समाप्त

लेखक की अन्य कृतियाँ:
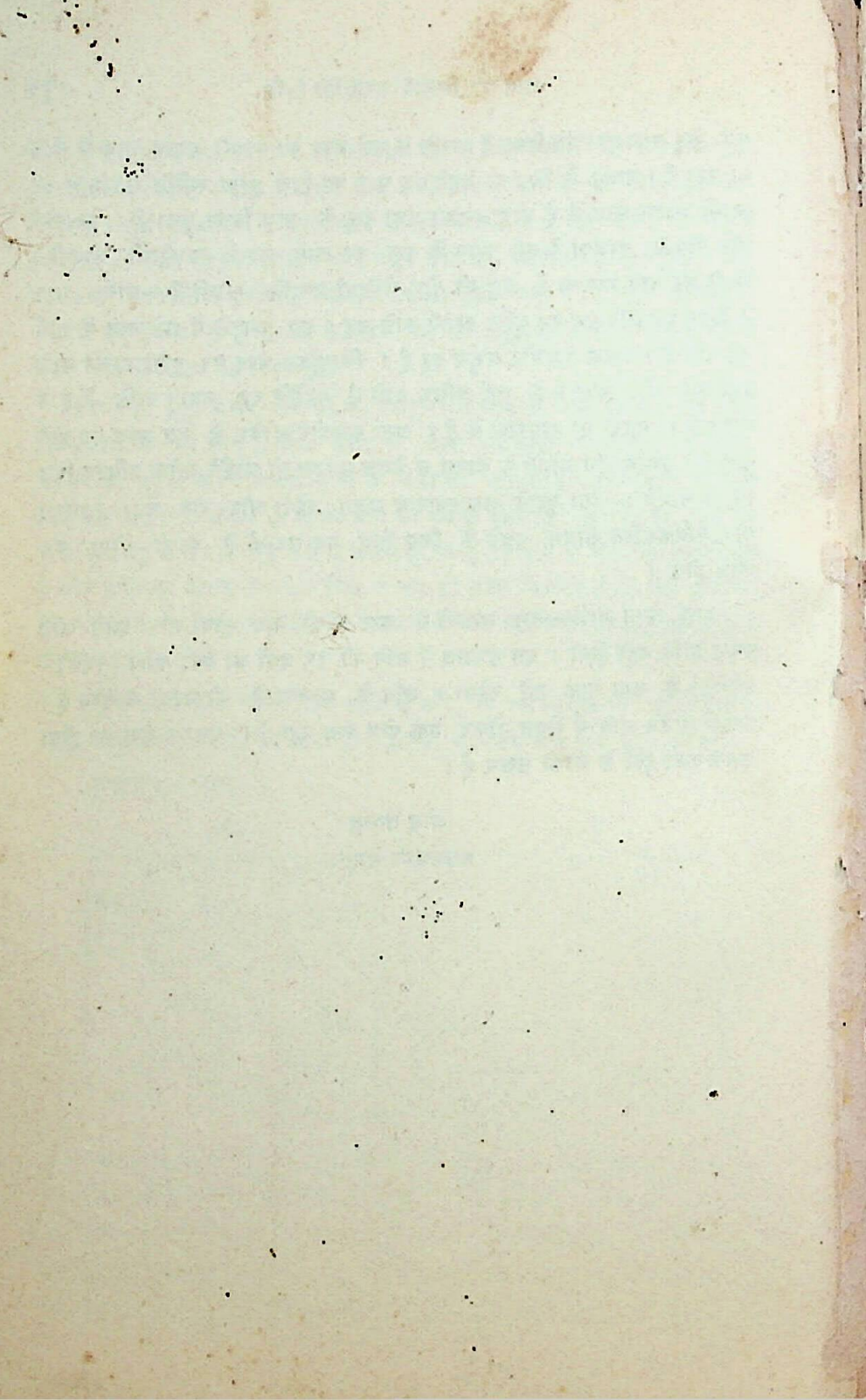
तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग

तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग उन योगों को प्रस्तुत करता है जो विशेष ज्योतिष-प्रवृत्तियों को दर्शाने वाले हैं। सब ग्रह योगों को योग तथ अरिष्ट अथवा सौभाग्य तथा दुर्भाग्य-दो भागों में बांटा गया है। यह पुस्तक [illegible] विभिन्न प्रचलित योगों से अवगत कराती है। सब महत्वपूर्ण, सुव्यवस्थित तथा क्रमबद्ध योगों का वर्णन इस एक पुस्तक में मिलता है ताकि इन योगों से व्यावहारिक जन्मकुण्डली बनाई जा सके। यह प्रथम पुस्तक है जो सब प्रकीर्ण जानकारी को व्यावहारिक तथा सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करती है।

जैमिनी ज्योतिष का अध्ययन

हिन्दी में जैमिनीय पद्धती पर ज्योतिप-ग्रंथो के अभाव को दृष्टि में रखकर अनूवादक ने डॉ० बी० वी० रामन् (रमण) के एतद्विषयक लोकप्रिय अँग्रेजी ग्रंथ का अनुवाद करके उक्त अभाव की पूर्ति करने का स्वागतयोग्य प्रयास किया है।

इसमें उदाहरणों के द्वारा जैमिनी के सूत्रों में निहित रहस्यों को समझाया गया है। यह इसकी एक बड़ी विशेषता है।

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली वाराणसी पटना बंगलौर मद्रास कलकत्ता

मूल्य : रु० १२५ (सजिल्द)
रु० ७५ (अजिल्द)